Левъ Толстой

Л. ТОЛСТОЙ

КАЗАКИ

Кавказская повесть

ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ

Москва

लेव तोलस्तोय

काकेशस का उपन्यास

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह

मास्को

अनुवादक डॉ० नारायणदास खन्ना
चित्रकार द० बिस्ती

पाठको से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्वन्धी आपके विचारो के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बडी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है

२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत सघ।

१

मास्को का वातावरण शान्त हो गया है। हाँ, सर्दी से ठंडी पड़ती हुई सड़कों पर कभी कभी पहियों की चरमराहट जरूर सुनाई दे जाती है। खिड़कियों में से प्रकाश की ताक-झाँक बन्द हो गई है और सड़कों की बत्तियाँ बुझ गई हैं। गिरजे की मीनारों ने घण्टों की आवाजें सुनाई पड़

रही है जो सारे नगर में व्याप्त होकर सुबह हो जाने की घोषणा कर रही है। सडकों पर कोई आता-जाता नही दिखाई पडता। यदा-कदा बर्फ और बालू में से गुजरती हुई स्लेज-गाडी की खडखडाहट कानो में पड जाती है, और कोचवान सडक के नुक्कड तक पहुँचते पहुँचते ऊँघ जाता है। उसकी गाडी सवारी का इन्तजार करने लगती है। एक वृद्धा गिरजे की ओर बढ रही है जहाँ इधर-उधर रखी हुई कुछ मोमबत्तियाँ झिलमिला रही है। ईसा मसीह की सुनहरी प्रतिमा पर लाल रोशनी पड रही है। जाडे की लम्बी लम्बी रातो में करवटें बदल लेने के बाद अब मजदूर बिस्तर छोड चुके है और अपने अपने कामो पर चल पडे है।

परन्तु भले आदमियो के लिए अभी शाम है।

शेवल्ये रेस्टराँ के झरोखो से झाँकता हुआ बिजली का प्रकाश दीख रहा है। लोग जानते है कि इस समय तक बत्तियाँ जलते रहना गैर-कानूनी है। प्रवेश द्वार पर एक गाडी और कई स्लेजें पास पास खडी है। इन्ही में तीन घोडोवाली एक स्लेज भी है। अपने में ही सिकुडा और सर्दी मे ठिठुरता हुआ दरबान ऐसे दुबका बैठा है मानो मकान के किसी कोने में छिपा हो।

"यहाँ बैठे बैठे बाते बघारने से क्या फायदा?" हाल में बैठा हुआ बैरा सोच रहा है। उसके कुरूप चेहरे पर रूखापन झलकने लगता है, "जब कभी मैं ड्यूटी पर होता हूँ हमेशा यही होता है।"

पास के छोटे कमरे से तीन नवयुवकों की आवाजें सुनाई पड रही है। कमरा प्रकाश से जगमगा रहा है। कमरे की मेज पर शाम का खाया हुआ खाना और शराब इधर-उधर बिखरी पडी है। सुन्दर वेशभूषा मे एक सीधा-सादा, दुबला-पतला नाटा-सा व्यक्ति कुर्सी पर बैठा, थकी-मांदी किन्तु कोमल दृष्टि से अपने उस मित्र को देख रहा है जो शीघ्र ही उससे विदा लेगा। दूसरा एक लम्बतडग, उगली पर चाभी का गुच्छा नचाता हुआ खाली

बोतलोंवाली मेज़ के पास एक सोफे पर लुढका पडा है। यहाँ एक तीसरा व्यक्ति भी है जो भेड की खाल का नया कोट पहने कमरे में चहलकदमी कर रहा है। कभी कभी वह एक क्षण के लिए रुक जाता है और उगलियों से बादाम तोडने लगता है। उसकी उगलियाँ मजबूत हैं, मोटी हैं और नाखून बडी होशियारी से साफ किये गये हैं। वह किसी बात पर देर से मुस्करा रहा है। उसकी आँखो तथा चेहरे पर चमक है। जब वह बोलता है तो उसके शब्दो में उत्साह और शरीर के अग-प्रत्यग से हाव-भाव प्रकट होते हैं। ऐसा लगता है कि जो कुछ वह कहना चाहता है उसके लिए उसे उपयुक्त शब्द नही मिल पाते और यदि कुछ उसके ओठो तक आते भी हैं तो वे उसके अन्तर के उद्‌गारो को व्यक्त करने मे असमर्थ हैं।

"अब मैं आप से सारी बाते कह सकता हूँ," यात्री कह उठा, "मैं अपनी सफाई नही दे रहा हूँ, मैं तो केवल यही चाहता हूँ कि आप मुझे वैसा ही समझें जैसा कि मैं अपने आप को समझता हूँ और इस विषय पर आप सामान्य अथवा कोई हल्का दृष्टिकोण न रखें। आप कहते हैं कि मैंने उसके साथ बुरा बर्ताव किया है?" वह उस व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कहता जा रहा था जो उसे कोमल दृष्टि से देख रहा था।

"हाँ, दोष तुम्हारा ही है," सम्बोधित व्यक्ति कहने लगा। उसकी आँखो से ऐसा लग रहा था जैसे उनकी कोमलता तथा थकावट और भी बढ गई है।

"मैं जानता हूँ आप ऐसा क्यो कह रहे है," यात्री कहता जा रहा था, "आप समझते है कि प्यार पाने मे उतनी ही प्रसन्नता होती है जितनी प्यार करने में, और अगर एक बार भी आपको किसी ने प्यार कर लिया, तो वह जिन्दगी भर के लिए काफी है।"

"हाँ, मेरे दोस्त, बिल्कुल काफी है बल्कि उससे भी कुछ अधिक," आँख मारते हुए उस छोटे, दुबले-पतले आदमी ने जवाब दिया।

"परन्तु खुद इन्सान भी प्यार क्यो न करे?" यात्री अपने मित्र को दया-भाव से देखते हुए गम्भीरतापूर्वक बोला, "आखिर कोई प्रेम क्यो न करे? प्रेम यो ही नही आता नही, वह प्यार पाना ही मुसीबत है जब आप अपने को अपराधी समझने लगें क्योकि जो कुछ आपको मिल रहा है आप उसे वापस नही करते और कर भी नही सकते। हे भगवान!" और उसके हाथ झूल गये, "यदि केवल यही बाते कायदे से होती! परन्तु ये सब उल्टी-सीधी हैं और हमारे बस की नही। जो होना होता है वही होता है। क्यो? ऐसा लगता है कि मैंने किसी का प्यार चुरा लिया है। आप भी यही समझते है न। देखिए, इनकार न कीजिएगा—आपको इसी प्रकार सोचना चाहिए। परन्तु क्या आप विश्वास करेंगे कि जीवन में मैंने जितने नीच और घृणित कर्म किये हैं उनमें केवल यही एक ऐसा काम है जिसके लिए मुझे कोई पछतावा नही और मैं पछता भी नही सकता। मैंने न तो प्रेम के उषाकाल में, और न उसके बाद ही, जानबूझ कर, न स्वय को धोखे में रखा और न उसी को। मुझे कुछ ऐसा लगा था कि स्वय मैं भी प्रेम करने लगा हूँ। परन्तु बाद में मैंने समझा कि मैं अज्ञात रूप से अपने को ही धोखा दे रहा हूँ—इस प्रकार प्रेम करना असम्भव है—और मैं आगे नही बढ़ सका। परन्तु वह बढ़ती ही गई। तो क्या यह मेरा दोष है कि मैं नही बढ़ा? मै करता ही क्या?"

"खैर जो हुआ, हो चुका," जगते रहने के उद्देश्य से सिगार जलाते हुए उसके दोस्त ने कहा, "बात सिर्फ यह है कि न तुमने कभी किसी से प्यार किया और न तुम जानते ही हो कि प्यार है किस चिड़िया का नाम!"

जो व्यक्ति भेड की खाल पहने था, वह फिर कुछ कहना चाहता था और इसीलिए उसने अपना हाथ माथे पर रखा भी था, परन्तु वह क्या कहना चाहता था इसे व्यक्त न कर सका।

"प्यार नही किया हाँ बिल्कुल ठीक। मैंने कभी नही किया। लेकिन मेरे हृदय में प्यार करने की आकाक्षा तो है और उस आकाक्षा से बढकर कुछ नही हो सकता। परन्तु क्या ऐसे प्यार का अस्तित्व भी है? अपूर्णता सदैव कही न कही तो होती ही है। होगा! कोरी बातो से क्या फायदा? मैंने जिन्दगी को गोरखधन्धा बना दिया है! परन्तु कुछ भी हो अब सब खत्म हो गया। आप ठीक कहते है। और, मुझे ऐसा लगता है कि मै एक नई जिन्दगी शुरू कर रहा हूँ।"

"जिसे तुम फिर गोरखधन्धा बना दोगे," सोफे पर पडे तथा चाभियो से खेलते हुए व्यक्ति ने कहा। परन्तु यात्री ने नही सुना।

"मै उदास हूँ, फिर भी मुझे जाने की खुशी है," उसने कहा, "मै उदास क्यो हूँ, मै नही जानता।"

और यात्री अपने बारे में बातें करता रहा। उसने इस बात पर ध्यान नही दिया कि अपनी बातो में जितनी दिलचस्पी उसे है उतनी दूसरो को नही। आध्यात्मिक उन्मेष के क्षणो में मनुष्य जितना आत्मश्लाघी बन जाता है उतना अन्य किसी अवसर पर नही रहता। उस समय उसे ऐसा लगने लगता है मानो दुनिया में उसे छोडकर और कोई शानदार और दिलचस्प चीज़ है ही नही।

"दिमीत्री अन्द्रेयेविच! कोचवान अब अधिक इन्तजार न करेगा," एक नववयस्क भूदास ने कमरे में प्रवेश करते करते कहा। वह भेड की खाल का कोट पहने था और उसके सिर के चारो ओर एक गुलूबन्द लिपटा था। "घोडे रात के ग्यारह बजे से खडे खडे हिनहिना रहे है और इस समय सुबह के चार बज रहे हैं।"

दिमीत्री अन्द्रेयेविच ने अपने दास वन्यूशा की ओर देखा। उसके सिर पर बधा हुआ गुलूबन्द, उसका फेल्ट बूट, और उसका ऊँघता-सा चेहरा मानो अपने स्वामी को ऐसे नये जीवन की ओर आमन्त्रित कर रहा था जिसमें परिश्रम है, कठिनाई है और है जीवन की हलचल।

"ठीक है! नमस्ते!" उसने अपने कोट का खुला हुआ हुक खोजते हुए कहा।

बख्शीश देकर कोचवान को शान्त करने के लिए कहने के बजाय उसने अपनी टोपी पहनी और कमरे के बीच आकर खड़ा हो गया। मित्रों ने एक बार, दो बार, फिर कुछ रुककर तीसरी बार उसे चूमा। यात्री मेज़ के पास आया और उसने एक जाम खाली कर दिया। अब उसने उस छोटे-से आदमी का हाथ प्यार से अपने हाथ में लिया और सलज्ज भाव से कहने लगा—

"खैर, मै तो कहूँगा ही मुझे आपसे साफ साफ कहना चाहिए और मै वैसा कहूँगा भी क्योंकि आप मुझे बहुत अच्छे लगते हैं आप उसे प्रेम करते है। मैंने हमेशा यही समझा—है न यही बात?"

"हाँ," मुस्कान में और अधिक कोमलता लाते हुए उसके दोस्त ने सिर हिलाया।

"और शायद "

"हुजूर, मुझे बत्तियाँ बुझा देने का हुक्म हुआ है," ऊँघते हुए बैरे ने कहा। वह बातचीत का अंतिम अंश सुनता जा रहा था और आश्चर्य कर रहा था कि ये भले मानस एक ही बात को बार बार दुहराते क्यो हैं।

"बिल किसे दूँ? हुजूर, आपको?" उसने लम्बे व्यक्ति को सबोधित करते हुए कहा। वह जानता था कि इस सम्बन्ध में किससे बात करनी चाहिए।

"मुझे," उस लम्बे व्यक्ति ने कहा, "कितना हुआ?"

"छब्बीस रूबल।"

लम्बे व्यक्ति ने एक क्षण सोचा और बिना कुछ कहे-सुने बिल जेब में रख लिया।

बाकी दोनों बातें करते रहे।

"नमस्ते! कितने लाजवाब तुम हो!" सीधे-सादे छोटे आदमी ने मृदुता से कहा।

दोनों की आँखों में आँसू छलछला आये। वे चलते चलते बरामदे में आ चुके थे।

"हाँ, बहरहाल क्या आप शेवल्ये का बिल अदा कर देंगे और फिर मुझे लिखकर उसकी सूचना देंगे?" यात्री ने लम्बे व्यक्ति की ओर मुड़ते हुए सहज भाव से कहा।

"ठीक है, ठीक है," दस्ताने उतारते हुए लम्बा व्यक्ति बोला। "मैं तुमसे कितनी ईर्ष्या करता हूँ!" अप्रत्याशित उसके मुंह से निकला। अब दोनों बरामदे में पहुँच चुके थे।

यात्री अपनी स्लेज में बैठ गया। उसने भेड़ की खाल अपने चारों ओर लपेट ली और कहा, "हाँ, आ जाओ!" और उस व्यक्ति के लिए, जिसने कहा था कि मैं तुमसे ईर्ष्या करता हूँ, जगह करने की ग़रज़ से वह एक ओर खिसक गया। उसकी आवाज़ लड़खड़ा रही थी।

"नमस्कार, मित्या! मुझे आशा है कि ईश्वर की कृपा से तुम "
लम्बे व्यक्ति ने कहा। परन्तु उसकी एक ही इच्छा थी कि दूसरा शीघ्र ही वहाँ से चला जाय और इसीलिए वह अपनी बात पूरी न कर सका।

एक क्षण के लिए वे मौन हो गये। तब एक ने फिर कहा "नमस्ते" और एक आवाज़ सुनाई दी "हाँ, ठीक है।" और, कोचवान ने घोड़े को चाबुक लगाया।

"येलिज़ार, चले आओ!" एक दोस्त ने आवाज़ लगाई। टिक टिक करते तथा लगाम खींचते हुए कोचवान और स्लेज चलानेवाले हवा में बातें करने लगे। पहिये बर्फ पर चर्र-मर्र करते लुढ़क रहे थे।

"वह ओलेनिन कितना अच्छा है वह," एक दोस्त ने कहा।

"हूँह क्या बेहूदी बात! काकेशिया जाना वह भी कैडेट बनकर! मैं तो किराये पर भी न जाऊँ! क्या कल तुम क्लब में खाना खाओगे?"

"हाँ।"

और वे अपने अपने रास्ते चल दिये।

यात्री को गर्मी लग रही थी। उसके फर अन्दर से गरमा रहे थे। वह स्लेज पर नीचे उतरकर बैठ गया। उसने अपना कोट खोल दिया। तीनो घोडे तेजी से बढ रहे थे, कभी एक अंधेरी गली से निकलकर दूसरी में घुस जाते और कभी मकानो को पार करते हुए सर्र से आगे निकल जाते। ओलेनिन को ऐसा लगा कि लम्बी यात्रा को जानेवाले यात्री ही इन गलियो से होकर जाते हैं। उसके चारो ओर सब कुछ धूमिल, नीरस और निर्जीव था, परन्तु उसकी आत्मा स्मृतियो, प्रेमाख्यानो, पश्चात्तापो और रोके हुए अश्रुओ की सुखद अनुभूतियो से ओत-प्रोत थी।

२

"मैं उनपर मुग्ध हूँ, बहुत मुग्ध! कितने अच्छे हैं वे दोस्त कितने खुशदिल!" बार बार वह यही कहता जा रहा था और चाहता था कि वह आँसुओ में घुल जाय! परन्तु वह ऐसा क्यो चाहता था? वे अच्छे दोस्त कौन थे जिनपर वह इतना मुग्ध था, यह वह स्वय न जानता था। कभी कभी वह किसी मकान की तरफ देखता और आश्चर्य करने लगता कि इसकी बनावट इतनी अद्भुत क्यो है? कभी उसे इसी बात पर ताज्जुब होता था कि कोचवान और वन्यूशा, जो उससे इतने भिन्न हैं, पास पास क्यो बैठे है, और जमी हुई बर्फ पर गाडी के चलने से अगल-बगल वाले घोडो के इधर-उधर हिलने-डुलने के कारण मुझे, कोचवान तथा वन्यूशा

को धक्के क्यों लगते है? उसने फिर दोहराया "कितने अच्छे! . सुन्दर!" फिर उसके मुख से निकला–"वहुत खूव! वाह!" पर साथ ही उसे आश्चर्य भी हुआ कि वह यह सव क्या ऊलजलूल वक रहा है। उसने मन ही मन प्रश्न किया, "क्या मैंने अधिक पी ली है?" उसने शराव की कुछ वोतलें गले में उतारी जरूर थी, परन्तु यह अकेली शराव ही न थी जिसका ओलेनिन पर असर हो रहा था। चलते समय कहे गये मित्रता के, आत्मीयता के, शिष्टाचार के तथा सहज आवेग के सभी शव्द उसे याद आने लगे। उसे याद आ रहा था कि उस समय मैंने किन किन से हाथ मिलाया था, किसने मुझे किस दृष्टि से देखा था और वे मौन क्षण कितनी व्यग्रता से वीते थे। उसके कान में "नमस्कार मित्या," ये शव्द अव भी वरावर गूंज रहे थे। उसे याद आ रहा था कि मैंने ये शव्द उस समय सुने थे जव मैं स्लेज में वैठ चुका था। उसे याद आ रहा था कि मैंने स्वय कितनी स्पष्टवादिता दिखाई थी। और इन सव वातों का उसके लिए विशेष महत्व था। ऐसा लगता था कि न केवल मित्र और सम्वन्धी, न केवल वे लोग जो उसके प्रति उदासीन रहते थे परन्तु वे लोग भी उसपर मुग्ध थे जो उसे नहीं चाहते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि उसके प्रस्थान करने से पूर्व लोगों ने उसे क्षमा कर दिया है जैसे कि साधारणतया लोग उस व्यक्ति को क्षमा करते है जिसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया हो या जिसकी मृत्यु निकट हो।

"शायद मैं काकेशिया से न लौटूं," उसने सोचा। और उसे लगा कि वह अपने मित्रों को प्यार करता है, और उनके अलावा किसी एक और व्यक्ति को भी। उसे स्वय अपने पर खेद हो रहा था। परन्तु यह उसका अपने मित्रों के प्रति वह प्रेम न था जिसने उसके हृदय को इतना उद्वेलित कर दिया था कि वह उन अनर्गल शव्दों पर भी काबू न

पा सका जो स्वत उसके मुँह तक आ चुके थे। और न यह किसी स्त्री का ही प्यार था (उसने अभी तक किसी स्त्री से प्रेम न किया था) जिसके कारण उसकी मानसिक स्थिति ही ऐसी हो गयी थी। वह स्वत अपने को प्यार करता था ऐसा प्यार जिसमें आशा थी, जिसमें उष्णता थी। वह नन्हा-सा प्यार जो उसकी आत्मा के समस्त उदात्त रूप के लिए था (और उस समय उसे जान पडा कि उसमें उदात्त रूप के अतिरिक्त और कुछ नही है) उसे विवश कर रहा था कि वह क्रदन और अनर्गल प्रलाप कर उठे।

ओलेनिन एक नवयुवक था। उसने कभी विश्वविद्यालय की पढाई पूरी नही की, कही नौकरी नही की (हाँ, किसी सरकारी या ऐसे ही किसी दफ्तर में नाममात्र के लिए कभी किसी जगह पर ज़रूर रहा था)। उसने अपनी आधी जायदाद खुराफातो में ही फूंक दी थी। इस समय वह चौबीस वर्ष का हो चुका था और अभी तक न तो किसी काम पर लगा था और न जीविका का ही कोई सहारा ढूंढ सका था। वह एक ऐसा आदमी था जिसे मास्को के समाज में छैला कहा जाता है।

अट्ठारह वर्ष की अवस्था में वह स्वच्छन्द हो गया ठीक उसी प्रकार जैसे १८४०-५० में वे सभ्रान्त रूसी युवक हो जाते थे जिनकी बाल्यावस्था में उनके माता-पिता इस ससार से कूच कर जाते थे। अब उसके लिए न कोई शारीरिक बन्धन था, न नैतिक। वह इच्छानुसार जो चाहता कर सकता था। न उसे किसी की जरूरत थी और न वह किसी से बँधा ही था। न उसके लिए परिवार था, न पितृभूमि, न धर्म, न आवश्यकताएँ। न वह किसी में विश्वास करता और न किसी को स्वीकार करता। परन्तु वह नीरस और बुझा बुझा-सा रहनेवाला नवयुवक न था। वह बकवादी तो न था, हाँ, आसानी से मान जानेवाला व्यक्ति जरूर था। वह इस नतीजे पर पहुँचा था कि दुनिया में प्रेम नाम की कोई चीज़ नही। फिर भी किसी युवा और आकर्षक स्त्री को सामने देख कर उसका हृदय उसके वश में न

रहता। बहुत पहले से ही उसे यह विश्वास होने लगा था कि इज्जत और हैसियत सब वाहियात है। फिर भी जब एक नृत्य-समारोह के अवसर पर राजकुमार मेजियम उसके पास आया और उसने उससे शिष्टता से बातें की उस समय ओलेनिन बडा प्रसन्न हुआ। वह अपनी अन्त प्रेरणा के समक्ष तभी झुकता जब उसकी स्वच्छन्दता में बाधा न पडती।

जब कभी वह किसी बात से प्रभावित होता और उसे यह पता चल जाता कि इसके परिणामस्वरूप उसे परिश्रम और संघर्ष – जीवन से साधारण-सा संघर्ष भी – करना होगा तो स्वाभाविक प्रवृत्तिवश वह शीघ्र ही इस बात का प्रयत्न करता कि जिस क्रियाशीलता की ओर वह बढ रहा है अथवा जो अप्रिय अनुभूति उसे हो रही है उससे मुक्त होकर वह पुन अपनी स्वच्छन्दता प्राप्त करे। इस प्रकार उसने सामाजिक जीवन, लोक-सेवा, कृषि, संगीत, यहाँ तक कि स्त्रियों से प्रेम करने के उस क्षेत्र में भी प्रयोग किये जिनमें स्वय उसका अपना विश्वास न था। संगीत के लिए तो एक बार उसने अपना सारा जीवन ही लगा देने की ठान ली थी। वह सोचता रहा, विचारता रहा – मैं युवावस्था की उस अद्भुत शक्ति का उपयोग कैसे करूँ जो मनुष्य को जीवन में केवल एक बार प्राप्त होती है, उस शक्ति का नही जिसका सम्बन्ध मनुष्य के बौद्धिक विकास, उसकी अनुभूतियो अथवा उसके शिक्षण से होता है अपितु उस सहज आवेग का जिससे मनुष्य अपना, अथवा – जैसा उसे प्रतीत हो रहा था – अखिल ब्रह्माड का रूप इच्छानुसार निर्मित कर सकता है चाहे वह कला के क्षेत्र में हो, या विज्ञान के, नारी-प्रेम के क्षेत्र में हो या व्यवहारिकता के। यह ठीक है कि कुछ लोगो में इस प्रेरक-शक्ति का पूर्णत अभाव रहता है और जब वे जीवन में प्रवेश करते है उस समय अपना सिर उसी जुए में डाल देते है जिसे वे पहले-पहल देखते है और फिर पूरी ईमानदारी के साथ अपने शेष जीवन में उसी के साथ सडते रहते है।

परन्तु ओलेनिन को इस बात का पूर्ण ज्ञान था कि मुझमें सर्वप्रभुता सम्पन्न 'यौवन-देवता' विद्यमान है, वह क्षमता है जिससे सम्पूर्ण अस्तित्व को आदर्श या स्फूर्ति में परिवर्तित किया जा सकता है, इच्छा और क्रिया की सम्पूर्ण शक्ति है, वह सामर्थ्य है जिसके बल पर क्यो और कहाँ का विचार किये बिना गहरे पाताल तक में प्रवेश किया जा सकता है। वह इनसे अनुप्राणित होता था, उसे इनपर गर्व होता था और इनके कारण अज्ञात रूप से उसे प्रसन्नता होती थी। उस समय तक उसने स्वय अपने को प्रेम किया था। वह अपने से प्रेम करने के लिए विवश था क्योकि उसे विश्वास था कि वह अन्य किसी चीज़ का नहीं एकमात्र श्रेष्ठता का प्रतीक है। उसे निर्भ्रान्त होने का कभी कोई अवसर प्राप्त नही हुआ था। मास्को छोडने पर वह उस युवक जैसा प्रसन्न था, जो पिछली त्रुटियो के प्रति जागरूक रहते हुए अपने से कहा करता है "वह यथार्थता न थी," जो कुछ पहले हो चुका है वह केवल आकस्मिक एव महत्त्वहीन था। उस समय तक वास्तव में उसने जीवित रहने का कोई प्रयत्न नहीं किया था। परन्तु, अब, मास्को से प्रस्थान कर चुकने के पश्चात् एक नया जीवन आरम्भ हो रहा था—ऐसा जीवन जिसमें पिछली त्रुटियाँ न होगी, पश्चात्ताप की भावनाएँ न होगी और हर्षोल्लास को छोडकर निश्चय ही और कुछ न होगा।

लम्बे सफर में सदा यही होता है—जब तक पहले कुछ स्टेशन पार नहीं हो जाते तब तक ध्यान केवल उसी स्थान पर रहता है जिसे यात्री पहले-पहल छोडता है, परन्तु मार्ग पर पहला प्रभात होते ही वह गन्तव्य स्थान के सम्बन्ध में विचार करने लगता है और फिर हवाई किले बनाना शुरू कर देता है। यही बात ओलेनिन के साथ हुई।

नगर पीछे छूट जाने के पश्चात् उसने बर्फ से ढके मैदानो की ओर देखा और उनके बीच अकेले अपने को ही पाकर उसे असीम उल्लास की अनुभूति हुई। अपने को कोट में समेटते हुए वह स्लेज-तल पर शान्त पडा

रहा और न जाने किस समय उसकी आँख लग गई। मित्रों से विछुड़ने का उसे वड़ा रंज था। मास्को में विताये हुए आखिरी जाड़े की स्मृतियाँ और अस्पष्ट विचारों तथा पश्चात्तापों से परिपूर्ण विगत काल के धुँधले चित्र उसकी कल्पना के समक्ष निर्वाध रूप में साकार हो उठे थे।

उसे अपने उस मित्र की याद आई जो उसे विदा करने आया था और याद आई उस लड़की के साथ अपने सम्बन्धों की जिसके वारे में दोस्तों के वीच इतनी चर्चा हुई थी। लड़की धनी थी। "वह मुझसे प्रेम करती है – यह जानते हुए वह उसे कैसे प्यार कर सकता है?" उसने विचार किया और कुत्सित सन्देहों से उसका मन भर गया। "अगर सोचा जाय तो पता लगेगा कि मनुष्य में वेईमानी ही वहुत है।" तव उसके सामने सहसा यह प्रश्न खड़ा हो गया कि "सचमुच वात क्या है कि मैंने कभी प्यार नहीं किया? सभी कहते हैं कि मैंने प्यार नहीं किया। कहीं ऐसा तो नहीं कि मैं सनकी हूँ?" और उसकी सारी लालसाएँ उसकी कल्पना के सामने साकार होने लगीं। उसे याद आया कि मैंने समाज में कैसे प्रवेश किया था। उसे अपने मित्र की उस वहन की भी याद आई जिसके साथ कई कई शामें उसने मेज़ पर गुज़ारी थीं। उसकी कल्पना के समक्ष कढ़ाई करती हुई उसकी नाजुक अंगुलियाँ और उसके सुन्दर मुखड़े का वह निचला भाग नाच रहा था जो उस दिन मेज़ पर रखे हुए लैम्प की रोशनी में दमक उठा था। उसे उसके साथ अपनी लम्बी लम्बी वातें याद आईं जो 'लकड़ी की अग्नि शिखा को अधिक से अधिक देर तक सुरक्षित रखने' के खेल की भाँति वढ़ती जाती थीं। और यह भी याद आया कि उस समय मैं कितना विचित्र था, कितना विवश था और इसके कारण मेरे अन्तस् में विद्रोह की कितनी तीव्रता थी। कोई आवाज़ उसके कानों में कह जाती "वह यह नहीं है, वह यह नहीं है" और यही हुआ। उसे एक नृत्य-समारोह की याद आई जिसमें उसने सुन्दरी द के साथ नृत्य किया था। "उस रात मैंने कितना प्यार किया

था और मैं कितना निहाल था! दूसरे दिन प्रातःकाल जब मैं जागा और मैंने अपने को फिर स्वतंत्र पाया उस समय मुझे कितनी पीडा और कितना क्लेश हुआ था! प्रेम आकर मेरे हाथ-पैर क्यों नहीं बाँध देता?” उसने विचार किया। “नहीं, प्रेम जैसी कोई चीज़ नहीं! मेरी पडोसिन मुझसे भी कहा करती थी, जैसा कि उसने दुब्रोविन और मार्शल से कहा था, कि उसे सितारों में प्रेम है। क्या यह भी प्रेम नहीं है।”

और उसे अपनी खेतीबारी तथा गाँव में किये गये अन्य कार्यों की याद आ रही थी। इन स्मृतियों में भी ऐसी कोई बात न थी जिसपर मन रम सकता। “क्या मेरे प्रस्थान के बारे में वे लोग बहुत कुछ कहेंगे?” उसे ख्याल आया। परन्तु ये ‘वे लोग’ हैं कौन वह न समझ सका। बाद में उसे एक ख्याल और आया जिसने उसे चौंका दिया और अट-सट बकने को विवश कर दिया। उसे दर्जी म० कपेल की याद आई, जिसके अभी भी ६७८ रूबल देने बाकी थे और उसे वे शब्द भी याद आये जिनमें उसने दर्जी से अगले वर्ष तक इन्तज़ार करने की प्रार्थना की थी। इन शब्दों से दर्जी के चेहरे पर परेशानी और निराशा दीख पडने लगी थी। यह असह्य विचार दिमाग से निकाल देने के लिए उसने “हे भगवान, हे भगवान” ये शब्द दुहरा दिए। “और इन सबके होते हुए भी वह मुझे प्यार करती थी,” उसे उस लडकी की याद आई जिसके बारे में उन्होंने विदाई-भोज के समय बातचीत की थी। “हाँ, यदि मैंने उससे विवाह कर लिया होता तो मैं किसी का कर्ज़दार न रह गया होता। इस समय मुझे वसील्येव का ऋण चुकाना है।” फिर, उसे वह रात याद आई जब उसने क्लब में (उस लडकी को छोडने के तुरन्त बाद) वसील्येव के साथ जुआ खेला था। साथ ही उसे यह भी याद आया कि उसने उससे एक बार और खेलने के लिए गिडगिडाते हुए कहा था और वसील्येव ने बडी बेरहमी के साथ इनकार किया था। “एक साल तक हाथ रोककर खर्च करूँगा और सारे कर्ज़ निपट

जायेंगे। शैतानों को सब कुछ मिल जायेगा" परन्तु इस आश्वासन के होते हुए भी, उसने फिर हिसाब लगाना शुरु कर दिया कि उसे किसका किसका देना है, कितना देना है, कर्जे किन तारीखों पर लिये गये थे और वह कब तक उन्हे चुका देने की आशा करता है। "और मुझे कुछ मोरेल का और कुछ शेवल्ये का भी तो देना है," उसने उस रात की याद करते हुए विचार किया, जब उसपर इतना बडा कर्ज हो गया था। उस रात कुछ जिप्सियो के साथ पीने की होड लगी थी और इसका प्रबन्ध पीटर्सबर्ग के कुछ लोगों, सम्राट के अगरक्षक मास्का ब , एक छटे हुए बूढे घमंडी और राजकुमार द ने किया था। "क्या बात है कि वे भले आदमी इतने आत्म-सतुष्ट है?" उसने विचार किया, "और उन्हे ऐसी कूट मण्डली बनाने का क्या अधिकार, जिसमें वे समझते है, कि दूसरो को शामिल करने के लिए उनकी चाटुकारिता की आवश्यकता है? क्या ऐसा इसलिए कि वे सम्राट के अगरक्षक है? ओफ! हैरानी होती है कि वे दूसरो को बेवकूफ और गधे समझते है। कुछ भी हो मैंने उन्हे बता दिया है कि मुझे उनकी आत्मीयता मे कोई सरोकार नही। यह जरूर है कि जब मेरे स्टेट मैनेजर को पता चलेगा कि सम्राट के कर्नल तथा अगरक्षक मास्का ब से मेरी दोस्ती है तो उसे हैरत होगी। हां, और उस रात सबसे अधिक मैंने ही पी थी और उन जिप्सियो को एक नया गाना सिखाया था और प्रत्येक व्यक्ति ने उसे सुना था। मैंने कितनी ही बेवकूफियां क्यो न की हो फिर भी मैं एक बहुत अच्छा आदमी हूँ।"

प्रात काल तक ओलेनिन तीसरे पडाव पर पहुँच गया था। उसने चाय पी और अपनी गठरियों और सन्दूक उठाने-धरने में वन्यूशा की मदद की। वह अपने सामान के बीच बैठ गया, स्वस्थचित्त और शान्त। उसे मालूम था कि उसकी चीजें कहां कहां है, उसके पास कितना रुपया है और कहां

रखा है, उसका पासपोर्ट और घोड़े तथा सीमा-कर सम्बन्धी कागजात कहाँ हैं। और जब उसे इत्मीनान हो गया कि सारी चीज़ें कायदे से रखी हैं तो वह खिल उठा और उसकी लम्बी यात्रा मनोरजन के लिए किया जानेवाला पर्यटन मात्र बनकर रह गई।

पूरे सुबह और दोपहर तक वह यही हिसाब लगाता रहा कि मैं कितने मील चल चुका हूँ, अगला पड़ाव कितने मील बाद पड़ेगा, पहला नगर कितनी दूर है, जिस स्थान पर मै मध्याह्न का खाना खाऊँगा या अपराह्न की चाय पिऊँगा वह यहाँ से कितने मील है, स्तावरोपोल कितनी दूर है, और इस समय तक मैं कुल यात्रा का कौनसा भाग चल चुका हूँ। उसने यह भी हिसाब लगा लिया कि मेरे पास कितना रुपया है, कितना रह जायेगा, सारे कर्ज़ों को चुकाने के लिए कितने रुपये की ज़रूरत होगी और आमदनी का कौनसा भाग म प्रति मास खर्च करूँगा। चाय के पश्चात् शाम के समय उसने हिसाब लगाया कि स्तावरोपोल तक पहुँचने के लिए मुझे कुल यात्रा का सात बटे ग्यारह भाग और चलना होगा, अपने कर्ज़ों को पूरा करने के लिए सात महीनो तक हाथ रोककर खर्च करना होगा और इसके लिए अपनी कुल सम्पत्ति के आठवे भाग की ज़रूरत होगी। इस प्रकार अपने दिमाग को कुछ शान्त कर लेने के पश्चात् उसने फिर अपना कोट लपेटा और स्लेज मे पड़कर ऊँघने लगा। अब उसकी कल्पना उसे भविष्य की ओर ले गई—काकेशिया में। उसके भविष्य के स्वप्न अमलत-बेक जैसे नायकों, चेरकेसियन महिलाओ, पर्वतो, चट्टानो, भयानक तरगो और विपत्तियो मे टकराने लगे। उसके लिए ये सब चीजें अभी अस्पष्ट और धूमिल थीं परन्तु यश की चाह और मृत्यु के खतरे ने उसमें भविष्य के लिए एक उत्कट आकाक्षा पैदा कर दी थी। अब वह अपने अभूतपूर्व साहस और सबको चकित कर देनेवाली शक्ति से अनगिनत पर्वतीयो को या तो मौत के घाट

ार देता है या उन्हें अपने अधिकार में कर लेता है, अब वह खुद एक पर्वतीय
और रूसियो के विरुद्ध अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए लड रहा है।
से ही उसकी कल्पना के आगे कोई निश्चित चित्र आता कि उसे मास्को
चिरपरिचित चेहरे दिखाई देने लगते। साश्का व रूसियो या पर्वतीयो के
ाथ उसके विरुद्ध लड रहा है। स्वय दर्जी म० कपेल ने विचित्र ढग से
जेता की सफलताओ में हाथ बँटाया है। और जब इन सब विचारो के
ाथ उसे यह याद आता कि पहले उसने कितनी बार अपमान सहे है,
ितनी बार कमजोरियाँ दिखाई है, कितनी बार गलतियाँ की है तो ये
ृतियाँ भी उसे दुखद न लगती। यह स्पष्ट था कि वहाँ पर्वतो, झरनो,
न्दर चेरकेसियनो और खतरो के बीच ऐसी गलतियाँ न दुहराई जायेंगी।
क बार अपने सामने गलतियाँ स्वीकार कर लेने के बाद फिर कुछ नही
ह जाता। परन्तु इस युवक के भविष्य-स्वप्नो मे एक कल्पना और छाई
ई थी जो मधुरतम थी—स्त्री की कल्पना। और वहाँ, पर्वतो के बीच, वह
ी एक चेरकेसियन गुलाम के रूप में दिखाई दी—वह सुन्दर थी और अपने
म्बे घुघराले बालो तथा सलज्ज चितवन में और भी आकर्षक लग रही
ी। अब उसकी कल्पना के आगे पर्वतो के बीच एक एकाकी झोपडी थी
हाँ द्वार पर खडी वह उसकी प्रतीक्षा करती है और वह स्वय
का-माँदा, धूल-धूसरित, रक्त-रजित, यश रजित उसके पास आता है।
सके चुम्बनो के अभिज्ञान के साथ उसके बच्चे, उसकी मधुर बोली और
सकी विनयशीलता सभी कुछ तो वह जानता है—वह मोहक तो है परन्तु
शिक्षित, जगली और रूखी है। जाडे की लम्बी लम्बी शामो में वह उसे
ढाने बैठता है। उसमें बुद्धि है, प्रतिभा है और वह अपने जरूरत भर का
ारा ज्ञान शीघ्र ही प्राप्त कर लेती है। क्यो नही? वह बडी आसानी से
देशी भाषाएँ सीख सकती है, फ्रेंच के बडे बडे ग्रन्थ पढ और समझ सकती
, उदाहरण के लिए "नोत्र दाम दे पारिस" पढकर उसे सच्चा आनन्द

मिलेगा इसमें सन्देह नहीं। वह फ्रेंच भी बोल सकती है। ड्राइंग रूम में उसकी सहज शान का क्या कहना! ऊँचे से ऊँचे समाज की महिला भी उसका मुकाबला नहीं कर सकती। वह गा सकती है—आसानी से, मनमोहक गान, करुण स्वरों में "अरे, यह सब क्या बेवकूफी है!" उसने मन ही मन कहा। परन्तु यहाँ अब एक पड़ाव आ चुका था और उसे दूसरी स्लेज बदलनी थी, और बख्शीशें भी देनी थी। परन्तु फिर उसकी कल्पना उसी 'बेवकूफी' की ओर दौड़ी जिसे वह अभी अभी छोड़ चुका था। और फिर चेर्केसियन सुन्दरियाँ, यश की प्राप्ति, रूस की वापसी, अंगरक्षक के रूप में उसकी नियुक्ति और एक अति सुन्दर पत्नी उसकी कल्पना के समक्ष साकार हो उठीं। "परन्तु प्रेम के आगे किस चीज की हस्ती!" उसने मन ही मन कहा, "नेकनामी! सब बेकार की बात है। परन्तु ६७८ रूबल? और जीते हुए प्रदेश मुझे उससे भी अधिक धन देंगे जिसकी मुझे सारी जिन्दगी जरूरत पड़ सकती है? हाँ, सब का सब धन स्वयं मैं ही रख लूँ यह ठीक न होगा। इसे बाँटना भी तो चाहिए। परन्तु किसे? हाँ, ६७८ रूबल कपेल को। और फिर बाद में देखा जावेगा" अस्पष्ट धुंधले चित्र उसके दिमाग में चक्कर काट रहे हैं और उसकी मदभरी मीठी नींद या तो वन्यूशा की आवाज से टूटती है या स्लेज के रुकने से। शायद ही उसे पता लगा हो, परन्तु उसने स्लेज बदली और फिर राह पकड़ी।

अगले दिन प्रातःकाल से फिर वही चक्र शुरू हुआ—पहले जैसे पड़ाव, चाय पीना, दौड़ते हुए घोड़ों की काठी, वन्यूशा से वही थोड़ी-सी बातचीत, वैसे ही अस्पष्ट स्वप्न और झपकियाँ और रात्रि में थकावट के बाद खर्राटों वाली गहरी जैसी नींद।

ओलेनिन मध्य रूस से जितनी ही दूर आगे बढ़ता गया उसकी स्मृतियाँ उतनी ही पीछे छूटती गई और काकेशिया के जितने ही समीप पहुँचता गया उसका हृदय उतना ही हल्का होता गया। "मैं हमेशा हमेशा के लिए दूर रहूँगा और समाज मे अपना मुंह दिखाने कभी न लौटूंगा," यह विचार भी उसके मस्तिष्क में पैदा हो जाता, "जिन व्यक्तियो को मैं यहाँ देख रहा हूँ वे सच्चे अर्थ में व्यक्ति नही है। इनमे से कोई मुझे नही जानता और कोई भी मास्को के उस समाज में नही पहुँच सकता जहाँ मैं था। मेरी पिछली जिन्दगी के बारे में किसी को कुछ पता नही चल सकता। और उस समाज का कोई भी प्राणी कभी यह न जान सकेगा कि इन लोगो के बीच रहता हुआ मैं क्या कर रहा हूँ।" सड़को पर वह जिन रूखे व्यक्तियो से मिलता उनके बीच उसे यह अनुभूति होती मानो वह अपने सम्पूर्ण विगत जीवन से नाता तोड़ चुका है। इन व्यक्तियो को वह उस अर्थ में व्यक्ति नही समझता था जिसमें उसके मास्को के परिचित समझे जाते थे। यह एक नई अनुभूति थी।

जो जितना ही रूक्ष होता और उसमें सभ्यता के चिन्ह जितने ही कम होते, वह अपने को उतना ही स्वतन्त्र अनुभव करता। स्तावरोपोल से होकर उसे जाना था। यहाँ ज़रूर उसे कुछ उलझन हुई थी। यहाँ के नाम-पटो को, जिनमे से कुछ फ्रेंच भाषा में भी थे, गाड़ियो मे आने-जानेवाली स्त्रियों को, बाजारो मे खड़ी गाड़ियो, और लबादा पहने तथा हैट लगाकर यात्रियो को घूरनेवाले एक भले आदमी को देखकर वह घबड़ा-सा गया था। "शायद ये लोग मेरे कुछ परिचितो को जानते है," उसने विचार किया, और एक बार फिर उसकी कल्पना के आगे क्लब, दर्जी, ताश, समाज सभी कुछ घूमने लगे। परन्तु स्तावरोपोल

निकल जाने के पश्चात् फिर सब कुछ ठीक हो गया। यह वन्य स्थान था, सुन्दर था और यहाँ की प्रकृति में युद्धप्रियता प्रतिबिम्बित हो रही थी। ओलेनिन को अधिक से अधिक प्रसन्नता होने लगी। सभी कज़्ज़ाक, गाडीवान और पडाव-रक्षक उसे सीधे-सादे लगे, जिनके साथ वह हँसी-मज़ाक़ कर सकता था और बिना यह सोच-विचार के कि वे किस श्रेणी के हैं उनसे खुलकर और स्वतन्त्रतापूर्वक बातचीत कर सकता था। वे सभी इन्सान थे जिन्हें ओलेनिन चाहता था, प्यार करता था। और, वे सब भी उसे दोस्त की तरह मानते और उसका आदर करते थे।

दोन कज़्ज़ाकों के प्रान्त में उसकी स्लेज बदल दी गई थी और अब वह पहियोंवाली एक गाडी में सफर कर रहा था। स्तावरोपोल के बाद इतनी अधिक गर्मी पडने लगी कि ओलेनिन को अपना भारी कोट उतारकर एक ओर रख देना पडा। वसन्त का आगमन हो चुका था और यह ओलेनिन के लिए एक मादक अनुभूति थी। रात में उसे कज़्ज़ाक गाँवों में बाहर नहीं जाने दिया गया था क्योंकि लोगों का कहना था कि शाम को यात्रा करना ख़तरे से खाली नहीं है। वन्यूशा की व्याकुलता बढने लगी और दोनों ने ओइका-गाडी* में बैठे बैठे अपनी भरी हुई बन्दूक सम्भाल ली। ओलेनिन को और भी प्रसन्नता हुई। एक पडाव पर पोस्टमास्टर ने उसे बताया कि हाल ही में राजमार्ग पर एक निर्मम हत्या हुई है। अब उन्हें सशस्त्र लोग मिलने लगे थे। "हाँ, अब यह आया!" ओलेनिन ने विचार किया और वह उन हिमावृत्त पर्वतशिखरों को देखने की आस लगाये रहा जिनका उल्लेख वह पीछे कई बार सुन चुका था। एक दिन सायंकाल नगई गाडीवान ने, बादलों में ढके हुए पहाडों की ओर अपने चाबुक से संकेत भी किया। ओलेनिन ने उत्सुकतापूर्वक उनकी ओर देखा—वातावरण शान्त था और पर्वत प्राय

---

* तीन घोडोंवाली एक गाडी रूस में 'ओइका' कहलाती है।

वादलो के पीछे छिपे थे। ओलेनिन ने कुछ भूरे-सफेद तथा रोयेंदार-जैसे दृश्य देखे थे परन्तु कोशिश करने पर भी वह पर्वतों में ऐसी कोई सुरम्य और आकर्षक छटा न देख सका जिसके बारे में उसने प्राय पढा और सुना था। उसे पर्वत तथा वादल दोनो एक जैसे ही लग रहे थे और वह सोच रहा था कि हिम शिखरो का विशिष्ट सौन्दर्य, जिसके वारे मे उसे कितनी ही वार वताया गया था, वाख का सगीत या नारी के प्रति प्रेम जैसा ही कोई काल्पनिक आविष्कार है। और उसे न तो बाख के सगीत में ही कोई विश्वास था न नारी के प्रति प्रेम में ही। अतएव उसने पर्वतो की ओर देखना छोड दिया।

दूसरे दिन प्रात काल जव भीनी भीनी वयार की सुरभि से ओइका-गाडी में उसकी नीद टूटी तो उसने दाहिनी ओर एक उडती हुई नज़र डाली। प्रभात अपना सौन्दर्य विखेर चुका था। सहसा उसने आँखें ऊपर उठाई और लगभग वीस कदम की दूरी पर उसे भूधराकार आकृतियाँ दिखाई पडी। ऐसा प्रतीत होता कि सुदूर आकाश से उनके शिखरो की आकर्षक रूपरेखाएँ अपना सम्पूर्ण सौन्दर्य अपने में समेटे पृथ्वी पर उतर रही है। जव उसने अपने और उन आकृतियों तथा आकाश के वीच की दूरी पर ध्यान दिया और पर्वतो की विशालता पर एक निगाह डाली तथा उन अपूर्व सौन्दर्य की निस्सीमता का अनुभव किया तो उसे यह सोचकर भय होने लगा कि यह इन्द्रजाल है, स्वप्न है। उसने आँखें मलीं और एक वार सारे शरीर को झटका, यह देखने के लिए कि कही वह सो तो नही रहा है। परन्तु वे पर्वत ही थे अपनी जगह पर अटल, अविचल, स्थिर।

"क्या है वह? यह क्या है?" उसने गाडीवान से पूछा।

"क्यों? पहाड ही तो है," नगई गाडीवान ने अन्यमनस्कता से जवाब दिया।

"मै तो इन्हे बडी देर से देख रहा हूँ," वन्यूशा ने कहा, "क्या वे सुन्दर नही? घर पर तो कोई विश्वास भी न करेगा।"

ओइका-गाडी चिकनी सडक पर सर्राटे से चली जा रही थी और इसी कारण पहाड भी क्षितिज से सटकर भागते से दिखाई पड रहे थे। पहाडो के गुलाबी शृग उदय होते हुए सूर्य के प्रकाश में जगमगा रहे थे। पहले-पहल ओलेनिन पहाडो को देखकर दग रह गया परन्तु बाद में उसे बडी प्रसन्नता हुई। वह हिमावृत शृखलाओ की ओर बराबर टकटकी लगाये देखता रहा। शृखलाएँ भी अपनी सम्पूर्ण सुषमा लिये मीलो तक फैली हुई थी। उनका प्रारम्भ मैदानो से ही हो गया था। ओलेनिन देर तक इस प्राकृतिक सौन्दर्य का पान करता रहा और अन्तत उसे विश्वास हो गया कि मै पर्वतो और शिखरो के बीच आ गया हूँ। उस क्षण से जो कुछ भी उसने देखा, जो कुछ भी उसने सोचा-विचारा और जो कुछ अनुभव किया उससे वह स्वय महान् हो गया, विराट् हो गया, पर्वतो के समकक्ष हो गया। अब उसकी मास्को की स्मृतियाँ, लज्जा और पश्चात्ताप की अनुभूतियाँ और काकेशिया के बारे में उसके तुच्छ क्षुद्र स्वप्न समाप्त हो गये और फिर उनकी कभी पुनरावृत्ति नही हुई। "अब उसका आरम्भ होने लगा है" ऐसा लगता था कोई पवित्रवाणी उसके कानो में पड रही है। सडक और तेरेक दूर ही से दिखाई पड रहे थे। अब कज्जाक गाँव तथा वहाँ के निवासी उसके लिए केवल सुनी-सुनायी चीज ही न रह गये थे। उसने आकाश की ओर देखा और उसे पहाडो की याद आई। उसने अपनी तथा वन्यूशा की ओर देखा और फिर पर्वतो पर ध्यान केन्द्रित किया दो कज्जाक घोडो पर निकल गये। उनकी बन्दूके उनके कन्धो मे झूल रही थी और उनके घोडो के सफेद पैर उठने, पडने, आगे बढने एक विचित्र ध्वनि पैदा कर रहे थे और पहाड! तेरेक के पीछे एक चेचेन ग्राम मे धुआँ उठ रहा है और पहाड! उदय होता हुआ सूर्य तेरेक पर चमक रहा है, उस तेरेक पर जो नरकट की

झाडियो का आलिगन करती हुई घूम गई है और पहाड! गाँव मे एक गाडी चली आ रही है और स्त्रियाँ, सुन्दरियाँ, आ-जा रही है और पहाड! अब्रेक* घोडो पर बैठे धीरे धीरे खुले मैदान में चक्कर लगा रहे है। और मै हूँ कि उन्ही के बीच गाडी पर बैठा हुआ आगे बढ रहा हूँ। और, मुझे उनमे तनिक भी डर नही लगता! मेरे पास बन्दूक है, ताकत है, जवानी है और पहाड!

४

तेरेक तट के पूरे इलाके (लगभग अस्सी मील) में ग्रेबेन कज्जाकों के गाँव है। सभी गाँव, ग्रामक्षेत्रो अथवा वहाँ के निवासियो की दृष्टि मे, प्राय एक जैसे है। तेरेक, पहाडी जातियो को कज्जाकों की दुनिया से अलग करती है। नदी चौडी और शान्त है, परन्तु है गन्दी और प्रवाहयुक्त। अपने निचले तथा नरकटो के झाड-झखाडो से युक्त दाहिने तट पर भूरे रग की रेत की तहे बिछाती और ढालू, कम ऊँचे, बायें तट को, जहाँ सैकडो वर्ष पुराने ओक के वृक्ष आज भी मौजूद है, धोती और तटवर्ती घनी झाडियो को सीचती हुई, तेरेक बहती जा रही है। दाहिने तट पर कुछ गाँव बसे है जहाँ चेचेन रहते है। वे सन्तुष्ट तो जरूर है परन्तु उनका हृदय शान्त नही है। बायें किनारे पर नदी से लगभग आधे मील दूर कज्जाकों के कई गाँव है। गाँव प्राय एक दूसरे से सात सात या आठ आठ मील की दूरी पर है। पुराने जमाने में इनमे से अनेक गाँव नदी-तट पर ही बसे थे। परन्तु, वर्ष प्रति वर्ष तेरेक के उत्तर की ओर बढते रहने के कारण उसके किनारे

---

* उपद्रवी चेचेन जो लूटमार करने के लिए तेरेक के इसी तट में घुस आये थे।

वह गये। अब वहाँ पुराने गाँवो के ध्वसावशेष ही रह गये हैं। वहाँ आड़ू, वेर, जामुन और चिनार के वृक्ष तथा वनैले अगूरो की लताएँ अब भी मिलती है। इस समय वहाँ कोई नही रहता। हाँ, हिरन, भेडिये, खरगोश और तीतर आज भी इस स्थान को नही भूले है। वे इसे प्यार करते है और यही रहते है। अनेक गाँवो को मिलाती हुई एक सडक ऐसी दिखाई पडती है मानो वन्दूक से छूटी हुई गोली अपना रास्ता बनाती हुई आगे वढ रही हो। कभी कभी जगलो के कारण इस सडक की दिशा में कुछ व्याघात पड जाता है। सडक के किनारे कज्ज़ाको के खेमे हैं जहाँ चौकसी का पूरा इन्तजाम है। वहाँ चौकीदारो की भी कमी नही। उर्वरा वन्य भूमि की लगभग सात सौ गज़ लम्बी सकरी पट्टी पर कज्ज़ाको का अधिकार है। इसके उत्तर मे नगई अथवा मज़दोक स्टेपी के रेत के टीले आरम्भ हो जाते है जो सुदूर उत्तर तक फैले हुए भगवान जाने कहाँ तक चले गये हैं—तुर्कमेन में, अस्त्राख़ान में या किरघीज़-कैसक स्टेपी में। तेरेक के उस पार दक्षिण में महान चेचना पर्वत, कोचकलिकोव्स्की पहाडियाँ, काला पर्वत, फिर कोई पर्वत श्रेणी और अन्त में हिमावृत पहाड हैं जो देखे भर जा सकते है, परन्तु अभी तक पर्वतारोहियो ने उनपर विजय नही पाई। इस उर्वरा पट्टी में वनस्पतियो की प्रचुरता है। यही वहुत प्राचीन काल से एक खूबसूरत रूसी जाति रहती आई है। ये लोग प्राचीन विश्वासकर्त्ताओ* के सम्प्रदाय के हैं और ग्रेवेन कज्ज़ाक कहलाते है।

वहुत प्राचीन काल से इन प्राचीन विश्वासकर्त्ताओ के पूर्वज रूस से भाग कर तेरेक के उस पार चेचेनो के वीच ग्रेवेन पर वस गये थे। ग्रेवेन

---

* प्राचीन विश्वासकर्त्ता उस सम्प्रदाय का एक सामान्य नाम है जो सत्रहवी शताब्दी में रूसी-ग्रीक चर्च से अलग हो गया था—अनु०

महान चेचना के वनपूर्ण पर्वतो की पहली शृखला है। चेचेनो के वीच रहते हुए कज्ज़ाको ने उनसे वैवाहिक सम्वन्ध स्थापित किये और पहाडी जातियो के आचरण तथा रीति-रिवाज अपनाये। परन्तु वे वरावर शुद्ध रूसी भाषा का प्रयोग करते रहे तथा अपने पुराने विश्वासो में अटल रहे। उनके मध्य एक दन्त-कथा चली आती है जो उन्हे आज भी याद है। इसके अनुसार एक वार भयकर जार इवान स्वय तेरेक आया था और उसने उनके पूर्वजो को वुलाकर नदी के इस पार की जमीन देकर उनसे रूस के प्रति मित्रवत् व्यवहार करने का अनुरोध किया था और यह वादा किया था कि वह न तो उनपर अपना शासन लागू करेगा और न उन्हे अपने विश्वासो को वदलने के लिए वाध्य ही करेगा। आज भी कज्ज़ाक परिवारो का कहना है कि उनका तथा चेचेनो का नाते-रिश्ते का सम्वन्ध है। उनकी प्रमुख विशेषताएँ हैं—स्वच्छन्दता, विराम-सुख, लूट-खसोट और युद्ध की चाह। रूसी प्रभाव का अप्रिय पक्ष कभी निर्वाचनो में हस्तक्षेप, गिरजे के घण्टो की जब्ती और उन सैनिक टुकडियो के रूप में देखने को मिल जाता है जो ग्रामक्षेत्रो में तैनात कर दी गई है अथवा वहाँ से होकर गश्त लगाती हुई गुज़रती है।

कज्ज़ाक उस सैनिक की अपेक्षा, जो उसके ग्राम की सुरक्षा के लिए उसके सर पर थोपा गया है परन्तु जिसने धूम्रपान करके उसकी झोपडी को अपवित्र कर दिया है, उस जिगीत* पार्वतीय से कम घृणा करता है जिसने सम्भवत उसके भाई को मौत के घाट उतारा है। वह अपने शत्रु पार्वतीय की इज्ज़त करता है परन्तु सैनिक को घृणा की दृष्टि से देखता है क्योकि सैनिक उसकी निगाह में विदेशी है, अत्याचारी

* चेचेनो मे 'जिगीत' कुछ उसी प्रकार के होते है जिस प्रकार नाल भारतीयो में 'वनवान'। परन्तु इस शब्द का रूढार्थ निपुण घुडसवार है।

है। वास्तविकता यह है कि कज्ज़ाक के दृष्टिकोण से, रूसी किसान विदेशी, जगली और घृणित जीव है जिसका एक नमूना उसे उन फेरीवालो में दिखाई पडता है जो उसके गाँवो में आते है और दूसरा वाहर से आ वसनेवाले उन हीन रूसियो में जिन्हे कज्जाक घृणा से 'ऊन पीटनेवाले' कहता है। उसके लिए सुन्दर वेशभूषा का अर्थ है चेरकेसियन की वेशभूषा। सर्वोत्तम हथियार पार्वतीयो से प्राप्त होते है। इसी प्रकार सर्वोत्तम घोडे भी या तो इन्ही पार्वतीयो से मिलते है अथवा उनके यहाँ से चुरा लिये जाते है। उत्साही कज्ज़ाक हमेशा तातारी भाषा के अपने ज्ञान का प्रदर्शन करना चाहता है और जव मण्डली में शराव पीने लगता है उस समय भी अपने कज्ज़ाक दोस्तो से तातारी वोलता है।

इन सव वातो के होते हुए भी ईसाइयो का यह छोटा-सा फिरका पृथ्वी के एक ऐसे छोटे-से कोने में निस्सहाय पडा है जिसके इर्द-गिर्द अर्द्ध-वहशी मुसलमान जातियाँ और सैनिक है। लेकिन वह वश अपने आपको वडा समुन्नत समझता है और कज्ज़ाको को छोडकर अन्य किसी को मनुष्य ही नही मानता। वह वाकी सभी को घृणा की दृष्टि से देखता है। कज्जाक अपना अधिकाश समय घेरा डालने, युद्ध करने, शिकार खेलने और मछली मारने में व्यतीत करता है। शायद ही कभी वह घर पर कोई काम करता हो। जव वह गाँव में ठहरता है उस समय केवल छुट्टी मनाता है। गाँव में ठहरना प्राय उसके सामान्य कामो के अन्तर्गत नही आता। कज्जाक अपनी शराव खुद वनाता है। पीना उसकी सामान्य आदत नही वल्कि उसके रीति-रिवाजो का एक अग है। जो नही पीता वह अपने धर्म, नियम और समाज का वहिष्कार करनेवाला समझा जाता है। कज्ज़ाक स्त्री को अपने कल्याण की शक्ति समझता है। उसके समाज में आनन्द मनाने का अधिकार केवल अविवाहिता लडकियो को ही है। विवाहिता स्त्री को जवानी से लेकर वुढापे तक अपने पति के लिए काम करना पडता है। कज्ज़ाक अपनी पत्नी

में प्राच्य गुणों—परिश्रम और समर्पण—का विकास देखना चाहता है। शायद इसी कारण स्त्रियों का शारीरिक और मानसिक विकास होता है। और यद्यपि वे, जैसा कि पूर्वीय देशों में है, नाम मात्र को पराधीन रहती हैं फिर भी पाश्चात्य स्त्रियों की अपेक्षा पारिवारिक जीवन में उनका महत्व और प्रभाव कहीं अधिक है। सार्वजनिक जीवन से अलग तथा पुरुषों जैसे कठोर परिश्रम करने के अभ्यास के कारण परिवार में उनका अधिकार और महत्व बहुत बढ़ा-चढ़ा है। जो कज्ज़ाक अपरिचितों के सामने अपनी पत्नी से प्रेमपूर्वक बातें करना या बिना जरूरत बोलना अनुचित समझता है वही जब उसके साथ अकेला रहता है उस समय पत्नी की वरिष्ठता और श्रेष्ठता का लोहा मानता है। उसका घर, उसकी सम्पत्ति, उसका सब कुछ केवल उसकी पत्नी की मेहनत और देखरेख के कारण ही सुव्यवस्थित रहता है। यद्यपि उसका निश्चित विश्वास है कि मेहनत करना कज्ज़ाक के लिए अपमानजनक है,—मेहनत या तो नगई गुलाम के लिए उचित है अथवा स्त्री के लिए—फिर भी वह यह बात भली भाँति जानता है कि उसके काम आनेवाली प्रत्येक वस्तु, जिसे वह अपनी कह सकता है, उसी मेहनत का नतीजा है। और यह केवल स्त्री (माता या पत्नी), जिसे वह अपना गुलाम समझता है, के हाथ की बात है कि वह जब चाहे उसे उसकी अपनी चीजों से वंचित कर दे। इसके अतिरिक्त, पुरुषोचित बड़े बड़े कामों को बराबर करते रहने और सौंपी गई जिम्मेदारियों को निभाने के कारण ग्रेबेन महिलाओं के व्यक्तित्व में असाधारण स्वतन्त्रता और पौरुष का प्रादुर्भाव हुआ है और वे अपनी शारीरिक शक्तियों, सामान्य बुद्धि, सरलता और दृढ़ता का विकास कर सकी हैं। अधिकांशतया महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक मजबूत, अधिक बुद्धि सम्पन्न, अधिक विकसित और अधिक सुन्दर होती हैं। ग्रेबेन महिला की सुन्दरता की एक विशेषता यह है कि उनमें शुद्ध चेरकेसियन प्रकार के चेहरे-मोहरे और उत्तरी महिलाओं

के गठित और सशक्त शरीर का अद्‌भुत समन्वय होता है। कज्जाक महिलाएँ चेरकेसियन वेशभूपा धारण करती हैं—तातारी कोट, वेशमेत*, मुलायम स्लीपर—और रूसियो की भाँति अपने सिर के चारो ओर रूमाल लपेटती हैं। चुस्ती, सफाई, वेशभूषा का शिष्ट सौन्दर्य और झोपडो की सुव्यवस्था उनके आचार-व्यवहार का एक अग है—और उनके लिए आवश्यक है।

पुरुपो के साथ अपने सम्बन्धो में स्त्रियो को, और विशेप रूप से अविवाहिता लडकियो को, पूरी स्वतन्त्रता है।

नवोमलिन्स्काया ग्रेवेन कज्जाको का सबसे महत्वपूर्ण ग्राम है। अन्य सभी स्थानो की अपेक्षा प्राचीन ग्रेवेन जनता के रीति-रिवाज यही सबसे अधिक सुरक्षित रहे है। यहाँ की स्त्रियाँ अतीत काल से ही अपने सौन्दर्य के लिए काकेशिया भर में प्रख्यात रही हैं। अगूर के वाग, फलोद्यान, तरवूज और लौकी की खेती, मछली मारना, शिकार, मक्का तथा मोटे अनाज की पैदावार और युद्ध से प्राप्त लूट का माल यही कज्जाक की जीविका के साधन है। नवोमलिन्स्काया गाँव तेरेक से प्राय तीन मील पर है। गांव तथा नदी के वीच एक घना जगल पडता है। गाँव से होकर जानेवाली सडक के एक ओर नदी और दूसरी ओर अगूर के वाग और फलोद्यान है जिनके पीछे नगई स्टेपी के रेतीले टीले दीख पडते है। गाँव के चारो ओर मिट्टी के ढेर तथा गोखरू की घनी झाडियाँ है। गाँव में एक ऊचे फाटक से होकर प्रवेश किया जाता है। यह फाटक दो खम्भो पर मढा है जिसके ऊपर नरकटो की घास-फूस की एक छत-सी है। इसके पास ही एक काठ की गाडी पर एक वृत्ताकार तोप रखी है जिसे किसी जमाने में कज्जाक युद्ध-स्थल से लूट लाये थे। लगभग सौ साल से गोलेवारी के लिए इसका इस्तेमाल नहीं किया गया है। एक

---

* आर्मीनोदार एक तातारी कमीज।

वर्दीधारी कज्ज़ाक चौकीदार तलवार बन्दूक लेकर कभी कभी फाटक के पास खड़ा होता है और गुज़रते हुए किसी अफसर को कभी कभी सलाम कर लेता है।

फाटक की छत के नीचे एक सफेद बोर्ड पर काले अक्षरों में लिखा हुआ है—घर २६६, पुरुष ८९७, स्त्रियाँ १०१२। कज्ज़ाकों के मकान ज़मीन से दो या तीन फुट की उंचाई पर लकड़ी के लट्ठों पर बने हैं। उनपर नरकटों की फूस बिछी है और दीवारों के ऊपरी भाग पर कुछ नक्काशी की हुई है। यद्यपि वे नये तो नहीं फिर भी साफ-सुथरे और सीधे-सादे बने हैं। मकानों में भिन्न भिन्न प्रकार की ड्योढ़ियाँ हैं। वे एक दूसरे से सटे हुए नहीं हैं। उनके चारों ओर अच्छी-खासी जगह छूटी है और वे चौड़ी चौड़ी सड़कों तथा गलियों के किनारे किनारे खूबसूरती से बनाये गये हैं। बाड़ों के उस ओर बहुत से मकानों की बड़ी बड़ी और हल्की खिड़कियों के सामने गहरे हरे रंग के चिनार के वृक्ष तथा बबूल अपनी कोमल पीत हरियाली और सुगंधित फूलों की सुषमा बिखेरते हैं। ये वृक्ष कभी कभी मकान की छतों से भी ऊँचे होते हैं और बड़े लुभावने लगते हैं। इन वृक्षों के पास पीली सूरजमुखी, लताएँ और अंगूर की बेलें लहलहाती हैं। खुले चौड़े चौक में तीन दूकानें हैं, जहाँ वस्त्र, सूर्यमुखी तथा लौकी के बीज, मेम और अदरक भरी रोटियाँ बिकती हैं। चिनार के वृक्षों की पंक्ति के पीछे, अन्य मकानों से बड़े तथा ऊँचे, एक मकान में रेजीमेन्ट का कमाण्डर रहता है। इस मकान की सभी खिड़कियाँ चौखटदार हैं। सप्ताह के दिनों में, विशेष रूप से गर्मी में, गांव की सड़कों पर थोड़े से ही लोग दिखाई पड़ते हैं। नवयुवक घेरों अथवा साहसिक अभियानों पर रहते हैं और वृद्ध या तो मछलियाँ मारते हैं या बाग-बगीचों में स्त्रियों की सहायता करते हैं। केवल बहुत बूढ़े, बच्चे या बीमार लोग ही घरों पर रहते हैं।

५

काकेशिया मे ऐसी मनमोहक शामे कम होती है। सूर्य पहाडो के पीछे छिप गया था परन्तु प्रकाश अब भी था। एक-तिहाई आकाश पर सायकालीन झुटपुटा फैल चुका था और इस क्षीण होते हुए प्रकाश में पर्वतो का विपण्ण महाकार और भी गहरी रेखाओ मे खिच रहा था। वायु स्थिर थी, तरल थी और उसमें गूंज थी। स्टेपी पर मीलो तक पहाडो की साया पड रही थी। स्टेपी, सडके और नदी के दूसरी ओर का क्षेत्र सब सुनसान हो चुके थे। यदि कभी कभी कोई सवार दिखाई पड जाते तो शिविरो के कज्जाक तथा औलो (चेचेनो के गाँव) के चेचेन उन्हे आश्चर्य और उत्सुकता से देखने लगते और यह अनुमान लगाने का प्रयत्न करते कि ये जीव कौन है, कहाँ के है ?

रात होते होते लोग अपने अपने घरो मे पहुँच जाते क्योकि प्रत्येक को दूसरे का डर बना रहता। मनुष्यो के भय से मुक्त पशु पक्षी उस निर्जन स्थान पर टें-टें किया करते। स्त्रियाँ सूर्यास्त से पूर्व अगूर की लताएँ लपेट-लपाट कर बागो से जल्दी जल्दी घर की राह लेती और बातो ही बातो मे उनका रास्ता मौज में कट जाता। आस-पास के क्षेत्रो की भाति बाग-बगीचे भी वीरान हो जाते। परन्तु, शाम के समय गाँवो में जीवन की बहार होती। सभी ओर से मनुष्यो का काफिला गावो की ओर बढता हुआ नजर आता — कुछ पैदल, कुछ गाडियो पर और कुछ घोडो पर। फ्राक पहने और हाथो में टहनियाँ नचाती हुई ग्राम-सुन्दरियाँ बातो मे रस घोलती हुई अपने पशुधन का स्वागत करने के लिए गांव के प्रवेश द्वार तक दौड जाती। उनके पशु भी धूलि-धूसरित और स्टेपी से मक्खी-मच्छडो की फौज लिये हुए गोचर में आते। स्वस्थ गाय भैंसे सडक पर मटरगश्ती करती और कज्जाक स्त्रियां अपनी रग-

विरगी वेशभूषाएँ पहने उनके मध्य स्वच्छन्द घूमा करती। पशुओं के रंभाने के बीच उनकी हँसी और किलकारियाँ दूर दूर तक सुनाई पड़ती। यहीं एक सशस्त्र घुड़सवार कज्जाक घेरे से छुट्टी पाकर एक घर की ओर जाता दिखाई पड़ता है। वहाँ पहुँच कर वह कुछ झुक कर खिड़की खटखटाता है। और एक नवयुवती का सुन्दर मुखड़ा खिड़की में से झाँकता हुआ दिखाई पड़ता है, और फिर मस्ती से भरी हँसी और आत्मीयता उस भाग्यशाली का स्वागत करती है। यहीं एक फटे-हाल नगई गुलाम, जिसके गालों की हड्डियाँ उभरी हुई हैं, स्टेपी से गाड़ी पर नरकटों का एक बोझा लादे हुए आता दिखाई देता है। शीघ्र ही वह सारे नरकट कज्जाकी कप्तान के लम्बे-चौड़े और साफ आँगन में उलट देता है और बैलों पर से जुआ उतार देता है। बैल भी अब मुक्त होकर अपने सिर दाएँ-बाएँ झुलाने लगते हैं। इधर मालिक और गुलाम तातारी भाषा में एक दूसरे को चिल्ला चिल्ला कर पुकारते हैं। सामने कीचड़ और कूड़ा-करकट से भरा एक पोखरा है जो वर्ष प्रति वर्ष प्राय सड़क पार तक बढ़ आता है। इसे केवल मेड़ की सहायता से ही लाँघा जा सकता है। इसी पोखरे से होकर आती हुई एक कज्जाक महिला दीख पड़ती है। उसके पैर नंगे हैं और पीठ पर है लकड़ी का एक बोझ। कीचड़ से बचने के लिए उसने अपना फ्राक कुछ ऊँचा उठा लिया है और उसके सफेद पैर दीखने लगे हैं। शिकार से लौट कर आता हुआ एक कज्जाक उससे मजाक कर बैठता है—"तनिक और ऊपर उठा लो, मेरी जान !" और अपनी बन्दूक उसपर तान देता है। महिला फ्राक छोड़ देती है और लकड़ियाँ गिरा देती है। एक वृद्ध कज्जाक मछली मार कर घर लौट रहा है। उसका पंजामा नारे के पास से मुड़ा हुआ है। उसका धारीदार भूरा सीना खुला है। उसके कंधे पर एक जाल है जिसमें चाँदी जैसी चमकीली मछलियाँ अब भी तिलमिला रही हैं। रास्ता बनाने की गरज

मे वह अपने पडोसी की टूटी मेड पर जाता है और चढते समय दोनो हाथो मे अपना कोट पकड लेता है। एक महिला सूखी डाल घसीटती हुई आगे बढ रही है। एक कोने से कुल्हाडी की खटखट भी सुनाई पड रही है। कज्ज़ाको के बच्चे, सडक की चिकनी चिकनी जगहो पर लट्टू नचा रहे हैं और चीख़ चिल्ला रहे हैं। लम्बा चक्कर बचाने के लिए स्त्रियाँ मेडो पर चढ रही है। प्रत्येक चिमनी से किज्याक* का सुगधित धुआँ निकल रहा है। घर घर मे चिल्लपो सुनाई दे रही है जैसे वह रात्रि की नीरवता की भूमिका हो।

कज्ज़ाक कार्नेट एक स्कूल मास्टर है। उसकी पत्नी श्रीमती उलित्का अन्य स्त्रियो की तरह अपने आँगन के फाटक तक जाती है और उन मवेशियो का इन्तज़ार करती है जिन्हे उसकी पुत्री मर्यान्का सडक मे हाक कर ला रही है। टट्टर के बाडे का फाटक पूरी तरह खुल भी नहीं पाता कि मच्छरो से सनी हुई एक बडी-सी भैंस हुकारती हुई उसमे घुस जाती है। बाद में गायें भी बाडे में प्रवेश करती है। पूँछो से शरीर झाडती हुई वे अपनी स्वामिनी की ओर इस दृष्टि से ताक रही है मानो कह रही हो 'देखो, हम आ गये'।

सुन्दर और सुगठित मर्यान्का फाटक में घुस आती है और झट से उसे बन्द कर लेती है। फिर वह भागती हुई कभी इधर, कभी उधर, गाय भैंसो को अलग अलग करती तथा प्रत्येक को उसके ओसारे मे पहुँचाती है। "चट्टियाँ तो उतार दे, चुडैल!" उसकी माता चिल्लाती है। "घिसटा घिसटा कर क्या उनमें छेद बना देगी!" मर्यान्का को 'चुडैल' शब्द सुन कर न गुस्सा आया न तिलमिलाहट हुई। वह तो प्यार का शब्द

* सुखाये हुए गोबर का ईंधन—अनु०

था। अतएव, प्रसन्न होती हुई वह अपने काम में लगी रही। उनका चेहरा ढका हुआ है क्योंकि उसने सिर के चारो ओर एक रूमाल लपेट लिया है। वह गुलाबी रग की एक फ्राक तथा हरी वेशमेत पहने हुए है। वह अहाते में से होकर एक ओसारे में घुस जाती है। उसके पीछे पीछे एक बडी, मोटी भैस भी लगी हुई है। बडे दुलार से वह भैस को पुचकारती हुई कह उठती है, "वही खडी रहेगी या आयेगी भी? कैसी बुद्धू है, आ जा, आ जा!" शीघ्र ही माँ-बेटी ओसारे से निकल कर बाहरी कमरे में आ जाती है। उनके हाथ में दो बरतन है जिनमें गाय भैसो का इकट्ठा किया हुआ दिन भर का दूध है। कमरे की चिमनी से किज्याक का धुआँ उठ रहा है। यहाँ दूध से मलाई तैयार की जा रही है। लडकी आग सुलगाने तथा उसे तेज करने में लग जाती है और उसकी माता फाटक की ओर बढती है। झुटपुटा हो गया है। वायु में शाकसब्ज़ियो, मवेशियो और किज्याक-धूम की सुगन्ध भरी हुई है। कज्ज़ाक महिलाएँ हाथ में जलते हुए चिथडे लेकर सडको पर तेजी से आ जा रही है। अहातो में दुहे जाते मवेशियो के रभाने का शब्द सुनाई पड रहा है। सडको तथा आँगनो मे स्त्रियो तथा बच्चो की आवाजें आ रही है—कोई किसी को पुकारता है तो कोई किसी को। सप्ताह के दिन किसी पियक्कड का शोरगुल प्राय नही सुनाई पडता।

मर्दों-सी लगनेवाली एक लम्बी-चौडी कज्ज़ाक वृद्धा सामने के मकान से आग माँगने श्रीमती उलित्का के पास आती है। उसके हाथ में एक चिथडा है।

"काम खतम हो गया न?"

"लडकी आग सुलगा रही है। तुम्हे आग चाहिए?" श्रीमती

उलित्का ने जवाव दिया। उसे गर्व है कि वह अपनी पडोसिन की मदद कर सकती है।

दोनो महिलाएँ अन्दर चली गईं। श्रीमती उलित्का ने अपनी मोटी मोटी उगलियो से, जो छोटी वस्तुओ के व्यवहार में अभ्यस्त नही थी, दियासलाई का ढक्कन कांपते हुए हाथो से खोला। काकेशिया के लिए दियासलाई एक दुर्लभ वस्तु है। मर्दों-सी लगनेवाली नवागता दहलीज़ पर जम कर बैठ जाती है। शायद वह गपशप करना चाहती है।

"तुम्हारा आदमी कहाँ है—स्कूल में?" उसने पूछा।

"हाँ। वह हमेशा वच्चो को पढाने में लगा रहता है। परन्तु उसने लिखा है कि उत्सव के दिनो में वह घर आयेगा," श्रीमती उलित्का ने उत्तर दिया।

"आदमी होशियार है। चलो यह भी अच्छा है।"

"बेशक।"

"और मेरा लुकाश्का घेरे पर है। वे उसे घर नही आने देंगे," वृद्धा ने कहा, यद्यपि श्रीमती उलित्का यह सब वहुत पहले से जानती थी। वृद्धा अपने लुकाश्का के विषय में वातचीत चलाना चाहती थी। उसने कुछ समय पूर्व अपनेबेटे को कज्जाक सेना में नौकरी के लिए भेज दिया था। वृद्धा उसका विवाह श्रीमती उलित्का की पुत्री मर्यान्का से करना चाहती थी।

"तो वह घेरे पर है?"

"हाँ। पिछले उत्सव के वाद से वह घर नही आया। अभी उसी दिन मैंने फोमुश्किन के हाथ उसे कुछ कमीज़ें भेजी थी। उसका कहना है कि वह वडे मजे में है और उसके अफसर उससे खुश है। उसने लिखा है कि वे फिर अब्रेकों की तलाश मे है। लुकाश्का कहता है कि वह बहुत खुश है।"

"भगवान की दया है," कार्नेट की पत्नी ने कहा, "निस्सदेह उसके लिए एक ही शब्द है, उर्वान।"

लुकाश्का का कल्पित नाम उर्वान था, जिसका अर्थ है 'छीनने वाला', और यह नाम इसलिए पड़ा था कि उसने एक बार नदी में डूबते हुए किसी लड़के को बचाकर अपनी बहादुरी का परिचय दिया था। श्रीमती उलित्का ने इस नाम का प्रयोग इसीलिए किया था कि लुकाश्का की माता को अपने पुत्र की बहादुरी का उल्लेख सुनकर प्रसन्नता हो।

"मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ कि वह अच्छा लड़का है, बहादुर है, और सब उसकी प्रशंसा करते हैं," लुकाश्का की माँ ने कहा। "अब तो मैं यही चाहती हूँ कि किसी प्रकार उसका घर बस जाय और मैं शान्ति की मौत मरूँ।"

"ठीक तो है! क्या गांव में ढेरों जवान औरतें नहीं हैं?" चतुर श्रीमती उलित्का ने जवाब दिया और अपने खुरदरे हाथों से दियासलाई ठीक करने में लग गई।

"बहुत हैं" सिर हिलाते हुए लुकाश्का की माँ ने कहना शुरू किया, "तुम्हारी ही लड़की है—मर्यान्का। वह है एक लड़की। सारे इलाके में उस जैसी दूसरी होगी कौन?"

श्रीमती उलित्का लुकाश्का की माता का अभिप्राय जानती है, परन्तु यद्यपि उसे विश्वास है कि लुकाश्का एक अच्छा कज्जाक है फिर भी वह तरह दे जाती है, क्योंकि पहली बात तो यह है कि वह सार्जेन्ट की बीवी है और धनी है, जबकि लुकाश्का एक मामूली कज्जाक का बेटा है और पितृहीन है, और दूसरी, अभी वह अपनी बेटी को अपने से अलग नहीं करना चाहती। लेकिन मुख्य बात तो औचित्य का तकाजा है।

"खैर, जब मर्यान्का बड़ी होगी तभी उसके विवाह की फिक्र भी की जायेगी," उसने गम्भीरता और मृदुता से कहा।

"मै विवाह ठहराने वालो को तुम्हारे पास भेज दूंगी—अवश्य भेज दूगी। अगूर के वाग का मेरा काम खत्म हो जाने दो तव हम लोग तुम्हारे पास फिर आयेंगे और इस सबध में वात चलायेंगे," लुकाश्का की माँ ने कहा, "और हम ईल्या वसीलियेविच से भी वात चलायेंगे।"

"ईल्या, जरूर, जरूर!" गर्व से कार्नेट की पत्नी बोली, "लेकिन इस सम्वन्ध मे तुम्हे मुझसे वात करनी चाहिए। वह भी मौके-महल पर!"

लुकाश्का की माँ ने कार्नेट की पत्नी की ओर देखा। उसके मुख पर कर्कशता थी जिसे देखते ही उसने समझ लिया कि इस समय आगे कुछ कहना-सुनना ठीक नही। उसने अपने चिथडे में दियासलाई लपेटी और वोली "मुझसे इनकार मत करना, याद रखना कि तुमने मुझसे क्या कहा है। अव चलती हूँ, आग सुलगाने का समय हो रहा है।"

वह जलते हुए चिथडे को नचाती हुई सडक पार करती है। रास्ते मे उसकी भेंट मर्यान्का से होती है जो उसे प्रणाम करती है।

उस सुन्दर लडकी की ओर देखते हुए वह सोचती है, "यह तो रानी है, रानी। कितना अच्छा काम करती है यह लडकी! उसे और बडी होने की क्या जरूरत? यही समय है कि इसका व्याह हो जाना चाहिए और इसे कोई अच्छा घर वसाना चाहिए, मेरे लुकाश्का के साथ!"

परन्तु श्रीमती उलित्का की अपनी चिन्ताएँ है। और वह दहलीज पर बैठी हुई गभीरता से सोचने लगती है। तभी उसके कान में पुत्री के पुकारने की आवाज पड जाती है।

गाँव के पुरुष सैनिक अभियानों तथा घेरों में अथवा, जैसा कज्ज़ाकों का कहना है, 'चौकियों पर' अपने अपने कामों में लगे हैं। सन्ध्या का समय है। लुकाश्का-उर्वान (जिसके सम्बन्ध में वृद्धाओं में बातें हुई थीं) तेरेक नदी पर स्थित निज्ने-प्रोतोत्स्की चौकी के एक पर्यवेक्षकी मचान पर खड़ा है। मचान के सींखचों पर झुककर वह नदी के उस पार, काफी दूर, अपने साथी कज्ज़ाकों को गहरी नज़र से देख रहा है और उनसे संकेतों से बातचीत भी कर रहा है। उस समय तक सूर्य हिमावृत पर्वतशिखरों तक पहुँच चुका था। शिखर उसकी किरणों का सम्पर्श पाकर दमक रहे थे। पहाड़ों के आस-पास बिखरे हुए बादल धीरे धीरे धूमिल होते जा रहे थे। मंद मंद वायु सायंकाल का परिचय दे रही थी। जंगलों की ओर से कभी कभी ताज़ी हवा का कोई झोंका आ जाता था यद्यपि चौकी के आस-पास की हवा अभी तक गर्म थी। कज्ज़ाकों की बातचीत हवा में गूँजकर एक विचित्र सुरीलापन पैदा करती तथा तेरेक का तेज़ी के साथ बहता हुआ भूरा जल जब निश्चल तटों से टकराता तो नदी का तल तक साफ-साफ दिखने लग जाता। अब नदी का पानी कम होता जा रहा था और यही कारण था कि तट पर तथा छिछले स्थलों पर कीचड़ और गंदला जल स्पष्ट हो रहा था। चौकी के ठीक सामने नदी के उस पार का क्षेत्र वीरान था। केवल सरकंडों की नीची नीची झाड़ियाँ पहाड़ों की तलहटी तक फैली हुई थीं। निचले तट पर एक ओर हट कर एक चेचेन गाँव के मिट्टी के मकानों की चौरस छत तथा कुओं के आकार की चिमनियाँ दिखाई पड़ रही थीं। मचान पर चौकसी करने वाले चौकीदार की तेज़ निगाह उस शान्त गाँव के सायंकालीन धूम को चीरती हुई पारदर्शी पोशाकों में चलती-

फिरती उन चेचेन महिलाओ पर पड रही थी जो दूरी के कारण बौनी-मी दिखाई पडती थी।

कज्जाको को ऐसा लगने लगा था कि अब्रेक न जाने किम ममय तातार की ओर मे आकर उनपर आक्रमण कर दे। मई का महीना होने के कारण नदी कही कही इतनी छिछली निकल आई थी कि घुडसवार उसमें से होकर आसानी से गुज़र सकते थे, लेकिन तेरेक के आस-पास के जगल इतने घने थे कि उन्हे पैदल पार करना कठिन था। और कुछ ही दिन पूर्व एक कज्जाक, सेना के कमाडर का इस आशय का गश्तीपत्र लेकर आया था कि स्वयसेवको ने सूचना दी है कि आठ व्यक्तियो का एक दल तेरेक पार करना चाहता है। पत्र में विशेप चौकसी के आदेश दिये गये थे। फिर भी घेरे में कोई खास चौकसी नही रखी गई थी। कज्जाक निहत्थे थे। उनके घोडो की ज़ीने खुली हुई थी और वे इतने बेख़बर थे जैसे अपने अपने घरो में हो। कुछ मछली मारते, कुछ शराब में धुत रहते और कुछ शिकार में मन बहलाते। जो व्यक्ति ड्यूटी पर था केवल उमी के घोडे पर ज़ीन दिखाई देती थी और एक मात्र वही जगलो के पाम की झाडी में चक्कर लगा रहा था। चेरकेसियन कोट पहने एक चौकीदार अपनी तलवार बन्दूक लिये पहरे पर डटा था। कारपोरल एक दुबला-पतला लम्बा कज्जाक था। उमकी पीठ लम्बी तथा हाथ पैर अपेक्षाकृत छोटे थे। उमकी बेशमेत के बटन खुले थे और वह एक झोपडे के मामने के चबूतरे पर बैठा था। उसके चेहरे मे पता लगता था कि उममें बडप्पन के लक्षण स्पष्ट है। कभी वह अपनी आखें मूंदता, कभी खोलता और कभी एक हथेली पर माथा टेकता, तो कभी दूमरी पर। एक वयस्क कज्जाक तेरेक की उठती हुई तरगो का आनन्द लेने के लिए वहाँ तक निचा चला आया था। उमकी लम्बी दाढी का रग भूरापन लिये हुए कुछ काला था। वह एक माधारण-

सी कमीज़ पहने और ऊपर से एक पेटी कसे था। गर्मी से घबड़ा कर तथा आधे-चौथाई कपड़े पहने हुए दूसरे कज्ज़ाक भी तेरेक के किनारे जमा हो गये। कुछ नदी में अपने कपड़े निचोड़ने लगे, कुछ लगामें गूथने लगे और कुछ नदी तट की तपती हुई बालू पर लेटकर तानें छेड़ने लगे। एक कज्ज़ाक झोपड़ी के पास लेटा था। उसका चेहरा धूप के कारण काला पड़ चुका था। ऐसा लगता था कि वह बुरी तरह से नशे में चूर है क्योंकि जिस दीवाल के सहारे वह लुड़का पड़ा था उसपर सूर्य की सीधी किरणें पड़ रही थी। यही दीवाल लगभग दो घंटे पूर्व छाया में थी।

लुकाश्का मचान पर खड़ा था। वह लगभग २० वर्ष का एक लम्बा, खबसूरत-सा जवान और बहुत-कुछ अपनी माता के समान था। इकहरे बदन का होते हुए भी उसके चेहरे और आकार से यह पता चलता था कि उसमें शारीरिक तथा नैतिक दोनों ही प्रकार का बल है। यद्यपि वह कज्ज़ाकों की सेना के अग्रगामी दस्ते में अभी हाल ही में भरती हुआ था फिर भी उसके चेहरे के भावों तथा उसकी शान्त प्रकृति से यह स्पष्ट था कि उसने कज्ज़ाकों और हथियार बांधने के आदी व्यक्तियों के अनुरूप गौरवपूर्ण और युद्धप्रिय स्वभाव पाया है। उसे अपने कज्ज़ाक होने का गर्व था और वह अपना मूल्य अच्छी तरह समझता था। उसका चेरकेसियन कोट कई जगहों से फटा था, उसकी टोपी उसके सिर के पीछे चेचेन फैशन में लगी थी और उसके मोज़े उसके घुटनों के नीचे मुड़े थे। उसकी पोशाक कीमती न थी फिर भी वह उसे ऐसे कज्ज़ाकी ढंग से पहने था जिसे देखकर प्रतीत होता था कि उसने चेचेन जिगीत का अनुकरण किया है। जिगीत की विशेषता यह है कि प्रत्येक वस्तु की मात्रा तो काफी रहती है परन्तु या तो वह फटी-चिथी होती है या उपेक्षित। केवल उनके हथियार कीमती होते हैं। वह फटे कपड़ों से

साथ हथियारो को ऐसे बाँधता है, और वे उसपर इतने फब जाते है, कि कज्जाको अथवा पार्वतीयो की आँखें उसपर गडी की गडी रह जाती है। प्राय उसकी कोई नकल तक नही कर पाता। इस मामले में लुकाश्का जिगीत से मिलता-जुलता था। तलवार पर अपना हाथ रखे और आँखे करीब करीब मूँदे हुए वह दूरस्थ औल की ओर देखता रहा। यद्यपि उसका चेहरा-मोहरा सुन्दर नही कहा जा सकता था, फिर भी जो भी उसके आकर्षक व्यक्तित्व और वुद्धिमत्ता का आभास देने वाले मुखमडल को देखता उसके मुँह से वरवस निकल जाता, "कितना अच्छा है यह व्यक्ति!"

"उन औरतो की तरफ देखो। कितनी ढेर की ढेर गाँव में मटरगश्ती कर रही है!" उसने कुछ तीखी आवाज में कहा और उसके मोती जैसे दाँत चमक उठे। वह विशेष रूप से किसी को लक्ष्य करके नही कह रहा था। परन्तु, लेटे हुए नज़ारका ने अपना सिर उठाया और कहने लगा—

"पानी लेने जा रही होगी।"

"मान लो मै एक गोली चलाकर उन्हे डरा दूं! तो वे घवडाकर भाग न जायगी क्या?" वह हँसा।

"गोली, वहाँ तक पहुँचेगी भी।"

"क्या! अजी उनसे आगे निकल जायगी। थोडा ठहरो। उनकी दावत का दिन आने दो, तव देखना। मै गिरेई-खाँ से मिलने जाऊँगा और उनके साथ बूज़ा* पिऊँगा," लुकाश्का बोला। वह क्रोध मे आकर उन मच्छरो को हटाता जा रहा था जो उसे चपटे जा रहे थे।

झाड़ियो मे कुछ खड़खड़ाहट हुई और कज्जाको का ध्यान उधर चला गया। नाज़र ज़मीन की ओर किये तथा अपनी बिना बालो

---

* बाजरे से बनी तातारी बियर।

वाली दुम हिलाते हुए एक शिकारी कुत्ता भागता हुआ घेरे की तरफ आया। लुकाश्का ने कुत्ते को पहचान लिया। वह उसके पड़ोसी चचा येरोश्का का था जो एक शिकारी था। शीघ्र ही उसने देखा कि स्वयं शिकारी चचा भी भागते भागते कुत्ते के पीछे चले आ रहे हैं।

चचा येरोश्का कज्जाकों में एक दैत्य था—बर्फ की तरह सफेद लम्बी-चौड़ी दाढ़ी, सीना और कंधे इतने चौड़े और शक्तिशाली, अंगों की बनावट इतनी सुगठित कि जंगल में, जहां उससे मुकाबला करने के लिए कोई भी न होता, वह विशेष लम्बा-तड़ंग न दीखता। उसका कोट फटा-पुराना था, पैरों में गर्म पट्टियां लिपटी थीं जिनके ऊपर मजबूत धागे से बंधी हुई हिरन के कच्चे चमड़े की चप्पलें थीं। उसके सिर पर एक मैली-सी सफेद टोपी भी रखी थी। उसके एक कंधे पर एक पर्दा था जिसके पीछे छिपकर वह तीतरों का शिकार करता था। पर्दे के साथ ही एक थैला भी लटका था जिसमें बाज़ तथा श्येन पक्षियों को फुसलाने के लिए एक मुर्गी थी। उसके दूसरे कंधे पर फीते से बंधी हुई एक जंगली बिल्ली थी जिसका उसने शिकार किया था। उसकी पेटी के साथ पीठ की ओर लटका हुआ एक छोटा-सा झोला था जिसमें कुछ गोलियां, बारूद और रोटियां थीं। इसी पेटी में एक ओर मच्छरों को उड़ाने के लिए घोड़े की एक दुम, फटी-फटाई म्यान में रखी हुई खून के धब्बों वाली एक कटार और मरे हुए दो तीतर बंधे हुए थे। घेरा देखते ही वह रुक गया।

"ठहरो ल्याम!" उसने कुत्ते को इतनी सुरीली धुन में पुकारा कि उसकी प्रतिध्वनि जंगल में दूर तक सुनाई दे गई। और फिर, अपने कंधे पर से भारी बन्दूक, जिसे कज्जाक 'फिन्ना' कहते थे, उतारकर उसने अपनी टोपी उठाई।

"आज बड़ा मज़ा आया, दोस्तो!" उसने तेज और दिल को खुश कर देने वाली आवाज में कहा। यद्यपि वह कोई विशेष प्रयास करता-सा

नहीं दिखाई पड रहा था, फिर भी आवाज़ इतनी तेज़ थी जैसे वह नदी के दूसरी ओर खडे हुए किसी व्यक्ति को पुकार रहा हो।

"बहुत खूब, चचा, बहुत खूब!" सब ओर से कज्ज़ाकों ने कहना शुरू किया।

"तुम लोगों ने क्या देखा? आओ हमें बताओ!" चचा येरोश्का अपने कोट की आस्तीन से अपने मुंह का पसीने पोछते हुए बोला।

"चचा, उस सामने वाले पेड पर एक बाज़ रहता है। जैसे ही रात होती है वह यहाँ ऊपर चक्कर लगाने लगता है," कंधे और टाँगें उचकाते तथा आँख मारते हुए नज़ारका कहने लगा।

"क्या! सचमुच?" बूढे ने कहा। उसे विश्वास नहीं हो रहा था।

"हाँ, हाँ, चचा जरूर है। यहीं ठहरो और देखते जाओ," हँसते हुए नज़ारका बोला।

दूसरे कज्ज़ाक भी हँस दिये।

बाज देखने की बात कोरी गप थी। परन्तु घेरे के जवान कज्ज़ाकों को तो चचा येरोश्का को मौके-बे-मौके परेशान करने और बुद्धू बनाने में मजा आता था।

"अरे बेवकूफ–कभी तो सच बोला कर," मचान पर से लुकाश्का ने नजारका की तरफ मुडते हुए कहा।

नजारका फौरन चुप हो गया।

"जरूर देखना चाहिए! मैं देखूंगा," बूढे ने जवाब दिया और जवान कज्ज़ाक उनकी बातों का आनन्द लेने लगे। "क्या कभी सुअर देखे हैं तुमने? नहीं?"

"सुअर!" आगे झुकते तथा दोनों हाथों से पीठ खुजाते हुए चान्सोन बोला। उसे विनोद सूझ रहा था।

"अरे चचा, यहाँ तो हमें अब्रेकों को ढूंढना है सुअरों को नहीं।

कुछ वसन्त की भी खबर है तुम्हे, तुमने कुछ नही सुना ?" आँखें मटकाते और खीसें निपोरते हुए उसने कहा।

"अनेक ?" बूढा बोला, "नही तो। मैंने तो कुछ नही सुना। खैर, कुछ चिखीर* हो तो देना। अरे भाई कुछ पिलाओ तो सही। देखते नही, कितना थक गया हूँ। वक्त आने दो। मै भी तुम्हे ताजा गोश्त खिलाऊँगा। जरूर खिलाऊँगा! भरोसा रखना। बस इस समय थोडी पिला दो," चचा ने बात बनाई।

"खैर, और तुम भी पहरा दोगे या नही ?" कारपोरल ने पूछा जैसे उसने सुना ही न हो कि चचा क्या कह गया था।

"आज रात पहरा देने मे मेरा अपना ही स्वार्थ है," चचा येरोश्का ने जवाब दिया, "भगवान ने चाहा तो मै उत्सव के लिए जरूर कुछ न कुछ मारूँगा और उसमें तुम्हे तुम्हारा हिस्सा मिलेगा, जरूर मिलेगा।"

"चचा, अरे ओ चचा!" सभी का ध्यान आकर्षित करते हुए लुकाश्का ऊपर से चिल्लाया। सारे कज्जाक ऊपर देखने लगे। "नदी के किनारे किनारे चले जाओ। वहाँ ढेरो सुअर है एक से एक अच्छे। सही! मै मजाक नहीं कर रहा हूँ। उस दिन हमारे एक साथी ने एक मारा भी था। सच कह रहा हूँ।" कन्धे पर बन्दूक सभालते हुए उसने ऐसी आवाज में कहा जिससे पता चलता था कि वह सचमुच मजाक नहीं कर रहा है।

"अरे! लुकाश्का-उर्वान, तुम यहाँ!" सिर ऊपर उठाते हुए चचा बोला, "यह कज्जाक कहाँ शिकार कर रहा था ?"

"वाह चचा! तुमने अभी तक मुझे देखा भी नहीं ? जान पडता

---

* घर की बनी कारेलिया की शराब—अनु०

है मैं तुम्हारे लिए बहुत छोटा हूँ?" लुकाश्का बोला और फिर सिर हिलाते हुए कुछ गम्भीरता से कहने लगा, "बिल्कुल खाई के पास। हम लोग खाई से होकर जा रहे थे कि हमें कुछ खटर-पटर सुनाई दी। मेरी बन्दूक केस में ही थी कि ईल्या ने उसे भाग जाने दिया परन्तु मैं तुम्हे वह जगह दिखाऊँगा, दूर नही है। थोडा इन्तज़ार करो। मैं उनका एक एक रास्ता जानता हूँ। चचा मोसेव," घूमते हुए और कारपोरल को आज्ञा देने के लहजे में उसने कहा, "पहरा खत्म होने का वक्त हो गया," और कन्धे पर बन्दूक लटकाते हुए वह आज्ञा की प्रतीक्षा किये बिना मचान से उतरने लगा।

"नीचे चले आओ," कारपोरल ने आज्ञा दी, परन्तु लुकाश्का उससे पहले ही चल चुका था। कारपोरल ने अपने चारो ओर नज़र डाली।

"गुरका, अब तुम्हारी बारी है न? तुम ऊपर जाओ सच्ची बात है, लुकाश्का तो असली शिकारी हो रहा है," बूढे को सुनाता हुआ वह कहता गया, "तुम्हारी ही तरह वह भी घूमता रहता है। घर पर कभी नही टिकता। अभी उसी दिन उसने एक सुअर मारा था।"

७

सूर्य डूब चुका था और रात्रि का बुबलका जैसे जगल से बढता चला आ रहा था। कज्जाकों ने घेरे के इर्द-गिर्द के सारे कार्य समाप्त कर लिये थे और अब वे भोजन के लिए झोपडी में एकत्र हो रहे थे। केवल बूढे चचा ही पेड के नीचे बैठे हुए बाज़ को देखने में व्यस्त थे। चचा अपनी मुर्गी के पैरों में बधे हुए डोरे को कभी खीचते कभी ढीला करते।

पेड पर बाज़ था जरूर परन्तु चचा की सारी कोशिशो के बावजूद वह नीचे नही उतर रहा था। लुकाश्का एक के बाद एक गाने गाता हुआ तीतरो को पकडने के लिए घनी झाडियो में जाल बिछाये आराम से बैठा था। कद लम्बा और हाथ बडे होते हुए भी उसे सभी अच्छे-बुरे कामो में कामयाबी हो जाती थी।

"ओ लुका!" पास की झाडी मे नज़ारका की तीखी तेज़ आवाज़ सुनाई दी, "कज्ज़ाक खाने जा चुके है!" और वह अपनी बग़ल में एक ज़िन्दा तीतर छिपाये झाडियो से होता हुआ पगडण्डी पर आ गया।

"ओहो!" गाने की कडी तोडते हुए लुकाश्का बोला, "यह तीतर कहाँ से मार लाये, यार? मै समझता हूँ मेरे ही जाल में फँसा था।"

नज़ारका की उम्र लगभग लुकाश्का के बराबर ही थी। वह अभी पिछले वसन्त से ही युद्ध के हरावल में भर्ती हुआ था। सीधे-सादे, दुबले-पतले इस जवान की आवाज़ कर्कश थी जो शीघ्र ही दूसरो के कानो में गूंज उठती थी। वे पडोसी भी थे और साथी भी। लुकाश्का घास पर बैठा था और तातारो की भांति उसका एक पर दूसरे पर चढा था। वह अपना जाल सँभाल रहा था।

"मुझे पता नहीं किसका था—मै समझता हूँ तुम्हारा।"

"क्या गड्ढे के उस तरफ पेड के पास पडा था? तब तो यह मेरा है। मैने कल रात ही जाल बिछा दिये थे।"

लुकाश्का उठा और तीतर को सावधानी से देखने-भालने लगा। पक्षी ने भय के मारे अपनी आँखें निकाल दी थी और गर्दन फैला दी थी। लुकाश्का ने उसका काला और चिकना सिर उगलियो से थपथपाया और पक्षी को दोनो हाथो में दबा लिया।

"आज हम इसका पुलाव पकायेंगे। जाओ इसे मार कर पकाओ।"

"क्या इसे हम लोग ही खायेंगे या कारपोरल को भी देंगे?"

"उसके पास तो बहुत है।"

"मै उन्हे मारना पसन्द नही करता," नज़ारका बोला।

"इधर लाश्रो।"

लुकाश्का ने अपनी कटार के नीचे से एक छोटा चाकू निकाला और उसे झटके से पक्षी के सिर पर चला दिया। पक्षी तडपने लगा, परन्तु इसके पहले कि वह अपने पख फैला सके उसका रक्तिम सिर झुक गया और वह जड हो गया।

"ऐसे करना चाहिए!" तीतर को एक ओर डालते हुए लुकाश्का बोला, "इसका बनेगा बढिया पुलाव।"

नज़ारका ने पक्षी की ओर देखा और काँप गया।

"लुकाश्का, मै कहता हूँ वह बदमाश आज रात फिर हमें झाडियो में भेजेगा," पक्षी को हाथो मे उठाते हुए उसने कहा (उसका मतलब कारपोरल से था)। "उसने फोमुश्किन को शराब लेने भेजा है। शायद आज उसी की बारी रही होगी। इसी प्रकार हमें हर रात उसका एक न एक काम करना पडता है। वह हमसे ऐसे ही काम लेता है।"

लुकाश्का सीटी बजाता हुआ घेरे तक गया। "डोरी अपने साथ ले लेना!" वह चिल्लाया। नज़ारका ने आज्ञा का पालन किया।

"आज मैं उससे बाते करूँगा, ज़रूर करूँगा," नज़ारका बोला, "हम यही कहेंगे कि हम नही जाएगे, हम थक चुके है और बस बात खत्म हो जायगी! नही, तुम उससे कहना ज़रूर। वह तुम्हारी बात सुनेगा। भला यह भी कोई बात हुई!"

"हुँह, यह ऐसी बात नही जिसपर हुज्जत की जाय," लुकाश्का बोला। उसका दिमाग़ किसी दूसरी ओर था। "छि, अगर उसने हमें इसी

समय रात में गाँव से वाहर चले जाने को कहा तो पहले बुरा तो लगेगा मगर वहाँ कुछ वक्त तो मज़े मे कटेगा, लेकिन यहाँ क्या है? एक ही बात है, चाहे घेरे में रहें चाहे झाडी में! कैसी लडकपन की बातें करते हो!"

"और क्या तुम गाँव जा रहे हो?"

"मैं उत्सव में जाऊँगा।"

"गुरका कहता है कि तुम्हारी दुनैका फोमुश्किन के साथ रगरेलियाँ कर रही है," नज़ारका सहमा पूछ बैठा।

"जाय जहन्नुम में," लुकाश्का बोला और खीसे निकाल दी, "मानो मुझे कोई दूसरी मिलेगी ही नही।"

"गुरका कहता है कि वह उसके घर गया था। उस समय उसका पति कही वाहर था परन्तु वहाँ फोमुश्किन बैठा हुआ कचौडियाँ उडा रहा था। गुरका थोडी देर तो रहा परन्तु तुरन्त वहाँ से उठकर चला गया। जाते समय खिडकी के पास से उसने दुनैका को कहते हुए सुना था, 'चला गया शैतान. तुम कचौडी क्यो नही खाते, मेरे प्यारे? आज रात तुम्हे अपने घर नही जाना है,' और खिडकी के नीचे से गुरका कहता है 'मुझे पसन्द है!'"

"तुम बाते बना रहे हो!"

"नही, भगवान जानता है, ठीक कहता हूँ।"

"खैर, अगर उसे कोई दूसरा मिल गया है तो जाय जहन्नुम में," थोडा ठहरकर लुकाश्का बोला, "यहाँ लौंडियो की क्या कमी और सच पूछो तो मैं भी उससे तग आ गया था।"

"कैसे आदमी हो यार," नज़ारका ने कहा, "तुम सार्जेंट की बेटी, मर्यान्का से ही टिप्पन भिडाओ। वह क्यो किसी के साथ घूमने-घामने नही जाती?"

लुकाश्का का मुँह लाल हो गया। "हुँह, मर्यान्का! सब एक ही थैली के चट्टे-वट्टे हैं।" उसने कहा।

"कोशिश करो "

"तुम क्या समझते हो? क्या गाँव में लडकियो की कमी है?"

श्रौर लुकाश्का सीटी वजाता रहा। वह घेरे तक गया श्रौर रास्ते में झाडियो की पत्तियाँ तोडता श्रौर गिराता रहा।

सहसा एक छोटे-से पौधे पर उसकी निगाह पडी। उसने श्रपनी कटार के हैंडिल से एक चाकू निकाला श्रौर पौधा काट लिया। "इसी से वन्दूक की नली साफ करूगा!" उसने कहा श्रौर पौधे को हवा में उडा दिया।

कज्ज़ाक झोपडे के भीतर मिट्टी से पुते हुए एक कमरे में एक नीची तातारी मेज़ के चारो श्रोर जमा थे। उस समय यह प्रश्न छिडा था कि श्राज झाडी में किमके लेटने की वारी है।

"श्राज रात कौन जायगा?" एक कज्ज़ाक ने खुले हुए दरवाज़े में से कारपोरल से चिल्लाकर पूछा। वह पासवाले कमरे में ही था।

"हाँ, कौन जायगा?" कारपोरल ने वहीं से श्रावाज़ लगाई, "चचा वुरलाक जा चुके हैं श्रौर फोमुश्किन भी जा चुका है," उसने सदेह प्रकट करते हुए कहा।

"श्रच्छा तो तुम दोनो जाश्रो, तुम श्रौर नज़ारका," उमने लुकाश्का को मम्बोधित करते हुए कहा, "श्रौर येरगुशोव भी जायगा। इस समय तक उमने श्रच्छी नींद ले ली होगी।"

"तू ग्दुद तो मोता नहीं, वह सोयेगा?" नीची श्रावाज़ में नज़ारका वोला।

कज्ज़ाक हँसने लगे।

येरगुशोव एक कज्ज़ाक था जो नशे में धुत्त झोपडे के पास पडा मो

रहा था। वह उसी समय आँखें मलता और लड़खड़ाता हुआ कमरे में आ गया।

लुकाश्का उठ चुका था और अपनी बन्दूक सँभाल रहा था।

"बस जाने की तैयारी करो। खाना खाओ और चल दो," कारपोरल ने कहा और बिना हाँ-ना की प्रतीक्षा किये हुए उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया। शायद उसे यह आशा न थी कि कज़्ज़ाक आज्ञा मान लेंगे। उसने वहीं से फिर कहा—"बेशक यदि मुझे हुक्म न मिला होता तो मैं किसी को भी न भेजता। परन्तु किसी भी समय कोई अफसर आ सकता है। फिर यह भी सुनने में आया है कि आठ अब्रेक घुस आये हैं।"

"मैं समझता हूँ कि हमें जाना चाहिए," येरगुशोव बोला, "यह एक नियम है जिसे ऐसे मौकों पर नहीं तोड़ा जा सकता। मैं कहता हूँ हमें जाना चाहिए।"

इस बीच लुकाश्का खाने में मस्त था। वह तीतर का एक बड़ा-सा टुकड़ा, दोनों हाथों से पकड़े, मुँह में लगाये था और कभी नज़ारका की ओर और कभी कारपोरल की ओर देखता जाता था। ऐसा लगता था कि जो कुछ हो गया है उससे उसे कोई सरोकार नहीं। वह उन दोनों पर हँस रहा था। इसके पहले कि कज़्ज़ाक झाड़ी में घुसने की तैयारी करें चचा येरोश्का उस अँधेरे कमरे में चला आया। अभी तक वह वृक्ष के नीचे बाज़ की राह देख रहा था, पर उसे न उतरना था तो न उतरा, और रात हो गई।

"अच्छा छोकरो," उसकी तेज़ आवाज़ नीची छत वाले उस कमरे में इतनी ज़ोरों से फैली कि अन्य सारी बातें उसी में विलीन हो गई। "मैं तुम लोगों के साथ चल रहा हूँ। तुम चेचेनों को देखना और मैं सुअरों की खबर लूँगा।"

जिस समय चचा येरोश्का और तीनो कज़्ज़ाक अपने अपने लबादे डाटे और कन्धो पर बन्दूकें लटकाये घेरे से बाहर निकलकर तेरेक स्थित उस स्थान की ओर चले, जहाँ उन्हे झाडियो में लेटना था, उस समय बिल्कुल अँधेरा हो चुका था।

नज़ारका तो जाना ही न चाहता था परन्तु लुकाश्का ने उसे डाँट पिलाई और तीनों चल दिये। चुपचाप थोडी दूर चल लेने के बाद वे खाई से एक ओर मुडे और उन्होंने वह रास्ता पकडा जो नरकटो के कारण प्राय छिप-सा गया था। अब वे नदी तक पहुँच गये थे। किनारे पर एक मोटा काला लट्ठा पडा था जिसे शायद नदी बहाकर लाई थी। उसके आस-पास की झाडियाँ दब गई थी।

"क्या हम यही लेटेंगे?" नज़ारका ने पूछा।

"क्यो नही?" लुकाश्का ने उत्तर दिया, "तुम सब यही बैठ जाओ। मैं अभी एक मिनट में आया। मैं चचा को बता दूँ कि उन्हे कहाँ जाना चाहिए।"

"यही सबसे अच्छी जगह है। यहाँ से हम तो सब कुछ देख सकते है परन्तु हमें कोई नही देख सकता। इसलिए हम यही लेटेंगे। यही ठीक जगह है।" येरगुशोव ने कहा।

नज़ारका और येरगुशोव ने अपने अपने लबादे बिछा दिये और लट्ठे के पीछे जम गये। लुकाश्का चचा येरोश्का के साथ चल दिया।

"चचा, वह जगह यहाँ से दूर नही," बूढे के ऐन सामने आकर लुकाश्का बोला, "मै तुम्हे दिखाऊँगा कि सुअर कहाँ थे। अकेला मैं ही वह जगह जानता हूँ।"

"यह बात है! तुम बहुत भले आदमी हो, सच्चे उर्वान!" बूढे ने फुसफुसाते हुए कहा।

कुछ दूर जाने के बाद लुकाश्का रुका, पोखरे के पास कुछ झुका और फिर सीटी बजाने लगा–"यहीं वे पानी पीने आये थे। देख रहे हो न?" खुरों के निशानों की ओर इशारा करते हुए उसने धीमी आवाज से कहा।

"भगवान तुम्हे बनाये रखे," बूढे ने जवाब दिया, "सुअर खाई के उस पार छिछले में होगा। मै उसकी खबर लूंगा। तुम जा सकते हो।"

लुकाश्का ने अपना लबादा खिसकाया और अकेला लौट पडा। कभी वह बाईं ओर नरकटो की पंक्ति की तरफ देखता और कभी तट के नीचे तेजी से बहती हुई तेरेक पर। "मै विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि वहाँ कोई न कोई है जरूर, चाहे वह किसी को देख रहा हो या सरक रहा हो।" और उसके दिमाग में एक चेचेन पार्वतीय की आकृति घूमने लगी। सहसा सी-सी जैसी एक तेज आवाज और पानी में छपाक जैसा कोई शब्द सुनाई दिया। वह सतर्क हो गया और उसने दोनो हाथो में बन्दूक सँभाल ली। दूसरे ही क्षण गुर्राता हुआ एक सुअर तट के नीचे से निकला और भागकर नरकटो में घुस गया। पानी से निकलते समय उसके काले शरीर की परछाई एक क्षण के लिए शीशे जैसे जल पर पडकर तुरन्त गायब हो गई थी। लुकाश्का ने अपनी बन्दूक तान दी, परन्तु उसके गोली चलाने के पूर्व ही वह झाडी में ओझल हो चुका था। लुकाश्का झुझला उठा और उसने अपनी राह ली। एक छिपने के स्थान पर पहुँचकर वह फिर रुका और उसने हल्की-सी सीटी बजाई। सीटी का जवाब उसे सीटी में मिला और वह अपने साथियो की ओर चल दिया।

नजारका लबादे पर लुढका हुआ खर्राटे भर रहा था। येर्गुशोव पैर पर पैर पसारे आराम से बैठा था। लुकाश्का को देखते ही वह उसे जगह देने के लिए एक ओर थोडा-सा खिसक गया।

"झाडी में छिपना कितना अच्छा है! सचमुच यह एक अच्छी जगह है," उसने कहा, "क्या तुम चचा को वही छोड आये?"

"मैंने उन्हे जगह दिखा दी है," अपना लवादा फैलाते हुए लुकाश्का ने जवाव दिया, "मगर मैंने कितना बडा सुअर हकाया था, पानी के ठीक नीचे से। मैं समझता हूँ वही रहा होगा! तुमने उसकी आवाज़ सुनी होगी?"

"सुनी थी और मै तुरन्त समझ गया था कि कोई शिकार होगा। मैंने मन में सोच लिया था कि 'लुकाश्का ने किसी जानवर को डरा कर भगा दिया होगा," येरगुशोव अपने चारो ओर लवादा लपेटते हुए बोला, "अब मै सोऊँगा। जव मुर्गा वोले तव जगा देना। हमें कायदे से रहना चाहिए। पहले मै लेटकर थोडी झपकी लूंगा, और तव देखभाल करूँगा, और तुम सो लेना। यही ठीक होगा।"

"मै सोना नही चाहता," लुकाश्का ने जवाव दिया।

रात अँधेरी थी, गर्म और शान्त। सितारे आकाश के केवल एक ओर ही चमक रहे थे। दूसरी ओर आसमान का अधिकाश एक वृहदाकार काले वादल से घिरा था जो पहाडो के शिखरो के आगे तक फैला हुआ था। वायु शान्त थी और वादल पहाड से सटा हुआ अपनी झुकी हुई कोरो को आगे वढाता तारो भरे आकाश में गहराई से उभर आया था। सामने की ओर खडा हुआ कज्ज़ाक तेरेक नदी और उसके पार तक का अन्दाज़ लगा सकता था। परन्तु पीछे नरकटो की कतारे थी जो दोनो ओर तक फैली हुई थी। प्राय अकारण ही नरकट हिलने और एक दूसरे से टकरा टकराकर विशेप प्रकार की आवाजें करने लगते। नीचे से देखने पर स्वच्छ आकाश की पृष्ठभूमि में नरकटो की हिलती हुई टहनियाँ वृक्षो की परदार शाखाओ की भाँति प्रतीत होती थी। लुकाश्का के पास ही नदी-तट था जहाँ तेज़ लहरे उठ रही थी। कुछ आगे वढकर चमकीला भूरा

जल घूम घूमकर हिलोरे ले रहा था और उठता-गिरता तथा संगीतात्मक ध्वनि उत्पन्न करता हुआ तट से टकरा रहा था। कुछ और आगे, जल का प्रवाह, तट और बादल तीनों ही अभेद्य अन्धकार में विलीन हो गये थे। पानी की सतह पर काली काली परछाइयाँ-सी दिखाई पड़ती जिनपर निगाह पड़ते ही कज्जाक की अनुभवी आँखें फौरन बता देतीं कि वे बड़े बड़े लट्ठे हैं जो प्रवाह के साथ बहते चले जा रहे हैं। यदा-कदा जब बिजली काले दर्पण की भाँति जल में चमकती तो दूसरी ओर का ढलवाँ किनारा दिखाई दे जाता। रात्रि की संगीतात्मक ध्वनियाँ, नरकटों की सरसराहट, कज्जाकों के खर्राटे, मच्छड़ों की भनभनाहट और जल की कलकल जब-तब दूर पर चलाई गई गोली से, अथवा किनारे की मिट्टी धसकने से हुई पानी की छलछलाहट से, अथवा किसी बड़ी मछली की छपाक से या जंगल में उगने वाली घनी झाड़ियों में से आती हुई किसी जानवर की खरखराहट से भंग हो जाती थी। एक बार तेरेक के किनारे किनारे एक उल्लू उड़ा, जिसके परों की फड़फड़ाहट कुछ इतनी क्रमबद्ध, कुछ इतनी नियमित थी कि उसमें संगीत-स्वरों के उतार चढ़ाव जैसा आनन्द आ रहा था। वह कज्जाकों के सिरों के ठीक ऊपर से घूमता हुआ जंगल की ओर उड़ा, फिर पर फटफटाकर एक पुराने सीधे पेड़ की ओर बढ़ा और देर तक पत्ता को खड़खड़ा चुकने के बाद एक शाख पर जम गया। पहरा देनेवाला कज्जाक इन सभी अप्रत्याशित ध्वनियों को ध्यानपूर्वक सुनता और कभी कभी चौकन्ना होकर बन्दूक पर हाथ रख लेता।

रात्रि का अधिकांश व्यतीत हो चला था। पश्चिम की ओर बढ़ने वाला काला बादल अब छट चुका था और स्वच्छ तारक-जटित आकाश निकल आया था। पर्वत शिखरों के ऊपर सुनहले चन्द्र की तिरछी कला प्रकाशमान होकर चमकने लगी थी। सर्दी भी बढ़ने लगी थी। नज़ारका जगा, कुछ बड़बड़ाया और फिर सो गया। लुकाश्का ऊब चुका था। अब वह

उठ खडा हुआ, उसने अपना छोटा चाकू निकाला और अपनी छडी नुकीली करने में लग गया। इस समय उसके मस्तिष्क में पहाडो पर रहनेवाले चेचेन ही घूम रहे थे। वह सोच रहा था उनके बहादुर बेटो के बारे में जो नदी पार करके इस ओर आते और जिन्हे कज्ज़ाको से कोई डर न लगता। कभी कभी उसके दिमाग में यह बात भी आ जाती कि कही चेचेन इसी समय तो किसी स्थान पर नदी नही पार कर रहे हैं। कई बार वह अपनी छिपने की जगह से बाहर निकला और उसने नदी के किनारे किनारे दूर तक निगाह डाली, परन्तु कुछ दिखाई न दिया। चाँदनी रात के कारण दूसरी ओर के किनारे तथा नदी के जल में कोई विशेष फर्क नही लग रहा था। और जब वह नदी अथवा उसके सामने वाले तट की ओर देखता तो उसका ध्यान चेचेनो की ओर नही अपितु इस बात की ओर जाता कि कब वक्त पूरा हो, कब वह अपने साथियो को जगाये और कब घर की राह ले। गाँव का विचार आते ही उसकी कल्पना दुन्या पर केन्द्रित हो गई। वह उसकी नन्ही-सी जान थी—कज्ज़ाक अपनी रखेलियो को इसी नाम से पुकारते थे। दुन्या का ख्याल आते ही उसे परेशानी-सी होने लगी। अब चाँदी-जैसा कोहरा पडने लगा था जो पानी के ऊपर शीशे की भाँति चमक रहा था। यह आनेवाले प्रभात का सूचक था। उससे थोडी ही दूर पर चीले चे-चे करती हुई पर फडफडा रही थी। अन्त में, दूर के गाँव से आती हुई मुर्गे की 'कुकड़ूँकूँ' उसके कान में पडी। उसके बाद दूसरे मुर्गे ने एक लबी बाँग दी और उसके उत्तर में अनेक बाँगें एक दूसरे के पश्चात् सुनाई देने लगी।

"उन्हे जगाने का वक्त हो चुका," लुकाश्का ने बन्दूक की नली साफ करते हुए सोचा। उसकी आँखें भारी हो रही थी। वह अपने साथियो की ओर मुडा और मुश्किल से यह समझ पाया था कि कौनसी टाँगें किसकी है कि उसे लगा मानो उसने तेरेक के दूसरी ओर से छपाक जैसी

कोई आवाज़ सुनी हो। उसने पहाड़ियों के उस पार क्षितिज की ओर देखा जहाँ चन्द्रिका के घूँघट मे ऊषा झाँकने लगी थी। उसने तेरेक के दूसरे तट पर भी निगाह दौड़ाई। अब धारा के सहारे सहारे बढ़नेवाला लट्ठा साफ़ दिखने लगा था। एक क्षण के लिए उसे ऐसा लगा कि मै बह रहा हूँ परन्तु लट्ठा ठहरा है। उसने फिर बाहर देखा। उसका ध्यान एक बड़े लट्ठे की ओर आकृष्ट हुआ जिससे एक शाखा निकली-सी लग रही थी। यह लट्ठा सीधे धारा के बीच में होकर एक विचित्र ढंग से बढ रहा था। न तो वह लुढकता-पुढकता था और न पानी में कोई चक्कर ही लगाता था। स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि वह धारा के साथ नही बढ रहा है अपितु छिछले पानी की दिशा में नदी पार कर रहा है। लुकाश्का ने गर्दन उठाई और लट्ठे पर दृष्टि जमा दी। लट्ठा छिछली तरफ बह रहा था। कभी वह रुकता और कभी विचित्र ढंग से आगे बढ़ने लगता। लुकाश्का को लगा जैसे उसने नीचे से निकला हुआ एक हाथ देखा हो।

"मान लो मै स्वय एक अब्रेक को मार गिराऊँ," उसने विचार किया, और तुरन्त ही अपनी बन्दूक उतारी, उसे एक लकड़ी के सहारे रखा और निशाना बाँधकर उसे तान दिया। उसकी उँगलियाँ बन्दूक के घोड़े पर थीं। वह साँस रोके सतर्कता से निशाना साध रहा था। उसकी आँखें अँधेरे में कुछ ढूँढ़ रही थीं।

"मै उन्हे नही जगाऊँगा," उसने सोचा। परन्तु उसका हृदय इतने ज़ोर से धड़कने लगा कि उसे घबड़ाहट होने लगी। उसके कान नदी की ओर लगे थे। सहसा लट्ठे ने डुबकी लगाई। अब वह धारा को काटता हुआ उसी की ओर बढ रहा था।

"मुझे चूकना नही चाहिए " उसने सोचा। उसे हल्की चाँदनी में तैरते हुए उस लट्ठे के सामने एक तातार का सिर दिखाई पड़ रहा था। उसने सीधे सिर पर निशाना बाँधा। सिर उसे बहुत नज़दीक लगा, उसकी

वन्दूक के ठीक दूसरे सिरे पर। उसने एक क्षण के लिए आँखें ऊपर उठाईं। "बिल्कुल ठीक, अब्रेक ही है!" वह प्रसन्न था। सहसा अपने घुटनो पर वैठकर वह फिर निशाना साधने लगा। अब निशाना उसकी वन्दूक के दूसरे सिरे पर सध चुका था। वह अपने लक्ष्य को अच्छी तरह देखता रहा। उसने आवाज़ लगाई "पिता और पुत्र के नाम"—उसने बचपन में सीखी हुई यह बात एक विचित्र कज्ज़ाकी ढंग से कही—और घोडा दवा दिया। एक क्षण के लिए नरकटो और जल दोनो ही में प्रकाश फैला और वन्दूक की आवाज़ नदी के पार बहुत दूर तक गूंज गई। अब लट्ठा इस ओर तैरकर आता हुआ नही लग रहा था। वह धारा के साथ लुढक-पुढक रहा था।

"पकडो, पकडो, मैं कहता हूँ!" अपनी वन्दूक ढूंढते तथा उस लट्ठे के नीचे से, जहाँ वह लेटा था, सिर उठाते हुए येरगुशोव चिल्लाया।

"वकवास वन्द कर, शैतान!" लुकाश्का दाँत पीसते हुए फुसफुसाया, "अब्रेक!"

"तुमने किसपर गोली चलाई, लुकाश्का? वह कौन था?" नज़ारका ने पूछा।

लुकाश्का मौन रहा। वह वन्दूक में गोलियाँ भर रहा था और तैरते हुए लट्ठे को देखता जा रहा था। थोडी दूर आगे वह एक रेतीले किनारे पर रुका और उसके पीछे से कोई बहुत वडी चीज़ निकलकर पानी में गिरती हुई दिखाई दी।

"तुमने किसपर गोली चलाई? वोलते क्यो नही?" कज्ज़ाको ने फिर पूछा।

"वह तो रहा है, अब्रेक!" लुकाश्का ने कहा।

"ऊल-जलूल मत वको! वन्दूक अपने आप तो नहीं दग़ गई?"

"मैंने एक अग्रेक मारा है, हाँ हाँ, अग्रेक मारा है!" पैरो पर उछलते हुए उत्तेजनापूर्ण आवाज़ में लुकाश्का ने कहा। "एक आदमी तैरता हुआ आ रहा था" उसने रेतीले किनारे की ओर इशारा करते हुए कहा, "मैंने उसे मार डाला। वहाँ देखो।"

"यही कहानी सुनानी रह गई थी!" आँखें मलते हुए येरगुशोव ने फिर पूछा।

"क्या? मैं कहता हूँ। वहाँ देखो!" लुकाश्का बोला और उसने येरगुशोव के कधो को इतनी जोर से झकझोरा और उसे इतनी ताकत से अपनी ओर खीचा कि बेचारा मिमियाने लगा।

उसने उधर देखा जिधर लुकाश्का ने इशारा किया था। मृत शरीर देखकर उसकी बोली के चढाव-उतार में भी अन्तर आ गया।

"अरे बाप रे! परन्तु अभी और भी बहुत से आयेंगे! विश्वास करो!" उसने धीरे से कहा और अपनी बन्दूक सभालने लगा।

"वह अवश्य एक स्काउट था और इसी ओर आ रहा था। मैं कहता हूँ या तो दूसरे लोग पहले से ही यहाँ है या उस ओर बहुत दूर नही है। मेरा विश्वास करो!"

लुकाश्का अपनी पेटी ढीली कर रहा था और अपना चेरकेसियन कोट उतारने जा रहा था।

"क्या कर रहे हो, बेवकूफ?" येरगुशोव चिल्लाया। "अगर यहाँ शेखी बघारी तो कुछ हाथ न लगेगा। शायद जान से भी हाथ धोना पडे और बेकार ही! मेरी बात मानो! अगर तुमने उसे मार ही डाला है तो वह भागेगा नही। मेरी बन्दूक के लिए कुछ बारूद तो देना? है या नहीं? नज़ारका! तुम घेरे को लौट जाओ। घबडाओ मत। परन्तु किनारे किनारे मत जाना वरना जान से हाथ धोना पडेगा, मेरा विश्वास करो।"

"अकेले जाने के लिए मैं ही रह गया हूँ क्या! खुद ही जाओ न!" गुस्से में आकर नज़ारका बोला।

लुकाश्का ने अपना कोट उतार दिया और किनारे की ओर जाने लगा।

"मै कहता हूँ वहाँ मत जाओ!" बन्दूक ठीक करते हुए येरगुशोव बोला, "देखो वह हिल-डुल नही रहा है। मै देख सकता हूँ। यह सुबह का वक्त है। जब तक लोग घेरे से नही आ जाते तब तक यही इन्तज़ार करो। तुम लौट जाओ नजारका! तुम डर गये हो। डरने की कोई बात नही, मै कहता हूँ।"

"लुका, भाई लुकाश्का! मुझे बताओ तुमने यह सब कसे किया, कैसे किया?" नज़ारका ने पूछा।

लुकाश्का ने पानी में घुसने का अपना इरादा बदल दिया।

"तुम लोग तुरन्त घेरे में जाओ। यहाँ की निगरानी मै रखूंगा। कज्ज़ाको से कहना कि सहायता के लिए कुछ लोगो को फौरन भेजें। अगर अब्रेक इस तरफ है तो उन्हे पकडना होगा।"

"यही तो मैं भी कह रहा हूँ। वे भाग जायेंगे," येरगुशोव ने उठते हुए कहा, "उन्हे ज़रूर पकडना चाहिए!"

येरगूशोव और नज़ारका उठ खडे हुए और सलीब का निशान बनाकर घेरे के लिए चलने को तैयार हो गये, नदी के किनारे किनारे नही वरन् झाड-झखाडो से होते हुए जगल के एक रास्ते से।

"ध्यान रहे, लुकाश्का, यहाँ से हिलना-डुलना मत। वे यहाँ तुम्हे चोट पहुँचा सकते है। इसलिए ज़रा सावधानी से देखभाल रखना!" जाते हुए येरगुशोव बोला।

"तुम जाओ, मै सब समझता हूँ," लुकाश्का बडबडाया और अपनी बन्दूक की देखभाल कर चुकने के बाद फिर लट्ठे के पीछे दुबक रहा।

लुकाश्का अकेला रह गया था। वह नदी की छिछली ओर देखता रहा और उसके कान कज्जाकों की आहट की तरफ लगे रहे। परन्तु घेरा कुछ दूर था और उसके संयम के बाँध टूट रहे थे। वह यही सोचता रहा कि अब वे दूसरे अब्रेक, जो मेरी गोली से मारे गए आदमी के साथ थे, जरूर भाग जायेंगे। उसे भागनेवाले अब्रेकों पर वैसा ही गुस्सा आ रहा था जैसा कि कल शाम उस सुअर पर आया था जो हाथ से निकल गया था। उसने चारों तरफ और सामने किनारे की ओर देखा। प्रत्येक क्षण उसे किसी न किसी व्यक्ति के दिखाई पड़ जाने की आशा बंधती और वह अपनी बन्दूक पर हाथ रख देता और लगता जैसे गोली चला देगा। यह विचार तो कभी उसके दिमाग में भी न आया कि स्वयं वह भी गोली का निशाना बन सकता है।

६

प्रकाश बढ़ रहा था। अब चेचेन का मृत शरीर छिछले जल में उतराता हुआ साफ दिखाई पड़ रहा था। सहसा समीप से सरकंडों में सरसराहट सुनाई दी। लुका ने किसी की पगध्वनि सुनी और उसे सरकंडों की पत्तियाँ हिलती-डुलती दिखने लगीं। उसने अपनी बन्दूक पर हाथ रखा और बुदबुदा उठा "पिता और पुत्र के नाम"। और गोली छूट गई। पैरों की आवाज शान्त हो गई।

"अरे भाई कज्जाकों! अपने ही चचा को तो न मारो।" एक शान्त और गहरी आवाज लुकाश्का के कानों में पड़ी और सरकंडों को हटाते हटाते चचा येरोश्का बरामद हो गया।

"मैंने तो तुम्हें मार ही डाला था चचा। भगवान कसम मार डाला था!" लुकाश्का बोला।

"तुमने किसपर गोली चलाई थी ?" बढे ने प्रश्न किया। उसकी मेघ-गम्भीर आवाज़ जगलो में और नदी के उस पार तक व्याप्त हो गई। ऐसा लग रहा था कि रात्रि की नीरवता सहसा भग हो गई है और प्रत्येक वस्तु साफ नजर आने लगी है।

"चचा, वहाँ तुमने कुछ नही देखा। मैंने एक जानवर मारा है," लुकाश्का ने उठते और बन्दूक का घोडा हाथ से छोडते हुए कहा।

वृढा लाश की तरफ घूर रहा था। लाश अब साफ साफ दिखाई पड रही थी। तेरेक का जल उसे चारो ओर से लपेटे हुए था।

"वह अपनी पीठ पर लट्ठा लिये तैर रहा था। मैंने उसे देख लिया और फिर वहाँ देखो। वह नीला पतलून पहने है, बन्दूक लिये है, मैं समझता हूँ क्या तुम देख रहे हो ?" लुका बोला।

"बेशक देख रहा हूँ!" बूढे ने क्रोध में आकर कहा और उसका मुंह गम्भीर और कर्कश हो गया, "तुमने एक जिगीत को मार डाला है," उसने खेद से कहा।

"मैं यहाँ बैठा था कि सहसा मुझे दूसरी ओर कोई काली काली चीज़ दिखाई दी। जब वह वही पर थी तभी मैंने उसे देख लिया था। साफ समझ मे आ रहा था कि कोई आदमी आया और नदी में कूदा। 'विचित्र बात है,' मैंने सोचा। और तभी एक अच्छा-खासा बडा-सा लट्ठा तैरता हुआ आता है, धारा के साथ नही वरन् उसे काटता हुआ। और मैं क्या देखता हूँ कि उसके नीचे से एक सिर झाँक रहा है। बडी विचित्र बात है! मैंने नरकटो में से बाहर की ओर देखा। मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया। तब मैं उठ खडा हुआ—उस बदमाश ने मेरी आहट जरूर सुनी होगी—वह छिछले में गया और वहाँ से देखने लगा। जैसे ही उसने ज़मीन पर पाव रखा और चारो ओर निगाह डाली कि मैंने मन ही मन कहा 'नही, बच्चू, तुम बच कर नही निकल सकते! भाग भी नही सकते!

(और मुझे ऐसा लगा मानो मेरा दम घुटा जा रहा है!) मैंने अपनी बन्दूक़ सभाली परन्तु मैं हिला-डुला नहीं, बस बाहर की तरफ देखता रहा। उसने कुछ देर प्रतीक्षा की और फिर तैरने लगा और जब वह चांदनी की तरफ आया तो मैं उसकी पूरी पीठ देख रहा था। 'पिता और पुत्र तथा पवित्र आत्मा के नाम में' और धुएँ में से मैंने देखा कि वह तड़प रहा था। वह कराहा था, कम से कम मुझे ऐसा ही लग रहा था। 'ओफ', मैंने सोचा, शुक्र है भगवान का। मैंने उसे मार डाला!' और जब वह रेतीले तट की ओर बह रहा था उस समय मैंने उसे साफ साफ देखा। उसने उठने की कोशिश की परन्तु उठ न सका। थोडी देर तक वह तड़पा और फिर शान्त हो गया। मैंने सब कुछ देखा। देखो वह हिल-डुल नहीं रहा है। वह ज़रूर मर गया होगा। बाकी लोग घेरे तक जा चुके हैं इस ख्याल से कि दूसरे अब्रेक भाग न जायें!"

"इस प्रकार तुम उन्हें नहीं पकड़ सकोगे," बूढे ने कहा, "मेरे बच्चे! अब वे तुमसे बहुत दूर जा चुके हैं, बहुत दूर " और फिर जैसे उदास होकर उसने अपना सिर हिलाया।

इसी समय उन्हें टूटती हुई झाड़ियों और कज्जाकों की तेज़ आवाज़ें सुनाई दीं। ये लोग नदी के किनारे किनारे घोडों पर या पैदल आ रहे थे।

"तुम लोग नाव लाये?" लुकाश्का चिल्लाया।

"कितने बहादुर हो लुका। आओ किनारे चलें!" एक कज्जाक चिल्लाया।

नाव की प्रतीक्षा किये बिना लुकाश्का कपड़े उतारने लगा। वह अपने शिकार की ओर देखता जा रहा था।

"ज़रा ठहरो। नज़ारका नाव ला रहा है!" कार्पोरल चिल्लाया।

"अरे बेवकूफ! कौन जाने वह जिन्दा ही हो और बन रहा

हो। अपने साथ कटार ले लो!" दूसरा कज्ज़ाक तेज़ आवाज़ में चिल्लाया।

"बको मत!" लुका चीख पडा। उसने अपना पतलून तथा बाकी कपडे उतार डाले और सलीब का निशान बनाकर छलाँग मारते हुए नदी में कूद पडा। वह दोनो हाथो से पानी हटाता और तैरता हुआ आगे बढने लगा। कभी कभी वह गहरी साँस लेता और फिर तैरना आरम्भ कर देता। वह तेरेक के प्रवाह को काटता हुआ छिछले की ओर बढ रहा था। कज्ज़ाको की भीड किनारे पर जमा थी और वे सब ज़ोर जोर से बाते कर रहे थे। तीन घुडसवार गश्त लगा रहे थे। इस समय तक मोड पर आती हुई नाव दिखाई पडने लगी थी। लुकाश्का रेतीले तट पर खडा होकर अब्रेक के शरीर पर झुक गया। फिर उसने उसे दो बार हिलाया-डुलाया और तेज़ आवाज़ में कहने लगा "मर चुका है!"

चेचेन के सिर में गोली लगी थी। वह नीला पतलून, एक कमीज़ तथा एक चेरकेसियन कोट पहने था और उसकी कमर में एक बन्दूक, और एक कटार बधी थी। इन सबके अतिरिक्त उसी कमर में एक बडी-सी शाख भी बधी थी जिसे देखकर पहले पहले लुकाश्का को भ्रम हुआ था।

"कितना बडा शिकार मारा है!" एक कज्ज़ाक चिल्लाया। मृत शरीर नाव में से हटाया गया और उसे घास पर नदी के किनारे रख दिया गया। सारे कज्जाक घेरा बनाये लाश के चारो ओर खडे तमाशा देख रहे थे।

"कितना पीला पड गया है वह!" दूसरा बोला।

"हमारे अन्य साथी कहाँ कहाँ ढूँढने गये है? मै समझता हूँ बाकी लोग दूसरे किनारे पर होगे। यदि यह स्काउट न होता तो इस प्रकार तैरकर न चला आता। अकेले तैरकर आने का और क्या मतलब था?" तीसरे कज्जाक ने कहा।

"दूसरों से पहले अपनी जान जोखिम में डालनेवाला यही एक बहादुर निकला, एक सच्चा जिगीत," किनारे पर सर्दी के कारण काँपते तथा गीले कपड़ों को निचोड़ते हुए लुकाश्का ने व्यंग्य किया, "उसकी दाढ़ी रंगी हुई है और कटी हुई भी।"

"उसने अपना कोट एक थैले में टाँग रखा था ताकि उसे तैरने में कठिनाई न हो," किसी ने कहा।

"लुकाश्का, यहाँ देखो," कारपोरल ने कहा। उसने मृत व्यक्ति की कटार और बन्दूक अपने हाथ में ले ली थी।

"कटार अपने पास रख लो और कोट भी। परन्तु मैं तुम्हें बन्दूक के लिए चाँदी के तीन रूबल दूँगा। तुम खुद देखो बैरेल कोई खास अच्छा तो है नहीं," नली में फूँक मारते हुए वह बोला, "मैं तो इसे केवल स्मृति-चिन्ह के रूप में चाहता हूँ।"

लुकाश्का ने कोई उत्तर न दिया। इस प्रकार की याचना से उसे क्रोध हो आया था परन्तु वह जानता था कि उसे करना वही होगा जो कारपोरल चाहता था।

"शैतान कहीं का," गुस्से से चेचेन का कोट एक ओर फेंकते हुए वह बोला, "अगर कोट ही होता तो कम से कम ढंग का तो होता। यह तो चिथड़ा है, चिथड़ा।"

"इस समय लकड़ी का इन्तजाम पहले होना चाहिए," एक कज्जाक ने कहा।

"मोसेव, मैं घर जाऊँगा," लुकाश्का ने कहा। वह अपनी परेशानी भूल चुका था और चाहता था कि अधिकारी को तोहफा देने के बदले में उससे कुछ तो लाभ उठाये।

"बहुत ठीक, तुम जा सकते हो।"

"लाश घेरे से ले जाओ, छोकरो," बन्दूक की जाँच-पड़ताल करते हुए कारपोरल बोला, "और धूप से बचाये रखने के लिए उसपर

साये का कोई इन्तजाम जरूर कर देना। हो सकता है उसकी वापसी के लिए पहाड़ो से कोई मोटी रकम भेजी जाय।"

"इस समय गर्मी नही है," किसी ने कहा।

"अगर कोई सियार उसे खा भी जाय तो भी क्या? वोलो, ठीक कहता हूँ न?" दूसरे कज्ज़ाक ने कहा।

"हम सव उसपर निगरानी रखेंगे। उसे नुचवा डालना ठीक नही। मान लो वे लोग उसे खरीदने ही आ जाय।"

"खैर, लुकाश्का, तुम्हारी क्या राय है? तुम्हे इस खुशी में अपने साथियो को डटकर शराव पिलानी चाहिए," कारपोरल बोला। वह प्रसन्न था।

"वेशक! कायदा तो यही है," कज्ज़ाक एक स्वर से बोले, "तुम्ही देखो कैसी सिकन्दर तकदीर लेकर आये हो। अभी मूँछें तक तो मसियाई नही और शिकार कर मारा अब्रेक का।"

"लो कटार और कोट दोनो ही खरीद लो। लालची मत वनो। मैं पतलून भी दे दूंगा, वस," लुकाश्का ने कहा, "पतलून मुझे वहुत तग होती है। सीक-मलाई जैसा तो आदमी था।"

एक ने एक रूबल में कोट और दूसरे ने शराव की दो बालटियो में कटार खरीद ली।

"दोस्तो, पियो! मैं तुम्हे पूरी एक वालटी पिलाऊँगा और तुम्हारे लिए गाँव से खरीद कर लाऊँगा," लुकाश्का बोला।

"और पतलून काटकर लौंडियो के लिए रूमाल वनाऊँगा," नज़ारका ने चोट की।

कज्ज़ाक हँस पडे।

"हँसी-मजाक हो चुका," कारपोरल वोला, "अव लाश ले जाओ। क्या तुम इस निकम्मी चीज़ को झोपडी के पास रखने जा रहे हो?"

"खड़े खड़े मुंह क्या ताक रहे हो? ले भी जाओ, मेरे मिट्टी के शेरो!" लुकाश्का ने आज्ञा-सी देते हुए कज्ज़ाकों से कहा। उन्होंने अनिच्छा से लाश उठाई और उसका उसी प्रकार हुक्म माना मानो वही उनका अफसर हो। थोड़ी दूर तक लाश घसीट चुकने के पश्चात् उन्होंने उसकी टांगें ज़मीन में गिरा दीं। अब कज्ज़ाक उसे छोड़कर अलग खड़े हो गये। नज़ारका बढ़ा और उसने लाश का एक ओर लुढ़का हुआ सिर सीधा कर दिया। उसके सिर का घाव तथा चेहरा साफ दिख रहा था।

"देखो तो गोली माथा पार करती हुई कैसी साफ निकल गई है। लाश बिगड़ेगी नहीं। उसके हकदार उसे देखते ही पहचान लेंगे," उसने कहा।

किसी ने कोई उत्तर न दिया। कज्ज़ाक एक बार फिर मौन हो गये।

अब सूर्य काफी चढ़ आया था। उसकी किरणें ओस में डूबी हुई हरियाली पर बिखर रही थीं। पास ही के जंगल में तेरेक कलकल करती हुई बह रही थी, पक्षी परस्पर किलोलें करते हुए प्रातःकाल का स्वागत कर रहे थे। कज्ज़ाक लाश को चारों ओर से घेरे शान्त और मौन खड़े उसकी ओर ताक रहे थे। लाश का रंग भूरा था। शरीर पर उस गीले नीले पतलून के अलावा और कुछ न था जो दुबले-पतले पेट पर कमरबन्द से बंधी थी। आदमी सुन्दर और सुगठ था। उसकी भरी-पूरी भुजाएं शिथिल पड़ गई थीं। ऐसा लग रहा था कि सिर अभी हाल ही में मुंडाया गया है। सिर के एक ओर घाव था जो अब सूख चुका था। उसका चिकना और लाल माथा हाल के मुंडे सिर के नीचे भाग की तुलना में दूसरा ही प्रतीत हो रहा था। उसकी आंखें पथरा चुकी थीं और जड़वत् पुतलियां ऐसी लग रही थीं मानो

टकटकी लगाकर सभी कुछ देख रही हो। लाल और मुँडी हुई मूछो के नीचे सुन्दर ओठ थे जो हँसी की मुद्रा में एक ओर से दूसरी ओर तक खिच गये थे। पतली कलाइयो पर छोटे छोटे लाल वाल दिखाई पड रहे थे, उगलियाँ एक ओर मुडी थी और नाखून लाल रग में रँगे थे।

लुकाश्का ने अभी तक कपडे नही पहने थे। वह भीगा खडा था। उसकी गरदन लाल थी और आँखो में पहले से अधिक चमक थी। उसके चौडे चौडे गालो में कम्पन हो रहा था और हृष्ट-पुष्ट शरीर से क्वचित् दृश्यमान धूम उठकर प्रातकालीन नव समीर से मिल रहा था।

"वह भी आदमी था!" प्रत्यक्षत लाश की प्रशसा करते हुए वह वोला।

"जी हाँ, यदि तुम उसके हत्थे पट जाते तो वह ज़रा भी दया न करता," एक कज्ज़ाक वोल उठा।

अव कज्जाको का मौन टूट रहा था। वे शोर मचाने तथा परस्पर वातचीत करने में लग गये। दो तो सायवान वनाने के लिए लकडी काटने चले गये और वाकी घेरे की तरफ खिसक आये। लुकाश्का तथा नज़ारका गाँव जाने की तैयारी करने के लिए भागे।

आधे घटे वाद लुकाश्का और नज़ारका घर की ओर चल पडे। रास्ते में उनकी वाते खत्म होने ही न आ रही थी। वे गाँव और तेरेक के वीच के जगल मे होकर प्राय दौडे चले जा रहे थे।

"अच्छी तरह समझ लो। उसे यह न वताना कि मैंने तुम्हे भेजा है। सिर्फ वहाँ जाओ और पता चलाओ कि उसका पति घर पर है या नही।" लुकाश्का अपनी तीखी आवाज़ में कहता जा रहा था।

"और मैं यामका भी जाऊँगा," नजारका बोला, "वहाँ रगरलियाँ रहेंगी? कहो ठीक है न?"

"अगर आज भी आनन्द न मनाया तो क्या आकबत मे मनायेंगे?" लुकाश्का ने उत्तर दिया।

गाँव पहुँचकर उन्होंने इतनी पी कि शाम तक धुत्त पडे रहे।

१०

ऊपर जिन घटनाओं का वर्णन किया गया है उनसे तीसरे दिन काकेशियाई सेना के दो दस्ते नवोमलिन्स्काया के कज्जाक गाँव में आये। घोड़ो की जीनें उतार दी गई और दस्तो की गाडियां एक चौक में खडी कर दी गई। रसोइयो ने जमीन में एक बडा-सा गड्ढा खोदकर एक चूल्हा बना लिया और कुछ अहातो से (जहाँ ढेरो ईंधन जमाकर लिया गया था) लकडियाँ बटोर बटोरकर उनमें आग लगा दी। अब वे भोजन पकाने में जुट हुए थे। सारजेंट हाजिरी ले रहे थे। सेवा-दल के लोग घोडे बाँधने के लिए खूटे गाड रहे थे और क्वार्टरमास्टर सडकों पर इस आजादी से घूम रहे थे जैसे अपने घर में हो। वे अधिकारियो और सैनिको को उनके क्वार्टर दिखा रहे थे।

एक पंक्ति में गोले-बारूद के हरे हरे सन्दूक रखे थे। वहीं दस्तो की गाडियाँ तथा घोडे थे और पास ही बडी बडी कडाहियो में दलिया पक रहा था। वहाँ एक कप्तान, एक लेफ्टीनेन्ट और एक सारजेंट-मेजर, ओनिसिम मिखाइलोविच, था। और चूंकि यह सब एक कज्जाक गाव मे हो रहा था, जहाँ, जैसी कि सूचना मिली थी, दस्ते के सैनिकों को अपने अपने क्वार्टरो में रहने के आदेश मिल चुके थे, इसीलिए सभी को ऐसा लग रहा था मानो वे अपने अपने घरो मे हो।

थी, ईश्वर जाने कितने पीछे। पुराना जीवन समाप्त हो चुका था और नये का आरम्भ हो गया था। इस नये जीवन मे अभी तक कोई खामियाँ न आई थी। यहाँ नये नये व्यक्तियो के बीच, एक नये व्यक्ति के रूप मे, वह नई और अच्छी ख्याति पैदा कर सकता था। वह यौवनोन्मत्त तथा विवेकहीन जीवनोल्लास के प्रति जागरूक था। वह खिडकी के बाहर कभी उन लडको की ओर देखता जो मकान के साये मे लट्टू नचाते और कभी अपने छोटे-से घर के चारो ओर, और सोचता कि मैं इस नये कज्जाक गाँव में प्रसन्नतापूर्वक रह सकूँगा, रहूँगा और यहाँ का जीवन अपनाऊँगा। कभी वह पहाडो की ओर देखता, कभी आसमान की ओर। प्रकृति के इस अपूर्व सौन्दर्य का पान करने के साथ ही साथ वह अपने सस्मरणो तथा स्वप्नो का भी मानसिक साक्षात्कार कर लेता। उसका नव जीवन आरम्भ हो चुका था उस तरह से नही जैसा कि उसने मास्को छोडते समय सोच रखा था परन्तु उससे भी कही अच्छी तरह जिसकी उसे आशा भी न थी। पहाड पहाड पहाड। उस समय पहाड ही उसके समस्त विचारो तथा उसकी अनुभूतियो के केन्द्र बने हुए थे।

"उन्होने अपना कुत्ता चूम लिया और सुराही चाट ली। चचा येरोश्का ने अपना कुत्ता चूम लिया, कुत्ता चूम लिया!" सहसा खिडकी के नीचे लट्टू नचाते हुए कज्जाको के बच्चे सडक की ओर देख कर चिल्लाने लगे। "उन्होने कुत्ता चूमा और कटार बेचकर शराब पी गये, शराब पी गये!" एक साथ इकट्ठे होकर और साथ ही पीछे हटकर बच्चे जोरो का शोर मचाने लगे।

शोर इसलिए मच रहा था कि उन्होने चचा येरोश्का को देख लिया था। चचा कन्धे पर बन्दूक रखे और कमर में कुछ तीतर लटकाये शिकार से घर लौट रहा था।

"गलती हो गई, भाई अब रहने भी दो!" तेजी से हाथ झुलाते और सडक के दोनो ओर की खिडकियो पर निगाह डालते हुए बूढा बोला,

"मैंने कुत्ते को शराब पीने छोड़ दिया था, बस यही गलती की थी," उसने कहा। वह परेशान दिखाई पड़ रहा था, परन्तु बाहर से ऐसा बन रहा था मानो उसे कोई चिन्ता ही न हो।

लड़के बूढ़े शिकारी से जैसा व्यवहार कर रहे थे उसे देखकर ओलेनिन को आश्चर्य हो रहा था। परन्तु वह चचा येरोश्का के बुद्धि-प्रखर चेहरे और शक्तिशाली शरीर को देखकर बड़ा प्रभावित हुआ।

"अरे चचा इधर, भाई कज्जाक इधर!" ओलेनिन बोल उठा, "जरा इधर आ जाइये न, चचा, इधर, इधर।"

बूढ़े ने खिड़की की ओर देखा और रुक गया।

"नमस्ते, दोस्त," नफाचट्ट खोपड़ी पर से टोप उठाते हुए उसने कहा।

"नमस्ते, मेरे अच्छे दोस्त," ओलेनिन ने उत्तर दिया, "ये बच्चे आप को देखकर शोर क्यों मचा रहे हैं?"

चचा येरोश्का खिड़की तक पहुँच चुका था। 'वे एक बूढ़े को तंग कर रहे हैं। बस। कोई बात नहीं। मुझे यह सब अच्छा लगता है। करने दो वे अपने बूढ़े चचा को तंग। आखिर बच्चे ही हैं न," चचा की आवाज़ में कुछ ऐसा संगीतात्मक उतार-चढ़ाव और आकर्षण था जो प्रायः बड़े-बूढ़ों की बातों में रहता है। "क्या तुम दस्तों के कमाण्डर हो?" उसने सवाल किया।

"नहीं, सिर्फ कैडेट हूँ। आपने ये तीतर कहाँ मारे?" ओलेनिन ने पूछा।

"ये तीन मैंने जंगलों में मारे हैं," बूढ़े चचा ने जवाब दिया और तीतर दिखाने के लिए घूमकर पीठ खिड़की के सामने कर दी। तीतर पीठ से लटके थे। उनके मुँह उसकी पेटी में फँसे थे। चचा के कोट पर कई जगह तीतरों के खून के धब्बे भी पड़े थे।

"क्या तुमने इन्हे कभी नही देखा ?" चचा ने पूछा, "अगर चाहो तो दो-एक ले लो। हाँ, हाँ, ये रहे," और उसने दो तीतर खिड़की की तरफ बढा दिये। "आप शिकारी है ?" उसने प्रश्न किया।

"ज़रूर। मोर्चे के वक्त मैंने चार मारे थे।"

"चार! ये तो बहुत हुए!" बूढे ने व्यग्य किया, "तुम्हे पीने-पिलाने का भी शौक है? चिखीर पीते हो ?"

"क्यो नही? मुझे शराब अच्छी लगती है।"

"अरे, कितने अच्छे हो तुम। हम कुनक* है–तुम और मैं, मै और तुम," चचा येरोश्का बोला।

"चले आइये," ओलेनिन ने कहा, "चिखीर ढलेगी।"

"मै, खैर पी लूंगा," बूढे ने कहा, "परन्तु ये तीतर थामो।" बूढे के चेहरे से लग रहा था कि आदमी उसे पसन्द है। उसे तुरन्त मालूम हो गया कि यहाँ उसे मुफ्त की पीने को मिल सकती है, और तीतर की जोड़ी देना बेकार न होगा।

शीघ्र ही येरोश्का घर में दाखिल हो गया, और तब ओलेनिन ने निकट से देखा कि इस व्यक्ति का आकार कितना विशाल, शरीर की बनावट कितनी गठी हुई और चौडी सफद दाढी वाले उसके मुगई चेहरे पर उम्र और श्रम की रेखाएँ कितनी गहरी खिची हुई है। उसके पैरो, भुजाओ और कन्धो की मासपेशियाँ उसकी वृद्धावस्था को देखते हुए अधिक भरी-पूरी और हृष्ट-पुष्ट थी। उसके सिर पर, थोडे थोडे घुटे हुए बालो के नीचे गहरे निशान थे। उसकी गझी हुई और पुष्ट गर्दन मे बैलो जैसी झुर्रियाँ थी जो एक दूसरे को

---

* शपथ लेकर बनाया गया मित्र जिसके लिए कोई भी त्याग बहुत बडा नही समझा जाता–अनु०

काटती हुई दिखाई पड़ती थी। उसके सींग जैसे हाथों में इधर-उधर खरोंचें और हल्की चोटें-सी लगी थीं। आराम के साथ उसने देहलीज पार की, बन्दूक उतारी, उसे एक कोने में खड़ा किया, कमरे के चारों ओर एक सरसरी निगाह डाली, मन ही मन यह अन्दाज लगाया कि इस घर में कितने मूल्य का सामान होगा और फिर कच्चे चमड़े वाली अपनी मामूली-सी चप्पल पहने कमरे के बीचोबीच आ गया। उसके आते ही एक तेज किस्म की शराब, चिखीर, कुछ बारूद और कुछ जमे हुए खून की गन्ध भी कमरे भर में फैल गई।

चचा येरोश्का देव-प्रतिमा की ओर देखकर झुक गया, उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा और फिर अपना भरा-पूरा और भूरा हाथ फैला दिया। "कोशकिल्दी," वह बोला, "नमस्ते के लिए तातारी में यही कहते हैं—'शान्ति लाभ करो', उनकी भाषा में इसका यही अर्थ है।"

"कोशकिल्दी! मैं जानता हूँ," ओलेनिन ने हाथ मिलाते हुए जवाब दिया।

"नहीं, तुम नहीं जानते! तुम ठीक तरीका नहीं जानते, नासमझ हो।" तिरस्कार सूचक ढंग से खोपड़ी नचाते हुए चचा बोला, "अगर कोई तुमसे 'कोशकिल्दी' कहे तो तुम्हें जवाब देना चाहिए 'अल्लाह रजी बो सुन' यानी 'ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे'। यह तरीका है, 'कोशकिल्दी' भर कह देना काफी नहीं। परन्तु मैं तुम्हें यह सब सिखाऊँगा। हमारा एक दोस्त था, ईल्या मोसेइच। वह एक रूसी था। वह और मैं कुनक थे। क्या शानदार आदमी था—शराबी, चोर, शिकारी। और शिकारी भी कैसा! मैंने उसे सब कुछ सिखाया था।"

"और मुझे क्या क्या सिखाओगे चचा?" ओलेनिन ने पूछा। वह इस बूढ़े में अधिक से अधिक दिलचस्पी दिखा रहा था।

"मैं तुम्हे शिकार पर ले चलूंगा। तुम्हे मछली मारना सिखाऊँगा, चेचेनो को दिखाऊँगा और अगर कहोगे तो तुम्हारे लिए एक लडकी भी ढूंढ दूंगा। मै तो इसी तरह का आदमी हूँ – मसखरा, हँसोड।" और बूढा हँस पडा, "मै बैठूंगा। थक गया हूँ। करगा?" उसने उत्सुकता से कहा।

"यह 'करगा' क्या बला है?" ओलेनिन ने प्रश्न किया।

"क्यो जार्जियाई भापा में इसका मतलब है 'बहुत ठीक'। पर मै इसी तरह से कहता हूँ, कुछ जबान पर ही चढ गया है – करगा, करगा। मै ऐसे ही कहता हूँ, मज़ाक में! खैर, दोस्त! चिखीर के लिए आर्डर नही दोगे क्या? तुम्हारे पास तो अर्दली होगा, नही है? अरे, इवान!" बूढे ने पुकारा, "तुम्हारे सभी सैनिक इवान है! तुम्हारा अर्दली भी इवान है?"

"ठीक कहते हो उसका नाम है इवान – वन्यूशा*। वन्यूशा! हमारी मालकिन से थोडी चिखीर तो माँग लाना।

"इवान या वन्यूशा, एक ही बात है। तुम्हारे सारे सैनिक इवान ही क्यो है? इवान!" बूढा बोला, "तुम उनसे कहो कि वे तुम्हे उस पीपे में से शराब दें जो उन्होने अभी अभी खोला है। गाँव में उनके पास सबसे अच्छी चिखीर है। लेकिन उसके लिए तीस कोपेक से ज्यादा मत देना, समझे, क्योकि इतने से ही बुढिया बहुत खुश हो जायगी हमारे लोग भी कैसे बेवकूफ है, कैसे खर दिमाग!" चचा येरोश्का ने वन्यूशा के चले जाने के बाद चुपके से फिर कहना शुरु किया, "वे तुम्हे आदमी की तरह भी नही समझते, उनकी निगाह मे तुम तातार मे भी गये-बीते हो। 'दुनियावी रूसी' वे तुम लोगो को ऐसा कहते है। लेकिन जहाँ तक मेरी बात है हालाकि

---

* वन्यूशा – इवान का संक्षिप्त रूप है।

तुम सैनिक हो फिर भी मैं तुम्हें आदमी समझता हूँ। तुम्हारे दिल तो है, आत्मा तो है। है न? उल्या सोमेड्च एक सैनिक था परन्तु आदमियों में हीरा था। दोस्त, मैं ठीक कह रहा हूँ? यही वजह है कि यहाँ के लोग मुझे नहीं चाहते। मगर मुझे उनकी चिन्ता नहीं। मैं हँसोड़-फक्कड़ आदमी ठहरा। मुझे सभी अच्छे लगते हैं। मैं येरोश्का हूँ येरोश्का, मेरे दोस्त।"

और बूढ़े कज्ज़ाक ने बड़े प्रेम से युवक की पीठ थपथपाई।

१२

इस समय तक वन्यूशा ने घर का काम-काज पूरा कर लिया था, वह कम्पनी के नाई से हजामत बनवा चुका था और अपने ऊँचे बूटों में से पतलून निकाल चुका था—इसके माने थे कि कम्पनी के लोग आरामदेह मकानों में रह रहे हैं। इस समय वह बहुत खुश था। उसने येरोश्का को बड़े ध्यान से देखा, वैसे नहीं जैसे किसी दयालु धर्मात्मा को देखा जाता है परन्तु ऐसे जैसे पहले-पहल किसी जंगली जानवर को देखा जाता है। उसने उस फर्श को देखकर अपना सिर हिलाया जिसे बूढ़ा गन्दा कर चुका था, बेंच के नीचे से दो बोतलें उठाई और मालकिन के पास चल दिया।

"नमस्ते, मेहरबान दोस्तो," उसने बात आरम्भ की। उसने निश्चय कर लिया था कि वह विनम्र रहेगा, "मेरे मालिक ने मुझे आपके पास कुछ चिखीर लेने भेजा है। देंगे न भोली-सी?"

बूढ़ी ने कोई उत्तर न दिया। एक लड़की ने चुपचाप वन्यूशा की ओर देखा। वह एक तातारी दर्पण के सामने अपने सिर पर रूमाल लपेट रही थी।

"दोस्तो, मैं इसके लिए पैसा दूंगा!" जेब में कोपेक खनखनाता हुआ वन्यूशा बोला, "हम पर मेहरबानी करो, और हम भी तुम पर मेहरबानी करेंगे।"

"कितनी चाहिए?" बूढी ने रुखाई से पूछा।

"एक गैलन।"

"जाओ और इनके लिए थोडी शराब खीच दो। उसी बर्तन में से उडेल लेना जिसमें वह अब तक थोडी बहुत बन चुकी होगी, मेरी लाडली," श्रीमती उलित्का ने अपनी पुत्री से कहा।

लडकी ने चाबियाँ और नितारनी उठाई और वन्यूशा के साथ घर से बाहर निकल गई।

"चचा, ज़रा यह तो बताना कि यह लडकी है कौन?" ओलेनिन ने खिडकी से होकर गुज़रती हुई मर्यान्का की तरफ इशारा करते हुए चचा येरोश्का से पूछा। चचा ने आँख मारते हुए उसे अपनी कोहनी मे कोचा।

"तनिक ठहरो," उसने कहा और खिडकी के बाहर निकल गया, "अह-हाह!" वह खाँसा और फिर कहना शुरु कर दिया, "मर्यान्का, प्यारी मर्यान्का, मेरी जान, क्या मुझे प्यार न करोगी? मैं जोकर हूँ, जोकर!" अन्तिम शब्द उसने फुसफुसाते हुए ओलेनिन से कहे थे।

बिना सिर इधर-उधर मोडे और अपने हाथो को बराबर तेज़ी से झुलाती हुई वह खिडकी मे होकर निकल गई। उसमें कज़्ज़ाक महिलाओ जैसी दृढता थी। फिर उसने धीरे धीरे आँखें बूढे की तरफ फेरी।

"मुझसे प्यार करो तो खुश हो जाओगी, मेरी जान!" येरोश्का चिल्लाया। उसने ओलेनिन को आँख मारी और उसकी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि मे देखा। "मैं भी कितने गज़ब का आदमी हूँ! जोकर जो हूँ।" उसने कहा। "वह तो डके की चोट रानी है, रानी।"

"वह सुन्दर है," ओलेनिन बोला, "उसे किसी तरह यहाँ बुलाओ न!"

"नहीं, नहीं," बूढ़े ने कहा, "उसका लुकाश्का से ब्याह होनेवाला है। वह एक अच्छा कज़्ज़ाक है और बहादुर भी। अभी उसी दिन उसने एक अब्रेक को ढेर किया है। मैं तुम्हारे लिए इससे भी अच्छी लड़की ढूंढ दूंगा। ऐसी लड़की बताऊँगा जो रेशम और रूपे में सजी-सवरी विहार करेगी। जब मैंने एक बार कह दिया है तो जरूर करूँगा। मैं तुम्हें बहुत सुन्दर लड़की दूंगा, बहुत सुन्दर।"

"आप, एक बुजुर्ग आदमी, ऐसी बातें कहते हैं," ओलेनिन बोला, "क्यों! यह तो पाप है।"

("पाप? पाप है कहाँ?" बूढ़े ने जोर देते हुए कहा, "किसी अच्छी लड़की को देखना, यह पाप है? उससे हँस बोल लेना, यह पाप है? क्या तुम्हारे प्रदेश में ऐसा ही होता है? नहीं, मेरे दोस्त, यह पाप नहीं, यह तो मुक्ति है मुक्ति। ईश्वर ने तुम्हें पैदा किया और एक लड़की को भी। उसने सभी को बनाया है। इसलिए एक सुन्दर लड़की की ओर देखना कोई पाप नहीं। वह इसीलिए तो बनाई गई है कि लोग उसे प्यार करें और वह इधर-उधर मौज-बहार बाँटती फिरे। मैं तो यही समझता हूँ, दोस्त।")

अहाता पार करके मर्यान्का एक ठंडे, अँधियारे गोदाम में घुसी जहाँ शराब के पीपों के अम्बार लगे थे। वह एक पीपे के पास गई और प्रार्थना कर चुकने के पश्चात् उसमें एक कुप्पी डुबो दी। वन्यूशा दरवाजे पर खड़ा खड़ा हँस रहा था और उसकी ओर देखता जा रहा था। वह सिर्फ एक फ्राक पहने थी जो पीछे से सटी और सामने से उठी हुई थी। यह बात वन्यूशा को बड़ी विचित्र लगी। उसके गले में चाँदी की मुद्राओं की माला होना तो वन्यूशा को और भी अद्भुत लगा। उसने उसे बिल्कुल गैर-रूसी समझा। उसके दिमाग में यह बात आई कि अगर हमारे यहाँ रूसियों के

क्वार्टरो में ऐसी लडकी दिख जाय तो सभी उसपर हँसेंगे। "क्या वढिया चीज़ है लडकी भी, रौनक लाने के लिये। मै अपने मालिक से इसका ज़िक्र करूँगा," उसने सोचा।

"अरे बुद्धू, वहाँ रोशनी में खडे खडे क्या मटर भुना रहे हो?" लडकी चिल्ला उठी, "मुझे कटर क्यो नही दे देते!"

मर्यान्का ने ठढी लाल शराव कटर मे भरकर वन्यूशा को दे दी।

"पैसा माता जी को दो जाकर," उसने रुपये वाला हाथ एक ओर हटाते हुए कहा।

वन्यूशा हँस दिया, "मेरी जान, इतनी नाराज क्यो हो रही हो?" उसने कुछ मस्ती में आकर और पैर सहलाते हुए कहा। मर्यान्का उस समय पीपा वन्द कर रही थी।

वह हँसने लगी।

"और तुम, तुम वडे मेहरवान हो क्या?"

"हम यानी मै और मेरे मालिक दोनो ही वडे मेहरवान है," वन्यूशा ने दृढता से उत्तर दिया, "हम इतने मेहरवान है कि जहाँ जहाँ हम ठहरे मेज़वान हमारे अहसानमद वने रहे। और इसकी वजह यही है कि हमारे मालिक वडे ही भले आदमी है।"

लडकी खडी खडी सुनती रही।

"और क्या तुम्हारे मालिक का व्याह हो गया?" उसने पूछा।

"नही, हमारे मालिक अभी छोटे है और उनका व्याह नही हुआ है क्योंकि अच्छे लोग छोटी उम्र मे व्याह नही करते," वन्यूशा ने उसे समझाते हुए कहा।

"वहुत छोटे, क्या कहने! है तो मोटे भैंसे जैसे और व्याह के लिए छोटे है! क्या वही तुम सवके मुखिया है?" उसने पूछा।

"मेरे मालिक एक कैडेट हैं। इसका मतलब यह हुआ कि अभी तक वे अफसर नहीं हैं। लेकिन उनकी वकत जनरल से ज्यादा है—वे इज्जतदार आदमी हैं। हमारा कर्नल और खुद जार भी उन्हें जानते हैं," वन्यूशा ने बड़े गर्व के साथ उसे समझाया, "हम लाइन रेजीमेंट के दूसरे भिखारियों की तरह नहीं। उनके पिता सिनेटर थे। उनके पास एक हज़ार से भी अधिक भूदास थे, सब उनके अपने। और वे हमें एक वक्त में एक एक हज़ार रूबल भेजते हैं। यही वजह है कि सभी हमें चाहते हैं। कोई कप्तान हो और उसके पास पैसा न हो तो उसे कौन चाहेगा?"

"अच्छा अब जाओ। मुझे यहां ताला लगाना है," बात काटते हुए लड़की बोली।

वन्यूशा शराब लेकर ओलेनिन के पास आ गया। उसने फ्रेंच में कहा कि लड़की मजेदार है, फिर बेवकूफों की तरह हंसा और बाहर निकल गया।

१३

इसी बीच गांव के चौक में सैनिकों की बुलाहट के लिए ढोल-नगाड़े पिटने लगे। लोग अपने अपने काम पर से वापस आ चुके थे। मवेशी भी सुनहरी धूल के बादलों में से होकर चले आ रहे थे। ये गांव के फाटक तक पहुंचते पहुंचते रुकने लग गये। और, लड़कियां और स्त्रियां अपने अपने पशुओं को हांकती-खदेड़ती सड़कों और अहातों में भागती हुई दिखाई देने लगीं। सूर्य दूर हिमावृत शिखरों के पीछे छिप चुका था और पृथ्वी और आकाश दोनों ही पर हल्के नीले रंग का अन्धकार छा गया था। आसमान में धुंधले फैलावों के ऊपर तारे झिलमिला रहे थे और गांव का कोलाहल धीरे धीरे शान्त हो रहा था। मवेशियों की देखभाल खत्म हो चुकी थी

ग्रौर वे रात भर ग्राराम करने के लिए अपने अपने खूंटो से बांधे जा चुके थे। ग्रौरते घरो से निकल निकलकर सडको के किनारे जमा होने लगी थी ग्रौर दांतो से सूर्यमुखी के बीज तोडती हुई अपने मकानो के चबूतरो पर बैठती जा रही थी। बाद में एक भैंस ग्रौर दो गायो को दुह चुकने के बाद मर्यान्का भी इनमें से एक टोली में शामिल हो गई। इस टोली में कुछ ग्रौरते ग्रौर लडकियाँ थी। एक बूढा कज्जाक भी था। वे मृत अब्रेक के बारे में बातचीत कर रहे थे। कज्जाक किस्सा सुना रहा था ग्रौर ग्रौरते उससे प्रश्न कर रही थी।

"मै समझती हूँ उसे अच्छा-खासा इनाम मिलेगा," एक ग्रौरत बोली।

"बेशक, सुनने में ग्राया है उसे पदक मिलेगा।"

"मोसेव उसे झाँसा देना चाहता था। उसने उससे बन्दूक ले भी ली थी। लेकिन किज्ल्यार अधिकारियो को इसका पता चल गया।"

"मोसेव, कितना दुष्ट है!"

"कहते है लुकाश्का घर ग्रा गया," एक लडकी ने कहा।

"वह ग्रौर नज़ारका यामका के यहाँ मौज कर रहे है" (यामका एक कुख्यात अविवाहिता कज्जाक महिला थी जिसकी शराब की एक दूकान थी)। "मैंने सुना है कि वे ग्राधी बाल्टी शराब पी गये।"

"कैसी तक्दीर है उस उर्वान की," एक ग्रौरत बोली, "सचमुच वह बहादुर है। इससे भी इनकार नही किया जा सकता कि वह अच्छा लडका है—समझदार ग्रौर फुर्तीला। उसका बाप, चचा कियाँक, भी वैसा ही था। बेटा बाप को पडा है। जब कियाँक मारा गया तो सारा गाँव रोया था। देखो, वे रहे," कुछ कज्ज़ाको की ग्रोर, जो सामने से उनकी तरफ चले ग्रा रहे थे, इशारा करते हुए वह बोली। "ग्रौर येरगुशोव भी उनके साथ ग्रा रहा है! वह शराबी!"

लुकाश्का, नज़ारका और येर्गुशोव आधी बाल्टी शराब पी चुकने के बाद लड़कियों की ओर खिंचे चले आ रहे थे। तीनों के चेहरे, खास तौर से बूढ़े कज़्ज़ाक का चेहरा, साधारण से अधिक लाल थे। येरगुशोव बराबर लड़खड़ाता और कभी कभी नज़ारका की पसलियाँ कोंचता जा रहा था।

"तुम लोग गाती क्यों नहीं?" वह लड़कियों पर चिल्लाया, "हमारी खुशी के लिए गाओ न!"

"दिन भर खूब गुलछर्रे रहे! खूब गुलछर्रे रहे?' इन शब्दों से उनका स्वागत किया गया।

"हम क्यों गायें? आज छुट्टी तो है नहीं?" एक औरत बोली, "तुम मौज में हो तो जाओ और अलापो।"

येरगुशोव ने कहकहा लगाया और नज़ारका को गुदगुदाया। "अच्छा तुम्हीं शुरू कर दो गाना। फिर मैं भी शुरू करूँगा। मैं इस मामले में ज्यादा चतुर हूँ। बताये देता हूँ।"

"क्या सो गईं, सुन्दरियो?" नज़ारका ने कहा। "हम घेरे से यहाँ खुशियाँ मनाने आये हैं। हमने लुकाश्का के स्वास्थ्य की कामना में शराब के प्याले उतारे हैं।"

जब लुकाश्का उस टोली के पास पहुँचा तो उसने अपनी टोपी उतारी और लड़कियों के सामने खड़ा हो गया। उसका कपोल-पार्श्व और गला लाल था। वह धीरे धीरे और गम्भीरता से बोल रहा था। परन्तु उसकी निश्चलता और गम्भीरता में नज़ारका के चिचिल्लेपन और बकवास से अधिक उत्साह था, अधिक बल था। उसे देखकर उस घोड़े के बछेड़े की याद आ जाया करती जो कभी कभी हिनहिनाता और दुम हिलाता हुआ एकाएक खड़ा होकर ऐसा पत्थर हो जाता मानो उसके चारों पैर कीलों से जमीन पर जड़ दिये गये हों। लुकाश्का लड़कियों के सामने

शान्त खडा था। उसकी आँखें हँस रही थी, लेकिन जब कभी वह शराब के नशे में चूर अपने साथियो और पास खडी हुई लडकियो को देखता तो वहुत कम वोलता था।

जब मर्यान्का आकर टोली में खडी हुई तो लुकाश्का ने अपनी टोपी सिर से उठाई, थोडी हिलायी और फिर सिर पर रख ली। उसने कुछ हटकर उसे रास्ता दिया और आगे वढकर उसके पास आ गया। इस समय उसका एक पैर सामने था, उगलियाँ पेटी में थी और हाथ कटार से खेल रहे थे। अभिवादन के उत्तर में मर्यान्का ने अपना सिर झुका दिया, चवूतरे पर वैठ गई और अपनी फ्राक में से बीज निकाल निकाल कर छीलने लगी। लुकाश्का की नज़र मर्यान्का पर ही जमी रही। वह भी वीजो को मुंह मे रखता, उन्हे चट्ट से तोडता और छिलको को थूकता रहा। जव मर्यान्का यहाँ आई थी उम समय सारी टोली मे सन्नाटा छा गया था।

"वहुत दिनो के लिए आये हो क्या?" मौन तोडते हुए एक औरत ने पूछा।

"सिर्फ कल सुवह तक के लिए," लुकाश्का ने वडी गम्भीरता मे उत्तर दिया।

"तकदीरवाले हो," वूढे कज़्ज़ाक ने कहा, "मुझे तुम्हे देखकर खुशी होती है। यही मै अभी अभी कह रहा था।"

"और यही तो मै भी कहता हूँ," नशे में येरगुशोव हँसते हुए वडवडाया, "हमारे यहाँ कितने मेहमान है," उमने मामने मे गुज़रते हुए एक मैनिक की ओर इशारा करते हुए कहा, "मैनिको की शराव अच्छी है — मुझे पमन्द है।"

"उन्होंने मेरे यहाँ भी तीन शैतान भेज दिये है," एक औरत वोली, "वात्रा गांव के वुजुर्गो के पाम भी गये थे और वे कहते है कुछ नही हो सकता।"

"अहह हाह! फंस गई मुसीबत में, फंसी कि नहीं?" येरगुशोव ने कहा।

"मैं समझती हूँ तुम्हें तो उन्होंने तम्बाकू के साथ पीकर उड़ा भी दिया होगा?" दूसरी ने कहा, "अहाते में चाहे जितनी तम्बाकू पी लो लेकिन मैं कहती हूँ, घर के भीतर हम नहीं पीने देंगे। भले ही मुखिया क्यों न आ जायें, मैं ऐसा न होने दूंगी। और कौन जाने वे तुम्हें लूट-खसोट कर ही चल दें! उसने अपने घर म किसी को भी नहीं ठहराया, इसलिए उसे क्या डर। शैतान का बच्चा!"

"तुम्हें यह पसन्द नहीं, हूँह!" येरगुशोव ने फिर शुरू किया।

"और मैंने तो यहाँ तक सुना है कि लड़कियाँ सिपाहियों का बिस्तरा लगायेंगी, उन्हें चिख़ीर और शहद पिलायेंगी," नजारका ने कहा। लुकाश्का की तरह उसका भी एक पैर आगे था और टोपी तिरछी।

येरगुशोव ने ज़ोर से कहकहा लगाया और सबसे पास खड़ी हुई एक लड़की को अपनी भुजाओं मे भर लिया, "मैं तुमसे सच कहता हूँ।"

"फिर वही, शैतान!" लड़की चीखी, "मैं तुम्हारी बुढ़िया से कहूँगी।"

"ज़रूर कह दो,' वह चिल्लाया, "नजारका ने जो कुछ कहा है वह ठीक है। एक गश्ती ख़त घुमा दिया गया है। जानती हो वह पढ़ सकता है। बिल्कुल ठीक है!" और वह दूसरी लड़की का आलिंगन करने लगा।

"हटो जाओ, बदमाश!" हँसती और चाँटा रसीद करने की गरज से हाथ उठाती हुई उस्तेन्का चिल्लाई। उसका मुँह गुलाब जैसा लाल और गोल था।

कज्ज़ाक एक तरफ हट गया और करीब करीब लडखडा पडा। "लोग कहते है लडकियो में ताकत नही होती लेकिन तुमने तो मुझे मार ही डाला था।"

"भाग जा, पाजी कही का! कौन शैतान तुझे घेरे से यहाँ ले आया?" उस्तेन्का ने कहा और उससे कुछ परे हटकर फिर हँसने लगी। "तुम सो गये थे और अब्रेक चला आ रहा था। ठीक है न? मान लो वह तुम पर टूट पडता तो अब तक प्राण पखेरू उड गये होते। बडा अच्छा होता!"

"और तुम तो डर के मारे चीखने ही लगती," नज़ारका ने हँसते हुए कहा।

"चीखने लगती! तुम्हारी तरह डरपोक हूँ क्या?"

"जरा देखना, कही नज़र न लग जाय, सामना पड जाता तो चिल्लाते चिल्लाते आसमान सिर पर उठा लेती। है न, नज़ारका?" येरगुशोव बोला।

लुकाश्का अभी तक बराबर मर्यान्का को ही देखे जा रहा था। वह चुप था। उसके इस प्रकार देखते रहने से वह कुछ सकपका-सी गई।

"मर्यान्का, मैने सुना है कि उन्होने अपना एक चीफ तुम्हारे यहाँ टिकाया है," थोडा पास आते हुए उसने कहा।

मर्यान्का, जैसा उसका स्वभाव पड गया था, उत्तर देने के पहले कुछ रुकी और फिर उसने कज्ज़ाको की तरफ धीरे धीरे निगाह उठाई। लुकाश्का की आँखें हँस रही थी मानो जो कुछ कहा गया था उसके अलावा भी कोई खास बात उसके और मर्यान्का के बीच घट रही थी।

"हाँ, इन लोगो के लिए तो ठीक है। इनके दो दो मकान है," मर्यान्का की तरफ से एक बुढिया ने उत्तर दिया, "परन्तु फोमुश्किन

के यहाँ भी उन्होंने एक चीफ़ ठहराया है और कहते हैं कि उनके सामान से घर का घर भर गया है। अब घर वाले जायें तो कहाँ जायें? क्या ऐसी बात पहले कभी सुनी गई थी कि एक छोटे से गाँव में पलटन की पलटन बसा दी जाय?" उसने कहा, "और ये शैतान यहाँ करेंगे क्या?"

"मैंने सुना है कि वे तेरेक पर एक पुल बनायेंगे," एक लड़की बोली।

"और मैंने सुना है कि वे एक बड़ा सा गढ़ा खोदेंगे जिसमें सारी लड़कियाँ भर दी जायेंगी क्योंकि वे हम छोकरों को प्यार नहीं करतीं," उस्तेन्का के समीप आते हुए नज़ारका ने कहा। और फिर उसने ऐसी मुद्रा बनाई कि सभी हँस पड़े और येरगुशोव, मर्यान्का के पास से निकल कर बगल में खड़ी हुई एक बुढ़िया का आलिंगन करने लगा।

"मर्यान्का को क्यों नहीं चिपटाते? वह तो पास ही में है," नज़ारका बोला।

"नहीं, बुढ़िया में मिठास ज़्यादा है," अपने आप को छुड़ाने का प्रयत्न करती हुई बुढ़िया को चूमते हुए कज़ाक चिल्लाया।

"तू तो मेरा गला घोंट देगा," हँसती हुई बुढ़िया चीखी।

सड़क के दूसरी ओर से आती हुई पैरों की आवाज़ से उनकी हँसी रुक गई। तीन सिपाही लबादे पहने और कन्धे पर बन्दूकें रखे मार्च कर रहे थे। वे गोला-बारूद वाली गाड़ी पर पहरा बदलने जा रहे थे। सार्जेन्ट एक पुराना फ़ौजी था। उसने कज़ाकों को गौर से घूरा और अपने आदमियों को सीधे उस ओर ले गया जहाँ लुकाश्का और नज़ारका रास्ते के बीचोंबीच खड़े थे। उसके ऐसा करने का मतलब शायद यही था कि लोग रास्ते से हट जायें। नज़ारका तो हट गया लेकिन लुकाश्का की भौंहों में बल पड़ गये। उसने अपना सिर ज़रा एक तरफ़ कर लिया परन्तु अपनी जगह

से नही हिला। "लोग यहाँ खडे है इसलिए आप लोग घूम कर जाय," वह वुदवुदाया और अपना सिर थोडा-सा घुमा दिया। वह सिपाहियो को घृणा से देख रहा था। सिपाही शान्ति से गुजरते रहे और उनके कदम धूल भरी सडक पर वरावर और नियमित रूप मे पडते रहे। मर्यान्का हँसने लगी और दूसरी सभी लडकियो ने भी उसका साथ दिया।

"बाँकपन तो देखो!" नज़ारका बोला, "जैसे सब के सव पादरी हो।" और सिपाहियो को नकल करता लेफ्ट-राइट, लेफ्ट-राइट करके कुछ दूर तक खुद भी मार्च करता रहा। हँसी का फौवारा फिर छूटने लगा।

लुकाश्का धीरे धीरे मर्यान्का के पास आ चुका था। "और तुमने चीफ को ठहराया कहाँ?" उसने पूछा।

मर्यान्का ने एक क्षण विचार किया। "हमने उसे नया घर दे दिया," वह वोली।

"वह वूढा है या जवान?" पास बैठते हुए लुकाश्का ने प्रश्न किया।

"तुम समझते हो मैंने उससे यह बात भी पूछी है?" लडकी ने उत्तर दिया, "जब मै चिखीर लेने जा रही थी उस समय वह चचा येरोश्का के साथ खिडकी पर वैठा था। वहाँ से ऐसा लगता था जैसे उसका सिर लाल हो। वे लोग गाडी भर सामान लाये है।" और उसने आँखें झुका ली।

"मै कितना खुश हूँ कि घेरे से निकल आया!" लडकी के निकट सरकते और उसकी आंखो में आँखें डालते हुए लुकाश्का बोला।

"बहुत दिनो के लिए आये हो क्या?" मुस्कराते हुए मर्यान्का ने पूछा।

"सिर्फ सुबह तक के लिए। कुछ वीज तो देना," कहते हुए उसने अपना हाथ फैला दिया।

मर्यान्का अब खुलकर मुस्करा दी। फ्राक का गलबन्द खोलते हुए उसने कहा "अभी मत ले लेना।"

"बिना तुम्हारे मैं अपने को कितना अकेला समझ रहा था, मर्यान्का। हाँ, तुम्हारी कसम!" उसने दबी जबान से धीरे से कहा और फ्राक में हाथ डाल कर बीज निकालने लगा। अब वह उसके ऊपर थोड़ा और झुका और हँसते हुए धीरे धीरे बातें करने लगा।

"मैं कहे देती हूँ, मैं नहीं आऊँगी,' उससे एक ओर हटते हुए सहसा तेज आवाज में मर्यान्का बोल उठी।

"नहीं, सचमुच मैं तुमसे कुछ कहना चाहता था," लुकाश्का ने कान में कहा, "आना जरूर।"

मर्यान्का ने इन्कार किया, लेकिन फिर मुस्करा दी।

"मर्यान्का, मर्यान्का, माँ बुला रही है। खाने का वक्त हो गया," टोली की ओर भाग कर आता हुआ मर्यान्का का छोटा भाई पुकारने लगा।

"आ रही हूँ," लड़की बोली, "चलो, चलो, अभी आई।"

लुकाश्का खड़ा हो गया और टोपी उठा दी।

"मैं समझता हूँ, मुझे घर जाना चाहिए। यही ठीक है," उसने कहा। वह कुछ ऐसा बन रहा था मानो उसने और किसी चीज से कोई मतलब ही नहीं। परन्तु वह अपनी हँसी न दबा सका और मुस्कराता हुआ घर के कोने में जाकर गायब हो गया।

रात फैल चुकी थी। अँधियारे आकाश में सितारे टिमटिमा रहे थे। सड़कें अंधेरी और सुनसान हो चुकी थीं। [illegible] किनारे पर कुछ [illegible] से भार रह गया। उनकी हँसी अभी तक सुनाई पड़ रही थी। लुकाश्का धीरे धीरे लड़कियों के पास से हट गया और बिल्ली की भाँति दुम दबा कर [illegible] और बैठ गया। सहसा वह धीरे धीरे दौड़ने लगा। उसने अपनी तलवार हाथ में थाम ली। वह घर की तरफ नहीं,

कार्नेट के मकान की तरफ बढ रहा था। दो सडके पार कर चुकने के बाद वह एक गली में घुसा और अपने कोट का निचला भाग दोनो हाथो से उठाते हुए एक झाडी की छाया में बैठ गया। "कार्नेट की साहबजादी!" उसने मर्यान्का के सम्बन्ध मे सोचा, "थोडा मनबहलाव भी पसद नही – शैतान कही की! ज़रा ठहरना!"

किसी औरत के आने की पगध्वनि सुनाई पड रही थी। वह उसे सुनने और मन ही मन हँसने लगा।

मर्यान्का सिर झुकाये और बाडे के कटघरे को झिटकती हुई कदम बढाती सीधे लुकाश्का की ओर चली आ रही थी। लुकाश्का उठ खडा हुआ। मर्यान्का एकदम रुक गई।

"शैतान कही के! तुमने तो मुझे डरा ही दिया! तो अभी तक तुम घर नही गये। उसने कहा और ज़ोर से हँस पडी।

लुकाश्का ने एक हाथ उसकी कमर में डाला और दूसरे से उसका मुह कुछ ऊचा उठाया, "भगवान जानता है, मै तुम से कुछ कहना चाहता था!" उसकी आवाज़ लडखडा रही थी।

"इतनी रात गये यह सब क्या बक रहे हो!" मर्यान्का ने उत्तर दिया। माता जी मेरा इन्तजार कर रही है। अच्छा हो तुम अपनी चहेती के पास चले जाओ!" और उसने अपने को छुडाती हुई वह कुछ कदम भागी, घर के बाडे तक पहुँच कर सहसा रुकी और मुड कर कज्ज़ाक की ओर देखने लगी। वह उसके पीछे पीछे दौडा चला आ रहा था और उससे विनती करता जा रहा था कि वह कुछ देर उसके पास और ठहर जाय।

"खैर तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो, कहो।" और वह फिर हसने लगी।

"मुझ पर हँसो मत, मर्यान्का! तुम्हे ईश्वर की सौगध। मेरी चहेती है उसका। जैसी है तैसी नही। जहन्नुम में जाय ऐसी चहेती! सिर्फ हाँ कह दो

और मैं तुम्हीं को प्यार करूँगा। जो तुम कहोगी वही करूँगा। इधर सुनो!" और उसने जेब में पड़े रुपये खनखना दिये। "अब हम ठाठ से रह सकते हैं। दूसरे तो मजे लूटते हैं और मैं? मेरी तरफ तो तुम बिल्कुल नहीं देखती, प्यारी मर्यान्का!"

लड़की ने कोई उत्तर न दिया। वह उसके सामने खड़ी खड़ी जल्दी जल्दी उंगलियों से लकड़ी की खपच्ची तोड़ती रही।

सहसा लुकाश्का ने दांत पीसे और मुट्ठी बांधी।

"यह सब इन्तजार किस लिए? क्या मैं तुम्हें प्यार नहीं करता? तुम मेरे साथ जो चाहो कर सकती हो" उसके मुंह से सहसा निकल पड़ा। उसने गुस्से से उसके दोनों हाथ पकड़ लिए।

मर्यान्का के चेहरे के शान्त भाव और उसकी धीमी आवाज में कोई अन्तर न आया।

"बनने की कोशिश मत करो लुकाश्का, और मेरी बात सुनो," उसने कहा और अपने हाथों को छुड़ाने की कोई कोशिश न की। "ठीक है मैं एक लड़की हूँ, परन्तु जो कहती हूँ उसे सुनो। निश्चय करना मेरा काम नहीं। लेकिन यदि तुम मुझे प्यार करते हो तो तुमसे एक बात कहूँगी। मेरे हाथ छोड़ दो। मैं अपनी ओर से यह कहती हूँ कि तुमसे विवाह करूँगी। किन्तु तुम मेरे साथ कोई बेजा हरकत नहीं कर सकते। समझे?" मर्यान्का ने मुंह घुमाये बिना ही उत्तर दिया।

"मेरे साथ विवाह? विवाह इस पर तो निर्भर नहीं। प्यारी मर्यान्का, मुझे प्यार करो," लुकाश्का ने कहा। अब उसका शोर उतर रहा था। वह विनत, विनम्र और शिष्ट हो गया था। इस समय वह उसकी आँखों से प्यार करते सकता रहा था।

मर्यान्का ने उसे अपनी भुजाओं में भर लिया और जोर से ओठ पर चूम लिये।

"मेरे प्यारे!" उसका और भी कसकर आलिंगन करते हुए वह धीरे से बोली। फिर उसने सहसा अपने को छुडाया और बिना इधर उधर देखे हुए अपने घर के फाटक की तरफ दौड गई।

कज्ज़ाक मर्यान्का को क्षण भर रोकने के लिए गिडगिडाता ही रह गया। मगर वह न रुकी।

"अब तुम जाओ," वह चिल्लाई, "हमें कोई देख न ले! मेरा ख्याल है कि हमारे घर ठहरा हुआ शैतान मेहमान यही कही अहाते में घूम रहा होगा।"

"कार्नेट की पुत्री!" लुकाश्का ने सोचा। "वह मुझसे विवाह करेगी। विवाह अच्छी चीज़ है, लेकिन वह मुझे सिर्फ प्यार ही क्यो नही कर सकती?"

यामका के यहाँ उसकी से भेंट नज़ारका हुई। वहाँ थोडी देर तक उसके साथ शराब पीने के बाद वह दुनैका के घर चला गया। यद्यपि दुनैका ने उसे अपनी बेवफाई का सबूत पहले ही दे दिया था फिर भी उसने रात वही बिताई।

१४

यह बात सच थी कि जब मर्यान्का फाटक में घुसी उस समय ओलेनिन अहाते में चहलकदमी कर रहा था और उसने 'शैतान मेहमान' यानी वे शब्द सुन लिये थे जिनका प्रयोग मर्यान्का ने उसके लिए किया था। वह सारी शाम चचा येरोश्का के साथ अपने नये घर की दालान में बैठा बैठा चाय की चुस्कियो तथा सिगार के धुएँ के बीच चचा येरोश्का से गप्प लडाता रहा। कभी कभी तो मेज़ पर रखी हुई मोमबत्ती के प्रकाश में वहाँ शराब के दौर भी चलने लगते। उसने बैठे बैठे

चचा येरोश्का की गप्पों का आनन्द लिया था। उस समय हवा शान्त थी, फिर भी मोमबत्ती की लौ प्रायः झिलमिलाने लगती और कभी उसका प्रकाश दालान के खम्भों पर, कभी मेज़ पर, कभी उस पर रखे हुए प्लेट-प्यालों पर और कभी बूढ़े के घुटे हुए सिर पर पड़ने लगता। बत्ती के चारों ओर पतंगे चक्कर लगाते और जब वे मेज़ पर उड़ते तो उनके परों की धूल या तो उसी पर झड़ पड़ती या पास रखे हुए गिलासों में। कभी वे बत्ती की लौ में प्रवेश करके अपने प्राणों की बलि देते और कभी सामने के अन्धकार में उड़ कर गायब हो जाते। ओलेनिन और येरोश्का चिख़ीर की पाँच बोतलें ख़ाली कर चुके थे। प्रत्येक बार येरोश्का एक गिलास भर कर ओलेनिन को देता और एक स्वयं लेता और उसके स्वास्थ्य की कामना करते हुए उसे गटक जाता। और, फिर अपनी गप्पें शुरू कर देता। उसने ओलेनिन को पुराने ज़माने के कज़्ज़ाक-जीवन की घटनाएँ सुनाईं, अपने पिता 'हट्टे-कट्टे' के बारे में भी कुछ कहा जो तीन तीन सौ हण्ड्रेडवेट तक के सुअर अपनी पीठ पर लाद लेते थे और एक एक बार में दो दो बाल्टी चिख़ीर पी जाते थे। उसने अपने ज़माने की भी बातें बताईं और अपने मित्र गिरचिक का उल्लेख भी किया जिसके साथ प्लेग के दिनों में वह तेरेक के उस पार से चोरी चोरी नमदे के लबादे लाया करता था। उसने बताया कि एक दिन प्रातःकाल उसने दो हिरनों का शिकार किया था। उसने अपनी प्रियतमा के बारे में भी बताया जो रात में भाग कर घेरे से उसके पास आया करती थी। ये सब बातें उसने कुछ इतना मज़ा ले लेकर तथा इतने रोचक ढंग से कहीं कि ओलेनिन को पता ही न चल पाया कि समय कैसे बीत गया।

"तो दोस्त तुम क्या जानो कि ज्वानी में मैं क्या था। उस समय [illegible] तुम्हें कुछ दिखाता भी। आज 'येरोश्का [illegible]' [illegible] तो सारी फौज में मशहूर था। किसका घोड़ा सबसे बढ़िया था?

किसके पास गुर्दा* तलवार थी? कौन पी कर सबसे अधिक मस्त रहता था? अहमद-खाँ को मारने के लिए पहाडो पर किसे भेजा जाय? हमेशा जवाब होता था–येरोश्का। लडकियो को कौन प्यार करता था? इसका जवाब भी हमेशा येरोश्का को ही देना पडता। चूँकि मै एक असली जिगीत था, पियक्कड था, चोर था (मै पहाडो में से लोगो के घोडे छीन लाया करता था), गवैया था, इसलिए हर काम में मेरा हाथ हो सकता था। अब वैसे कज्जाक रह कहाँ गये। अब तो उनकी तरफ देखने की भी तबीयत नही होती। जब वे इतने से ही होते है (येरोश्का ने जमीन से लगभग तीन फुट की उचाई तक हाथ उठा कर सकेत किया) तभी मसखरो जैसे जूते पहनने लगते है और उन जूतो को इस लोभी दृष्टि से देखते है कि उनके लिए सिवा जूतो के दुनिया मे कुछ है ही नही। या फिर शराब पीते है, और शराब भी कोई आदमियो की तरह थोडे ही पीते है, अजी जानवरो की तरह ढकोसते है, जानवरो की तरह। और मै कौन था? मै था येरोश्का–चोर। गाँवो और पहाडो में सभी जगह मेरा नाम था। राजकुमार मुझसे मिलने आते थे। वे मेरे कुनक थे। मै भी सभी का कुनक होता था। तातार के साथ तातार जैसा, आरमीनियाई के साथ आरमीनियाई जैसा, सिपाही के साथ सिपाही जैसा, अफसर के साथ अफसर जैसा! बस उसे पियक्कड भर रहना चाहिए और चाहे जो हो। लोग कहते है 'इस मायामोह को छोडो। सिपाहियो के साथ शराब मत पियो। तातारो के साथ खाना मत खाओ'।"

"ऐसा कौन कहता है?" ओलेनिन ने पूछा।

---

* काकेशिया में सबसे अधिक प्रसिद्ध तलवारे या कटारे उनके निर्माता–गुर्दा–के नाम से प्रसिद्ध थी–सपादक।

"क्यों, हमारे ये पादरी। किन्तु किसी मुल्ला या तातार काज़ी की बात सुनो। वह कहेगा 'तुम काफ़िर! तुम सुअर का गोश्त क्यों खाते हो?' उसका अर्थ है हर एक की अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग। परन्तु मैं समझता हूँ कि सब एक है। भगवान ने जो कुछ बनाया है वह मनुष्य के आराम के लिए, उसके उपभोग के लिए। और इसमें पाप की क्या बात! मिसाल के लिए आप एक पशु को ही ले लीजिए। वह तातार के जंगलों में भी रहता है और हमारे जंगलों में भी। वह चाहे जहाँ जाये वही उसका घर है। भगवान जो भी उसे दे देता है वही खा लेता है। लेकिन हमारे लोग कहते हैं कि इन सबके लिए तुम्हें नर्क में जलती हुई कड़ाहियों में भूना जायगा। और मैं समझता हूँ यह सब गप है," उसने थोड़ा ठहर कर कहा।

"क्या गप है?" ओलेनिन ने पूछा।

"क्यों, पादरी क्या कहते हैं? हमारे साथ चेर्वलेनया में एक फौजी कप्तान था। वह मेरा कुनक था और भला आदमी था, मेरे ही जैसा। वह चेचना में मारा गया। कहा करता था कि ये सब बातें पादरियों और उपदेशकों के दिमाग़ की उपज हैं। 'जब तुम मरोगे तो तुम्हारी कब्र पर भी घास ही उगेगी और कुछ नहीं!' वह कहा करता था।" बूढ़ा हँस दिया। "वह एक ढीठ आदमी था।"

"तुम्हारी क्या उम्र है?" ओलेनिन ने पूछा।

"भगवान ही जाने! यही कोई सत्तर वर्ष। जब तुम्हारे यहाँ ज़ारिना राज्य करती थी उस समय मैं बहुत छोटा नहीं था। इसलिए तुम हिसाब लगा सकते हो। मैं सत्तर वर्ष का तो हूँगा।"

"हाँ, सत्तर होंगे। किन्तु अब भी तुम आदमी मजेदार हो।"

"भगवान की कृपा है। मैं अब भी तन्दुरुस्त हूँ। बहुत तन्दुरुस्त हूँ। सिर्फ़ एक औरत ने सीने में कुछ गड़बड़ कर दिया, वह"

"सो क्या ?"

"हाँ, उसी ने सब गडबड किया।"

"और इसलिए जब तुम मरोगे तो तुम्हारी कब्र पर भी घास ही उगेगी?" ओलेनिन ने वे शब्द दुहराये।

येरोश्का नही चाहता था कि अपने विचारो को स्पष्ट रूप से कहे। वह कुछ देर तक मौन रहा।

"और तुम क्या सोचते हो? अमाँ पियो भी!" और उसने हँसते हँसते ओलेनिन को शराब का गिलास थमा दिया।

१५

"तो मै क्या कह रहा था?" सोचने की कोशिश करते हुए उसने अपनी बात फिर शुरू की। "हाँ, तो मैं ऐसा आदमी हूँ। मै शिकारी हूँ और फौज भर में मुझसे अच्छा दूसरा शिकारी कोई है भी नही। मै किसी भी जानवर या किसी भी चिडिया का पता लगा सकता हूँ। मै तुम्हे दिखा दूगा। ये जानवर क्या करते है, कहाँ जाते है मै सब जानता हूँ। मेरे पास कुत्ते है, दो बन्दूकें है, जाल है, परदा है, बाज है। भगवान का दिया सब कुछ है। अगर तुम सच्चे शिकारी हो और सिर्फ शेखी ही नही बघारते तो मै तुम्हे सब कुछ दिखा दूगा। तुम्हें मालूम है कि मै कैसा आदमी हूँ? मै पैरो के निशान देख भर लूं कि जान लूंगा जानवर कौनसा होगा, कहाँ बैठेगा, कहाँ पानी पियेगा और कहाँ लोटे-पोटेगा। मै एक अड्डा बना लेता हूँ और रात भर वहाँ बैठा बैठा अपने शिकार पर निगाह रखता हूँ। घर पर ठहरने मे क्या लाभ! घर बैठे बैठे शरारत ही तो सूझती है या फिर शराब दिखाई देती है। औरते आती है, बकबक करती है। बच्चे आते है, सिर खाते

प्रकार के विचार आते रहते है। और एक वार जव मैं किसी जानवर की टोह में बैठा इन्तजार कर रहा था तो क्या देखता हूँ कि एक पालना तैरता हुआ चला आ रहा है। पालना बिल्कुल ठीक था, बस उसका एक कोना थोडा-सा टूटा था। उस समय मेरे दिमाग में वहुत से विचार आने-जाने लगे थे! किसका पालना हो सकता है यह? मैंने सोचा कि तुम्हारे ही कुछ सिपाही, वे शैतान, किसी आौल में घुस गये होगे और उन्होंने चेचेन महिलाओ को पकड लिया होगा, फिर किसी शैतान ने किसी वच्चे को मार डाला होगा, उसकी टागें पकडी होगी और सिर दीवाल से दे मारा होगा। क्या वे यह सव नही करते? ओफ, आदमी सचमुच निर्दय और हृदयहीन होता है। और मेरे दिमाग में ऐसे ऐसे विचार आये जिन्होंने मेरे कठोर हृदय में भी करुणा भर दी। हाँ, मैंने सोचा, उन लोगो ने पालना फेंक दिया होगा, पत्नी को निकाल वाहर किया होगा और घर फूक दिया होगा। और अव उस अवला का पति वन्दूक लेकर हमारे इलाके में हमे लूटने आया है। जव आप वहाँ वैठते है तो न जाने कितने विचार आते है, जाते है। जव आप कोई ऐसी आवाज सुनते है जिसमे आपको लगता है कि कोई जानवर झाडी से होकर गुज़र रहा है तो आपके हृदय मे गुदगुदी होने लगती है। काश वह इधर आ जाता! परन्तु तुरन्त ही आप सोचते है कि कही उमी को आपका सुराग न मिल जाय। आप बैठे रहते है, अपनी जगह मे हिलते तक नही और आपका दिल धडकने लगता है। आप हवा में उडने लगते है। इसी वसन्त की वात है। एक दिन ऐमा लगा जैसे कोई जानवर मेरे बिल्कुल ही पास आ गया। मुझे कोई काली काली चीज दिखाई दी। 'पिता और पुत्र के नाम' मैंने ये शब्द मुंह से निकाले ही थे और गोली चलाने ही वाला था कि एक शूकरी घुरघुरा दी। 'बच्चो, यहाँ खतरा है,' वह कहती है, 'यहाँ कोई आदमी है' और फिर झाडियो को चीरते-फाडते वे सब के

"अरे बेवकूफ! अपने को जला डालेगा क्या! इधर उड। यहाँ बहुत जगह पडी है," वह बडी कोमलता से बोला। उसने अपनी मोटी उंगलियो मे कुछ पतगे पकडे और उडा दिये। "तुम सब अपने को जला रहे हो। मुझे तुम्हारी बुद्धि पर तरस आता है।"

वह बडी देर तक गपशप करता और शराब की चुस्कियाँ लेता रहा। ओलेनिन अहाते में चहलकदमी कर रहा था। सहसा उसने फाटक के बाहर कुछ फुसफुसाहट सुनी। साँस रोके हुए उसने किसी स्त्री की हँसी, किसी पुरुष की आवाज़ और चुम्बन की ध्वनि सुनी। पैरो से घास रौंदते और उसमें चरचराहट पैदा करते हुए वह अहाते को पार करके उसके दूसरी ओर आ गया। परन्तु थोडी ही देर बाद फाटक बन्द होने की आवाज़ सुनाई दी। गहरा चेरकेसियन कोट पहने और भेड की खाल की सफेद टोपी लगाये एक कज्ज़ाक युवक बाडे के दूसरी ओर से गुज़रा (यह लुकाश्का था) और सिर पर सफेद रूमाल लपेटे एक लम्बी युवती ओलेनिन के पास से होकर निकल गई। ऐसा लगता था जैसे मर्यान्का के कठोर कदम कह रहे हो "हमारा तुम्हारा एक दूसरे से कोई मतलब नही।" उसकी आँखें घर के दालान तक उसका पीछा करती रही। खिडकी मे से उसने यह भी देखा कि उसने मुँह पर से रूमाल उतारा और बैठ गई। और सहसा एकाकीपन की अनुभूतियो, अस्पष्ट इच्छाओ और आशाओ तथा किसी न किसी के प्रति ईर्ष्या के भावो ने उस युवक की आत्मा को अभिभूत कर लिया।

मकानो की आखिरी बत्तियाँ बुझा दी गई थी। शोरगुल ख़त्म हो गया था। ऐसा लगता था कि बाडो के टट्टर, अहातो में दिखाई पडने वाले मवेशी, मकानो की छते और गर्वोन्नत चिनार इन सभी पर शान्त, स्वस्थ निद्रा का प्रभाव पड चुका है। कही दूर से आती हुई मेढको की 'टर्र-टर्र' को छोड कर बाकी सब कुछ शान्त था। पूर्व की ओर टिमटिमाते

हुए सितारों की संख्या कम होती जा रही थी और लगता था कि वे बढ़ते हुए प्रकाश में विलीन हुए जा रहे हैं। किन्तु सिर के ठीक ऊपर वे पहले से अधिक गहरे हुए और चमकदार लग रहे थे। बूढ़ा अपना सिर हाथों पर रखे ऊँघ रहा था। अहाते के दूसरी ओर से मुर्गे की कुकड़ूँकूँ सुनाई दी। परन्तु ओलेनिन विचारों में खोया हुआ अहाते में टहलता रहा, कभी इस ओर, कभी उस ओर। उसके कानों में एक समूह गान की धुन पड़ी। वह बाड़े के टट्टरों के पास तक बढ़ आया और सुनने लगा। कुछ नवयुवक कज्जाक झूमते हुए गा रहे थे। इनमें से एक आवाज़ ऐसी थी जो दूर से ही स्पष्ट सुनाई पड़ रही थी।

"तुम जानते हो वहाँ कौन गा रहा है?" बूढ़े ने उठते हुए कहा, "वह है बहादुर लुकाश्का। इसने एक चेचेन को मारा है और अब जशन मना रहा है। परन्तु इसमें खुशियाँ मनाने की क्या बात? बेवकूफ, बेवकूफ!"

"क्या तुमने कभी किसी आदमी को भी मारा है?" ओलेनिन ने प्रश्न किया।

बूढ़ा एकाएक अपनी दोनों कुहनियों के बल उठा और ओलेनिन के मुँह के पास मुँह ले जाकर कहने लगा। "शैतान कहीं के!" उसकी आवाज़ तेज होती जा रही थी। "क्या पूछ रहे हो? इसका ज़िक्र मत करो। यह बात इतनी गम्भीर है कि मनुष्य को पतन की किसी भी सीमा तक ले जा सकती है उफ, यह बात बड़ी गम्भीर है! अच्छा, दोस्त, नमस्ते। तुम्हारे भोजन और तुम्हारी शराब में मजा आ गया।" और उठते उठते उसने पूछा "मैं कल आऊँ, चलोगे शिकार खेलने?"

"हाँ, ज़रूर।"

"मगर यह ध्यान रहे। उठना जल्दी है अगर ज्यादा देर तक सोते रहे तो जुर्माना देना होगा!"

"डरो मत, मैं तुमसे पहले उठूंगा।"

बूढा चला गया। गाना भी बन्द हो गया। परन्तु अभी तक पगध्वनियाँ और हँसी खुशी की बाते सुनाई पड रही थी। थोडी देर बाद गाना फिर शुरु हुआ। अब येरोश्का की तेज़ आवाज भी सुनाई पडी।

"कैसे लोग है! कैसा जीवन!" ओलेनिन ने सोचा। उसने एक आह भरी और अपने कमरे में चला गया—अकेले।

१६

चचा येरोश्का नौकरी छोड चुका था और अकेला रहता था क्योकि बीस साल पहले उसकी पत्नी ईसाइन बन चुकी थी और उसने उन्हे छोड कर एक रूमी सार्जेंट-मेजर से विवाह कर लिया था। येरोश्का के कोई बच्चा न था। जब उसने कहा था कि अपनी जवानी मे मै सबमे बहादुर था तब वह कोई शेखी नही मार रहा था। सेना में सभी लोग उसका पराक्रम जानते थे। एक से अधिक रूसियो और चेचेनो की मृत्यु ने उसकी आत्मा पर गहरा प्रभाव डाला था। वह लूट-मार करने के लिए पहाडो में जाया करता था। उसने रूसियो को लूटा भी था और इसके लिए उसे दो बार जेल भी काटनी पडी थी। उसके जीवन का अधिकाश जगलो में शिकार खेलते बीता था। वहाँ कई कई दिनो तक तो वह सिर्फ रोटी पानी पर रहा करता था। परन्तु जब कभी गाँव में होता तो सुबह से शाम तक मौज उडाता। ओलेनिन के पास से आने के बाद वह दो-एक घंटे सोया और फिर रोशनी होने से पहले पहले उठ गया। वह बिस्तर पर पडा पडा उस व्यक्ति के बारे में सोच रहा था जिससे उसका अभी शाम को ही परिचय हुआ था। ओलेनिन की सादगी (सादगी इस माने

में कि उसने उसे शराब पिलाई थी) ने उसे मुग्ध कर दिया था। स्वय ओलेनिन के व्यक्तित्व का भी उसपर प्रभाव पडा था। उसे आश्चर्य होता था कि ये रूसी 'सीधे-सादे' क्यो होते है, इतने धनी क्यो होते है, और ऐसा क्यो कि वे जानते तो कुछ भी नही परन्तु फिर भी खूब पढे-लिखे होते है। वह इन सभी प्रश्नो पर मनन करता रहा और सोचता रहा कि ओलेनिन के सम्पर्क मे वह क्या लाभ उठा सकता है।

चचा येरोश्का का मकान बडा था और पुराना भी न था। परन्तु उसमें प्रवेश करते ही स्पष्ट प्रतीत हो जाता कि वह 'बिन घरनी घर भूत का डेरा' बना हुआ है। कज्जाक अपनी स्वच्छता-सफाई के लिए प्रसिद्ध रहा है। परन्तु यह सारे का सारा मकान गन्दा और बेतरतीब था। कही मेज पर एक कोट पडा था जिसपर खून के धब्बे साफ साफ दिखाई पड रहे थे, कही कटा-कटाया कोई कौआ पडा था, जो वह बाज को खिलाया करता था, और कही आटे और शक्कर का बना आधा लड्डू पडा था। बेंचो पर कच्चे चमडे की चप्पले, एक बन्दूक, एक कटार, गीले कपडे और कुछ चीथडे इधर-उधर बिखरे पडे थे। एक कोने मे एक नाँद थी जिसमें बदबूदार पानी था। उसी मे एक जोडी चप्पले भी पडी थी। पास ही एक रायफल और शिकारी परदा तना था। फर्श पर एक जाल फिका पडा था जिसमें कई मरे हुए तीतर लपटे थे और टाँग बधी एक मुर्गी मेज के आस-पास धूल में सनी फुदक रही थी। बुझी हुई अगीठी पर एक टूटा बर्तन चढा था जिसमें दूध की तरह का कोई सफेद द्रव पडा था। अगीठी के सिरे पर एक श्येन चिनचिना रहा था और उस डोरे को तोडने का प्रयत्न कर रहा था जिससे वह बधा था। अगीठी के एक किनारे एक बाज बैठा था जिसके पर फैले हुए थे। वह पास खडी हुई एक मुर्गी को कनखियो से घूर रहा था और कभी अपना सिर इधर घुमाता, कभी उधर।

चचा येरोश्का एक साधारण सी कमीज़ पहने स्टोव और दीवाल के बीच रखे हुए एक छोटे से पलग पर औधा लेटा था। उसकी टाँगें स्टोव पर थी। वह अपनी मोटी उगलियो से उन खरोंचो को सहला रहा था जो बाज़ ने उसके बायें हाथ में मार दिये थे—उसे बिना दस्ताना पहने ही बाज को अपने हाथो पर बिठाने का अभ्यास था। सारे कमरे, और मुख्यतया बूढे के आस-पास की जगह से एक विचित्र प्रकार की तेज़ गध-सी आ रही थी। चचा स्वय इस गध को अपने शरीर पर लादे लादे फिरा करता था

"यूदे-मा, चाचा?" (क्या चचा अन्दर है?) खिडकी में से एक तेज आवाज़ सुनाई पडी। बूढे ने उसे पहचान लिया। आवाज लुकाश्का की थी।

"यूदे, यूदे, यूदे! मै यहाँ हूँ!" बूढा चिल्लाया। "आ जाओ पडोसी मार्का, लुका मार्का। तुम्हारा यह चचा तुम्हारे लिये क्या कर सकता है? क्या घेरे की तरफ जा रहे हो?"

मालिक की चिल्लाहट सुनकर बाज़ ने अपने पख फडफडाये और अपनी डोरी पर खिच गया।

बूढा लुकाश्का को पसन्द करता था क्योंकि एक वही व्यक्ति रह गया था जिसे चचा ने जवान कज़्ज़ाको से, जिनसे वह साधारणतया घृणा करता था, भिन्न समझा था। इसके अतिरिक्त पडोसी होने के नाते लुकाश्का और उसकी माँ उसे कभी शराब, कभी मलाई और कभी घर की बनी ऐसी चीज़ें दे दिया करती जो उसके पास न होती। चचा येरोश्का जीवन भर बहकता ही रहा था। वह अपनी बेवकूफी वाली बात भी एक व्यवहारिक दृष्टिकोण से समझाया करता। "वे क्यो न दें? वे देने में समर्थ जो है," वह मन ही मन कहता था, "मै उन्हे कुछ ताजा गोश्त या कोई चिडिया दे दूँगा और फिर वे अपने चचा को कभी न भूलेगे। कभी कभी वे भी अपने चचा को केक या कचौडी समोसा दे दिया करेंगे।"

"नमस्ते, मार्का! तुमसे मिलकर बडी खुशी हुई," बूढा खुशी से चिल्ला उठा और अपने नगे पैरो को अगीठी से उतारते हुए पलग से नीचे कूद पडा, चरमराते हुए फर्श पर एक-दो कदम चला, पैरो की मुडी हुई उगलियो पर एक निगाह डाली और पैरो की शकल देख कर मुस्करा दिया। फिर, उसने जमीन पर एडी जमाई और झट से घूम गया।

"इसे कहते है कौशल!" उसने कहा और उसकी छोटी छोटी आँखें चमक उठी। लुकाश्का धीरे से मुस्करा दिया।

"घेरे पर जा रहे हो?" बूढे ने पूछा।

"मैं तुम्हारे लिए चिखीर लाया हूँ। तुम्हे याद होगा जब मैं घेरे में था तो मैंने तुम्हे पिलाने का वादा किया था।"

"भगवान भला करे!" बूढे ने दुआ दी और फर्श पर पडी बडी बडी मोहरी वाली अपनी पतलून और बेशमेत पहनी, कमर में पेटी लगाई, मिट्टी के घडे से कुछ पानी हाथ पर ढरकाया, हाथ पतलून में पोछे, कघे से दाढी चिकनी की और लुकाश्का के सामने आकर खडा हो गया। "तैयार," उसने कहा।

लुकाश्का ने एक गिलास उठाया, उसे धोया, उसमें शराब उडेली और बूढे को पकडा दी।

"तुम्हारे स्वास्थ्य की कामना करते हुए! पिता और पुत्र के नाम!" गम्भीरतापूर्वक शराब स्वीकार करते हुए बूढा बोला, "तुम्हारी मनोकामना पूरी हो, हमेशा वीर बने रहो और पदक प्राप्त करो।"

लुकाश्का ने भी कुछ बुदबुदाते हुए थोडी सी पी और बाकी मेज पर रख दी।

बूढा उठा, कुछ सूखी हुई मछलियाँ बटोरी, उन्हे फर्श पर रखा, छडी से पीटा और अपने सीग जैसे हाथो से उन्हे एक नीली तश्तरी में (उसके पास यही एक तश्तरी थी) रखते हुए मेज की तरफ बढा दिया।

"जो कुछ मुझे चाहिए मेरे पास सब है। खाने की चीजें भी है। भगवान की दया है," वह गर्व से बोला, "मोसेव के बारे में क्या रहा?" उसने पूछा।

लुकाश्का ने बूढे की राय जानने के उद्देश्य से उसे बताया कि किस प्रकार कारपोरल ने उससे बन्दूक हथिया ली थी।

"बन्दूक की चिन्ता मत करो," बूढा बोला, "अगर बन्दूक नही दोगे तो इनाम नही मिलेगा!"

"परन्तु, चचा लोग कहते हैं कि जब तक कज्जाक घुडसवार सैनिक नही होता तब तक उसे बहुत थोडा इनाम मिलता है। बन्दूक बढिया है, ८० रूबल की।"

"अरे जाने भी दो! मुझसे भी एक अफसर से ऐसा ही झगडा हो गया था—वह मेरा घोडा चाहता था। 'मुझे इसे दे दो और तुम कार्नेट बना दिये जाओगे,' वह कहता था। मैने घोडा नही दिया और मै कुछ नही बना।"

"हाँ, चचा, परन्तु मुझे एक घोडा खरीदना है। लोग कहते है कि नदी के उस पार भी कोई घोडा ५० रूबल से कम नही मिलेगा, और माता जी है कि उन्होने अभी तक हमारी शराब ही नही बेची।"

"अरे मुझे तो कभी इसकी चिन्ता नही रही," बूढा बोला, "जब चाचा येरोश्का तुम्हारी उम्र के थे तभी नगई लोगो से ढेर के ढेर घोडे चुरा कर तेरेक के इस पार हाक लाते थे और अक्सर हम एक आध गिलास शराब या एक लबादे में लोगो को बढिया से बढिया घोडे दे देते थे।"

"इतने सस्ते क्यो?" लुकाश्का ने पूछा।

"तुम नासमझ हो, पूरे नासमझ, मार्का," बूढे ने घृणा से कहा, "क्यो, मनुष्य चोरी इसीलिए तो करता है कि कजूस न बने। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है मै समझता हूँ तुम्हे तो यह भी न मालूम होगा कि चोरी की कैसे जाती है? बोलते क्यो नही?"

"मैं क्या कह सकता हूँ, चचा?" लुकाश्का ने जवाब दिया, "लगता है हम तुम दोनों एक धातु के नहीं बने हैं।"

"तुम बेवकूफ हो, मार्का। पूरे बुद्धू! एक धातु के नहीं!" कज्जाक छोकरे को मुह चिढ़ाते हुए बूढ़े ने कहा, "भाई, जब मैं तुम्हारी उम्र का था उस समय मैं वैसा कज्जाक नहीं था।"

"यह कैसे?" लुकाश्का ने पूछा।

बूढ़े ने घृणा से गर्दन हिला दी।

"चचा येरोश्का सीधा-सादा था। उसने कभी किसी से ईर्ष्या न की। इसीलिए मैं सब चेचेना का कुनक था। जब कभी कोई कुनक मुझ से मिलने आता तो मैं उसे शराब पिला कर खुश कर देता और सोने के लिए अपना पलग दे दिया करता और जब मैं उससे मिलने जाता तो उसे तोहफे दिया करता। मिलने-जुलने का यही एक तरीका है वैसा नहीं जैसा कि आजकल आप लोग अपनाए हुए हैं। आपका मन-बहलाव ही क्या—बीजे तोडिये और छिलके थूकिये!" बूढ़े ने बात खतम की और आजकल के उन कज्जाकों की नकल करने लगा जो सूर्यमुखी के बीज फोडते और छिलके थूका करते थे।

"हां, मैं जानता हूँ," लुकाश्का बोला, "तुम ठीक कहते हो।"

"अगर तुम ढग के आदमी बनना चाहते हो तो जिगीत बनो, किसान नहीं! किसान भी एक घोडा खरीद सकता है—वह रुपया दे दे और घोडा ले ले।"

दोनों कुछ देर के लिए चुप हो गये।

"गांव और घेरे दोनों ही जगह बडा सन्नाटा है, चचा, परन्तु ऐसी भी तो कोई जगह नहीं जहां खेल-कूद में ही आदमी थोडा दिल बहला ले। हमारे सभी छोकरे तो डरपोक हैं। नजारका को ही ले लो। अभी उसी दिन, जब हम औल गये थे, हमें गिरेई-खां ने कुछ घोडे लेने के लिए नगई बुलाया था। परन्तु कोई भी नहीं गया। मैं अकेले कैसे जाता?"

"तुम्हारे चचा तो है? तुम समझते हो कि मुझमें कोई जोश बाकी नही रहा? नही, ऐसी बात नही। मुझे एक घोडा दो और मै तुरन्त नगई चला जाऊंगा।"

"बेवकूफी की बातो से क्या फायदा!" लुकाश्का ने कहा, "मुझे तो यह बताओ कि अब गिरेई-खाँ से कैसे निबटा जाय। उसका कहना है, 'सिर्फ तेरेक तक घोडे ले आओ फिर उनकी सख्या चाहे जितनी ही हो मैं उन्हे रखने की जगह बना लूगा'। वह चेचेन है, मालूम है। उसकी बात का कोई ठिकाना नही।"

"तुम गिरेई-खाँ का विश्वास कर सकते हो। उसके खानदान के सभी लोग अच्छे है। उसका पिता मेरा कुनक था। परन्तु अपने चचा की सुनो, वह तुम्हे गलत राय न देगा। गिरेई-खाँ को कसम खिला दो और तब सब कुछ ठीक हो जायगा, और अगर तुम उसके साथ जाओ तो साथ में पिस्तौल भी तैयार रखना, खासकर उस समय के लिए जब घोडे बाटने का सवाल उठे। एक बार एक चेचेन ने तो इस प्रकार मुझे मार ही डाला था। मैं उससे एक घोडे के १० रूबल चाहता था। विश्वास करना अच्छी बात है, परन्तु बिना बन्दूक के सोने मत जाना।"

लुकाश्का बूढे की बात बडे ध्यान से सुन रहा था।

"मै पूछता हूँ, चचा, तुम्हारे पास पत्थर-तोड घास है?" कुछ क्षणो के बाद उसने प्रश्न किया।

"मेरे पास तो नही पर मैं तुम्हे बता सकता हूँ कि वह मिल कैसे सकती है। तुम एक अच्छे छोकरे हो। इस बूढे को मत भूलना . तो क्या मैं तुम्हे बताऊ?"

"बताओ, चचा।"

"कछुआ देखा है? कितना भयकर जीव है, जानते हो?"

"जानता हूँ!"

"किसी प्रकार उसके रहने का ठिकाना मालूम करो और उसे बाड़े से घेर दो ताकि वह अन्दर न जा सके। वह वहाँ आयेगा, उसका चक्कर लगायेगा और पत्थर-तोड घास की फिराक में वापस चला जायेगा। शीघ्र ही वह घास लेकर लौटेगा और बाडा तोड देगा। ध्यान रहे कि तुम अगले दिन जरा तड़के वहाँ पहुँचना। जहाँ बाडा टूटा हुआ मिलेगा वही पत्थर-तोड घास भी होगी। इसे तुम जहाँ चाहो ले जा सकते हो।"

"क्या तुमने स्वय यह तरीका इस्तेमाल किया है, चचा?"

"जहाँ तक इस्तेमाल करने की बात है तो भाई मैंने नही किया। परन्तु यह बात मुझे भले लोगो ने ही बताई है। मै तो केवल एक ही जादू इस्तेमाल करता था यानी जब मैं घोडे पर चढ़ता था तो ज़ोर से चिल्लाता था 'जय बोलो' और फिर मुझे कभी किसी ने भी मौत के घाट नही उतारा!"

"यह 'जय बोलो' क्या है, चचा?"

"क्या तुम यह भी नही जानते? कैसे आदमी हो! चचा से पूछते हो ठीक करते हो। अब सुनो और मेरे साथ दोहराओ—

जय बोलो! ओ ज़ियाँ-निवासी!
करो दिव्य दर्शन राजा के
हम अश्वारोहण अभिलाषी।
सफोनियाँ के अश्रु गिरे,
ज़हारियस के वैन फिरे,
पिता महान मान्द्रिच है जो
मानवता-प्रिय चिर विश्वासी।
जय बोलो! ओ ज़ियाँ-निवासी!*

---

* हिन्दी रूपांतरकार डॉ० राम कुमार वर्मा।

"मानवता-प्रिय चिर विश्वासी," बूढे ने दुहराया। "अब समझ गये न? इस तरीके का इस्तेमाल करो।"

लुकाश्का हँस पडा।

"बताओ, चचा, क्या इसीलिए उन्होंने तुम्हारी जान बख्श दी थी? हो सकता है यह सिर्फ इत्तिफाक की ही बात रही हो।"

"तुम बडे चतुर होते जा रहे हो। इसे ज़बानी याद कर लो और फिर कहो। इससे तुम्हे कोई नुकसान न होगा। केवल यही गाये जाना 'जय बोलो' और तुम्हारा सब काम बन जायेगा," और खुद बूढा भी हँसने लगा, "लुका, अच्छा हो तुम नगई न जाओ।"

"क्यो न जाऊँ?"

"अब समय बदल गया है। तुम लोग भी अब वैसे आदमी नही रहे। आजकल तुम सारे कज़्ज़ाक पाखण्डी हो गये हो। और यह भी देखो कि कितने रूसी हमारे सिर पर सवार हो गये है। वे तुरन्त तुम्हे अदालत में खडा कर देंगे। जाने दो, यह विचार छोड दो। यह तुम्हारे बस का नही। गिरचिक और मै, हम दोनो " और बूढा अपनी अनन्त गाथा सुनाने जा ही रहा था कि लुकाश्का ने खिडकी की ओर देखते हुए उसकी बात काटी।

"चचा, सूर्य निकल चुका है। अब मुझे जाना चाहिए। किसी दिन हमसे मिलने आओ न।"

"भगवान भला करे। मै उस फौजी के पास जा रहा हूँ। मैंने वादा किया है कि उसे शिकार पर ले जाऊँगा। भला आदमी लगता है।"

१७

येरोश्का के मकान से निकलकर लुकाश्का सीधे घर गया। ज़मीन से कुहरा उठ उठ कर सम्पूर्ण गाँव को ढके ले रहा था। मवेशी तो दिखाई नही पड रहे थे फिर भी सभी ओर से ऐसी ऐसी आवाज़ें आती

सुनाई पड रही थी जिनसे प्रतीत होता था कि उनमें भी रेल-पेल शुरू हो गई है। मुर्गे एक दूसरे की बाँग का उत्तर-प्रत्युत्तर क्रमश जल्दी जल्दी देने लगे थे। रोशनी बढ रही थी और गाँव के लोग उठने लग गए थे। जब तक वह अपने घर के बिलकुल नज़दीक न पहुँच गया तब तक उसे अपने अहाते के टट्टर तक का अन्दाज़ नही लग पाया क्योंकि सभी जगह कुहरा ही कुहरा था, क्या मकान का दालान और क्या खुला सायवान। अपने कुहरावृत अहाते से उसने कुल्हाडी से काटी जाती हुई लकडी की चर्र-चर्र सुनी। वह घर में घुस गया। उसकी माँ जाग चुकी थी और अंगीठी के पास खडी खडी उसमें लकडियाँ लगा रही थी। उसकी छोटी बहन अभी तक बिस्तरे में पडी पडी खर्राटे ले रही थी।

"देखो लुकाश्का, तुम काफी छुट्टी मना चुके हो?" उसकी माँ ने धीरे से पूछा, "रात कहाँ बिताई?"

"गाँव में था," पुत्र ने अनिच्छा से उत्तर दिया और थैले में से अपनी बन्दूक निकाल कर उलटने-पुलटने लगा।

माँ ने भी सिर हिला दिया। लुकाश्का ने थोडी सी बारूद एक बर्तन में रखी, फिर एक थैली ली, उसमें से कुछ खाली कारतूस निकाले और उन्हे भरने लगा। साथ ही वह उनमे एक एक गोली भी भरता रहा। गोलियाँ एक चिथडे में लिपटी थी। तब, भरे हुए कारतूसो की दाँतो से परीक्षा कर लेने के बाद उसने थैली एक ओर रख दी।

"माँ, मैंने तुमसे कहा था न कि थैलियो में मरम्मत की ज़रूरत है। हो गई मरम्मत?" उसने पूछा।

"हाँ, हाँ, हमारी गूँगी कल रात कुछ उधेड-बुन कर तो रही थी। क्यो, घेरे में जाने का वक्त हो गया क्या? मैंने तो तुम्हारी कोई चीज नहीं देखी।"

"हाँ, जैसे ही तयार हो जाऊँगा, वैसे ही जाना होगा," वारूद वाधते वाधते लुकाश्का ने जवाव दिया, "और हमारी गूँगी कहाँ है, वाहर?"

"मै समझती हूँ लकडी काट रही है। वह तुम्हारे लिए परेशान हो रही थी। 'मैं उससे वात भी नही करूगी,' उसने मुझमे सकेत से कहा था। वह अपने मुंह पर ऐमे हाथ रखती है, ज़वान ऐमे चटखाती है और अपने दिल पर यो हाथ धरती है मानो उसका हृदय कह रहा हो 'काश मैं उससे मिल सकती!' मैं उसे यहाँ वुला लूँ क्या? उसे अब्रेक की सारी दास्तान मालूम हो चुकी है।"

"वुला लो," लुकाश्का ने कहा, "और मेरे पास कुछ चिकनई रखी थी, उसे भी ले आना। मुझे अपनी तलवार चिकनी करनी है।"

वूढी चली गई और थोडी ही देर वाद लुकाश्का की गूँगी-वहरी वहन पट-पट करती हुई कमरे में दाखिल हो गई। वह अपने भाई से छ वर्ष वडी थी और यदि उसके चेहरे की भावाभिव्यक्ति में वरावर रुक्षतापूर्ण परिवर्तन न हुआ करता (जैसा कि गूँगे-वहरे लोगो में स्वभावतया देखने को मिलता है) तो वह भी वहुत कुछ उसी के समान होती। वह एक भद्दी सी फ्राक पहने थी जिसपर जगह जगह पैवद लगे थे। उसके पैर नगे और कीचड से सने थे। उसके सिर पर एक पुराना नीला रूमाल कसा था। उसका गला, उसके हाथ और उसका चेहरा सभी मर्दों की तरह मज़वूत थे। उसके कपडो और आकृति-प्रकृति से पता चलता था कि वह सख्त किस्म की, पुरुषो जैसी, मेहनत की आदी थी।

वह दोनो हाथो में थोडी सी लकडियाँ लाई और अगीठी के पास फेंक कर अपने भाई के पास चली आई। उसका चेहरा प्रसन्नता से खिल

उठा। उसने उसके कंधे पर हाथ रखा और हाथ, मुंह और सारे शरीर से जल्दी जल्दी संकेत करने लगी।

"ठीक है, ठीक है, तुम बहुत अच्छी लड़की हो, स्तेप्का!" भाई ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया, "तुम सब कुछ ले आई, तुमने सारी चीजों की मरम्मत कर दी। तुम बहुत अच्छी हो! यह लो!" उसने दो मीठी रोटियां अपनी जेब से निकाली और उसे दे दी।

गूंगी का चेहरा मारे प्रसन्नता के दमक उठा। वह खुशी से नाच उठी। रोटी पाकर तो वह और भी जल्दी जल्दी इशारे करने लगी। प्राय वह एक विशेष दिशा की ओर संकेत करती और फिर अपनी उंगली कभी भौंहों पर रखती, कभी मुंह पर। लुकाश्का ने उसकी बात समझ ली और ओंठों पर हल्की मुस्कराहट लाते हुए सिर हिला दिया। वह कह रही थी कि लुकाश्का लड़कियों को भी कुछ स्वादिष्ट चीजें दे, लड़कियां उसे प्यार करती हैं और वह लड़की मर्यान्का जो सबसे सुन्दर है उससे बहुत प्रेम करती है। मर्यान्का की बात बताते हुए उसने उसके घर की दिशा में संकेत किया, अपनी भौंहों और अपने मुंह पर उंगली फेरी, ओंठों से चुम्बन जैसा शब्द किया और अपना सिर हिला दिया। "वह तुमसे प्रेम करती है," अपने ही हाथों से अपनी छाती दबाती और किसी का आलिंगन करने जैसे इशारे करती हुई लड़की ने अभिनय किया। उनकी मां भी अन्दर आ गई। वह भी गूंगी पुत्री की भाषा समझ कर मुस्करा दी और अपना सिर हिलाने लगी। पुत्री ने मां को रोटी दिखाई और ऐसा शोर करने लगी जिससे प्रकट होता था कि मारे खुशी के पागल हुई जा रही है।

"मैंने पिछले दिन उलित्का से कहा था कि मैं उसके पास विवाह की बात चलाने के लिए किसी मुनासिब आदमी को भेजूंगी," मां ने कहा, "उसने मेरी बात बड़े कायदे से सुनी थी।"

लुकाश्का मौन माँ की ओर देखता रहा। "परन्तु शराब बेचने का क्या रहा, माँ? मुझे एक घोड़ा चाहिए।"

"जब समय आयेगा मैं उसे गाड़ी पर लदवा दूँगी। मैं सब कुछ तैयार रखूँगी," माँ बोली। सम्भवत वह नही चाहती थी कि उसका पुत्र घरेलू मामलो में हाथ डाले।

"जब जाने लगना तो अपने साथ गलियारे में रखा हुआ थैला ले लेना। वह मैं अपने पड़ोसियो से माँग लाई हूँ और उसमें मैंने कुछ चीजें रख दी हैं जिन्हे तुम घेरे पर लिये जाना। या कहो तो उसे ज़ीन के साथ वाले थैले में डाल दूँ?"

"ठीक है," लुकाश्का ने जवाब दिया, "और अगर गिरेई-खाँ नदी पार करके इधर आ जाय तो उसे मेरे पास घेरे में भेज देना। अब मुझे बहुत समय तक छुट्टी न मिल सकेगी। मुझे उससे कुछ काम है।"

वह चलने के लिए तैयार होने लगा।

"मै उसे भेज दूँगी," माँ बोली, "तुम सारे वक्त याम्का के घर लफगापन करते रहे? यह बात ठीक है न? रात में मै मवेशियो की देख-भाल के लिए निकली थी, और मैं समझती हूँ कि वह तुम्हारी ही आवाज़ थी। तुम उस वक्त गा रहे थे।"

लुकाश्का ने कोई जवाब न दिया। वह गलियारे में घुसा, थैले अपने कधे पर डाले, कोट के किनारे पेटी से बाधे, बन्दूक उठाई और दहलीज पर एक क्षण के लिए रुक गया।

"नमस्ते, माँ," फाटक बन्द करते करते उसने कहा, "नज़ारका के साथ शराब का एक छोटा सा कनस्तर भिजवा देना। मैंने छोकरो को पिलाने का वादा किया है। नज़ारका शराब लेने यही आयेगा।"

"ईश्वर रक्षा करे, लुकाश्का। मैं तुम्हे नये कनस्तर में से थोड़ी सी भेज दूँगी," टट्टर तक जाते हुए बूढी ने कहा, " परन्तु सुनो," टट्टर पर झुकते हुए वह बोली।

कज्ज़ाक रुक गया।

"यहाँ तुम मस्ती करते रहे हो। खैर ठीक है। जवान आदमी को उसके लिए भी अवकाश क्यों न मिले? भगवान ने तुम्हें तकदीरवाला बनाया है और यह बहुत अच्छा है। परन्तु बेटे आंख खोलकर काम करना। हर कदम सोचकर उठाना। किसी व्यसन या शरारत में हाथ न डालना। अपने से बड़ों की इज्जत करना। ये सब बातें भूलना मत। और मैं शराब बेच दूंगी और घोड़े के लिए रुपया जुटा लूंगी। साथ ही मैं उस लड़की से तुम्हारा व्याह भी तय कर दूंगी।"

"अच्छी बात है, अच्छी बात है," पुत्र ने नाक-भौं सिकोड़ते हुए रूखा-सा जवाब दे दिया।

उसकी गूंगी बहन ने उसका ध्यान आकृष्ट करने के लिए कुछ आवाज़ की। उसने अपने सिर की तरफ इशारा किया और अपनी हथेली दिखाई, जिसका अर्थ था कि वह किसी चेचेन के घुटे हुए सिर के बारे में कुछ कहना चाहती है। फिर उसके चेहरे पर क्रोध के लक्षण दिखाई दिये और उसने ऐसे संकेत किये मानो बन्दूक से किसी को निशाना बना रही हो, फिर चिल्लाई और जल्दी से अपना शरीर कँपाने और सिर हिलाने-डुलाने लगी। इसका मतलब यह था कि लुकाश्का को किसी दूसरे चेचेन को भी मौत के घाट उतारना चाहिए।

लुकाश्का गूंगी का अभिप्राय समझ गया। वह मुस्करा दिया और लबादे के नीचे पीठ पर बंदूक रखते हुए धीरे धीरे वहाँ से चल दिया, और शीघ्र ही घने कुहरे में अदृश्य हो गया।

बूढ़ी भी थोड़ी देर तक वहाँ खड़ी रहने के बाद घर वापस चली गई और काम में लग गई।

१८

ठीक उसी समय, जब लुकाश्का घेरे की ओर चला, चचा येरोश्का ने अपने कुत्ते बुलाने के लिए सीटी बजाई, फिर वह टट्टर के ऊपर चढा और पिछवाडे की गलियो से होते हुए ओलेनिन के घर की ओर चल पडा। शिकार पर जाने के पहले वह औरतो से मिलना बिलकुल पसन्द न करता था।

ओलेनिन सो रहा था। वन्यूशा यद्यपि जगा हुआ था फिर भी अभी तक चारपाई पर ही पडा था और कमरे के चारो ओर यह जानने के लिए निगाह दौडा रहा था कि उठने का समय तो नही हो गया। बस इसी समय कधे पर बन्दूक रखे शिकारी की पोशाक पहने और ज़रूरी अगड-खगड लिए हुए चचा येरोश्का ने दरवाज़ा खोला।

"डडा उठाओ!" वह भारी आवाज़ में चिल्लाया, "विपत्ति आ गई! चेचेनो ने हमपर हमला बोल दिया। इवान! अपने मालिक के लिए समोवर तैयार करो, तुम भी आ जाओ न। जल्दी करो!" बूढा चिल्लाया, "हमारा यही तरीका है, भले आदमी! क्यो! अरे लडकियाँ तक जाग चुकी है! खिडकी के बाहर देखो। लडकियाँ पानी भरने जा रही है और तुम हो कि अभी तक चारपाई तोड रहे हो।"

ओलेनिन जाग पडा और कूद कर पलग के नीचे आ गया। बूढे की शक्ल देखते और उसकी आवाज़ सुनते ही उसे ताज़गी आई और उसका हृदय हलका हो गया। "वन्यूशा, जल्दी करो, जल्दी करो!" वह चिल्लाया।

"ऐसे ही आप शिकार मारेगे?" बूढा बोला, "दूसरे लोग नाश्ता पानी कर चुके और आप अभी तक स्वप्नलोक की सैर कर रहे है! ल्याम, इधर तो आना!" उसने कुत्ते को आवाज़ लगाई।

"तुम्हारी बन्दूक तैयार है न?" वह इतनी जोर से चिल्लाया मानो कमरे में भीड की भीड इकट्ठी हो।

"मैं मानता हूँ कि गलती मेरी ही है। परन्तु मैं कर ही क्या सकता हूँ? 'बारूद, वन्यूशा, बन्दूक की डाट! '"

"तुम्हे जुर्माना देना होगा!" बूढा चिल्लाया।

"टू ते वुले वू?"* दांत पीसते हुए वन्यूशा ने पूछा।

"तुम हमारी जाति के नही और तुम्हारी बक-बक भी हमारी बोली की तरह नही, शैतान!" दांत दिखाते हुए बूढा वन्यूशा पर गुर्राया।

"पहली गलती माफ होनी चाहिए," खुशी के लहजे में ओलेनिन ने कहा। वह अपने ऊँचे बूट पहनने में लगा था।

"ओह! तो यह पहली ग़लती है। जाओ माफ की। लेकिन यदि फिर कभी ज्यादा देर तक सोये तो तुमपर एक बाल्टी चिखीर जुर्माना करूंगा। गर्मी बढ जाने पर एक भी हिरन हाथ न लगेगा। समझे?"

"और अगर वह हमें मिल जाय तो हमसे ज्यादा बुद्धिमान होगा," ओलेनिन ने चचा के पिछली शाम के शब्दो को दुहराते हुए कहा, "और तुम उसे धोखा नही दे सकते।"

"हाँ हँस लो, दोस्त, हँस लो! एक मार कर दिखाओ तब बात करना। अच्छा, अब जल्दी करो! वह देखो खुद मालिक मकान तुमसे मिलने आ रहा है," खिडकी के बाहर निगाह डालते हुए येरोश्का बोला, "देखो तो कितना बना-ठना है। नया कोट पहन रखा है, यह दिखाने के लिए कि अफसर है। ओफ, ये लोग, ये आदमी!"

---

* क्या आपको चाय चाहिए?

और निस्सदेह वन्यूशा आया और उसने बताया कि मालिक मकान ओलेनिन से मिलना चाहता है।

"लारजाँ*," वन्यूशा ने उसके आने का अभिप्राय बताने के उद्देश्य से कहा। उसके पीछे पीछे मकान मालिक भी चला आया। वह एक नया चेरकेसियन कोट पहने था, जिसपर कन्धे के स्थान पर अफसरों वाली पट्टियाँ थी। वह चमकते हुए जूते भी पहने था (कज्ज़ाको में इतने बढिया जूते शायद और किसी के पास न थे)। वह इधर-उधर डोलता जा रहा था और अपने मेहमान का स्वागत कर रहा था।

कार्नेट ईल्या वसील्येविच एक पढा-लिखा कज्ज़ाक था। वह मुख्य रूस हो आया था, एक अध्यापक था और सबसे अच्छी बात यह थी कि भला आदमी था। वह चाहता था कि उसकी चाल-ढाल देखकर भी लोग उसे भला आदमी ही समझें। परन्तु उसकी चटक-मटक, उसके आडम्बर, उसके आत्मविश्वास और बातचीत करने के उसके बेतुके ढग को देखकर देखने वाले समझ लेते थे कि वह चचा यॅरोश्का का भी चचा है। यह बात उसके धूप से कुम्हलाये हुए चेहरे और हाथो तथा लाल नाक से भी स्पष्ट हो जाती थी। ओलेनिन ने उससे बैठ जाने को कहा।

"नमस्ते, ईल्या वसील्येविच," थोडा सा सिर झुकाते हुए येरोश्का बोला। ओलेनिन को लगा कि चचा ने व्यग्य किया है।

"नमस्ते, चचा। तो तुम यहाँ पहले से ही डटे हो," लापरवाही से सिर हिलाते हुए कार्नेट बोला।

कार्नेट लगभग ४० वर्ष का एक अधेड व्यक्ति था। उसकी दाढी भूरी और नुकीली थी। शरीर दुबला-पतला और सूखा हुआ सा, परन्तु खूबसूरत

---

* रुपये।

था। अवस्था को देखते हुए उसमें उल्लास की कमी न थी। वह ओलेनिन से मिलने आया था और उसे डर था कि कहीं वह उसे मामूली कज्जाक ही न समझ बैठे। वह चाहता था कि ओलेनिन उसके बडप्पन को पहले से ही समझ ले।

"यह रहा हमारा ईजिपशियन-नीमरोद", ओलेनिन को सम्बोधित करते हुए वह कहने लगा और हँसते हुए उसने बूढ़े की ओर इशारा किया, "आप के सामने एक बहुत बड़ा शिकारी खड़ा है, हमारे सब कामों में वह सब से आगे रहता है। मैं देखता हूँ तुम्हारी उसकी जान-पहचान पहले से ही हो चुकी है।"

चचा येरोश्का ने अपने पैरों की ओर देखा, जिनमें वह कच्चे चमड़े की चप्पलें पहने थे, और कार्नेट की योग्यता तथा विद्वत्ता देखकर विचारशील मुद्रा में अपना सिर हिलाने और बड़बड़ाने लगे, "जीप्शियन नीमरोद! ऐसी बातें वह सोचता है!"

"हाँ हम शिकार पर जाने की तैयारी में हैं," ओलेनिन ने उत्तर दिया।

"महाशय, वही तो मैं देख रहा हूँ," कार्नेट बोला, "परन्तु मुझे आप से कुछ काम की बातें करनी है।"

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"यह देखते हुए कि आप एक भले आदमी हैं," कार्नेट ने कहना शुरू किया, "और चूंकि मैं भी अपने को एक अफसर के पद का समझता हूँ, इसलिए हम भले आदमियों की तरह आपस में बातें कर सकते हैं ..." (वह कुछ रुका और मुस्कराते हुए उसने ओलेनिन और बूढ़े की तरफ देखा।) "मेरी पत्नी हमारी जाति की एक नासमझ औरत है। वह आपके कल के शब्दों को अच्छी तरह समझ नहीं पाई। मैं कहता हूँ कि बिना अस्तबल के ही मेरे क्वार्टर रेजीमेंटल ऐडजूटैंट को छ रूबल

माहवार पर उठाये जा सकते हैं, लेकिन मैं अपनी तरफ से तो क्वार्टर किराये पर देना नहीं चाहता। परन्तु, चूंकि आप घर चाहते हैं इसलिए मैं खुद अफसर के पद का और इस जिले का निवासी होने के कारण, न कि अपने रीति-रिवाजो के अनुसार, किसी भी विषय पर आपके साथ कोई भी क़रार कर सकता हूँ, और हर दशा में शर्तों का पालन कर सकता हूँ ”

“बोलता साफ़ है!” बूढा बुदबुदाया।

कार्नेट बडी देर तक इसी लहजे में बातचीत करता रहा। अन्त में, बडी मुश्किल से ओलेनिन की समझ में यह बात आई कि वह अपना क्वार्टर छ रूबल महीने पर उठाना चाहता है। ओलेनिन ने तुरन्त उसे स्वीकार कर लिया और उससे चाय पीने का आग्रह किया। कार्नेट ने इनकार कर दिया।

“अपने गन्दे रीति-रिवाजो के अनुसार हम दुनिया भर के जूठे लोटे गिलास में कोई चीज़ पीना हराम समझते है,” उसने कहा, “यद्यपि अपनी शिक्षा-दीक्षा के कारण मैं तो समझ सकता हूँ परन्तु अपनी इन्सानी कमज़ोरियो के कारण मेरी पत्नी ”

“अच्छा तो आप थोडी सी चाय पियेंगे?”

“यदि आप मुझे इजाज़त दें तो मैं अपना गिलास ले आऊँ,’ कार्नेट ने जवाब दिया और बाहर निकल कर दालान में आ गया।

“मेरा गिलास तो लेते आना!” उसने आवाज़ दी।

कुछ ही मिनटो में दरवाज़ा खुला और गुलाबी आस्तीन में एक मूँगई हाथ ने गिलास बढा दिया। कार्नेट ने आगे बढ कर उसे ले लिया, और अपनी पुत्री के कान में कुछ फुसफुसाया। ओलेनिन ने कार्नेट के लिए चाय उसके खास गिलास में, और येरोश्का के लिए एक दुनिया भर के जूठे गिलास में उडेल दी।

"मै आपको रोकना नही चाहता," गिलास खाली करते और ओठो पर जीभ फेरते हुए कार्नेट बोला, "मुझे भी मछली मारने का बड़ा शौक है और जब मुझे अपने कामो मे कुछ दिनो की छुट्टी मिल जाती है तो मन बहलाने के लिए यहाँ आ जाता हूँ। मुझे भी तकदीर आजमाने की इच्छा है। मै देखना चाहता हूँ कि मेरे हिस्से में भी तेरेक की कुछ भेंट पड़ती है या नही। मै चाहता हूँ कि किसी दिन आप हमारे यहाँ आयें और हमारे गाँव के रीति-रिवाजो के अनुसार हमारे साथ शराब पियें," कार्नेट ने सिर झुकाया, ओलेनिन से हाथ मिलाया और बाहर चला गया। जब ओलेनिन तैयार हो रहा था उस समय उसके कानो में कार्नेट की आवाज पडी। वह अधिकारपूर्ण ढग से अपने परिवारवालो को हुक्म दे रहा था। कुछ ही मिनटो बाद उसने देखा कि वह एक फटा-सा कोट पहने, घुटनो तक पतलून मोडे और कधो पर मछली मारने का जाल रखे खिडकी से गुजरता हुआ निकल गया।

"बदमाश!" अपना दुनिया भर का गिलास खाली करते हुए चचा येरोश्का बोला। "क्या सचमुच तुम उसे छ रूबल दोगे? क्या ऐसी बात पहले कभी सुनी गई थी? गाँव में सब से अच्छा घर तुम्हे दो रूबल महीने पर मिल सकता है। पाजी कही का! क्यो, तीन रूबल में तो मै अपना ही घर उठा सकता हूँ?"

"नही, मै यही रहूँगा," ओलेनिन बोला।

"छ रूबल! यह तो रुपया फेकना हुआ, फेकना।" बूढे ने आह भरी, "आओ कुछ चिखीर ही पी जाय, इवान!"

रास्ते भर के लिए थोडा-बहुत खाना पेट में डालने और एक एक गिलास शराब उडेल लेने के बाद ओलेनिन और चचा येरोश्का आठ बजे के पहले पहले घर से निकल पडे। फाटक पर उन्हे एक बैलगाडी मिली जिसे मर्यान्का हाँक रही थी। उस समय वह अपने सिर के चारो तरफ

आँख के पास तक एक रूमाल लपेटे थी और फ्राक के ऊपर एक कोट और पैरो में ऊँचे जूते पहने थी। हाथ में एक चाबुक लिए हुए वह टिक टिक करती चली आ रही थी।

"कितनी सुन्दर है यह!" बूढे ने कहा और अपने दोनो हाथ ऐसे फैला दिये जैसे उसे पकड ही तो लेगा।

मर्यान्का ने अपना चाबुक उनकी ओर फेरा और अपनी सलोनी आँखो से दोनो को देखने लगी।

ओलेनिन को लगा कि उनका हृदय और भी हल्का हो गया है।

"बढे आओ, चलते चलो!" बन्दूक कन्धे पर फेंकते हुए वह बोला। उसे बराबर ऐसा लगता रहा कि लडकी की आँखें उसपर गडी हुई हैं।

बैलो को सम्बोधित करती हुई मर्यान्का की आवाज़ पीछे से गूँज रही थी और साथ ही चलती हुई गाडी की चूँ-चर्र भी सुनाई पड रही थी।

उनका रास्ता गाँव के पीछे चरागाहो से होकर था। येरोश्का बराबर बाते करता रहा। वह कार्नेट को न भूला था और उसे बराबर गालियाँ देता जा रहा था।

"उससे तुम इतने नाराज़ क्यो हो?" ओलेनिन ने पूछा।

"वह कमीना है। और, यह बात मुझे पसन्द नही," बूढे ने जवाब दिया, "जब मरेगा तो सब यही छोड जायेगा! तब किसके लिए बचा रहा है? दो दो मकान बनवा लिये हैं और भाई से मुक़दमा लडकर उसका एक बाग भी हथिया लिया है। काग़ज़ की नाव चलाता है कुत्ता है, कुत्ता! दूसरे गाव से लोग उससे अपने कागज़-पत्र लिखवाने आते हैं और जो कुछ वह लिख देता है वही हो जाता है। वह ऐसा ही करता है। परन्तु वह धन बचा किसके लिए रहा है? उसके एक लडका है और एक लडकी और जब लडकी की शादी हो जायगी तब रह कौन जायगा?"

"हो सकता है वह दहेज देने के लिए जोड रहा हो," ओलेनिन बोला।

"दहेज? क्या बात करते हो? लडकी को खुद लोग घेरते हैं। बडी सुन्दर है! परन्तु वह इतना पाजी है कि उसका व्याह किसी अमीर से ही करेगा। वह उसकी अच्छी कीमत वसूल करना चाहता है। यहाँ एक कज्ज़ाक है, लुका। मेरा पडोसी है, मेरा भतीजा है और एक अच्छा लडका है। उसी ने चेचेन को मारा था। बेचारा बहुत दिनो से उसका दीवाना है, मगर यह पाजी अपनी लडकी उसे नही देगा। इसके लिए वह बहाने पर बहाने गढता जा रहा है, कहता है 'लडकी छोटी है' लेकिन मै जानता हूँ कि वह क्या सोच रहा है। वह चाहता है कि वे लोग उसके आगे झुकते रहे और घिघियाते रहे। आज इस लडकी के कारण कितनी शर्म उठानी पडी! फिर भी वे लोग लडकी लुकाश्का को दिलायेंगे क्योकि गाँव में वही सबसे अच्छा कज्ज़ाक है, जिगीत है। उसी ने एक अब्रेक को मारा है, और उसे पदक भी मिलनेवाला है।"

"मगर यह कैसे? जब पिछली रात मै अहाते मे घूम रहा था तो मैंने मालिक मकान की लडकी और एक कज्ज़ाक को आपस में एक दूसरे का चुम्बन करते देखा था," ओलेनिन बोला।

"मुझे तुम्हारी बात का कोई यकीन नही!" रुकते हुए बूढा कहने लगा। उसकी आवाज़ तेज़ थी।

"मै अपनी कसम खाता हूँ," ओलेनिन बोला।

"बडी बेहया है," येरोश्का ने कहा और विचारो में डूब गया, "लेकिन वह कज्ज़ाक था कौन?"

"मै नही देख सका।"

"खैर, कैसी टोपी पहिने था, सफेद?"

"हाँ।"

"और लाल कोट? तुम्हारे ही इतना लम्बा था?"

"नही, कुछ अधिक।"

"तव तो वही था!" और येरोश्का हँसते हँसते लोटपोट हो गया, "वह तो मार्का ही था। उसका नाम लुका है, लेकिन मै उसे मज़ाक मज़ाक में मार्का कहता हूँ, मार्का। मै उसे चाहता हूँ। मैं भी ठीक उसी की तरह था। इसमें वुराई क्या है? मेरी प्रेमिका अपनी मां और ननद के पास सोया करती थी, परन्तु मै किसी न किसी प्रकार उस तक पहुँच जाता था। वह ऊपर कोठे पर सोती थी। उसकी माँ क्या थी, पूरी चुडैल। वह मुझसे कितनी नफरत करती थी! मैं अपने दोस्त के साथ जाता था। उसका नाम था गिरचिक। हम लोग उसकी खिडकी के नीचे पहुच जाते। मैं अपने दोस्त के कन्धो पर चढ जाता, खिडकी में धक्का मारता और सिर अन्दर करके देखने लगता। वह भी वही एक वेंच पर सोया करती। एक दिन मैंने उसे जगा दिया और वह करीव करीव चिल्ला पडी। उसने मुझे पहचाना न था। 'कौन है?' उसने पूछा था और मैं जवाव भी न दे पाया। उसकी मां भी अगडाई लेने लगी थी जिसे देखकर मैंने अपना टोप उतारा और उसके मुँह पर रख दिया। उसने तुरन्त टोप पहचान लिया क्योंकि वह फटा था। और, फिर दौडी मेरे पीछे। उन दिनो मै जिस चीज़ की भी इच्छा करता वह मुझे मिल जाया करती। वह लडकी मेरे लिए मलाई लाती, अगूर लाती और न जाने क्या क्या लाती!" येरोश्का ने अपने खास लहजे में कहा, "और फिर कोई वही अकेली तो थी नही। अजी वह ज़िन्दगी थी!"

"और अव क्या है?"

"अव हमें कुत्ते के पीछे लगना है। तीतर को पेड पर वैठ जाने दो, फिर तुम गोली चला सकते हो।"

"मर्यान्का के लिए कोशिश क्यो नही करते?"

अपने कुत्ते, ल्याम, की ओर संकेत करते हुए बूढ़े ने कहा, "कुत्ते पर नज़र रखना! आज तुम्हे उसकी बानगी दिखाऊँगा!"

थोडी देर ठहर चुकने के बाद लगभग सौ कदम तक वे फिर बातों में लगे रहे। तभी बूढा रुका और उसने सडक के उस पार पडी हुई एक टहनी की तरफ इशारा किया।

"उसके बारे में क्या सोचते हो?" उसने पूछा, "तुम समझते हो यह कोई बात ही नही? टहनी इस तरह नही पडी रहनी चाहिए। समझे! यह असगुन होता है।"

"असगुन क्यो होता है?"

बूढा हँस पडा। उसकी हँसी में तिरस्कार की भावना व्यक्त हो रही थी।

"अरे तुम कुछ नही जानते। मेरी बात सुनो। जब कभी कोई टहनी इस तरह पडी दिखाई दे तो उसे कभी लांघकर मत जाओ। तुम्हे उससे घूमकर जाना चाहिए अथवा उसे रास्ते मे हटाकर फेंक देना चाहिए, फिर कहना चाहिए 'पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा' और तब भगवान् के आशीर्वाद से आगे बढना चाहिए। तुम्हे कुछ नही होगा। बुजुर्ग मुझे यही सिखाते रहे हैं।"

"आओ, क्या अट-सट बक रहे हो!" ओलेनिन ने कहा। "मुझे मर्यान्का के बारे मे कुछ और बताओ। क्या लुकाश्का से उसकी मुहब्बत चल रही है?"

"हुश अब चुप रहो!" बूढे ने फुसफुसाते हुए फिर बात काटी। "सिर्फ सुनते जाओ। हम जगल से होकर जायेंगे।"

और बूढे ने, जिसकी चप्पलों की आहट तक न सुनाई पड रही थी, एक सकरे रास्ते से होकर घने जगल में प्रवेश किया। कभी कभी वह त्यौरियाँ चढाकर ओलेनिन की तरफ भी घूर लेता जो अपने भारी भारी जूतो से

चर्र-मर्र की आवाज करता चला जा रहा था। वह अपनी वन्दूक भी वडी लापरवाही से थामे था और प्राय रास्ते मे मिलनेवाली टहनियो मे उलझ जाता था।

"इतना शोर मत करो। धीरे धीरे कदम रखो, दोस्त!" बूढा गुस्से से फुसफुसा उठा।

हवा से ऐसा लग रहा था कि सूर्योदय हो चुका है। कोहरा छट रहा था यद्यपि वह अभी तक पेडो के ऊँचे से ऊँचे सिरो को ढके था। जहाँ तक निगाह जाती थी वन की ज़बर्दस्त उँचाई ही नज़र आती थी। कदम कदम पर दृश्य परिवर्तित हो रहे थे। दूर से जो पौधा वृक्ष जैसा लगता वही पास जाकर झाडी निकलता, और इसी प्रकार नरकट, एक पेड जैसा।

१६

कोहरा कुछ कुछ हट गया था। अब छतो की नम फूस दिखाई पडने लगी थी। कही कही उसने ओस का भी रूप ले लिया था। सडक तथा वाडो के इर्द-गिर्द की घास भीग गई थी। जगह जगह चिमनियो से धुआँ उठ रहा था। लोग गाँव से बाहर जाने लगे थे—कुछ काम पर, कुछ नदी की ओर और कुछ चौकियो की तरफ। शिकारी नम और घास वाली सडको के किनारे-किनारे चहलकदमी कर रहे थे। कुत्ते दुम हिलाते और अपने मालिको की ओर पीछे देखते हुए उनके इर्द-गिर्द दौड रहे थे। असख्यो मच्छड हवा में उड उडकर शिकारियो पर हमले वोल रहे थे और उनकी पीठो, हाथो और आँखो को ढके ले रहे थे। वातावरण में घास की गन्ध और वन की नमी फैल रही थी। ओलेनिन बराबर उस गाडी को देखता रहा जिसपर बैठी हुई मर्यान्का बैलो पर एक टहनी से चाबुक जमा रही थी।

चारो ओर नीरवता थी। पहले जो आवाजें गांवो से आती हुई सुनाई पड रही थी अव वे वन्द हो चुकी थी। जब कुत्ते कँटीली झाडियो में से होकर दौडते तो वे खडखडाने लगती। कभी कभी पक्षी भी एक दूसरे पर चहचहाते हुए सुनाई पडते। ओलेनिन जानता था कि जगलो में हमेशा खतरा रहता है क्योंकि ऐमी ही जगहो में अब्रेक छिपा करते हैं। परन्तु वह यह भी समझता था कि जगल में पैदल चलनेवाले मनुष्य की सवसे वडी सुरक्षा उनकी वन्दूक है। यह बात नहीं थी कि वह डर रहा था परन्तु वह यह समझता था कि यदि उमके स्थान पर कोई दूमरा होता तो शायद डर जाता। वह नम एव कुहरे मे ढके हुए वन को देख रहा था और दूर से आती हुई हल्की और विचित्र-सी लगनेवाली आवाज़ वडे ध्यान मे सुन रहा था। अव उसने वन्दूक ढीली कर दी और उसे एक ऐसी सुखद अनुभूति होने लगी जो उसके लिए नई थी। चचा येरोश्का आगे आगे चल रहा था और कभी कभी रुककर ऐसे स्थानो का सूक्ष्म निरीक्षण-सा करने लगता जहाँ उसे जानवरो के पैरो के दुहरे निशान दिखाई पड जाते। वह इन निशानो को ओलेनिन को भी दिखाता चलता। वह शायद ही कभी वोलता था। जव उसे कोई वात कहनी होती तो फुसफुसा भर देता। जिस रास्ते से होकर वे चल रहे थे वह कभी गाडियों की वजह से वन गया था। परन्तु, अव वहाँ घासे उग आई थी। दोनो ओर देवदार तथा प्लेन वृक्षो का इतना घना वन था और वहाँ लताएँ इतनी अधिक फैली हुई थी कि उनमें से कुछ भी देख सकना असम्भव था। शायद ही कोई ऐसा वृक्ष रहा हो जिसपर नीचे से लेकर ऊपर तक अगूर की वन-लताएँ न लिपटी हो। कँटीली झाडिया ज़मीन पर विछी हुई थी। जगल के छोटे से छोटे खुले स्थान पर भी काली वेरी की झाडियाँ और भूरे रग के परदार नरकट उगे हुए थे। कही कही खुरो के वडे वडे निशान और भागते हुए तीतरो के पग-चिन्ह रास्ते मे होकर घनी झाडियो तक दिखाई पड जाते थे। जगल में उगी हुई घनी

झाडियो, लताओ तथा वृक्षो आदि से होकर कभी कोई मवेशी न गुज़रे थे। वन का यह सौन्दर्य ओलेनिन पर छाता जा रहा था क्योकि इसके पहले उसने प्रकृति का यह रूप कभी न देखा था। यह जगल, यह विपत्ति, यह बूढा और उसकी विचित्र फुसफुसाहट, नखशिख-सौन्दर्य की मूर्ति यह मर्यान्का और यह पहाड उसे स्वप्न जैसे लग रहे थे।

"एक तीतर बैठ गया," चारो ओर निगाह डालते और अपने चेहरे पर टोपी खीचते हुए बूढा फुसफुसाया, "जल्दी से मुंह ढँक लो! यह रहा तीतर!" उसने ओलेनिन को तीखी नज़रो से देखा और हाथो तथा पैरो के सहारे जानवरो की भाँति चुपके चुपके आगे वढने लगा। "उसे मनुष्य का मुंह अच्छा नही लगता।"

ओलेनिन पीछे ही था कि बूढा रुका और एक पेड की जाँच-पडताल करने लगा। पेड पर चढा हुआ एक मुर्ग-तीतर गुर्राते हुए कुत्ते को देखकर कुकुडाने लगा। ओलेनिन ने भी पक्षी को देखा और उसी क्षण येरोश्का की वन्दूक की 'धाँय' उसके कानो में पडी। पक्षी फडफडाया, उसके कुछ पर टूटे और वह जमीन पर आकर धम्म से गिर पडा। जैसे ही ओलेनिन बूढे की ओर वढा कि उसने दूसरे मुर्ग़-तीतर को भी उडा दिया। ओलेनिन ने तुरन्त अपनी वन्दूक उठाई, निशाना साधा और दन्न से गोली दाग दी। क्षण भर को तीतर उडा, फिर गिरते हुए उसने कुछ शाखाएँ पकडने की कोशिश की और ज़मीन पर लुढक पडा।

"वहुत अच्छे!" हँसते हुए बूढा चीखा। उडते हुए पक्षी पर निशाना साधना उसके वश का न था।

उन्होने तीतरो को उठाया और चल दिये। प्रशसा के शब्द सुनकर ओलेनिन का उत्साह वढा और वह बूढे से वाते करने लगा।

"ठहरो, इधर आओ, इस तरफ" येरोश्का ने बात काटी, "मैंने यहां कल एक हिरन के पैरो के निशान देखे थे।"

जगल में करीब तीन सौ कदम चल चुकने के बाद वे एक झाडी के समीप पहुँचे जहां नरकटो की बहुतायत थी और चारो ओर पानी भरा था। ओलेनिन बढे शिकारी के साथ न रह सका। वह पिछड गया। शीघ्र ही येरोश्का, जो लगभग बीस कदम आगे था, रुका और सिर और हाथ हिलाने लगा। पास आने पर ओलेनिन ने देखा कि येरोश्का आदमी के पैरो के निशानो की तरफ इशारा कर रहा है।

"देख रहे हो न?"

"हां," ओलेनिन ने धीरे से बोलने का प्रयत्न करते हुए कहा, "आदमी के पैरो के निशान।"

अनायास ओलेनिन के दिमाग मे कूपर कृत "पथ-अनुसधानकर्ता" और अबेक घूम गये। परन्तु यह देख कर कि बूढा कितने विचित्र ढग से आगे बढ रहा है उसे उससे कुछ भी पूछने में सकोच हुआ। उसे सन्देह हो रहा था कि यह वैचित्र्य खतरे के भय के कारण है अथवा शिकार की उत्सुकता के कारण।

"नही। ये तो मेरे ही पैरो के निशान है," बूढे ने सहज ही उत्तर दिया और उस घास की तरफ इशारा किया जहां किसी जानवर के पैरो के निशान दिखाई पड रहे थे।

बूढा चलता गया और ओलेनिन पीछे पीछे लगा रहा। करीब बीस क़दम चल चुकने के बाद वे एक नाशपाती के पेड के पास आये जिसके नीचे काली भूमि पर किसी जानवर का ताजा गोबर पडा था। यह स्थान अगूर लताओ से आच्छादित एक कुज की तरह था। यहां कुछ कुछ अधेरा था और नमी भी।

"सुबह वह यही था," आह भरते हुए बूढा बोला, "मांद अब भी नम है, बिल्कुल ताजी।"

झाडियो, लताओ तथा वृक्षो आदि से होकर कभी कोई मवेशी न गुज़रे थे। वन का यह सौन्दर्य ओलेनिन पर छाता जा रहा था क्योंकि इसके पहले उसने प्रकृति का यह रूप कभी न देखा था। यह जगल, यह विपत्ति, यह वूढा और उसकी विचित्र फुसफुसाहट, नखशिख-सौन्दर्य की मूर्ति यह मर्यान्का और यह पहाड उसे स्वप्न जैसे लग रहे थे।

"एक तीतर वैठ गया," चारो ओर निगाह डालते और अपने चेहरे पर टोपी खीचते हुए वूढा फुसफुसाया, "जल्दी से मुंह ढँक लो! यह रहा तीतर!" उसने ओलेनिन को तीखी नज़रो से देखा और हाथो तथा पैरो के सहारे जानवरो की भाँति चुपके चुपके आगे वढने लगा। "उसे मनुप्य का मुंह अच्छा नही लगता।"

ओलेनिन पीछे ही था कि वूढा रुका और एक पेड की जाँच-पडताल करने लगा। पेड पर चढा हुआ एक मुर्ग-तीतर गुर्राते हुए कुत्ते को देखकर कुकुडाने लगा। ओलेनिन ने भी पक्षी को देखा और उसी क्षण येरोश्का की बन्दूक की 'धाँय' उसके कानो में पडी। पक्षी फडफडाया, उसके कुछ पर टूटे और वह जमीन पर आकर धम्म से गिर पडा। जैसे ही ओलेनिन वूढे की ओर वढा कि उसने दूसरे मुर्ग-तीतर को भी उडा दिया। ओलेनिन ने तुरन्त अपनी वन्दूक उठाई, निशाना साधा और दन्न से गोली दाग दी। क्षण भर को तीतर उडा, फिर गिरते हुए उसने कुछ शाखाएँ पकडने की कोशिश की और ज़मीन पर लुढक पडा।

"वहूत अच्छे!" हँसते हुए वूढा चीखा। उडते हुए पक्षी पर निशाना साधना उसके वश का न था।

उन्होने तीतरो को उठाया और चल दिये। प्रशसा के शब्द सुनकर ओलेनिन का उत्साह वढा और वह वूढे से वाते करने लगा।

"ठहरो, इधर आओ, इस तरफ" येरोश्का ने बात काटी, "मैंने यहाँ कल एक हिरन के पैरों के निशान देखे थे।"

जंगल में करीब तीन सौ कदम चल चुकने के बाद वे एक झाडी के समीप पहुँचे जहाँ नरकटों की बहुतायत थी और चारों ओर पानी भरा था। ओलेनिन बढे शिकारी के साथ न रह सका। वह पिछड गया। शीघ्र ही येरोश्का, जो लगभग बीस कदम आगे था, रुका और सिर और हाथ हिलाने लगा। पास आने पर ओलेनिन ने देखा कि येरोश्का आदमी के पैरों के निशानों की तरफ इशारा कर रहा है।

"देख रहे हो न?"

"हाँ," ओलेनिन ने धीरे से बोलने का प्रयत्न करते हुए कहा, "आदमी के पैरों के निशान।"

अनायास ओलेनिन के दिमाग में कूपर कृत "पथ-अनुसंधानकर्ता" और अब्रेक घूम गये। परन्तु यह देख कर कि बूढा कितने विचित्र ढंग से आगे बढ रहा है उसे उससे कुछ भी पूछने में संकोच हुआ। उसे सन्देह हो रहा था कि यह वैचित्र्य खतरे के भय के कारण है अथवा शिकार की उत्सुकता के कारण।

"नहीं। ये तो मेरे ही पैरों के निशान हैं," बूढे ने सहज ही उत्तर दिया और उस घास की तरफ इशारा किया जहाँ किसी जानवर के पैरों के निशान दिखाई पड रहे थे।

बूढा चलता गया और ओलेनिन पीछे पीछे लगा रहा। करीब बीस कदम चल चुकने के बाद वे एक नाशपाती के पेड के पास आये जिसके नीचे काली भूमि पर किसी जानवर का ताजा गोबर पडा था। यह स्थान अंगूर लताओं से आच्छादित एक कुंज की तरह था। यहाँ कुछ कुछ अंधेरा था और नमी भी।

"सुबह वह यहीं था," आह भरते हुए बूढा बोला, "माँद अब भी नम है, बिल्कुल ताजी।"

सहसा उन्हे जगल में अपने खडे होने के स्थान से लगभग दस कदम पर एक भयानक चरमराहट की आवाज़ सुनाई दी। दोनो चौंक पडे। उन्होंने अपनी अपनी बन्दूकें सम्भाल ली। परन्तु उन्हे कुछ दिखाई नही दिया, हाँ शाखाओ के टूटने का शब्द अवश्य कानो में पडा। एक क्षण तक तो उन्हे तेज़ दौड जैसी कोई ध्वनि भी सुनाई दी जो बाद में हलकी आहट में बदल गई। यह आहट क्रमश दूरातिदूर वन की दिशाओ में ध्वनित और प्रतिध्वनित होती हुई वायु की लहरो में विलीन होती गई। ओलेनिन को ऐसा लगा कि उसके हृदय का कोई तार टूट गया। उसने हरी झाडियो में से झाँकने की कोशिश की परन्तु व्यर्थ। फिर वह बूढे की तरफ मुडा। चचा येरोश्का कधे पर बन्दूक रखे निश्चल खडा था। उसकी टोपी पीछे खिसक गई थी, उसकी आँखो में असाधारण चमक आ गई थी और उसका मुँह खुला का खुला रह गया था। उसके घिसे हुए पीले दाँत क्रोध से बाहर निकल आये थे।

"बारहसिघा!" वह बडबडाया और हतोत्साह अपनी बन्दूक एक तरफ फेकते हुए अपनी भूरी दाढी पर हाथ फेरने लगा। "वह यही खडा था। हमें उस रास्ते से घमकर आना चाहिए था बेवकूफ! बेवकूफ!" और गुस्से से उसने अपनी दाढी नोच ली। "बेवकूफ, सुअर!" दाढी से लडते हुए वह बडबडाने लगा।

जगल में कुहरे से होकर कोई चीज़ उडती हुई सी लगी और भागते हुए बारहसिघे की आवाज़ दूर दूर तक प्रतिध्वनित हो उठी।

जब भूखा-प्यासा, थका-माँदा परन्तु स्फूर्ति से भरा हुआ ओलेनिन बूढे के साथ घर लौटा उस समय शाम का धुधलका छा चुका था। खाना तैयार था। उसने बूढे के साथ खाना खाया, शराब पी और तब कही जाकर उसे गर्मी आई, उसका चित्त ठिकाने हुआ। अब वह दालान में गया। यहाँ, सूर्यास्त के समय, पहाड एक बार फिर उसकी निगाहो

के सामने घूम गये, एक वार फिर वूढे ने अव्रेकों, प्रेमिकाओ, और वन्य, साहसिक तथा निश्चिन्त जीवन की अपनी अनन्त कहानियाँ शुरू की, एक वार फिर मर्यान्का अन्दर आई, वाहर गई और अहाते के पार भागी, और एक वार फिर उसका वक्षोन्नत यौवन उसके झीने फ्राक में मे झाँक उठा।

२०

दूमरे दिन ओलेनिन अकेले उम स्थान की ओर गया जहाँ चचा येरोश्का ने वारहसिंघे को भडका दिया था। फाटक से होकर जाने के लिए लम्वा चक्कर लगाने के वजाय वह झाडियो के टट्टरो पर चढ गया, जैसा कि दूमरे लोग करते थे, और इसके पहले कि वह अपने कोट में चुभे हुए काँटे निकालता उमका कुत्ता सामने की तरफ दौडा और उसने दो तीतर उडा दिये। मुश्किल से वह कँटीली झाडियो तक पहुँचा होगा कि चलते-फिरते तीतर कदम कदम पर दिखाई देने लगे। (वूढे ने उसे वह जगह कल शायद इसलिए नही दिखाई थी कि वह वहाँ परदे की ओट मे शिकार करना चाहता था।) ओलेनिन ने वारह वार गोलियाँ चलाई और पाँच तीतर मार गिराये। परन्तु कँटीली झाडियो पर चढने-उतरने के कारण वह इतना थक गया कि पसीने से तर हो गया। उसने अपने कुत्ते को पुकारा, वन्दूक से कारतूस निकाले, उसके छोटे छेद में थोडी-सी गोलियाँ रखी और अपने चेरकेसियन कोट की चौडी आस्तीन से मच्छरो को हटाता हुआ वह उस स्थान की ओर वढने लगा जहाँ वे लोग अभी कल ही गये थे। परन्तु कुत्ते को पीछे रखना असम्भव था। वह रास्ते भर जानवरो के पद-चिन्ह ढूढता चल रहा था। ओलेनिन ने दो तीतर और मारे। इस प्रकार उसे अपने गन्तव्य स्थान तक पहुँचते पहुँचते करीव करीव दोपहर हो गई।

इस समय दिन शान्त, स्वच्छ और गर्म था। प्रातःकाल की आर्द्रता वन तक में सूख चली थी। असख्यो मच्छर उसके मुंह, पीठ और हाथो पर चक्कर लगा रहे थे। उसके कुत्ते का रग भी काले से भूरा हो गया था क्योकि उसके शरीर पर मच्छर ही मच्छर दिखाई दे रहे थे। यही दशा ओलेनिन के कोट की भी थी जिसमे से ये कीडे डक मारने का प्रयत्न कर रहे थे। ओलेनिन वहाँ से भाग निकलने को तैयार खडा था। उसने यह अनुभव करना शुरू कर दिया कि इस गाँव में गर्मियो मे रहना असम्भव है। एक वार वह घर वापस जाने के लिए मुडा भी परन्तु यह याद करके कि आखिर दूसरे लोग भी तो ये कठिनाइयाँ वरदाश्त करते है, उसने उन्हे सहन करने का निश्चय किया और फिर आगे वढने के लिए कमर कसी। आश्चर्य यह था कि दोपहर तक वह वडा खुश दिखाई देने लगा। उसे ऐसा अनुभव हुआ मानो मच्छरो से भरे हुए अपने इस चतुर्दिक वातावरण के विना, पसीने से मिले हुए मच्छड-निर्मित अगराग के विना जिसे हाथ अनायास ही मुख पर चुपड देते थे और सारे शरीर की अनवरत खुजलाहट के विना जगल का सारा आकर्षण और मजा ही किरकिरा हो जायेगा। ये असख्य कीडे अत्यधिक परिमाण में इधर-उधर बिखरी हुई वन्य वनस्पतियो, वनो में रहनेवाले लाखो पशुपक्षियो, अधेरे लता-कुजो, आर्द्रता से पूर्ण वायु, तेरेक से मिलने वाले मटमैले पानी के पोखरो के, जिसपर झुकी हुई पेडो की पत्तियाँ अपना अद्भुत सौंदर्य विखेर रही थी, इतने अनुकूल थे कि वही चीज़ जो उसे आरम्भ में भयानक और असह्य लग रही थी, अब आकर्षक लगने लगी थी। उस स्थान पर पहुँचकर, जहाँ कल उन्हे बारहसिघे का भ्रम हुआ था, और जहाँ इस समय कुछ भी न था, उसने आराम करने की सोची। सूर्य इस समय सिर के ठीक ऊपर था और जव कभी ओलेनिन किसी खुली झाडी या सडक पर आ जाता तो सूर्य की सीधी किरणें उसकी

पीठ और सिर पर पडने लगती। सात भारी भारी तीतरो को लटकाये लटकाये उसकी कमर दुखने लगी थी। वारहसिंघे के पद-चिन्हो को देखकर वह एक झाडी में घुस गया ठीक उसी जगह जहाँ वारहसिंघा लेटा था। और, उसकी माँद में पड रहा। उसने अपने चारो ओर के झुरमुटो को देखा, उस स्थान पर निगाह डाली जहाँ वारहसिंघा पसीने पसीने हुआ होगा, और सूखा हुआ गोवर, वारहसिंघे के घुटनो के निशान, थोडी काली मिट्टी, जिसे उसने पैरो मे तोड दिया था, और कल के अपने पैरो के निशान भी देखे। इस समय वह स्वस्थ था, मस्त था और उसके दिमाग में न तो कोई विचार ही घूम रहे थे और न हृदय में कोई आकाक्षाएँ ही। सहसा उसे किसी अकारण प्रसन्नता और चारो तरफ के मनमोहक आकर्षण की ऐसी अद्भुत अनुभूति हुई कि अपने वचपन की एक पुरानी आदत के अनुसार वह सलीव का निशान वनाने और किसी अज्ञात व्यक्ति को धन्यवाद देने लग गया। अकस्मात् उसका ध्यान किसी दूसरी वात की ओर गया और वह सोचने लगा कि "यहाँ मैं हूँ, दिमीत्री ओलेनिन, एक ऐसा आदमी जो किसी भी दूसरे व्यक्ति से भिन्न है, विल्कुल अकेला—एकाकी। भगवान ही जाने कि वहाँ रहनेवाले वारहसिंघे ने कभी आदमी का चेहरा देखा भी है या नहीं। और मै इस समय वहाँ हूँ जहाँ कभी कोई मनुष्य न वैठा था, जहाँ किसी के मस्तिष्क में ऐसे विचार आये तक न थे। यहाँ मै हूँ, मेरे चारो ओर छोटे-वडे वृक्ष है, वडी-वडी अगूर-लताएँ है और तीतर फुदक रहे हैं जो एक दूसरे को खदेड रहे हैं और शायद अपने उन भाई-वन्दो की महक ले रहे हैं, जिन्हे मैंने मारा है।" उसने अपने तीतरो पर हाथ फेरा, उन्हे देखा-भाला और हाथ में लगा हुआ ताजा खून अपने कोट में पोछ लिया। "शायद गीदडो को भी उनकी महक मिल जाती है और असन्तुष्ट होकर वे दूसरी दिशा में चल देते है। मेरे ऊपर, पत्तियो के बीच

उडते हुए मच्छडों को ये पत्तियाँ वडे वडे द्वीपो की तरह लगती है। वे हवा में झूमते है, भनभनाते हैं, एक, दो, तीन, चार, सौ, हज़ार लाख मच्छड। और, सभी कुछ न कुछ भनभनाते हैं, और प्रत्येक अपने में दिमीत्री ओलेनिन है जो अन्य सभी से उतना ही भिन्न है जैसा मै खुद हूँ।" मच्छड इया भनभनाते हैं इसकी भी उसने स्पष्ट कल्पना कर ली थी—"इधर, इधर, अरे छोकरो! यहाँ कोई ऐसी चीज़ है जिसे हम खा सकते है!" वे भनभनाये और उसे काटने लगे। और उसे लगा कि वह रूसी अभिजात्य नही, मास्को समाज का सदस्य नही, अमुक और अमुक का मित्र या सम्वन्धी नही, वह सिर्फ एक मच्छड है या एक तीतर या हिरन, ठीक वैसे ही जैसे कि वे इस समय उसके चारो ओर थे। "जैसे वे हैं, जैसे चचा येरोश्का हैं, मैं भी ठीक वैसे ही कुछ क्षण जिऊँगा फिर मर जाऊँगा और, जैसा वह कहता है, हमारी कब्र पर घास ही उगेगी और कुछ नही।"

"घास उगती है तो उगे इससे क्या?" वह विचारने लगा, "फिर भी मुझे ज़िन्दा रहना चाहिए, प्रसन्न रहना चाहिए क्योकि आखिर मैं क्या चाहता हूँ—प्रसन्नता ही तो। परवाह नही मैं कुछ ही क्यो न हूँ—वाकी सव की तरह पशु ही सही, जिनके ऊपर घास उगेगी और सिर्फ घास, या एक ऐसा चौखटा जिसमें ईश्वर का कोई अश जुडा है—फिर भी मुझे अच्छी से अच्छी तरह रहना चाहिए। इसलिए खुश रहने के लिए मुझे कैसे रहना चाहिए? और, मैं पहले क्यो प्रसन्न नही था?" और वह अपने पूर्व जीवन की याद करने लगा और उसे अपने से निराशा होने लगी। उसे लगा मानो उसकी आकाक्षाएँ बुरी तरह बढ रही हैं और वह स्वार्थी वनता जा रहा है, यद्यपि सच पूछा जाय तो अभी तक उसे अपने लिए किसी चीज़ की भी आवश्यकता न पडी थी। वह लता-कुजो, उनसे छनती हुई रोशनी, डूवते हुए सूरज और

स्वच्छ आकाश की ओर देखता रहा। उसे इस समय उतनी ही प्रसन्नता हो रही थी जितनी पहले हुई थी।

"इस समय मैं क्यों खुश हूँ और पहले मेरे जीने का क्या उद्देश्य था?" उसने विचार किया, "मैंने अपने से कितना कुछ चाहा था, कितनी योजनाएँ बनाई थी फिर भी सिवा दुख और शर्म के मुझे मिला क्या? और अब, खुश रहने के लिए मुझे कुछ नही चाहिए।" और सहसा उसे अपने भीतर एक नये प्रकाश का अनुभव हुआ। "यही प्रसन्नता है।" उसने मन ही मन में कहा। "दूसरो के लिए जिन्दा रहना यही प्रसन्नता है। यह बात बिल्कुल साफ है। खुश रहने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य में है। इसलिए वह मान्य है। स्वार्थपरता के साथ इस इच्छा की पूर्ति के प्रयत्न में—अर्थात् अपने लिए धन, यश, आराम और प्यार की तलाश में—यह भी हो सकता है कि ऐसी परिस्थितियाँ आ जायें जिनमे इन इच्छाओ की पूर्ति ही असम्भव हो जाय। इसका अर्थ यह हुआ कि ये इच्छाएँ अनुचित हैं, सुखी बनने की आवश्यकता अनुचित नही। किन्तु बाह्य परिस्थितियो के बावजूद किन किन इच्छाओ की पूर्ति सदैव ही सम्भव है? प्रेम की, आत्म-त्याग की।" जब उसे इन बातो का ज्ञान हुआ (और यह उसे एक नया सत्य प्रतीत हुआ) तो वह इतना प्रसन्न और उत्तेजित हो उठा कि उछल पडा और बडी बेसब्री से किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश की बात सोचने लगा जिसके लिए वह अपना बलिदान कर सके, या जिसकी वह कोई भलाई कर सके या जिसे वह प्यार कर सके। "चूँकि मै अपने लिए कुछ नही चाहता," उसने विचार किया, "इसलिए मै दूसरो के लिए ही क्यो न जिन्दा रहूँ?"

उसने बन्दूक उठाई और इस योजना पर विचार करने तथा भलाई करने का अवसर ढूँढने के लिए तुरन्त लौट जाने का निश्चय किया, और झाडी से होकर घर की राह ली।

खुली जगह में पहुँचकर उसने अपने चारो ओर एक निगाह डाली। सूर्य पेडो के सिरो के ऊपर से जा चुका था। ठढ वढ रही थी और वह स्थान उसे विल्कुल नया-सा लग रहा था—गाँव के आसपास के क्षेत्र की भाँति नही। ऐसा प्रतीत होता था कि मौसम और जगल की आकृति, सभी कुछ वदल गई है—आसमान वादलो से ढका था, हवा पेडो के सिरो से टकरा टकराकर सनसना रही थी और सभी तरफ सिवा नरकटो और गिरे-गिराये पेडो के और कुछ भी दिखाई न पडता था। उसका कुत्ता किसी जानवर के पीछे पीछे भाग गया था। उसने कुत्ते को पुकारा और उसकी आवाज़ वैसे ही लौट आई जैसे रेगिस्तान में लौटती है। और एकाएक उसमे भय का सचार हुआ। वह डर गया। उसे अब्रेको की याद आई और याद आई उन हत्याओ की जो अब्रेको ने की थी। वरावर उसे ऐसा लगता रहा कि न जाने किस क्षण झाडी के पीछे से कौन अब्रेक उसपर झपट पडे और फिर उसे अपनी ज़िन्दगी के लाले पड जायें, अथवा मौत को गले लगाना पडे, अथवा कायरता ही दिखाना पडे! कौन जाने! अब उसका ध्यान भगवान और मरणोपरान्त प्राप्त होनेवाले दूसरे जीवन की ओर गया जिसके विषय मे उसने वहुत समय से कुछ भी सोचा-विचारा न था। उसके चारो तरफ अधकारमय, कठोर और वन्य प्रकृति का साम्राज्य था। उसने विचार किया, "जब तुम किसी भी क्षण मर सकते हो और किसी के प्रति विना कोई भलाई किये ही मर सकते हो और वह भी इस प्रकार कि किसी को पता भी न चले तो क्या तुम्हे स्वय अपने लिए जीना मुनासिब है, उचित है?" वह उस दिशा की ओर वढा जहाँ उसने कल्पना की थी कि गाँव होगा। शिकार का ध्यान उसके दिमाग से उतर चुका था। वह थक चुका था और प्रत्येक झाडी तथा प्रत्येक पेड की ओर वडे ध्यान से झाँकता जा रहा था। वह डर रहा था। प्रत्येक क्षण उसे यही आशा हो रही थी कि न जाने कब

कौन उसकी जान का दुश्मन निकल आये। काफी समय तक घूम फिर लेने के बाद वह एक खाई के पास आया जिसमें तेरेक से बहकर आता हुआ ठंढा और मटमैला जल भरा था। रास्ता भूल जाने के भय से उसने उसी के किनारे किनारे चलने का निश्चय किया। वह चलता गया बिना यह जाने हुए कि खाई उसे कहाँ ले जायगी। सहसा उसके पीछे के नरकटों में खड़खड़ाहट हुई। वह काँप गया और उसने बन्दूक सँभाल ली। अगले ही क्षण वह शर्म के मारे पानी पानी हो गया। उत्तेजित कुत्ता गहरी गहरी साँसें लेता हुआ आकर सीधा खाई के पानी में घुस गया और उसे हिलोरने लगा।

उसने भी पानी पिया और कुत्ते के पीछे हो लिया यह सोचकर कि वह उसे सीधे गाँव ले जायगा। कुत्ते के साथ रहने पर भी उसे ऐसा लगा कि उसके चारों ओर की प्रत्येक चीज़ किसी सकटापन्न भविष्य की आशंका बढ़ा रही है। अब जंगल और भी अंधकारपूर्ण होता जा रहा था और टूटे हुए वृक्षों के सिरों पर हवा सनसनाती हुई तेज़ी से चल रही थी। चिड़ियाँ उन पेड़ों पर अपने घोंसलों के चारों ओर उड़ रही थीं, चक्कर लगा रही थीं, चहचहा रही थीं। अब वनस्पति की हरियाली क्षीण होती गई और वह हवा के कारण सनसनाते हुए नरकटों और उन रेतीले स्थानों के बीच पहुँच गया जहाँ जानवरों के पद-चिन्ह दिखाई पड़ रहे थे। हवा की तेज़ आवाज़ के साथ ही दिल दहला देने वाली एक दूसरी गरज भी सुनाई दी। अब वह काफी निराश हो चला था। पीछे हाथ बढ़ाकर उसने अपने तीतर टटोले। एक गायब था। शायद कहीं गिर पड़ा था। खून से लथपथ उसकी गरदन और सिर पेटी में ही चिपका रह गया था। अब उसे पहले से अधिक डर लगने लगा। वह भगवान की रट लगाने लगा। उसे केवल यही भय था कि वह बिना कोई भलाई किये या किसी पर दया दिखाये हुए ही मर जायगा। मगर उसमें जीने की उत्कट अभिलाषा थी। वह इसलिए जीना चाहता था कि आत्म-बलिदान का एक महान कार्य पूरा कर सके।

२१

सहसा उसे लगा जैसे उसकी आत्मा में सूर्य का प्रकाश छा गया हो। उसे रूसी भाषा में कही हुई बाते सुनाई पडी, साथ ही तेरेक का कलकल भी। कुछ कदम आगे अपने सामने उसने नदी की भूरी भूरी किन्तु चलती-फिरती सतह देखी। उसे उसके किनारो और छिछले स्थानो पर जमी भूरी और गीली बालू दिखाई पडी । उसने पानी के बहुत ऊपर निकली हुई घेरे की मचान, झाडियो में जीन वगैरह से लैस एक मज़बूत घोडा और सामने ऊँचे ऊँचे पहाड देखे। एक क्षण के लिए बादलो के नीचे से रक्त-वर्ण सूर्य के भी दर्शन हुए और उसकी अन्तिम किरणें नदी, नरकटो, मचान और कज्ज़ाको के झुड पर पडती हुई विलीन होने लगी। इसी समय उसने अपने सामने लुकाश्का की आवेशपूर्ण आकृति भी देखी।

ओलेनिन को लगा कि फिर उसे अकारण प्रसन्नता हो रही है। वह नदी के दूसरी ओर एक शान्त औल के सामने तेरेक की निज्ने-प्रतोत्स्की चौकी तक पहुँच गया। उसने कज्ज़ाको को नमस्कार किया, परन्तु अभी तक किसी की भलाई करने का कोई अवसर न मिलने के कारण वह एक घर में घुस गया। वहाँ भी उसे इसका कोई मौका न मिला। कज्ज़ाक उसके साथ बडी रुखाई से पेश आये। घर में दाखिल होने पर उसने एक सिगरेट जलाई। मगर कज्ज़ाको ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया, क्योकि एक तो वह सिगरेट पी रहा था और दूसरे उन्हे उस शाम व्यस्त रखने के लिए अन्य काम भी थे। जो अब्रेक मारा गया था उसके कुछ सम्बन्धी चेचेन मुआवज़ा देकर उसकी लाश लेने के लिए पहाडो से आये थे। कज्ज़ाक गाँव से अपने अफसर के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। मृत अब्रेक का

भाई शान्त था। वह एक लम्बा हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था और उसकी लाल रग में रगी हुई छोटी दाढी दूर से ही चमक रही थी। वह एक फटा-सा कोट पहने और मामूली-सी टोपी दिये था, फिर भी उसकी आन-बान सम्राटो जैसी लग रही थी। उसका चेहरा बहुत कुछ मरे हुए अब्रेक जैसा ही था। उसने न तो किसी की ओर देखने का प्रयत्न किया और न लाश पर ही नज़र डाली। वह साये मे उकडूँ बैठा हुआ अपना हुक्का पीता और थूकता जा रहा था। कभी कभी वह अपने साथियो को भारी स्वर में कुछ हुक्म दे देता जिसकी तामील पूरे अदब और पूरी फुर्ती के साथ होती। प्रत्यक्षत वह एक जिगीत था जिसका भिन्न भिन्न परिस्थितियो में एकाधिक बार रूसियो मे मुकाबला हो चुका था। उसे इन रूसियो की न तो किसी बात मे आश्चर्य ही होता था और न वह उनमें कोई दिलचस्पी ही दिखाता था। ओलेनिन लाश के पास गया और उसे देखने लगा। मृत अब्रेक का भाई शायद इसे सहन न कर सका। वह ओलेनिन को तिरस्कारसूचक दृष्टि मे देख रहा था और जल्दी जल्दी और गुस्से में कुछ कहे जा रहा था। साथी स्काउट तुरन्त अपने कोट से लाश का मुँह ढकने के लिए बढा। ओलेनिन उस जिगीत का शानदार और कठोर चेहरा देखकर बडा प्रभावित हुआ। वह उससे बाते करने लगा और पूछने लगा कि वह किस गाँव से आया है। परन्तु चेचेन उसकी ओर न देखते हुए घृणा की मुद्रा से बराबर थूकता ही रहा। उसने अपनी गर्दन एक ओर फेर ली। ओलेनिन को चेचेन की यह उपेक्षा देखकर इतना आश्चर्य हुआ कि उसने यही अन्दाज़ लगाया कि वह रूसी नही जानता और बेवकूफ है। इसलिए वह स्काउट की तरफ घूमा जो दुभापिया था और अपने मालिक को उसकी रूसी भापा का तात्पर्य अपनी भापा में समझा सकता था। स्काउट के शरीर पर कोई अच्छे कपडे न थे। दूसरे की तरह वह भी फटे-हाल था।

परन्तु भूरे बालो के स्थान पर उसके काले काले बाल, काली चमकदार ग्राँखें ग्रौर मोती जैसे दाँत थे। स्काउट ने प्रसन्नतापूर्वक वातचीत में भाग लिया ग्रौर एक सिगरेट माँगी।

ग्रपनी टूटी-फूटी रूसी में उसने कहना शुरू किया, "उसके पाँच भाई थे। यह तीसरा भाई है जिसे रूसियो ने मार डाला। ग्रब सिर्फ दो बचे हैं। वह जिगीत है, एक महान जिगीत।" चेचेन की तरफ इशारा करते हुए उसने कहा, "जब उन्होंने ग्रहमद-खाँ को, जो ग्रब मर गया है, ग्रपनी गोली का निशाना बनाया उस समय यह नदी के उस पार नरकटो के बीच बैठा था। उसने सब कुछ देख लिया था। उसने देखा था कि उसे नाव पर रखा ग्रौर किनारे की तरफ ले जाया गया। वह वहाँ रात भर बैठा रहा ग्रौर चाहता था कि बूढे को मार डाले परन्तु दूसरो ने उसे ऐसा न करने दिया।"

लुकाश्का दुभाषिये के पास ग्राकर बैठ गया।

"किस ग्रौल से ग्रा रहे हो?" उसने पूछा।

"वहाँ, पहाडो पर से," तेरेक के उस पार हल्के नीले रग के कुहरे की तरफ इशारा करते हुए स्काउट ने कहा, "क्या तुमने 'सुयूक-सू' का नाम सुना है? हमारा गाँव उससे भी ग्राठ मील ग्रागे है।"

"तुम्हारा गिरेई-खाँ से भी कोई परिचय है? वह 'सुयूक-सू' में ही रहता है," लुकाश्का बोला। उसे उसके साथ परिचित होने पर गर्व था, "वह मेरा कुनक है।"

"वह मेरा पडोसी है," स्काउट ने उत्तर दिया।

"ग्रच्छा ग्रादमी है।" ग्रौर लुकाश्का, जिसे ग्रब इन बातो में दिलचस्पी ग्राती जा रही थी, स्काउट के साथ तातारी में बाते करने लगा।

शीघ्र ही एक कज्जाक लेफ्टीनेंट और गाँव का मुखिया अपने अपने घोड़ों पर आ गये। उनके साथ दो कज्जाक और थे। लेफ्टीनेंट एक कज्जाक अफसर था, जिसे हाल ही में कमीशन मिला था। उसने कज्जाकों के "सुस्वास्थ्य" की कामना करते हुए उनका अभिवादन किया, परन्तु किसी ने भी जवाब में यह नहीं कहा कि "सरकार, आप स्वास्थ्य लाभ करें" जैसी कि रूसी सेना की रीति है। केवल थोड़े से ही लोग ऐसे थे जिन्होंने सिर झुकाकर मौन उत्तर दिया। कुछ लोग, जिनमें लुकाश्का भी था, उठे और सावधानी से खड़े हो गये। कारपोरल ने बताया कि चौकी पर सब कुछ ठीक है। ओलेनिन को यह सब मजाक लगा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि ये लोग सिपाही का काम खेल समझते हैं। परन्तु शीघ्र ही इन छोटी-मोटी बातों के बाद काम की बातें आरम्भ हो गई। लेफ्टीनेंट एक वीर कज्जाक भी था। वह दुभाषिये के साथ धाराप्रवाह तातारी में बात करने लगा। उन्होंने कुछ कागज-पत्र तैयार कर लिये थे, जिन्हें स्काउट को देकर उन्होंने कुछ रुपये वसूल किये। अब वे लोग लाश के पास आये।

"तुम लोगों में से लुका गव्रीलोव कौन है?" लेफ्टीनेन्ट ने पूछा।

लुकाश्का ने टोपी उतारी और सामने हाज़िर हो गया।

"मैंने तुम्हारे बारे में कमांडर को रिपोर्ट भेज दी है। पता नहीं उसका क्या नतीजा हो। मैंने तुम्हें पदक दिये जाने की सिफारिश की है। कारपोरल बनाये जाने के लिए अभी तुम्हारी उम्र कम है। पढ़ सकते हो?"

"नहीं, मैं पढ़ नहीं सकता।"

"किन्तु देखने में कितना गठीला जवान है!" लेफ्टीनेंट आज्ञा के स्वर में बोला, "टोपी लगाओ। यह किस गव्रीलोव परिवार का है? ... ब्रॉड का, एँ?"

"उसका भतीजा है," कारपोरल बोला।

"मैं जानता हूँ, जानता हूँ। खैर तुम लोग ज़रा काम में भी हाथ बटाओ," कज़्ज़ाकों की ओर घूमते हुए उसने कहा। लुकाश्का का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। वह कारपोरल के पास से हट आया और टोपी लगाकर ओलेनिन के पास बैठ गया।

मृत शरीर को नाव पर रख दिया गया। अब उसका चेचेन भाई भी किनारे पर आया। कज़्ज़ाक उसे रास्ता देने के लिए स्वय ही एक ओर हट गये। वह कूदकर नाव पर चढ गया और नदी में अपना मजबूत पैर अडाकर नाव खोल दी। अब ओलेनिन ने देखा कि चेचेन ने पहली बार कज़्ज़ाकों पर एक सरसरी निगाह डाली और अपने साथी से कुछ पूछा। साथी ने कुछ उत्तर दिया और लुकाश्का की तरफ इशारा कर दिया। चेचेन उसकी ओर देखता रहा और फिर धीरे धीरे उसके पास से निगाह हटाकर दूसरी तरफ का तट देखने लगा। उसकी दृष्टि में घृणा नही अपितु अत्यधिक तिरस्कार की झलक मिलती थी। उसने फिर कुछ कहा।

"क्या कह रहा है?" ओलेनिन ने स्काउट से पूछा।

"तुम्हारे आदमी हमारे आदमियो को मारते हैं, हमारे तुम्हारे आदमियो को। हमेशा यही होता है।" स्काउट ने उत्तर दिया और जब वह कूदकर नाव पर चढने लगा तो हँसी के कारण उसके सफेद सफेद दांत चमकने लगे।

मृत व्यक्ति का भाई निश्चल बैठा उस पार का तट ताक रहा था। उसका हृदय घृणा और तिरस्कार से इतना भरा हुआ था कि उसके लिए नदी के इस ओर ऐसी कोई भी चीज न रह गई थी जिसमें उसे कोई उत्सुकता होती, कोई रुचि होती। स्काउट नाव के एक ओर खडा होकर उसे बढ़ाने के लिए कभी बाँस नाव के इस ओर डालता, कभी उस

ओर। वह बराबर बातचीत करता जा रहा था। जैसे जैसे नाव धारा पार करके आगे बढ़ती गई, वैसे वैसे वह छोटी दिखाई पडने लगी और उसमें से आनेवाली आवाजें क्षीण पडती गईं। अन्त मे लोगो ने देखा कि नाव किनारे लगी, जहाँ दो घोडे मुस्तैद खडे थे, लाश उतारी गई और एक घोडे पर लाद दी गई। घोडा चल पडा। ज्यो ज्यो घोडा झील से होकर आगे बढ रहा था त्यो त्यो लाश देखने के लिए वहाँ के लोगो की भीड भी बढती जा रही थी।

नदी के रूसी किनारे के कज्ज़ाक पूरी तरह से सन्तुष्ट और खुश थे। सभी तरफ से हँसी-मजाक के फौवारे छूट रहे थे। लेफ्टीनेंट और मुखिया भी आनन्द मनाने के लिए एक मिट्टी के घर में घुस गये। लुकाश्का अपने प्रफुल्लित चेहरे पर गम्भीरता लाने का व्यर्थ प्रयास करता हुआ ओलेनिन की बगल में घुटनो पर दोनों हाथ रखकर बैठ गया और चाकू से एक छडी काटने लगा।

"तुम तम्बाकू क्यो पीते हो?" उसने उत्सुकता से पूछा, "यह अच्छी बात है क्या?"

प्रत्यक्षत उसके पूछने का एकमात्र कारण यही था कि उसे यह अनुभव हुआ था कि ओलेनिन कुछ खिन्न है और उसकी कज्ज़ाको से पट नही रही है।

"आदत ही तो है," ओलेनिन ने उत्तर दिया, "क्यो?"

"हुँह, यदि हम में से कोई तम्बाकू पीना चाहे तो उसपर मुसीबत आ जाय! उधर देखो, पहाड दूर नही है," लुकाश्का कहता गया, "फिर भी तुम वहाँ नही पहुँच सकते! अकेले लौटोगे कैसे? अघेरा हो रहा है! अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हे ले चलूँ। कारपोरल से कह दो मुझे छुट्टी दे दे।"

"कितना अच्छा आदमी है!" कज्ज़ाक के प्रफुल्लित चेहरे की ओर देखते हुए ओलेनिन ने सोचा। उसे मर्यान्का की याद हो आई और उस

चुम्बन की भी जिसकी ध्वनि उसने फाटक के पास सुनी थी। उस समय उसने समझा था कि लुकाश्का कितना असभ्य है। "यह सब कैसी उलझन है," उसने विचार किया, "कोई आदमी किसी को मौत के घाट उतारता है और उसे इतना सतोष और प्रसन्नता होती है जैसे उसने कोई बडा पडाव मार लिया हो। क्या इसके माने यह है कि कोई उसे यह बताने नही आता कि 'तुम्हारे लिए आनन्द मनाने का कोई कारण नही और प्रसन्नता मार काट में नही आत्म-बलिदान मे है?'"

'खैर, अच्छा हो यदि तुम्हारी उसकी मुलाकात ही न हो, दोस्त!" लुकाश्का की तरफ मुडते एक कज्जाक ने कहा जिसने खुलती हुई नाव देखी थी, " तुमने सुना कि वह तुम्हारे बारे में क्या पूछ-ताछ कर रहा था?"

लुकाश्का ने अपना सिर उठाया। "मेरा ईश्वर-पुत्र?" लुकाश्का बोला। उस शब्द से उसका तात्पर्य मृत चेचेन से था।

"तुम्हारा ईश्वर-पुत्र तो न उठेगा मगर वह जो लाल रगवाला है वह तुम्हारे ईश्वर-पुत्र का भाई है!"

"उससे कहो कि ईश्वर को धन्यवाद दे कि यहाँ से सही सलामत चला गया," लुकाश्का ने उत्तर दिया।

"तुम खुश क्यो हो?" ओलेनिन ने पूछा, "मान लो तुम्हारा ही कोई भाई मारा जाता तो तुम खुश होते क्या?"

आँखो में मुस्कराहट लिये कज्जाक ने ओलेनिन की तरफ देखा। उसने ओलेनिन का अभिप्राय अच्छी तरह समझ लिया था, परन्तु उसकी ओर कोई ध्यान नही दिया।

"हाँ, यह भी होता है। क्या हमारे साथी नही मारे जाते?"

२२

लेफ्टीनेंट और गांव का मुखिया दोनो ही घोडो पर बैठकर चल दिये। ओलेनिन ने लुकाश्का को खुश करने और घने जगल मे अकेले न जाने की गरज से कारपोरल से लुकाश्का को छुट्टी दे देने की सिफारिश कर दी। कारपोरल ने छुट्टी दे दी। ओलेनिन ने सोचा कि लुकाश्का मर्यान्का से मिलना चाहता है। उसे प्रसन्नता थी कि उसके साथ इस समय एक खुशदिल और खुशमिज़ाज कज्ज़ाक है। उसने अपनी कल्पना में अनायास लुकाश्का और मर्यान्का को मिला दिया था और उसे उनके बारे में सोच सोचकर प्रसन्नता हो रही थी। "वह मर्यान्का को प्यार करता है," ओलेनिन ने सोचा, "मै भी उसे प्यार कर सकता था।" और जब दोनो घर की ओर जा रहे थे तो ओलेनिन में कोमल भावनाओ का उद्रेक हुआ। लुकाश्का को भी प्रसन्नता हुई। ऐसा लगा कि इन दो परस्पर भिन्न व्यक्तियो में भी स्नेह का कोई सूत्र है जो उन्हे बाँध रहा है। जब कभी वे एक दूसरे की तरफ देखते तो उनका जी खुलकर हँसने को करने लगता।

"तुम किन फाटको से होकर जाते हो?" ओलेनिन ने प्रश्न किया।

"बीच वालो से। परन्तु मै तुम्हें दलदल तक पहुँचा दूंगा उसके बाद कोई खटका नही।"

ओलेनिन हँस दिया।

"तुम समझते हो मै डरपोक हूँ? तुम वापस जा सकते हो। धन्यवाद। मै अकेला चला जाऊँगा।"

"ठीक है। मुझे क्या करना? और तुम्हारी तो बात ही क्या खुद हम भी डरते हैं," ओलेनिन की आत्म-भावना को ठेस न पहुँचाने की गरज़ से वह बोला और हँस पडा।

"तो मेरे साथ आओ। हम बाते करेगे, खाएँ-पियेंगे। सुबह चले जाना।"

"तुम समझते हो कि रात बिताने के लिए मेरे पास कोई ठिकाना नही ?" लुकाश्का हँस दिया, "परन्तु कारपोरल ने तो मुझसे लौट आने को कहा है।"

"कल रात मैंने तुम्हे गाते सुना था और देखा भी था।"

"खैर " लुकाश्का ने अपना सिर हिलाया।

"यह ठीक है क्या कि तुम्हारा विवाह हो रहा है ?" ओलेनिन ने पूछा ।

"माँ मेरा विवाह कर देना चाहती है। परन्तु मेरे पास तो अभी घोडा तक नही।"

"क्या तुम्हारी नौकरी मुस्तकिल नही ?"

"सच पूछो तो नहीं। अभी तो मैं भरती ही हुआ हूँ। अभी तक मेरे पास कोई घोडा नही और न मुझे मिल ही सकता है। इसीलिए शादी की बात पक्की नही हो पाती।"

"और घोडा आयेगा कितने का ?'

"हम उस दिन नदी पर एक का सौदा पटा रहे थे और वे साठ रूबल से कम चाहते न थे यद्यपि घोडा सिर्फ नगई था।"

"तुम मेरे द्रवान्त* हो सकते हो ? मैं उसका इन्तज़ाम कर दूंगा और तुम्हे एक घोडा दे दूंगा।" ओलेनिन ने एकाएक कहा, "सचमुच मेरे पास दो घोडे हैं और मुझे दो की ज़रूरत नही।"

"दो की ज़रूरत नही ?" लुकाश्का ने हँसते हुए उसके शब्द दुहराये, "तुम हमें तोहफे में घोडे क्यो दो ? ईश्वर ने चाहा तो हम खुद ले लेगे।"

---

*द्रवान्त—एक प्रकार का अर्दली जो अभियान के समय अफसर के साथ रहता है।

"तोहफे में क्यो? तुम द्रवान्त नही वनना चाहते क्या?" ओलेनिन ने कहा। उसे प्रसन्नता थी कि उसके दिमाग में लुकाश्का को एक घोडा देने की वात आई थी, यद्यपि उसे अकारण परेशानी और घवडाहट हो रही थी और उसकी समझ मे न आ रहा था कि वह वात कैसे चलाए।

लुकाश्का ने मौन तोडा। "क्या रूस में तुम्हारा अपना मकान है?"

ओलेनिन को कहना पडा कि वहाँ उसके एक नहीं कई मकान हैं।

"अच्छा मकान? हमारे मकानो से वडा?" लकाश्का ने मुस्कराते हुए कहा।

"वहुत वडा। इससे दस गुना वडा और तीन मजिल का," ओलेनिन ने उत्तर दिया।

"और क्या तुम्हारे घोडे भी हमारे घोडो की तरह हैं?"

"मेरे पास सौ घोडे हैं और हर एक तीन तीन सौ चार चार सौ रूवल का है। तीन सौ चाँदी के रूवल। परन्तु वे तुम्हारे जैसे घोडो की तरह नही है! फुदके फिर भी मैं यहाँ के घोडो को वहुत पसन्द करता हूँ।"

"और वया तुम यहाँ अपनी इच्छा से आये थे या भेजे गये थे?" लुकाश्का ने पूछा। ऐसा प्रतीत होता था कि वह अभी अभी हँस देगा। "देखो! वहाँ तुम रास्ता भूल गये," उसने कहना शुरू किया और उस रास्ते की तरफ इशारा किया जहाँ से होकर वे गुज़र रहे थे, "तुम्हे दाहिनी ओर मुडना था।"

"मैं स्वय अपनी इच्छा से आया हूँ। अपने देश का यह इलाका देखने और यहाँ अभियान में भाग लेने की मेरी वडी इच्छा थी," ओलेनिन ने उत्तर दिया।

"मैं तो किसी भी दिन अभियान पर निकल सकता हूँ," लुकाश्का वोला, "उवर गीदडो की चीख सुन रहे हो?" उस ओर कान लगाते हुए उसने कहा।

"मैं पूछता हूँ किसी मनुष्य को मारकर क्या तुम्हें कोई डर नहीं लगता?" ओलेनिन ने पूछा।

"इसमें डरने की क्या बात, परन्तु मैं अभियान मे भाग लेना चाहूँगा," लुकाश्का बोला।

"शायद हमें साथ जाना होगा। हमारी कम्पनी छुट्टियो के पहले रवाना हो रही है। तुम्हारे भी सौ आदमी जायेंगे।"

"तुम यहाँ क्यो आना चाहते थे? तुम्हारे घर हैं, घोडे है, दास हैं। तुम्हारी जगह मैं होता तो सिवा मौज मारने के और कुछ न करता। हाँ तुम्हारा पद क्या है?"

"मैं फिलहाल कैडेट हूँ। परन्तु मेरे लिए कमीशन की सिफारिश की जा चुकी है।"

"खैर, अगर तुम अपने घरबार के बारे में शेखी नही बघारते तो यदि तुम्हारी जगह मैं होता तो कहीं दूसरी जगह न जाता। तुम हम लोगो के बीच रहना पसन्द करते हो?"

"हाँ, पसन्द करता हूँ," ओलेनिन ने उत्तर दिया।

गाँव तक पहुँचते पहुँचते काफी अँधेरा छा चुका था। अभी तक उन्हे अपने चारो ओर जगल का ही घना अन्धकार नजर आ रहा था। पेडो के ऊपरी सिरो पर हवा सनसना रही थी। ऐसा लगता था कि उनके बिल्कुल निकट गीदड चिल्ला रहे हैं और हा-हा हू-हू कर रहे हैं। परन्तु उनके ठीक सामने गाँव में स्त्रियो की आवाजें और कुत्तो की भो-भो भी सुनाई पड रही थी। दूर से झोपडे दिखाई पडने लगे थे, रोशनी आ रही थी और वायुमण्डल में किज्याक धुएँ की विचित्र गन्ध छाती जा रही थी। और, उस समय ओलेनिन को ऐसा लगा कि इसी गाँव में उसका अपना घर है, अपना परिवार है, वह खुश है और जिस तरह वह इस कज्जाक गाँव में रह रहा है वैसा खुश किसी दूसरी जगह नही रह सकेगा।

उस रात वहाँ उसे सभी अच्छे लगे और खास तौर से लुकाश्का। जब वे घर पहुँचे तो ओलेनिन ने सायवान में से, स्वय अपने हाथो से, एक घोडा खोला और लुकाश्का को थमा दिया। लुकाश्का आश्चर्यचकित उसे आँख फाड फाडकर देखता रह गया। ओलेनिन ने यह घोडा ग्रोजनाया में खरीदा था। यह वह घोडा न था जिसपर वह प्राय सवारी करता था। घोडा बहुत जवान न था, फिर भी खराब नही था। उसने घोडा लुकाश्का को दे दिया।

"तुम मुझे सौगात में इसे क्यो दे रहे हो?" लुकाश्का बोला, "मैंने अभी तक तुम्हारे लिए कुछ भी तो नही किया।"

"सचमुच यह कोई चीज नही," ओलेनिन बोला, "इसे ले लो। एक दिन तुम भी मुझे कोई सौगात दोगे हम शत्रु के खिलाफ अभियान में एक साथ ही तो चलेंगे।"

लुकाश्का परेशान-सा हो गया। "इससे तुम्हारा मतलब क्या है? तुम्हे मालूम है घोडा एक कीमती चीज़ है," बिना घोडे की तरफ देखे हुए ही उसने कहा।

"इसे ले जाओ! इसे ले जाओ! अगर नही लोगे तो मुझे बरा लगेगा। वन्यूशा! घोडे को इसके घर पहुँचा आओ।"

लुकाश्का ने लगाम पकड ली। "अच्छा, तो अनेक धन्यवाद। मै यह जरूर कहूँगा कि यह ऐसी बात है जिसकी मैंने कभी आशा न की थी।"

ओलेनिन को इतनी प्रसन्नता हुई जैसे वह बारह वर्ष का बालक हो।

"अभी इसे यहाँ बाँध दो। यह एक अच्छा घोडा है। इसे मैंने ग्रोजनाया में खरीदा था। कैसी दुलकी चालता है! वन्यूशा हमारे लिए कुछ चिखीर तो लाना। अन्दर आ जाओ।"

शराब लाई गई और लुकाश्का प्याला लेकर बैठ गया।

"ईश्वर ने चाहा तो मैं तुमसे उऋण होने की जुगत निकाल लूँगा,"

शराब का गिलास खाली करते हुए वह बोला, "तुम्हारा नाम क्या है?"

"दिमीत्री अन्द्रेइच।"

"अच्छा दिमीत्री अन्द्रेइच, ईश्वर आपकी रक्षा करे। हम कुनक होगे। अब तुम हम से मिलने जरूर आना। भले ही हम धनी नही है परन्तु कुनक के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए इसे अच्छी तरह जानते है। मैं माँ से कह दूंगा कि अगर तुम्हे किसी चीज़ की ज़रूरत हो—जैसे क्रीम या अगूर की—तो वे तुम्हे दे दें, और अगर तुम घेरे की तरफ आओ तो मै तुम्हारी सेवा करूँगा, तुम्हारे साथ साथ शिकार को जाऊँगा, नदी पार जाऊँगा और जहाँ कहोगे वहाँ जाऊँगा। अभी उसी दिन की बात है—मैंने एक बडा सुअर मारा था और कज्ज़ाको में बाँट दिया था। अगर मुझे मलूम होता तो तुम्हे भी देता, ज़रूर देता।"

"खैर, ठीक है। धन्यवाद! परन्तु घोडे को जोतना मत। वह कभी जोता नही गया।"

"नही नही! हाँ तुमसे एक बात और कहना चाहता हूँ," लुकाश्का धीरे से बोला, "मेरा एक कुनक है गिरेई-खाँ। उसने मुझसे कहा है कि मैं उसके साथ उन झाडियो में लेटा रहूँ जहाँ से लोग पहाडो पर से उतरते है। क्या हम साथ चलेगे? मै तुम्हे धोखा नही दूंगा। मै तुम्हारा मुरीद* रहूँगा।'

"हाँ हम चलेगे, किसी दिन, ज़रूर चलेगे।"

अब लुकाश्का अपने को ओलेनिन का घनिष्ठ मित्र समझने लगा था। इसलिए उसे अब किसी प्रकार का सकोच न रह गया था। उसकी शाँत प्रकृति और सदाचार से ओलेनिन को आश्चर्य हुआ, कभी कभी तो

---

*मुरीद का तात्पर्य यहाँ शिक्षक से है—अनुवादक।

इससे उसे खिन्नता भी होने लगती। वे लोग देर तक बातें करते रहे। यद्यपि लुकाश्का ने ढेर-सी शराब पी थी फिर भी वह नशे में न था (वह नशे में कभी न होता था)। काफी देर तक वहाँ ठहर चुकने के बाद अब वह उठा, उसने ओलेनिन से हाथ मिलाया और बाहर चल दिया। ओलेनिन ने खिडकी के बाहर झाँका यह देखने के लिए कि वह अब कर क्या रहा है। लुकाश्का सिर नीचा किये धीरे धीरे चला जा रहा था। फिर घोडे को फाटक से बाहर ले आने के बाद उसने एकाएक अपना सिर हिलाया, उछलकर बिल्ली की तरह उसकी पीठ पर सवार हुआ, लगाम हाथ में ली, कुछ टिक टिक की और उसे सडक पर दौडाने लगा।

ओलेनिन ने आशा की थी कि लुकाश्का मर्यान्का के पास जायगा और उसे अपनी प्रसन्नता की बात बताकर खुश करेगा। परन्तु, यद्यपि उसने ऐसा नही किया था फिर भी ओलेनिन की आत्मा को इतनी शान्ति मिली जैसी जिन्दगी में पहले कभी न मिली थी। वह बच्चों की तरह खुश था। उसने वन्यूशा को न केवल यही बताया कि घोडा उसने लुकाश्का को दे दिया है अपितु उससे यह भी कहा कि ऐसा उसने क्यों किया है। और, उसे प्रसन्न रहने का अपना नया सिद्धान्त समझाया।

वन्यूशा ने उसके सिद्धान्त का अनुमोदन नही किया। वह कहने लगा कि "ल' अरजाँ इल न्या पा"* यानी ये सब मूर्खता की बाते हैं।

लुकाश्का घोडे पर सवार घर पहुचा, और उसे अपनी माता को देते हुए बोला कि वह उसे कभी कभी कज्जाकों के घोडों के साथ चरने भेज दिया करे। उसे स्वय उसी रात घेरे पर लौटना था। उसकी गूँगी बहन ने घोडे की देख-भाल का जिम्मा लिया और इशारो से उसे

---

* "पैसा नही है "

समझाया कि जब वह उस व्यक्ति से मिलेगी जिसने घोड़ा दिया है तो वह उसके पैरो पर गिरकर उसे प्रणाम करेगी। बूढी ने अपने पुत्र की दास्तान पर सिर्फ़ सिर हिला दिया और अपने दिल में समझ लिया कि हो न हो घोडा चोरी का है। इसीलिए उसने अपनी बहरी लड़की को ताकीद की कि वह सूर्य निकलने से पहले ही उसे घोडों के झुंड में ले जाया करे।

लुकाश्का अकेले घेरे की ओर गया और रास्ते भर ओलेनिन के बारे में विचार करता रहा। उसने घोडे को कोई बहुत अच्छा तो नही समझा था फिर भी वह चालीस रूबल से किसी भी हालत में कम न था। निस्सन्देह उसे घोडा मिलने की बडी खुशी थी। परन्तु घोडा उसे क्यो दिया गया इसे वह बिल्कुल न समझ सका। इसी कारण उसे कृतज्ञता की कोई अनुभूति न हुई। इसके विपरीत उसके हृदय में अस्पष्ट आशकाएँ उठने लगी कि कैडेट का इरादा उसकी ओर से बुरा है। परन्तु वह कौनसा इरादा हो सकता है वह नहीं कह सकता था। यह बात भी उसके गले से नही उतरती थी कि एक अपरिचित व्यक्ति चालीस रूबल की कीमत का घोडा ऐसे ही दयावश किसी को दे देगा। यह असम्भव है। हाँ, अगर उसने शराब के नशे में ऐसा किया होता तो बात भी समझ में आती। तब तो यह भी कहा जा सकता था कि उसने शान बघारने के लिए ऐसा किया है। परन्तु कैडेट बिल्कुल नशे में न था। वह गम्भीर था। इसलिए सम्भव है उसने घोडा इसलिए मुझे घूस में दिया हो कि मैं किसी अनुचित बात में उसकी सहायता करूँगा। "अरे यह सब बकवास है।" लुकाश्का ने विचार किया "क्या मुझे घोडा मिला नही? जरूर मिला है। बाक़ी सब बाद में देखा जायगा। मैं कोई बुद्धू थोडे ही हू और हम देखेंगे कि कौन किससे अच्छा है," उसने विचार किया। उसे अब इस बात की जरूरत मालूम पड रही थी कि उसे होशियार रहना चाहिए और

ओलेनिन से दोस्ती नही बढानी चाहिए। उसने यह बात किसी से भी नही बताई कि उसे घोडा मिला कैसे। किसी से कहा कि मैंने घोडा मोल लिया है, फिर किसी से कुछ कहा, किसी से कुछ। मगर सच्ची बात शीघ्र ही गांव भर में फैल गई, और जब लुकाश्का की माँ मर्यान्का, ईल्या वसील्येविच तथा अन्य कज्जाकों को इस बेकार की सौगात का पता चला तो वे परेशान हो उठे और कैडेट से सतर्क रहने लगे। लेकिन अपनी शकाओ के होते हुए भी उसके इस कार्य ने उन लोगो में उसके प्रति समादर की भावना उत्पन्न कर दी थी और वे समझने लगे थे कि आदमी सीधा-सादा है और साथ ही अमीर भी।

"क्या तुमने सुना," एक ने कहा, "कि जो कैडेट ईल्या वसीलिच के मकान में ठहरा है उसने पचास रूबल का घोडा लुकाश्का को योही दे दिया? जरूर वह धनी होगा "

"हाँ मैंने सुना है," दूसरा बोला, "जरूर उसने उसका कोई बडा काम किया होगा। पता तो चल ही जायगा कि बात क्या है। उर्वान तकदीर का धनी है!"

"ये कैडेट एक ही खुरांट होते है," तीसरे ने कहा, "देखना कहीं वह मकान मे आग लगाकर ही न रफूचक्कर हो जाय, या कोई दूसरा पाजीपन न कर बैठे।"

२३

ओलेनिन का जीवनक्रम नियमित रूप से चलता रहा परन्तु वह उसमें नीरसता का अनुभव कर रहा था। अपने कमाडिग अफसरो अथवा अपने साथवालो से भी उसकी यदा-कदा ही बातचीत होती। काकेशिया में एक धनी कैडेट की स्थिति विशेष रूप से लाभदायक समझी जाती है। उसे न तो काम के लिए ही भेजा गया था और न ट्रेनिग के लिए ही।

अभियान में भाग लेने के फलस्वरूप उसके लिए एक कमीशन की सिफारिश कर दी गई थी और इस बीच उसे शान्ति से रहने के लिए छोड दिया गया था। अधिकारी उसे रईस समझते थे और उसकी इज्ज़त करते थे। ओलेनिन को ताश खेलना अथवा अफसरो के नाच-रग और सिपाहियो के गाने-बजाने में भाग लेना, जिसका उसे सेना में रहने के कारण अच्छा अनुभव हो गया था, पसन्द न था। वह इस समाज तथा गाँव में अफसरो की जीवनचर्या से प्राय अलग ही रहता था। कज्ज़ाक गाँव में ठहरे हुए इन अफसरो का जीवनक्रम कुछ निश्चित-सा हो चुका था। जैसे किसी किले में प्रत्येक कैडेट या अफसर नियमित रूप से शराब पीता है, ताश खेलता है और अभियानो में भाग लेने के कारण मिलनेवाले पुरस्कारो पर बहस करता है, वैसे ही कज्ज़ाक गाँव में भी वह नियमित रूप से चिखीर पीता है, लडकियो को मिठाइयाँ और शहद बाँटता है, कज्ज़ाक महिलाओ के पीछे मारा मारा फिरता है, उन्हे प्यार करता है, और कभी-कभी उनसे शादी भी कर लेता है। ओलेनिन का रास्ता अलग था। उसे पिटे-पिटाये मार्ग से होकर चलना अच्छा न लगता। यहाँ भी उसने वह जीवनक्रम नही अपनाया जिसे काकेशिया में रहनेवाले अफसर अपना रहे थे।

उसका स्वभाव तडके उठ जाने का पड चुका था। चाय पीने तथा अपनी दालान में से दिखाई पडनेवाले पहाडो, प्रभात काल और मर्यान्का की मूक प्रशसा कर चुकने के पश्चात् वह बैल के चमडे का एक पुराना कोट पहनता, भिगोये हुए कच्चे चमडे की चप्पले पैरो में डालता, कटार लटकाता, बन्दूक कन्धे पर फेंकता, एक छोटे से थैले में कुछ सिगरेट और भोजन की सामग्री रखता, अपने कुत्ते को पुकारता और पाँच बजे के ठीक बाद गाँव के बाहर जगल की ओर चल देता। शाम को सात बजे वह थका-मांदा, भूखा-प्यासा घर लौटता, पाँच-छ तीतर

उसकी पेटी से लटके होते (कभी कभी अन्य कोई जानवर भी होता) और उसके खाने तथा भोजन सामग्री का थैला वैसे का वैसा घर वापस आ जाता। यदि थैले में पडी हुई सिगरेटो की भाँति ही उसके मस्तिष्क में सचित विचार भी स्थिर पडे रहते तो इस वात का स्पष्ट पता चल जाता कि इन चौदह घण्टो की दौड-धूप के वाद भी कोई विचार अपनी जगह से खिसका नही है।

जव वह घर वापस आता तो तरोताजा होता, मजवूत होता, खुश होता। उस समय वह यह नही कह सकता था कि सारे समय वह क्या क्या सोचता रहा है। उसके मस्तिष्क में जो वाते चक्कर लगाया करती थी वे क्या होती थी—विचार, स्मृतियाँ या स्वप्न? प्राय तीनो ही। कभी-कभी वह अपनी ही विचारधारा में वुरी तरह वह जाता और उसकी कल्पना के समक्ष एक चित्र खडा हो जाता—वह कज्जाको में घुलमिल गया है, अपनी कज्जाक पत्नी के साथ अगूर के खेत में काम कर रहा है, या पहाडो में घूमने-फिरनेवाला अव्रेक वन गया है, अथवा उसके पास से होकर कोई सुअर अभी अभी निकल गया है, और सारे समय वह किसी तीतर, सुअर या हिरन की तरफ झाँकता या उनकी टोह में लगा रहता।

शाम के समय चचा येरोश्का आ टपकता और उसके पास वैठा रहता। वन्यूशा चिखीर से भरा एक कटर ले आता और फिर दोनो वाते करते, शराव पीते और रात होते होते एक दूसरे से अलग हो जाते, और अन्तत सोने चले जाते। फिर दूसरे दिन वही शिकार, वही थकान, शाम के समय का वही वार्तालाप, शराव का वही दौर और वही विस्तर। कभी कभी छुट्टी या आराम के दिन ओलेनिन सिर्फ घर पर रहता। उस समय उसका मुख्य काम होता एकटक मर्यान्का को निहारना। वह अपनी खिडकी या दालान में से उसकी प्रत्येक गति को सतृष्ण दृष्टि

से देखा करता। वह मर्यान्का की इज्ज़त करता था, उससे प्रेम करता था (कम से कम वह समझता यही था) ठीक उसी तरह जैसे कि वह पहाडो और आकाश के सौन्दर्य से प्रेम करता था। परन्तु उसने उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध जोडने की वात नही सोची थी। उसे ऐसा लगता था कि उसके तथा मर्यान्का के बीच ऐसे सम्बन्ध नही पैदा हो सकते जैसे कि मर्यान्का और कज्ज़ाक लुकाश्का के बीच थे। फिर वैसे सम्बन्धो का तो कहना ही क्या जो धनी अफसरो और अन्य कज्ज़ाक लडकियो के बीच हुआ करते थे। उसे स्पष्ट लग रहा था कि यदि उसने भी वैसा ही करना आरम्भ कर दिया जैसा कि उसके सहयोगी अफसर किया करते थे तो वह चिन्तन के पूर्णानन्द के स्थान पर क्लेशो, भ्रमजालो और भर्त्सनाओ के नर्क में ही गिरेगा। इसके अतिरिक्त मर्यान्का के सम्बन्ध मे उसमें स्वार्थ-त्याग की जो भावना विकसित हुई थी उससे उसे बडी प्रसन्नता हुई थी। किन्तु एक तरह से वह मर्यान्का से डरता भी था और उससे किसी भी दशा में अपने प्रेम-प्रकाशन के सम्बन्ध में एक शब्द भी नही कह सकता था।

एक वार गर्मी के मौसम में ओलेनिन शिकार पर न जाकर घर ही में था, तभी मास्को का एक परिचित सहसा उसके पास आ खडा हुआ। यह एक नवयुवक था जिससे मास्को के समाज में उसकी मित्रता हुई थी।

"आह, 'मोन शेर', प्रिय दोस्त, जब मैंने सुना कि तुम यहाँ हो उस समय मझे बडी प्रसन्नता हुई!" उसने मास्को में बोली जानेवाली फ्रेंच में कहना शुरू किया और अपनी वातचीत में फ्रेंच शब्दो का प्रयोग करता गया। "उन्होने कहा था, 'ओलेनिन'। कौन ओलेनिन? और मुझे कितनी खुशी हुई थी भाग्य से हम दोनो यहाँ मिल सके हैं। कैसा सयोग है! ख़ैर, तुम्हारे हालचाल कैसे हैं? कैसे

हो? क्यो?" और राजकुमार वेलेत्स्की ने सारी कथा कह सुनाई कि किस प्रकार अस्थायी रूप से वह सेना में भरती हुआ, किस प्रकार कमाडर-इन-चीफ ने उसे अगरक्षक के कार्य पर लगाने का प्रस्ताव किया और किस प्रकार अभियान के पश्चात् वह उस पद को सभालेगा, यद्यपि सच पूछा जाय तो वह इसके प्रति बिल्कुल उदासीन था।

"यहाँ इस कोने में रहते हुए मनुष्य को अपना आगामी जीवन, भविष्य, सुधारना चाहिए—पदक या कोई पद प्राप्त करना चाहिए अथवा 'गार्ड' के रूप में स्थानान्तरित कर दिया जाना चाहिए। यह अनिवार्य है, मेरे लिए नही अपितु मेरे मित्रो और सगे-सम्बन्धियो के लिए। राजकुमार ने मेरी बडी आवभगत की थी। वह अच्छा आदमी है," वेलेत्स्की बोला और आगे कहता गया, "अभियान के लिए मुझे 'सेट आन्ना पदक' दिये जाने की सिफारिश की जा चुकी है। अब मैं यहाँ उस समय तक ठहरूँगा जब तक कि अभियान के लिए न चल दूँ। यह तो राजधानी की तरह है। कैसी स्त्रियाँ है! खैर तुम्हारी कैसी बीत रही है? हमारे कप्तान स्तारत्सेव ने बताया था, तुम जानते हो वही न जो रहम-दिल है परन्तु है बेवकूफ खैर, उसने कहा था कि तुम यहाँ वहशियो की तरह रह रहे हो, न किसी से मिलते-जुलते हो, न बात करते हो। मै यह बात भली भाँति समझ सकता हूँ कि यहाँ पर जिस प्रकार के अफसर आ गये है उनसे मिलना-जुलना तुम्हे अच्छा न लगता होगा। मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हे और मुझे एक दूसरे को जानने-समझने और साथ साथ उठने-बैठने का मौका मिलेगा। मैं कारपोरल के मकान में ठहरा हूँ। वहाँ एक लडकी है, उस्तेन्का! बडी सुन्दर है।"

और उस दुनिया के, जिसे ओलेनिन ने समझा था कि वह छोड चुका है, ढेरो फ्रेंच और रूसी शब्द बराबर बरसते गये, झरते गये।

वेलेत्स्की के बारे में लोगो की आम राय यह थी कि वह एक

अच्छे स्वभाववाला व्यक्ति है। शायद वह था भी अच्छा। फिर भी, यद्यपि उसका चेहरा आकर्षक और सुन्दर था, ओलेनिन ने उसे अपने लिए वडा असुखकर समझा। उसे ऐसा लगा कि उसका मित्र उसी आवारागर्दी का वखान कर रहा है जिसे वह छोड चुका है। सवसे अधिक तो वह यह समझकर परेशान हुआ कि वह इस व्यक्ति को, जो उस दुनिया से आया है, न तो फटकार ही सकता है और न उसमें—यदि वह ऐसा करना चाहे तो भी—वैसा करने की शक्ति ही है। वह जिस पुरानी दुनिया से छूटकर आया है उमी में फँस रहा है, जकड रहा है। ओलेनिन को अपने तथा वेलेत्स्की दोनो के ही ऊपर क्रोध आया, फिर भी अपनी इच्छा के प्रतिकूल अपनी वातचीत में उसे फ्रेंच शव्दावली का प्रयोग करना पडा, कमाडर-इन-चीफ और मास्को के अपने परिचितो के वारे में रुचि दिखानी पडी। और चूँकि वह तथा वेलेत्स्की यही दो इस कज्ज़ाक गाँव में फ्रेंच वोल सकते थे इसलिए उसने अपने सहयोगी अफसरो और कज्ज़ाको के वारे में तिरस्कारसूचक शव्दो में वातचीत की, उससे मिलते-जुलते रहने का वादा किया और उसे कभी कभी मिलने के लिए आते रहने का निमत्रण भी दिया। मगर ओलेनिन खुद कभी मिलने के लिए वेलेत्स्की के पास नही गया।

वन्यूशा को वेलेत्स्की का स्वभाव अच्छा लगा। उसने तो यहाँ तक कह डाला कि यह व्यक्ति सचमुच वडा सज्जन है।

वेलेत्स्की ने तुरन्त ही उस प्रकार का जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दिया जैसा कि कज्ज़ाक गाँव में धनी अफसर प्राय व्यतीत किया करते थे।

ओलेनिन के देखते देखते एक ही महीने में वह इस गाँव में इतना प्रसिद्ध हो गया जैसे यहाँ का पुराना निवासी हो, वह गाँव के वडे-वूढो को शराव पिलाता, सायकालीन पार्टियो का आयोजन करता, लडकियो

द्वारा दी जानेवाली पार्टियो में भाग लेता और उनकी सफलताओ पर उनकी झूठी बडाई करता। स्त्रियाँ और लडकियाँ उसे किसी अज्ञात कारण से 'दादा' कहकर सम्बोधित करती। और स्वय कज्जाक भी, जो ऐसे व्यक्ति को अच्छी तरह समझते थे, जिसे सुरा और सुन्दरी से प्यार होता था, उसके मुरीद हो गये और उसे ओलेनिन से भी अधिक चाहने लगे, क्योकि ओलेनिन उनके लिए अभी तक एक पहेली बना हुआ था।

२४

सुबह के पाँच बजे थे। वन्यूशा दालान में समोवर जला रहा था, और लम्बे बूट का एक पैर लेकर उसपर हवा कर रहा था। ओलेनिन तेरेक में स्नान करने के लिए घर मे जा चुका था। (हाल ही में उसने अपने मनोविनोद का एक नया साधन, ढूँढ लिया था -- नदी में घोडे को नहलाना।) उसकी मकान-मालिकन घर में थी और उसके कमरे की जलती हुई भट्ठी का धुआँ चिमनी से निकलकर आसमान में उड रहा था। उसकी लडकी सायवान में बैठी भैंस दुह रही थी। "चुडैल, ठीक से खडी भी नही रह सकती!" उसकी यह आवाज कभी कभी कानो में पडने लगती और बालटी में गिरते हुए दूध की छलछल वायुमण्डल में विलीन हो जाती।

मकान के सामने की सडक से दौडते हुए घोडे की टापें सुनाई दी और बिना ज़ीनवाले एक भीगे और चमचमाते हुए गहरे भूरे रग के घोडे पर आता हुआ ओलेनिन दिखाई पडा। वह फाटक तक पहुँच चुका था। मर्यान्का ने रूमाल से लपटा हुआ अपना सिर एक क्षण के लिए सायवान से बाहर निकाला और फिर अन्दर कर लिया। ओलेनिन रेशम की एक लाल कमीज़ और सफेद चेरकेसियन कोट पहने था, जिसके चारो ओर पेटी बधी थी और उसमें एक कटार लटक रही थी। उसके सिर पर एक ऊँचा-सा हैट था।

वह अपने भीगे और तन्दुरुस्त घोड़े पर बैठा हुआ और कन्धे पर बन्दूक़ रखे फाटक खोलने के लिए झुका। उसके बाल अभी तक गीले थे और यौवन तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर के कारण उसका चेहरा दमक रहा था। उसने अपने को ख़ूबसूरत, फुर्तीला और जिगीत की तरह का जवान समझा परन्तु वह ग़लती पर था। कोई भी अनुभवी काकेशियाई उसे एक ही नज़र में देख कर कह सकता था कि वह अभी तक सिर्फ़ एक सिपाही है और कुछ नहीं।

जब उसने लड़की को सिर बाहर निकालते देखा तो वह फुर्ती से झुका और लगाम ढीली करते हुए उसने अपना चाबुक फटकारा और अहाते में घुस गया। "वन्यूशा, चाय तैयार है?" उसने सायबान के दरवाज़े की तरफ़ न देखते हुए आवाज़ दी। उसने इस बात पर भी ध्यान दिया कि उसका सुन्दर घोड़ा अपनी पिछली टाँगों पर कितनी ख़ूबसूरती के साथ खड़ा हुआ, हिनहिनाया, अपनी माँस-पेशियाँ सिकोड़ीं, फैलाईं और शान के साथ अहाते की कड़ी मिट्टी रूँदने लगा। ऐसा लगता था कि वह टट्टर से बाहर फाँद जाने के लिए तैयार खड़ा है। "से प्रे!"* वन्यूशा ने उत्तर दिया। ओलेनिन को ऐसा लगा कि मर्यान्का का सुन्दर ख़ूबसूरत सिर अभी भी सायबान के बाहर निकला हुआ है, परन्तु वह उसकी ओर देखने के लिए भी न मुड़ा। जैसे ही वह घोड़े से नीचे कूदा कि उसकी बन्दूक़ बरामदे से टकरा गई। वह विचित्र ढंग से ठिठका और उसने सायबान की तरफ़ एक डरती-सी नज़र डाली, जहाँ दिखाई तो कोई न पड़ता था, हाँ दुहे जाने की छलछल अवश्य सुनाई पड़ती थी।

घर में प्रवेश करने के तुरन्त बाद वह पुस्तक और हुक्का लेकर बाहर आ गया और दालान में चाय पीने बैठ गया। अभी तक वहाँ सूर्य

---

*'तैयार है!'

की किरणें नही पड रही थी। उसने तय कर लिया था कि उस दिन वह दोपहर के पहले कही भी न जायेगा और केवल पत्र ही लिखेगा क्योकि बहुत समय से उसने पत्र नही लिखे थे। परन्तु कारण चाहे जो भी हो उसे दालान में अपनी जगह छोडना अच्छा न लगा। घर के भीतर तो उसे ऐसा लग रहा था मानो जेल हो। इस समय तक घर की मालकिन ने अगीठी जला दी थी। लडकी मवेशी खदेड चुकने के बाद वापस आ गई थी और 'किज्याक' इकट्ठे करके टट्टर के पास जमा करती जा रही थी। ओलेनिन पढ रहा था, परन्तु पुस्तक में जो कुछ लिखा था उसकी एक पंक्ति भी उसकी समझ में न आ रही थी। वह पुस्तक से बार बार आँखें उठाकर उस हृष्ट-पुष्ट नवयुवती की ओर देखता जो अहाते में टहलती टहलती कभी मकान की तरल प्रातःकालीन छाँह में जाती और कभी अहाते में फैली हुई चमचमाती हुई धूप में। प्रखर रंगो की पोशाक में उसका सुषमा-सम्पन्न शरीर धूप में निखर उठता और उसकी एक श्यामल छाया पडने लगती। ओलेनिन को भय होता कि उसकी दृष्टि से कही उसकी कोई भाव-भंगिमा अनदेखी तो नही रह गई? ओलेनिन खिल उठता जब वह देखता कि किस प्रकार उसका शरीर ऋजुता और शोभा के साथ भूमि की ओर झुकता है, उसका एकमात्र वस्त्र, गुलाबी फ्राक, उसके उरोजो से ढरकता हुआ उसके सुन्दर पैरो तक कितनी सिलवटें डालता है, अगडाई लेते समय साँसो से आन्दोलित उसका वक्षस्थल उसके कसे हुए फ्राक में कितनी गहरी रेखाओ में उभरता है, पुरानी लाल स्लीपरो में उसकी कोमल एडियाँ पृथ्वी चूमते समय किस प्रकार अपना आकार बनाये रखती हैं, बाँह चढाये हुए उसकी सुदृढ भुजाएँ अपनी माँस-पेशियो की शक्ति से किस प्रकार क्रोध जैसी मुद्रा में कुदाल उठाती है और किस प्रकार उसकी गहरी काली काली आँखें उसकी आँखो से चार होती हैं। यद्यपि उसकी कोमल भौहो में बल पड जाते, फिर

भी उसकी आँखो से आनन्द की वर्षा होती और उन्हे देखकर ऐसा लगता कि उन्हे अपने सौन्दर्य का पूरा-पूरा ज्ञान है।

"ओलेनिन, मैं पूछ रहा हूँ—तुम आज बहुत जल्दी उठ गये थे क्या?" काकेशियाई अफसर का कोट पहने अहाते में प्रवेश करते हुए वेलेत्स्की ने पूछा।

"वेलेत्स्की!" ओलेनिन ने अपना हाथ बढाते हुए जवाब दिया, "आज क्या बात है जो इतनी जल्दी निकल पडे?"

"हाँ, मुझे जल्दी निकलना पडा। यो कहो निकाल दिया गया। आज रात हमारे यहाँ बालडान्स है। मर्यान्का, तुम तो उस्तेन्का के यहाँ आओगी ही?" लडकी की ओर मुडते हुए वह बोला। ओलेनिन को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वेलेत्स्की किस आसानी से इस लडकी से बाते कर रहा है। परन्तु मर्यान्का ने जैसे कुछ सुना ही न हो। उसने अपना सिर झुका लिया और कुदाल कन्धे पर डालती हुई मरदानी चाल से अपने घर की ओर चल दी।

"वह लजीली है, दोस्त, लजीली," उसके जाने के बाद वेलेत्स्की बोला, "तुम से लजाती है," उसने कहा और हँसता हुआ दालान की सीढियो की ओर दौड गया।

"आखिर बात क्या है कि तुम्हारे यहाँ नृत्य भी है और तुम निकाल भी दिये गये? मेरी तो कुछ समझ में नही आता!"

"भाई, नाच है उस्तेन्का के यहाँ। वह हमारी मकान-मालकिन है। और तुम्हारा निमत्रण है। और नाच के माने है शराब के दौर और लडकियो के जमघट।"

"परन्तु हम वहाँ क्या करेगे?"

वेलेत्स्की मुस्करा दिया और उसने उस दिशा की ओर देखते हुए, जहाँ जाकर मर्यान्का ओझल हो गई थी, अपना सिर हिलाया और आँख मारी।

ओलेनिन ने कन्धे उचका दिये। शर्म के मारे उसका मुंह लाल हो गया। "सचमुच तुम विचित्र आदमी हो!" वह बोला।

"अच्छा अब आओ, ज्यादा बनो मत!"

ओलेनिन की भृकुटियां चढ रही थी और वेलेत्स्की देख देखकर मुस्कराये जा रहा था।

"अरे, आओ भी, मतलब भी नहीं समझते?" उसने कहा, "एक ही मकान में रहना—और इतनी आकर्षक, इतनी मजेदार रमणी, सौन्दर्य की साकार मूर्ति "

"सच कहते हो, गजब की सुन्दरी है! मैंने तो इसके पहले किसी में इतना सौन्दर्य देखा भी न था," ओलेनिन बोला।

"तब फिर?" वेलेत्स्की बोला। परिस्थिति उसकी समझ में न आ रही थी।

"बात भले ही अजीब हो," ओलेनिन ने उत्तर दिया, "परन्तु अगर कोई सत्य है तो उसे मैं क्यो न कहूँ? चूंकि मैं यहां रह रहा हूँ इसलिए मुझे तो ऐसा लगता है मानो औरते मेरे लिए हैं ही नही। और यह सब कितना अच्छा है, सचमुच कितना अच्छा! हां हममें और ऐसी औरतो में क्या समानता हो सकती है? येरोश्का—खैर वह आदमी ही दूसरे ढग का है! उसका और मेरा एक ही नशा है—वह भी शिकारी है और मैं भी।"

"ठीक, समानता का चक्कर। अच्छा, अमालिया इवानोवना से मेरी क्या समानता है, तुम्ही बताओ, क्या समानता है? बात सब एक है! हां यह कह सकते हो कि ये लोग साफ-सुथरे नही है, बस। यह बात मैं मानता हूँ   अ ला गेर कोम अ ला गेर!"*

---

*"जैसा देस तैसा भेस"—अनु०

"परन्तु मेरी जान-पहचान तो किसी भी अमालिया इवानोवना से नही रही और मैं यह भी नही जानता कि इस प्रकार की औरतो से कैसे व्यवहार करना चाहिये," ओलेनिन बोला, "उनकी कोई इज़्ज़त नही कर सकता, परन्तु मैं ज़रूर करता हूँ।'

"ज़रूर करो। तुम्हे रोकता कौन है?"

ओलेनिन ने कोई जवाब न दिया। वस्तुत वह अपनी उस बात को कह देना चाहता था जो उसने अभी अभी शुरू की थी क्योंकि वह उसके दिल की आवाज़ थी।

"मैं जानता हूँ कि मैं अपवादस्वरूप हूँ " उसे कुछ उलझन महसूस हुई। "परन्तु मेरी ज़िन्दगी का ढर्रा कुछ इस तरह चलने लगा है कि अगर मैं तुम्हारी तरह रहना चाहूँ भी तो नही रह सकता। मै अपने सिद्धान्तो का त्याग करने की आवश्यकता नही समझता। अकेले रहना मुझे प्रिय है। यही कारण है कि इन लोगो को मैं उस नज़र से नही देख पाता जिस नज़र से तुम देखते हो।"

वेलेत्स्की ने आँखें ऊपर की और उसे सन्देह की दृष्टि से देखा। "कुछ भी हो, आज शाम को आना जरूर। वहाँ मर्यान्का भी होगी। मैं तुम्हारा उससे परिचय करा दूँगा। आना ज़रूर! अगर मन न लगे तो लौट आना। आओगे न?"

"आऊँगा परन्तु सच पूछो तो मुझे इस बात का डर है कि मै बहक न जाऊँ।"

"हो, हो, हो!" वेलेत्स्की चिल्लाया। "बस आ भर जाओ, बाद में तुम्हारी देख-भाल का ज़िम्मा मेरा। आओगे न? सच कहते हो?"

"आऊँगा! मगर भाई, मुझे वहाँ करना क्या होगा, कौनसा पार्ट अदा करना होगा!"

"तुमसे याचना कर रहा हूँ, दोस्त, आना अवश्य, भूलना मत!"

"हाँ, शायद आऊँगा," ओलेनिन बोला।

"सुन्दरता की चलती-फिरती मूर्तियाँ देखने को मिलती कहाँ है। और, ब्रह्मचारी की ज़िन्दगी! क्या आदर्श है प्यारे। क्यो ज़िन्दगी तबाह कर रहे हो? जो मिल रहा है उससे हाथ धोना कहाँ की बुद्धिमानी है? तुमने यह भी सुना है क्या कि हमारी कम्पनी को वज्द्वीजेन्स्काया जाने की आज्ञा हुई है?"

"ऐसी सम्भावना तो कम है। मैंने तो सुना था कि आठवी कम्पनी वहाँ भेजी जायेगी," ओलेनिन बोला।

"नही मुझे अगरक्षक का एक पत्र मिला है जिसमें उसने लिखा है कि स्वय राजकुमार अभियान में भाग लेगें। मुझे प्रसन्नता है कि मुझे उनकी बानगी भी देखने को मिलेगी। अब तो इस जगह से मैं ऊबता-सा जा रहा हूँ।"

"मैंने सुना है कि हमें शीघ्र ही हमला बोलना होगा।"

"इसके बारे में मैंने कुछ नही सुना। हाँ यह खबर जरूर है कि क्रिनोवित्सिन को हमला करने के लिए 'सेट आन्ना पदक' मिल चुका है। उसे आशा थी कि वह लेफटीनेंट बना दिया जायेगा।" बेलेत्स्की हँसते हुए बोला, "कैसी बेवकूफी! वह इसके लिए प्रधान कार्यालय भी गया था"

झुटपुटा हो रहा था। अब ओलेनिन पार्टी के बारे में सोचने लगा। उसे जो निमत्रण मिला था उससे उसे चिन्ता हो गई थी। वह जाना तो चाहता था परन्तु उसे लग रहा था कि वहाँ जो कुछ घटेगा वह बड़ा विचित्र, भद्दा और शायद भयप्रद भी होगा। वह जानता था कि न तो वहाँ कज्ज़ाक होगे, न वृद्धाएँ होगी और न लडकियो को छोडकर और ही कोई होगा। भगवान जाने क्या हो? उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए? वे लोग क्या क्या बाते करेंगे? उसका और उन कज्ज़ाक लडकियो का क्या

"मर्यान्का आ गई क्या?"

"क्यों नहीं! और अपने साथ आटा भी गूँधकर लाई है।"

"जानते हो," वेलेत्स्की बोला, "अगर उस्तेन्का को बढ़िया कपड़े पहना दिये जायें और मुँह पर थोड़ी पालिश कर दी जाय तो वह हमारी सारी सुन्दरियों से सुन्दर निकलेगी। क्या तुमने कभी उस कज्जाक औरत को देखा है जिसने एक कर्नल के साथ व्याह किया है? कितनी सुन्दर थी! बोर्शचेवा। कैसी शान थी उसकी! कहाँ से बटोर लाती हैं इतनी सुन्दरता ये सब?"

"बोर्शचेवा को तो मैंने देखा नहीं, लेकिन मैं समझता हूँ कि उस पोशाक से अच्छी कोई चीज़ नहीं जिसे वे यहाँ पहनती हैं।"

"अरे मुझमें यही तो खासियत है कि मैं किसी तरह के जीवन में भी घुलमिल सकता हूँ," आराम की साँस लेते हुए वेलेत्स्की ने कहा, "मैं जाकर देखूँगा कि वे सब क्या कर रही हैं।" उसने गाउन कन्धे पर डाला और चिल्लाता हुआ दौड़ पड़ा, "और तुम 'जलपान' का ध्यान रखना।"

ओलेनिन ने वेलेत्स्की के अर्दली को मसालेदार रोटियाँ और शहद लेने भेजा। परन्तु रुपया देने में उसे कुछ इतना सकोच हो रहा था (मानो वह किसी को घूस दे रहा हो) कि जब अर्दली ने पूछा कि "पिपरमिट के साथ कितनी रोटियाँ होंगी और शहद के साथ कितनी?" तो ओलेनिन को कोई जवाब न सूझा।

"जितनी तुम चाहो।"

"क्या सब पैसा खर्च कर डालूँ?" बूढ़े सिपाही ने प्रश्न किया, "पिपरमिट महँगी है—सोलह कोपेक की।"

"हाँ, हाँ सब खर्च कर डालो," ओलेनिन ने उत्तर दिया और खिड़की के पास बैठ गया। उसका हृदय इतने ज़ोरों से धड़क रहा था

मानो कोई गम्भीर अपराध करने जा रहा हो। जब बेलेत्स्की लडकियों के कमरे में था उस समय ओलेनिन ने वहाँ कुछ चीखें-चिल्लाहटें सुनी और कुछ ही क्षणो बाद उसने कहकहो और चिल्लपो के बीच उसे सीढियाँ उतरते देखा। "निकाल दिया गया," वह बोला।

थोडी ही देर बाद उस्तेन्का अन्दर आई और उसने खबर दी कि सब कुछ तैयार है।

कमरे में आने पर उन्होने देखा कि सचमुच सब कुछ तैयार है। उस्तेन्का कुशनो को दीवाल से लगा लगाकर ठीक से रख रही थी। पास ही मेज़ पर एक छोटा-सा मेज़पोश पडा था जिसपर चिखीर का एक कटर और कुछ सूखी हुई मछलियाँ रखी थी। कमरे में गुधे हुए आटे और अगूर की महक आ रही थी। लगभग आधी दर्जन लडकियाँ चुस्त बेशमेते पहने और मुह बिना रुमाल से लपेटे (प्राय लडकियाँ अपना मुँह रुमाल मे लपेटे रहा करती थी) अगीठी के पीछे एक कोने में खडी गुपचुप कर रही थी और कभी कभी हँसी के मारे लोटपोट भी हो रही थी।

"मैं बडी नम्रतापूर्वक आप सबसे प्रार्थना करती हूँ कि आप लोग हमारे सन्त पेट्रन को इज्ज़त बख्शें," अपने अतिथियो को मेज़ पर आमन्त्रित करती हुई उस्तेन्का बोली।

ओलेनिन ने देखा कि मर्यान्का भी उन्ही लडकियो के दल में थी। सभी सुन्दर थी। उसे ऐसी विषम परिस्थितियो में मर्यान्का से मिलने में घबडाहट हो रही थी। ऐसी दशा में उसने वही करने का निश्चय किया जो बेलेत्स्की ने किया था। बेलेत्स्की गम्भीरतापूर्वक मेज़ के पास गया था, उसने उस्तेन्का के स्वास्थ्य की कामना करते हुए गिलास भर शराब पी और दूसरो को भी वैसा ही करने के

लिए कहा। उस्तेन्का ने घोपणा की कि लडकियाँ शराब नहीं पीती।

टोली की एक लडकी बोली "हम थोडा शहद ले लेगे।"

अर्दली शहद और मसालेदार रोटियाँ लेकर लौट आया।

उसने उन लोगो की ओर कनखियो से देखा (चाहे घृणा से कहिए या ईर्ष्या से) जो उसकी राय में शराब और नाच-रग में मस्त थे और उन्हें रद्दी कागज़ में लपेटा हुआ शहद तथा रोटियाँ देकर उनके मूल्य और रेज़गारी आदि का हिसाब समझाने लगा। परन्तु बेलेत्स्की ने उसे भगा दिया। शराब के गिलासो में शहद मिलाकर और तीन पौंड रोटियाँ मेज़ पर लगाकर बेलेत्स्की ने लडकियो को कोने से खीचकर मेज़ के पास बिठा दिया और रोटियाँ बाँटने लगा। ओलेनिन ने अनायास देखा कि किस प्रकार मर्यान्का ने हाथ बढाकर एक भूरे रग का और दो पिपरमिट के केक उटा लिये और अब वह समझ नही पा रही थी कि उनका क्या करे। उस्तेन्का और बेलेत्स्की एक दूसरे के साथ घुल घुलकर बाते कर रहे थे और यद्यपि दोनो ही चाहते थे कि मजलिस में जान आये, फिर भी आपसी बातचीत फीकी थी और किसी को भी उसमें कोई आनन्द न आ रहा था। ओलेनिन ने, यह समझकर कि वह खुद न बोल कर लडकियो में उत्सुकता को ही बढावा दे रहा है और शायद वे उसका मूक परिहास कर रही है और बहुत सम्भव है कि दूसरो पर भी इस भीरुता का असर पड रहा हो, कुछ बोलने का प्रयत्न किया। शर्म के मारे उसके गालो पर गुलाबी छा रही थी और उसे ऐसा लग रहा था कि मर्यान्का परेशान है। "शायद वे हम लोगो से यह आशा कर रही होगी कि हम उन्हे कुछ पैसा दें," उसने विचार किया, "मगर हम यह करे कैसे? और ऐसा करने और फिर निकल जाने का सबसे सरल तरीका है क्या?"

"आखिर बात क्या है कि तुम अपने ही घर में रहनेवाले को नही जानती?" वेलेत्स्की ने मर्यान्का को सम्बोधित करते हुए प्रश्न किया।

"जब वह कभी हमसे मिलने नही आते तो मैं उन्हे कैसे जान सकती हूँ?" ओलेनिन की ओर देखते हुए मर्यान्का ने उत्तर दिया।

ओलेनिन को ऐसा लगा कि उसे भय लग रहा है। परन्तु, किस चीज़ का भय, यह वह न जान सका। वह विह्वल हो गया और बिना यह जाने हुए कि वह क्या कह रहा है उसने कहना शुरू किया—

"मुझे तुम्हारी माँ से डर लगता है। पहले ही दिन जब मैं तुम्हारे घर गया था तो उसने मुझे वह करारी फटकार सुनाई थी कि छठी का दूध याद आ गया था।"

मर्यान्का ठठाकर हँस पडी।

"और तुम डर गये?" उसने कहा और उसपर एक सरसरी निगाह डाली और तुरन्त हटा ली।

यह पहला अवसर था जब ओलेनिन ने उसका सुन्दर चेहरा आँख भर कर देखा था। उसके पहले तक तो उसने उसे मुंह पर रूमाल लपेटे हुए ही देखा था। इसमें सन्देह नही कि लोग उसे 'गाँव की सुन्दरी' का जो नाम देते थे वह सार्थक था।

उस्तेन्का भी एक सुन्दर लडकी थी—ठिगनी, लचकीली, गुलाबी मुखडेवाली। उसकी आँखें भूरी थी और ओठ लाल, जो या तो हँसते रहते या बातचीत में चलते रहते। इसके विपरीत मर्यान्का लावण्य की प्रतिमा तो नही, हाँ सुन्दरी अवश्य कही जा सकती थी—लम्बा शरीर, गठा हुआ बदन, उन्नत उरोज, भरे भरे कन्धे, धनुपाकार गहरी आँखें और उनपर पडती हुई काली काली भौंहो की छाया। यदि उसमें ये गुण न होते

तो शायद उसकी चाल-ढाल और नाक-नक्शे को देखकर उसमें मरदानेपन और कठोरता का भी आभास मिलता। उसमें युवतियो जैसी मुस्कान थी और जब वह हँसती तो देखनेवाले देखते ही रह जाते। परन्तु वह हँसती कम थी। ऐसा ज्ञात होता कि वह कौमार्य की शक्ति एव स्वास्थ्य की किरणें बिखेर रही है। सभी लडकियाँ सुन्दर थी। ये लडकियाँ किन्तु वे स्वय, बेलेत्स्की और अर्दली, जो मसालेदार रोटियाँ लाया था, सभी उसे कनखियो से देखते और जो भी लडकियो मे कोई बात कहता वह मर्यान्का को ज़रूर सम्बोधित करता। ऐसा प्रतीत होता कि मजलिस की रानी वही है।

टोली को ज़िन्दा बनाये रखने की दृष्टि से बेलेत्स्की कभी लडकियो को चिखीर बाँटता, कभी उनसे छेडछाड करता और कभी ओलेनिन से फ्रेंच में मर्यान्का के विषय में छीटेकशी करता, कहता कि यह सुन्दरी तो बस 'तुम्हारी' (ला बोत्र) ही है। उसने ओलेनिन से वैसा ही व्यवहार करने के लिए कहा जैसा वह स्वय कर रहा था। ओलेनिन और भी अधिक व्यग्र होता जा रहा था। वह भागने का बहाना ढूँढ रहा था कि इतने में बेलेत्स्की ने घोषणा की कि उस्तेन्का, जिसके नाम में आज का सारा आयोजन हो रहा था, आदमियो को चिखीर बाँटे और उनका चुम्बन करे। वह राज़ी हो गई मगर शर्त यह थी कि, जैसा विवाह के अवसरो पर हुआ करता है, वे उसकी तश्तरी में रुपया डालते जायें।

"मैं इस नामाकूल दावत में आया ही क्यो!" ओलेनिन ने सोचा। वह भाग खडा होने के लिए उठने लगा।

"कहाँ खिसक रहे हो, दोस्त?"

"कुछ तम्बाकू लेने जा रहा हूँ," वह बोला। उसका उद्देश्य वहाँ से हट जाने का था। परन्तु बेलेत्स्की ने उसका हाथ पकड लिया और फ्रेंच में कहा, "मेरे पास रुपया है।"

"तो यहाँ कुछ न कुछ देना ज़रूर होगा। कोई योही नही भाग सकता," ओलेनिन ने विचार किया। उसे अपने ऊपर क्रोध आ रहा था, "क्या मै सचमुच वेलेत्स्की की भाँति व्यवहार नही कर सकता? मुझे आना ही न चाहिए था लेकिन जव आ ही गया हूँ तो मुझे गुड गोवर तो नही करना चाहिए। मुझे कज्जाक की भाँति पीना चाहिए," और उसने काष्ठपात्र लेकर (जिसमें आठ गिलास रखे थे) उसमें शराव भरी और देखते ही देखते उसे पी गया। लडकियाँ उसकी ओर देखती ही रह गई। एक साथ और इतनी ज्यादा! उन्हे आश्चर्य हो रहा था और डर भी लग रहा था। उन्हे यह वात वडी विचित्र और भद्दी लगी। उस्तेन्का ने उन दोनो को एक एक गिलास और दिया और उन्हे चूम लिया।

"प्यारी लडकियो, अव कुछ जशन मनेगा," उस्तेन्का ने उन चार रूवलो को खनखनाते हुए कहा जो लोगो ने तश्तरी में डाले थे। अव ओलेनिन को कोई भी सकोच न रह गया था। वह वातूनी हो रहा था।

"मर्यान्का अव तुम्हारी वारी है। तुम हमें शराव दो और चुम्वन भी," उसका हाथ पकडते हुए वेलेत्स्की वोला।

"हाँ मैं तुम्हे ऐसा चुम्वन दूँगी!" वह वोली मानो तमाचा जडने की तैयारी कर रही हो।

"तुम विना कुछ लिए हुए ही उनका चुम्वन कर सकती हो," एक दूसरी लडकी ने कहा।

"तुम वडी अच्छी लडकी हो," अपने को छुडाती हुई लडकी को चूमते हुए वेलेत्स्की वोला, "नही तुम्हे देना ही होगा," मर्यान्का को सम्वोधित करते हुए उसने ज़िद की, "अपने किरायेदार को भी एक गिलास दो न।"

और उसका हाथ पकडते हुए, वह उसे बेंच के पास ले गया और ओलेनिन के पास बिठा दिया।

"कैसी सुन्दर है!" उसका सिर घुमाकर उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए उसने कहा।

मर्यान्का ने अब अपने को छुडाने की कोई कोशिश न की और अपनी बडी बडी आँखें ओलेनिन पर गडा दी।

"कितनी सुन्दर!" बेलेत्स्की ने दुहराया और मर्यान्का की दृष्टि से ऐसा लगा मानो कह रही हो "हाँ, देखो, कितनी सुन्दर हूँ मैं।"

बिना यह सोचे-विचारे कि वह क्या कर रहा है, ओलेनिन ने मर्यान्का को छाती से लगा लिया और उसका चुम्बन करने जा ही रहा था कि वह अपने को उसके अक-पाश से मुक्त करती, बेलेत्स्की को धक्का देती और मेज़ को गिराती हुई अगीठी की तरफ भागी। सभी चिल्लाने और कहकहे लगाने लगे। तभी बेलेत्स्की ने लडकियो के कान में कुछ फूंका और वे सहसा गलियारे में भाग गईं और दरवाज़ा बन्द हो गया।

"तुमने बेलेत्स्की को क्यो चूमा? मुझे क्यो नही चूमती थी?" ओलेनिन बोला।

"ऐसे ही! मैं नही चाहती। बस।" ओठ काटते और त्यौरियाँ चढाते हुए वह बोली, "वह 'दादा' है," उसने मुस्कराते हुए कहा। वह दरवाज़े की ओर लपकी और उसे भडभडाने लगी, "अरी चुडैलो, दरवाज़ा क्यो बन्द कर लिया?"

"खैर, उन्हे वहाँ रहने दो और हम यहाँ रहेगे," उसके और भी निकट आते हुए ओलेनिन बोला।

मर्यान्का ने भौंहे कसी और उसे हाथ से धक्का देकर एक ओर हटा दिया, और एक बार फिर ओलेनिन को वह इतनी महान,

इतनी सुन्दर लगी कि वह अपने होश में आ गया और उसे अपने किये पर शर्म आने लगी। वह खुद दरवाज़े तक गया और उसे खीचने लगा।

"वेलेत्स्की! दरवाज़ा खोलो! यह क्या वेवकूफी है!"

मर्यान्का फिर मधुरता से हँस दी। उसका चेहरा दमक रहा था।

"अरे तुम तो मुझसे डरते हो?"

"वाकई डरता हूँ। आखिर अपनी माँ की वेटी हो, न!"

"तुम्हे अपना अधिक समय येरोश्का के साथ विताना चाहिए। वही तुम्हें लडकियो से प्रेम करवाएगा।" और वह सीधे उसकी आँखो में देखती हुई मुस्करा दी।

ओलेनिन को नही मालूम था कि वह क्या उत्तर दे। "और अगर मै तुमसे मिलने आऊँ "

"वह वात दूसरी है," सिर हिलाते हुए वह वोली।

उसी क्षण वेलेत्स्की ने धक्के से दरवाजा खोल दिया और मर्यान्का उसके पास से कूदकर भाग गई। उसकी जाँघ ओलेनिन के पैर से छू गई।

"प्रेम, स्वार्थत्याग और लुकाश्का वगैरह के वारे में मैं जो कुछ सोचता रहा हूँ वह सव वेवकूफी है। प्रसन्नता दूसरी ही चीज़ है। जो प्रसन्न है वही ठीक है, ठीक रास्ते पर है।" ओलेनिन ने सोचा और पूरी ताकत से मर्यान्का को पकड कर पहले उसकी कनपटी के पास चुम्वन किया, फिर उसके गाल पर। मर्यान्का को कोई क्रोध न आया। वह ज़ोर से हँस पडी और दूसरी लडकियो के पास भाग गई।

पार्टी समाप्त हो चुकी थी। उस्तेन्का की माँ काम पर से लौटी, उसने लडकियो को फटकारा और वाहर निकाल दिया।

"हाँ," ओलेनिन ने सोचा। वह घर की ओर बढा जा रहा था। "मुझे थोडी लगाम ढीली करने की जरूरत है, फिर मैं उस कज्ज़ाक लडकी से बुरी तरह प्रेम करने लगूँगा," यही विचार लेकर वह सोने चला परन्तु वह समझता था कि ये विचार पानी के बुलबुले हैं। नही, वह पहले की ही तरह रहना आरम्भ करेगा। परन्तु यह बात न हुई। मर्यान्का के साथ उसके सम्बन्धो में परिवर्तन हुआ। जो दीवाल उन्हे अलग कर रही थी वह ढह चुकी थी। अब जब कभी दोनो मिलते तो ओलेनिन उसे नमस्कार कर लेता।

मालिक मकान को ओलेनिन के धनी और उदार होने का पता चल गया था। एक दिन जब वह किराया वसूल करने आया तो चलते-चलाते उसे अपने घर आने का निमत्रण भी देता गया। पार्टीवाले दिन के बाद से मर्यान्का की माँ उससे बडे तपाक से मिलने लगी थी। कभी कभी सायकाल वह मेज़बानो के साथ बैठता और बडी रात तक गप्पें मारा करता। ऐसा लगता कि गाँव में वह पहले की ही तरह रह रहा है, परन्तु उसके अन्तस् का सब कुछ बदल चुका था। पहले ही की तरह अब भी वह दिन दिन भर जगलो में रहता और सायकाल आठ बजे के करीब अकेले अथवा चचा येरोश्का के साथ अपने मेज़बानो से मिलने चल पडता। वे भी उसके आने-जाने के इतने अभ्यस्त हो गये थे कि जिस दिन वह न आता उस दिन उन्हे आश्चर्य होता। वह शराब की अच्छी कीमत देता। वह शान्त व्यक्ति था। वन्यूशा उसके लिए चाय लाता और वह अगीठी के पास एक कोने में बैठ जाता। बूढी इस ओर बिल्कुल ध्यान न देती और अपने काम में लगी रहती। और वे चिखीर के जाम या चाय के प्याले की चुस्कियाँ लेते हुए कभी कज्ज़ाको के बारे में, कभी पडोसियो के बारे में और कभी

रूस के बारे में बाते किया करते । दूसरे लोग प्रश्न करते और ओलेनिन उत्तर देता। कभी कभी वह कोई पुस्तक ले आता और उसे पढा करता। मर्यान्का बकरी की तरह सिकुडी हुई कभी अगीठी के ऊपर और कभी कोने में पैर सिकोडे बैठी रहती। वह बातचीत में कोई भाग न लेती। ओलेनिन उसकी आँखें और सुन्दर चेहरा निहारा करता। कभी उसके कानो में उसके चलने-फिरने की और कभी बीज फोडने की आवाज़ पडा करती। ओलेनिन को ऐसा लगता कि जब जब वह कुछ बोलता तब तब मर्यान्का पूरे ध्यान से उसकी बाते सुना करती। और जब वह मन ही मन कुछ पढता तो उसे उसकी उपस्थिति का भान होता रहता। कभी कभी वह सोचता कि मर्यान्का की आँखें उसी पर गडी है। और, वह भी उनके तेज से प्रकाशित होने के लिए उसे चुपचाप निहारा करता। उस समय वह तुरन्त अपने चेहरे को छिपा लेती और वह भी ऐसा बन जाता मानो बुढिया से कुछ गूढ विषय पर बडी गम्भीरता से बातचीत कर रहा है। परन्तु अपनी समस्त मन शक्ति को एक ओर केन्द्रित करते हुए वह पूरे समय उसकी चलती हुई साँस और आने-जाने की आवाज़ सुना करता और इस बात की प्रतीक्षा किया करता कि वह उसकी ओर अब देखे तब देखे। दूसरो की मौजूदगी में वह उसके साथ सामान्यतया चचल और खुश रहती, परन्तु जब दोनो अकेले होते उस समय वह लजीली और रूखी हो जाती। कभी कभी वह मर्यान्का के घर वापस आने से पहले ही वहाँ पहुँच जाता और तब एकाएक उसके कानो मे उसके आने की पग-ध्वनि पडती और खुले हुए दरवाज़े पर उसकी नीली सूती फ्राक उसकी आँखो में चमक जाती। तब वह मकान में प्रवेश करती, उसपर एक नजर डालती, थोडा-सा मुस्कराती और कुछ प्रसन्न और डरी हुई सी चल देती।

न तो वह उससे कुछ चाहता ही था और न उसकी कोई आकाक्षा ही थी। परन्तु प्रतिदिन उसके लिए मर्यान्का की उपस्थिति अनिवार्य-सी बनती गई।

ओलेनिन कज्जाक गाँव के जीवन में इतना रम गया था कि उसे अपनी पुरानी जीवन-चर्या विस्मृत-सी हो गई। उसे भविष्य के लिए, और विशेष रूप से वह जिस दुनिया में सम्प्रति रह रहा था उससे बाहर की दुनिया के लिए, न तो कोई चिन्ता ही थी और न उसमें उसे रुचि ही रह गई थी। जब उसे घर से, सम्बन्धियो से या अपने दोस्तो से पत्र प्राप्त होते जिनमें यह चिन्ता व्यक्त की जाती थी कि उनके लिए वह अब एक खोया हुआ सा व्यक्ति हो गया है तो उसे परेशानी हो जाती और क्रोध भी आ जाता। वह इस गाँव में रहते हुए उन लोगो को खोया हुआ समझता जो उसकी तरह नही रह रहे थे। उसे विश्वास था कि अपने पूर्व जीवन और वातावरण से मुंह मोडकर उसने जो यह नया ग्राम्य जीवन अपनाया है और अब वह जितना स्वच्छन्द एव मौलिक जीवन व्यतीत कर रहा है उसके लिए उसे कोई पश्चात्ताप न होगा। जब उसने अभियानो में भाग लिया था और उसे एक किले में रहना पडा था तब भी वह प्रसन्न था, परन्तु यहाँ चचा येरोश्का के साथ उठते-बैठते, जगलो में शिकार करते, गाँव के एक कोने में स्थित अपने मकान में आराम से रहते और लुकाश्का तथा मर्यान्का के बारे में सोचते हुए उसे अपना पूर्व जीवन कृत्रिम और हास्यास्पद-सा लग रहा था। अपने पूर्व जीवन की कृत्रिमता पर पहले भी उसे क्रोध आता था परन्तु इस समय तो उससे बेहद घृणा हो रही थी। यहाँ वह अपने को दिन प्रतिदिन स्वतत्र अनुभव करता और समझता कि वह भी आदमी है। काकेशिया इस समय उसकी कल्पना के काकेशिया से बिल्कुल भिन्न था। यहाँ उसे काकेशिया का वह रूप देखने को नही मिला जो उसने पढा और सुना था। उसने अपने स्वप्नो के अनुरूप यहाँ कोई भी बात न देखी। "यहाँ काकेशिया के वे दृश्य, वे चट्टानें, अमालत-बेक, नायक, खल नायक कुछ भी तो नही," उसने सोचा, "यहाँ लोग प्राकृतिक ढग पर रहते है, फलते-फलते है–पैदा होते है, मरते है,

मिलते-जुलते हैं, लड़ते हैं, खाते हैं, जीते हैं, आनन्द मनाते है और मर जाते हैं। यहाँ उनपर कोई प्रतिबन्ध नही सिवा उन प्रतिबन्धो के, जो प्रकृति ने सूर्य और घास, जानवरो और वृक्षो पर लगाये है। उनके दूसरे कोई भी कानून नही।" इसलिए अपनी तुलना में ये व्यक्ति उसे खूबसूरत, मजबूत और स्वतत्र लगे, जिन्हे देखकर उसे अपने ऊपर शर्म आती और आत्मा को दुख होता। प्राय वह सोचने लगता कि वह सब कुछ छोड़-छाड़ दे और कज्जाक हो जाय, एक घर और कुछ मवेशी खरीद ले, किसी कज्जाक महिला से शादी कर ले (सिर्फ मर्यान्का से नही क्योकि वह उसे लुकाश्का की सम्पत्ति समझने लगा था), चचा येरोश्का के साथ रहे और उसके साथ शिकार खेलने अथवा मछली मारने, या कज्जाको के साथ उनके अभियानो पर, जाया करे। "परन्तु मै यह सब कर क्यो नही डालता? किसका इन्तजार कर रहा हूँ?" उसने अपने से प्रश्न किया और उसे अपने ही पर शर्म आई, "क्या मुझे वह सब कुछ करने में डर लगता है जिसे मै उचित और ठीक समझता हूँ? क्या साधारण कज्जाक होने, प्रकृति के निकट रहने, किसी को हानि न पहुँचाने और लोगो की भलाई करने की मेरी आकाक्षा मेरे उन पूर्व स्वप्नो से अधिक मूर्खतापूर्ण है जिनमें मैं राज्य का मत्री या कर्नल बन जाने की कल्पना किया करता था?" और उसे ऐसा लगता कि कोई आवाज उसके कान में कह रही है कि अभी उसे इन्तजार करना चाहिए और कोई निर्णय नही कर लेना चाहिए। उसे कभी कभी यह खटका बना रहता कि वह अभी येरोश्का और लुकाश्का की तरह नही रह सकेगा क्योकि प्रसन्नता के विषय में उसके विचार उन दोनो से भिन्न थे। वह समझता था कि सच्ची प्रसन्नता स्वार्थ-त्याग में है। उसने लुकाश्का के लिए जो कुछ भी किया था उससे उसे बड़ा सन्तोष और हर्ष हुआ था। वह बराबर दूसरो के लिए अपने स्वार्थों की बलि देने के मौके ढूढा करता था परन्तु उसे ऐसा एक भी अवसर न मिला। कभी कभी

वह प्रसन्नता के अपने इस नवाविष्कृत सूत्र को भूल जाता और सोचता कि वह चचा येरोश्का की तरह जीवनयापन कर सकता है। परन्तु फिर उसके विचार पलटते और वह स्वार्थ-त्याग की भावना में वहने लगता, और इसी दृष्टिकोण से शान्ति और गर्व के साथ लोगो की भलाई और प्रसन्नता की बाते सोचा करता।

२७

अगूर चुनने की फस्ल के कुछ ही पहले लुकाश्का घोडे पर चढकर ओलेनिन से मिलने आया। इस समय वह हमेशा से अधिक तेज और फुर्तीला लग रहा था।

"दोस्त, सुना है तुम्हारा व्याह हो रहा है?" उसका प्रसन्नता-पूर्वक स्वागत करते हुए ओलेनिन ने पूछा। लुकाश्का ने कोई सीधा जवाब न दिया।

"मैंने तुम्हारा घोडा नदी के उस पार वदल लिया है। यह रहा नया घोडा, लोव* का कवर्दा पट्ठा है। मैं घोडे पहिचानता हूँ।"

उन्होने नया घोडा देखा और उसे अहाते में घुमाया-फिराया। सचमुच घोडा वहुत अच्छा था। शरीर स्वस्थ और गठा हुआ, खाल चिकनी, पूँछ और सिर के वाल रेशम जैसे मुलायम। उसका पालन-पोषण भली प्रकार हुआ था। उसकी खिलाई-पिलाई इतनी अच्छी हुई थी, जैसा कि लुकाश्का कहता था, कि "आदमी उसकी पीठ पर आराम से सो सकता है।" उसकी टापें, उसकी आँखें, उसके दाँत—सभी की वनावट

---

* लोव फार्म के घोडे काकेशिया में सर्वोत्तम घोडो में समझे जाते थे।

न्दर थी जैसी वढिया नस्ल के घोडो की होती है। घोडे की तारीफ
विना ओलेनिन से न रहा गया। उसने काकेशिया में अभी तक इतना
घोडा न देखा था।

"और उसकी चाल कितनी मस्तानी है।" घोडे की गर्दन थपथपाते
लुकाश्का वोला। "कैसी दुलकी चलता है। और चतुर इतना कि मालिक
इशारे पर ही नाचता है।"

"क्या इस वदलाई में तुम्हे कुछ देना भी पडा?" ओलेनिन ने
पूछा।

"हाँ, कितना। यह मैंने गिना नही था," मुस्कराते हुए लुकाश्का
ने जवाव दिया, "मुझे यह एक कुनक से मिला था।"

"वहुत सुन्दर घोडा है। तुम इसका कितना लोगे?" ओलेनिन ने

किसी दिन कर लेगे। मैं तुम्हे इस कटार के लिए कोई रुपया नही दे रहा हूँ।"

"दे भी कैसे सकते हो? हम कुनक जो हैं। नदी के उस पार गिरेई-खाँ रहता है। वह भी मेरा कुनक है। अपने घर ले जाकर कहने लगा, 'जो पसन्द हो उठा लो।' मैंने यह कटार उठा ली। हमारी यही प्रथा है।"

दोनो भीतर गये और दोनो ने थोडी थोडी पी।

"यहाँ कुछ दिनो ठहरोगे भी?" ओलेनिन ने पूछा।

"नही, मैं तो यहाँ तुम सबसे विदा लेने आया हूँ। वे मुझे घेरे से हटाकर तेरेक पार की कम्पनी में भेज रहे हैं। आज रात मैं अपने साथी नज़ारका के साथ वहाँ जा रहा हूँ।"

"और विवाह कब हो रहा है?"

"सगाई के लिए मैं जल्दी लौट आऊँगा और फिर कम्पनी वापस चला जाऊँगा।" अनिच्छापूर्वक लुकाश्का ने जवाब दिया।

"और जिसके साथ सगाई हो रही है उससे नही मिलोगे?"

"देखा जायेगा—मिलने से फायदा ही क्या? अगर कभी तुम्हारा अभियान पर आना हो तो हमारी कम्पनी में लुकाश्का करके पूछ लेना। वहाँ बहुत से सुअर हैं। दो मैंने भी मारे है। मैं तुम्हें ले चलूँगा।"

"ठीक है, नमस्कार! ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।"

लुकाश्का घोडे पर चढ गया और बिना मर्यान्का से मिले हुए ही खटपट करता सडक पर वहाँ जा पहुँचा, जहाँ नज़ारका खडा उसका इन्तज़ार कर रहा था।

"मैं पूछता हूँ कि क्या इधर-उधर की कोई खबर नही लोगे?" यामका के घर की तरफ इशारा करते हुए नज़ारका बोला।

"क्यो नही," लुकाश्का वोला, "मेरा घोडा उसके पास ले जाओ। अगर मैं जल्दी न आऊँ तो उसे कुछ चारा डाल देना। सुवह होते ही मैं कम्पनी पहुँच जाऊँगा।"

"क्या कैडेट ने तुम्हे कोई दूसरी चीज नही दी?"

"मैंने एक कटार देकर उसका आभार चुका दिया। वह तो घोडा ही माँगने जा रहा था," घोडे से उतरते और उसे नजारका को थमाते हुए लुकाश्का वोला।

वह तेजी से अहाते में घुस गया, ओलेनिन की खिडकी से होकर गुजरा और कार्नेट के मकान की खिडकी तक पहुँच गया। इस समय विल्कुल अँधेरा था और मर्यान्का अपना फ्राक पहने वालो में कघी कर रही थी। शायद सोने की तैयारी में थी।

"मैं हूँ, मैं," कज्जाक धीरे से वोला। मर्यान्का ने सिर घुमाया। उसकी नजर में तीखापन था। परन्तु जैसे ही उसने लुकाश्का की वोली सुनी कि उसके चेहरे पर रौनक आ गई। उसने खिडकी खोली और वाहर झुकी। उसे प्रसन्नता भी हो रही थी और डर भी लग रहा था।

"क्या है, क्या चाहते हो?" उसने पूछा।

"दरवाजा खोलो!" लुकाश्का धीरे से वोला, "मुझे अन्दर आने दो एक मिनट के लिए। इन्तजार करते करते थक गया हूँ।"

उसने खिडकी में से उसका सिर पकड लिया और उसे चूम लिया। "सचमुच खोलो तो!"

"क्या वेवकूफो जैसी वात कह रहे हो? कह तो दिया कि नही, क्या देर तक के लिए आये हो?"

उसने कोई उत्तर न दिया और वरावर उसे चूमता रहा। वह भी कुछ न वोली।

"यहाँ तो मैं खिडकी से तुम्हारी कमर में हाथ भी नही डाल सकता।"

"मर्यान्का बेटी!" उसकी माँ की आवाज़ सुनाई दी, "वहाँ तुम्हारे साथ कौन है?"

लुकाश्का ने अपनी टोपी उतार ली ताकि वह पहचाना न जा सके और खिडकी के नीचे छिप गया।

"जाओ, जल्दी करो!" मर्यान्का धीरे से बोली।

"लुकाश्का आ गया है," उसने जवाब दिया, "वह पिताजी को पूछ रहा है।"

"तो उसे यहाँ भेज दो!"

"वह चला गया, कहता था जल्दी में हूँ।"

वास्तव में लुकाश्का खिडकी के नीचे झुका हुआ लम्बे लम्बे डग भरता अहाते से भाग चुका था, और अब यामका के मकान की तरफ जा रहा था। इस समय उसे सिवा ओलेनिन के और किसी ने भी न देखा। दो चापूर* चिखीर पी लेने के बाद वह और नजारका चौकी की तरफ चले। रात्रि गर्म, अंधेरी और शान्त थी। दोनो मौन चले जा रहे थे। उन्हे सिवा अपने घोडो की टापो के और कुछ न सुन पडता था। लुकाश्का ने कज्ज़ाक मिगल के बारे में एक गाना शुरू कर दिया था, परन्तु पहला पद समाप्त करने के पूर्व ही वह रुका और कुछ क्षण बाद नज़ारका की तरफ मुडते हुए बोला, "मै कहता न था कि वह मुझे अन्दर न आने देगी!"

"अरे?" नज़ारका ने कहा, "मै जानता था वह न आने देगी। मालूम है यामका ने मुझसे क्या कहा था? कहा था कि कैडेट उनके घर आने-जाने लगा है। चचा येरोश्का कहते हैं कि कैडेट ने उन्हे एक बन्दूक दी है उसे मर्यान्का दिलाने के लिए।"

---

* चापूर—एक पात्र, जिसमें प्राय ८ गिलास शराब आती है—अनु०

"बूढा शैतान झूठ बोलता है!" लुकाश्का गुस्से में बोला, "वह वैसी लडकी नही है। अगर बूढा अपनी हरकते बन्द नही करेगा तो मुझे उसके कान गर्म करने पडेंगे।" और वह अपना प्रिय गान गाने लगा–

इज़माइलोवो गाँव एक था
    उसमें थी उपवन-शाला,
उडा बाज़ अपने पिजडे से
    रतनारी आँखोवाला।
उसके पीछे युवक शिकारी
    घोडे पर दौडा आया,
अपना हाथ बढाकर उसने
    पक्षी के सम्मुख गाया–
"आओ बैठो बाज़!
    दाहने कर पर, तुम कहना मानो,
यदि तुम आए नही विनय सुन,
    तो फिर बस, इतना जानो।
निश्चय ही दे देगा सूली
    मुझे ज़ार यह ईसाई,
निश्चय ही दे देगा सूली।"
    कहा बाज़ ने–"हे भाई!
सोने के पिजडे में मेरा
    पालन क्या तुमने जाना?
और दाहने कर पर मेरा
    लालन क्या तुमने जाना?
उड जाऊँगा दूर–

नील सागर तक पख पसारूँगा,
उज्ज्वल राजहस मैं अपने–
लिए वहाँ पर मारूँगा।
उसे मारकर मै अपना
यह जीवन सफल बनाऊँगा,
राजहस का मधुर माँस मैं
खूब पेट भर खाऊँगा।"

२८

सगाई कार्नेट के घर हो रही थी। लुकाश्का गाँव तो लौट आया था परन्तु अभी तक ओलेनिन से मिलने नही गया था। यद्यपि ओलेनिन को आमन्त्रित किया गया था फिर भी वह सगाई में शामिल नही हुआ था। आज वह जितना उदास था उतना इस कज्ज़ाक गाँव में बसने के बाद से कभी न हुआ था। उसने सायकाल लुकाश्का को अपने सर्वोत्तम वस्त्र पहने माँ के साथ जाते हुए देखा था। वह यह सोचकर परेशान हो रहा था कि लुकाश्का उसके प्रति उदासीन क्यो है। ओलेनिन ने दरवाज़ा बन्द कर लिया और अपनी डायरी में लिखने लगा–

"हाल ही में मैंने बहुत-सी बातो पर विचार किया है और मैं बहुत कुछ बदल गया हूँ," उसने लिखा, "अब मै 'कापी-बुक सिद्धान्त' पर आ गया हूँ। प्रसन्न रहने का एक तरीका है प्रेम करना, ऐसा प्रेम जिस में स्वार्थ की गध न हो, हर व्यक्ति से प्रेम करना, हर चीज़ से प्रेम करना, चारो ओर प्रेम का जाल फैलाना और उन सब का स्वागत करना जो उसमें फस जायें। इस प्रकार मैंने इस जाल मे बन्यूशा, चचा येरोश्का, लुकाश्का और मर्यान्का को फसा लिया है।"

जैसे ही ओलेनिन ने यह वाक्य पूरा किया कि चचा येरोश्का कमरे में दाखिल हुआ।

येरोश्का इस समय बहुत प्रसन्न था। आज से कुछ पहले एक दिन शाम को ओलेनिन उससे मिलने गया था। उसने देखा था कि चचा येरोश्का खुश है और अहाते में बैठा एक छोटे-से चाकू से एक सुअर की खाल उतार रहा है। कुत्ते (जिनमें उसका प्रिय कुत्ता ल्याम भी एक था) उसके पास बैठे दुम हिला रहे थे और देख रहे थे कि वह कर क्या रहा है। छोटे छोटे बच्चे टट्टर के उस पार से उसे आदर से देख रहे थे और, अपने अभ्यास के प्रतिकूल, उसे तग नही कर रहे थे। उसकी पडोसिनो ने, जो सामान्यतया उसके प्रति अधिक उदारता नही बरतती थी, उसका सत्कार किया – किसी ने उसे चिखीर का प्याला दिया, किसी ने क्रीम और किसी ने थोडा आटा। दूसरे दिन खून के धब्बोवाले कपडे पहने चचा येरोश्का अपने गोदाम में बैठकर सुअर का गोश्त बाँटता दिखाई दिया। वह कीमत के रूप में किसी से कुछ शराब ले लेता और किसी से नकद रुपया। उसके चेहरे से पता चलता था मानो कह रहा हो, "भगवान ने मुझे तकदीरवाला बनाया है। मैंने एक सुअर मारा है। इसलिए अब मेरी भी कद्र है।" इसका परिणाम यह हुआ था कि वह बराबर चार दिनो तक शराब पीता रहा। इस बीच उसने कभी अपना गाँव नही छोडा। इसके अलावा उसे सगाई के दिन भी पीने को मिली थी।

जब वह ओलेनिन के पास आया उस समय नशे में चूर था। मुँह लाल, दाढी उलझी हुई और शरीर पर स्वर्ण-खचित काम की एक नई लाल बेश्मेत। वह अपने साथ एक बलालाइका (तितारा) भी लाया था, जो उसे नदी के उस पार मिला था। उसने बहुत पहले ही ओलेनिन से वादा कर रखा था कि किसी दिन वह उसके लिए इसी प्रकार के मन-बहलाव की

व्यवस्था करेगा। और आज जब वह मूड में था तो उसने देखा कि ओलेनिन लिखने की धुन में मस्त है, और वह उदास हो गया।

"लिखे जाओ, लिखे जाओ, दोस्त," वह फुसफुसाया मानो सोच रहा हो कि उसके और कागज़ के बीच कोई आत्मा बैठी है। यह आत्मा डरकर कही भाग न जाय। वह चुपके से फर्श पर बैठ गया। जब चचा येरोश्का शराब की मस्ती में होता उस समय उसके बैठने की जगह फर्श ही हुआ करती। ओलेनिन ने चारो ओर देखा, शराब लाने का हुक्म दिया और लिखने में जुट गया। इस समय अकेले शराब पीना येरोश्का को हराम लग रहा था। वह बाते करना चाहता था।

"मैं कार्नेट के यहाँ सगाई मे गया था। लेकिन वहाँ! सब सुअर के बच्चे हैं! मैं उन्हे देखना भी नही चाहता। तुम्हारे पास चला आया।"

"और यह बलालाइका कहाँ से झाड दिया?" ओलेनिन ने पूछा और फिर लिखने लगा।

"दोस्त, मैं नदी के उस पार गया था। इसे वही से लाया हूँ," उसने जवाब दिया और फिर धीरे से इतना और कहा, "मै इस बाजे का उस्ताद हूँ। तातारी या कज़्ज़ाकी, भले आदमियोवाला या सिपाहियाना जो भी गाना तुम्हे पसन्द हो सुना डालो। मै हाज़िर हूँ।"

ओलेनिन ने उसकी ओर देखा, कुछ मुस्कराया और फिर लिखने लग गया।

उसकी मुस्कराहट से बूढे में भी जवानी आ गई।

"अरे यार, छोडो भी। मेरे साथ आओ!" कुछ दृढता से एकाएक उसने कहा, "आओ भी! किसी ने तुम्हे चोट पहुँचाई है क्या? जाने भी दो उन्हे जहन्नुम में। उनपर खुदा की मार! आओ! लिखना, लिखना, लिखना इससे क्या लाभ, क्या फायदा?"

और वह अपनी मोटी अगुलियो मे फर्श को थपथपाकर ओलेनिन के लिखने की नकल करने और अपना मुंह बनाकर तिरस्कार सूचित करने लगा।

"क्यो लिखे जा रहे हो ये बुझौवले? अरे खाओ, पियो, मौज करो और दिखा दो कि तुम भी मर्द हो!"

लिखे जानेवाले विषय के सम्बन्ध में उसके दिमाग में एक ही विचार घूम रहा था—कोई कानूनी दांवपेंच की बात और बस। ओलेनिन हँस पड़ा और येरोश्का भी। तभी फर्श पर छलांग मारते हुए येरोश्का ने बलालाइका पर अपना कमाल दिखाना शुरू किया। वह तातारी गीत गाने लगा।

"अरे दोस्त, क्यो यह सब माथापच्ची कर रहे हो! छोड़ो भी! मैं गाऊँ, तुम सुनो। मर जाओगे तो ये गाने कहाँ मिलेगे। अभी मौका है बहार लूट लो!"

पहले-पहल उसने एक स्वरचित गाना शुरू किया। साथ में वह नाचता भी जा रहा था।

अह, दी दी दी दी दी दी
खोजा उसे, कहाँ था जी?
वह तो हाट और मेलो में
पिनें बेचता-फिरता ही!

पहले जब कभी वह गाया करता था, उस समय उसने अपने एक भूतपूर्व सार्जेण्ट-मेजर दोस्त से यह गाना भी सीख लिया था—

सोमवार को कितने गहरे प्रेम-सिन्धु में डूबा!
मगल के दिन ठंडी सांसे ले लेकर मैं ऊबा।

बुध के दिन मैने बढ बढकर अपनी प्रीति बखानी।
प्रेम-पत्र की कठिन प्रतीक्षा गुरु के दिन ही जानी।
शुक्रवार को प्रेम-पत्र का मिला ज़रा अन्दाज़ा,
तब तक निकल चुका था आशाओ का हाय! जनाजा।
शनि का दिन आया तो मैंने वीरोचित प्रण ठाना,
बिखरा दूंगा पल भर में जीवन का ताना-बाना।
आया जब रविवार मुक्ति की गूंजी मीठी बोली,
प्रेम-व्रेम सब झूठ, अरे जी, मारो इसको गोली।

और फिर वह गाने लगा—

अह, दी दी दी दी दी दी
खोजा उसे, कहाँ था जी?

और उसके बाद आँख मारते हुए तथा कन्धे मटकाते फिर उसने अपनी तान छेड़ी—

लूंगा चुम्बन और तुम्हे
चिपटा लूगा छाती से,
बाँधूंगा मै तुम्हें
रेशमी रस्सी बलखाती से।
तुम्हे पुकारूंगा मै मीठे
स्वर से मेरी मैना।
झूठ नही, तुम सचमुच मुझसे
प्यार करोगी, है न?

गाते गाते वह इतना उत्तेजित हो उठा कि कमरे भर में नाचने लगा। "ती दी दी" जैसे भले आदमियोवाले गाने उसने ओलेनिन के मन-

वहलाव के लिए गाये थे। परन्तु तीन गिलास चिखीर पी चुकने के बाद उसे पुराना ज़माना याद आया और उसने असली कज़्ज़ाकी और तातारी गाने शुरु कर दिये। अपना एक प्रिय गाना गाते गाते उसकी आवाज़ एकाएक लडखडाई और उसने गाना वन्द कर दिया। परन्तु, अपना तितारा टुनटुनाता रहा।

"अरे, प्यारे दोस्त!" उसने कहा।

उसकी आवाज़ में कुछ अजीव नयापन आ गया था। अव ओलेनिन ने चारो तरफ देखा। वूढा रो रहा था। उसकी आँखो में आँसू भर चुके थे और वह भी रहे थे। "मेरी जवानी के दिन! तुम कहाँ हो! अव वे मीठे मीठे दिन क्यो लौटेंगे, क्यो लौटेंगे?" रोते और सिसकते हुए वह वोला। "पियो, पीते क्यो नही?" विना आँसू पोछे हुए कान फाड देनेवाली आवाज़ में वह चिल्लाया।

एक तातारी गाने ने उसे विशेष रूप से द्रवित कर दिया था। उसमें शब्द कम थे मगर करुणा से ओतप्रोत थे—"आई दाई दला लाई!" येरोश्का ने इस गाने के शब्दो का अनुवाद किया—"एक नवजवान औल से अपनी भेड़ें हँकाकर पहाडो पर ले गया। रूसी आये और उन्होंने औल में आग लगा दी। उन्होंने आदमियो को मार डाला और स्त्रियो को गुलाम वना लिया। नवजवान पहाडो मे उतरा। जहाँ औल था अव वहाँ सव कुछ वीरान था—उसकी माँ का पता न था, उसके भाइयो का पता न था, उसके मकान का पता न था। सिर्फ एक पेड खडा रो रहा था। नवजवान उसी के नीचे वैठ गया और रोने लगा। 'तेरी ही तरह मैं भी ठूँठ हो गया हूँ—विल्कुल अकेला, विल्कुल निरीह।' और गाने लगा—आई दाई दला लाई!" और वूढे ने इस करुण गान को कई वार दुहराया।

हुई तेज गर्म हवा बह रही थी, फिर भी वहाँ शीतलता का नामोनिशान न था। कार्नेट ने एक और सलीब बनाकर चिखीर का गिलास उठाया, जो अंगूर की पत्ती से ढका हुआ उसके ठीक पीछे रखा था, और उसे पी गया। बाद में गिलास उसने बूढ़ी को थमा दिया। वह केवल एक कुर्ता पहने था जो गले के पास खुला था और जिससे उसका गठीला सीना दिखाई पड रहा था। इस समय वह खुश था, और न तो उसके रुख मे और न शब्दो से ही उसके उस चातुर्य का पता चलता था जिसका वह अभ्यस्त था। वह प्रसन्नचित और स्वाभाविक मुद्रा में था।

"क्या तुमने लुकाश्का का नया घोड़ा देखा?" बूढ़ी ने पूछा, "दिमीत्री अन्द्रेइच ने उसे जो घोड़ा दिया था वह चला गया। लुकाश्का ने उसे दूसरे से बदल लिया।"

"नही, मैंने नही देखा। आज मैंने उसके नौकर से बात की थी," कार्नेट बोला, "और उसने बताया कि उसके मालिक को फिर एक हजार रूबल मिले हैं।"

"दौलत में गोते लगा रहा है और क्या," बूढ़ी बोली।

सारा परिवार खुश था, सन्तुष्ट था। काम ठीक ठीक चल रहा था। इस वर्ष अंगूर अधिक थे और अच्छे थे जिसकी उन्होंने आशा भी न की थी।

खा-पी चुकने के बाद मर्यान्का ने बैलो के सामने कुछ घास डाली, बेशमेत की तह लगाकर उसका तकिया बनाया और गाड़ी के नीचे दबी-दबाई घास पर पड़ रही। उसके सिर पर रेशम का एक रूमाल था और शरीर पर एक नीली फ्राक। फिर भी गर्मी उससे बर्दाश्त नही हो रही थी। उसका चेहरा तप रहा था और वह समझ न पा रही थी कि अपने पैर कहाँ रखे? उसकी आँखें नीद और थकान से भारी हो रही थी। उसके ओठ बार बार खुल जाते और वह भारी और गहरी साँसे लेने लगती।

लगभग पन्द्रह दिन पूर्व से ही वर्ष का व्यस्त कार्य आरम्भ हो चुका था और लड़की को लगातार भारी श्रम करना पड़ रहा था। प्रातःकाल वह उठ पड़ती, ठडे पानी से हाथ मुँह धोती, शाल ओढती और फिर नगे पैर मवेशियो को देखने-भालने निकल जाती। फिर जल्दी जल्दी जूते पहनती, शरीर पर बेशमेत डालती, रोटियो की पिटारी हाथ मे लेती, बैलो को गाड़ी में जोतती और दिन भर के लिए उन्हे उद्यान की ओर हाँक देती। वहाँ वह अगूर तोड़ती और पिटारियो में भर भरकर रखा करती। बीच में आराम के लिए वह एक घण्टा निकाल लेती। सायकाल वह एक लम्बे चाबुक से बैलो को हाँकती हुई गाँव लौट जाती। इस समय उसके चेहरे पर चमक

हुई तेज़ गर्म हवा बह रही थी, फिर भी वहाँ शीतलता का नामोनिशान न था। कार्नेट ने एक और सलीब बनाकर चिखीर का गिलास उठाया, जो अंगूर की पत्ती से ढका हुआ उसके ठीक पीछे रखा था, और उसे पी गया। बाद में गिलास उसने बूढ़ी को थमा दिया। वह केवल एक कुर्ता पहने था जो गले के पास खुला था और जिससे उसका गठीला सीना दिखाई पड रहा था। इस समय वह खुश था, और न तो उसके रुख मे और न शब्दो से ही उसके उस चातुर्य का पता चलता था जिसका वह अभ्यस्त था। वह प्रसन्नचित और स्वाभाविक मुद्रा में था।

"क्या हम आज रात सायवान का अपना काम पूरा कर लेगे?" भीगी हुई दाढी पोछते हुए कार्नेट ने पूछा।

"ज़रूर पूरा कर लेगे," पत्नी ने उत्तर दिया, "अगर केवल मौसम बाधा न पहुँचाये। डेमकिनो ने तो अभी आधा काम भी नही पूरा किया," उसने कहा, "उस्तेन्का अकेली ही काम कर रही है। बेचारी थक गई होगी।"

"उनसे और क्या आशा की जाय?" बूढे ने गर्व से कहा।

"प्यारी मर्यान्का, यह लो, तुम भी पी लो," बूढी ने गिलास लडकी की ओर बढाते हुए कहा, "ईश्वर ने चाहा तो शादी की दावत के लिए हमारे पास काफी पैसा हो जायेगा।"

"अभी फिलहाल कहाँ से हो जायेगा," भौहे चढाते हुए कार्नेट बोला। लड़की ने सिर नीचा कर लिया।

"तो हम इसकी बात भी न करे? क्यो?" बूढी बोली, "बात पक्की हो चुकी है और वक्त नज़दीक आता जा रहा है।"

"दूर के पुल अभी न बाँधो," कार्नेट ने कहा, "अभी हमें इस फस्ल से ही निपटना है"।

"क्या तुमने लुकाश्का का नया घोड़ा देखा?" बूढी ने पूछा, "दिमीत्री अन्द्रेइच ने उसे जो घोड़ा दिया था वह चला गया। लुकाश्का ने उसे दूसरे से बदल लिया।"

"नही, मैंने नही देखा। आज मैंने उसके नौकर से बात की थी," कार्नेट बोला, "और उसने बताया कि उसके मालिक को फिर एक हज़ार रूबल मिले हैं।"

"दौलत में गोते लगा रहा है और क्या," बूढी बोली।

सारा परिवार खुश था, सन्तुष्ट था। काम ठीक ठीक चल रहा था। इस वर्ष अंगूर अधिक थे और अच्छे थे जिसकी उन्होंने आशा भी न की थी।

खा-पी चुकने के बाद मर्यान्का ने बैलो के सामने कुछ घास डाली, बेशमेत की तह लगाकर उसका तकिया बनाया और गाडी के नीचे दबी-दबाई घास पर पड रही। उसके सिर पर रेशम का एक रूमाल था और शरीर पर एक नीली फ्राक। फिर भी गर्मी उससे बर्दाश्त नही हो रही थी। उसका चेहरा तप रहा था और वह समझ न पा रही थी कि अपने पैर कहाँ रखे? उसकी आँखें नीद और थकान से भारी हो रही थी। उसके ओठ बार बार खुल जाते और वह भारी और गहरी साँसे लेने लगती।

लगभग पन्द्रह दिन पूर्व से ही वर्ष का व्यस्त कार्य आरम्भ हो चुका था और लडकी को लगातार भारी श्रम करना पड रहा था। प्रातःकाल वह उठ पडती, ठडे पानी से हाथ मुँह धोती, शाल ओढती और फिर नगे पैर मवेशियो को देखने-भालने निकल जाती। फिर जल्दी जल्दी जूते पहनती, शरीर पर बेशमेत डालती, रोटियो की पिटारी हाथ में लेती, बैलो को गाडी में जोतती और दिन भर के लिए उन्हे उद्यान की ओर हाँक देती। वहाँ वह अंगूर तोडती और पिटारियो में भर भरकर रखा करती। बीच में आराम के लिए वह एक घण्टा निकाल लेती। सायकाल वह एक लम्बे चाबुक से बैलो को हाँकती हुई गाँव लौट जाती। इस समय उसके चेहरे पर चमक

होती, थकान के चिन्ह नही। मवेशियो का सानी-भूसा कर चुकने के वाद वह अपनी फ्राक की चौडी आस्तीन में कुछ सूरजमुखी के वीज भरती और सडक के एक कोने पर निकल जाती। वहाँ वह उन्हें फोड फोडकर खाती हुई दूसरी लडकियो से हँसी-मज़ाक कर लिया करती। धुधलका होते ही वह घर लौट आती और अपने माता-पिता और भाई के माथ भोजन कर लेने के वाद स्वस्थ और निश्चिन्त भीतर चली जाती और अगीठी के ऊपर की टाँड पर बैठकर ऊँघती हुई अपने किरायेदार की वाते सुना करती थी। और जब वह चला जाता तो कूदकर विस्तरे पर आ धमकती और सवेरे तक खुर्राटे लेती रहती। इस प्रकार दिन वीतते गये, मास वीतते गये। सगाई के दिन के बाद से फिर उसने लुकाश्का को नही देखा, परन्तु शान्ति के साथ वह विवाह की बाट अवश्य जोह रही थी। वह अपने किरायेदार की वातो की अभ्यस्त हो चुकी थी और उसकी आग्रवत निगाहो में डूवने-उतराने लगी थी।

३०

गर्मी कडाके की पड रही थी। गाडी के नीचे की थोडी शीतल जगह में ढेरो मच्छड भनभना रहे थे। फिर भी मर्यान्का अपने सिर पर रूमाल डाले मस्त सो रही थी। उसके साथ ही उसका छोटा भाई भी सोया था जो लुढक-पुढक कर उसे ठेल रहा था। एकाएक उसकी पडोसिन उस्तेन्का दौडती हुई आई और गाडी के नीचे लेटी हुई मर्यान्का के पास पड रही।

"सोती रहो, लडकियो, सोती रहो!" गाडी के नीचे आराम से लेटते हुए वह वोली। "ज़रा ठहरो," उसने कहा, "ऐसे न चलेगा!" और भागती हुई गई, कुछ हरी हरी टहनियाँ तोड लाई, उन्हे गाडी के दोनो पहियो में खोसा और उनपर अपना वेशमेत टाँग दिया।

"मुझे भी सोने दो," गाडी के भीतर फिर से घुसती हुई उस्तेन्का ने वहाँ लेटे हुए उस छोटे-से बच्चे से कुछ ऊँची आवाज़ में कहा, "क्या लडकियो के साथ सोने के लिए कज्ज़ाक को यही जगह मिली है! भाग यहाँ से!" और जब वह गाडी के नीचे अपनी सहेली के साथ अकेली रह गई तो सहसा उसने उसे अपनी दोनो बाहो में भर कर उसके गालो और गले को चूमना शुरू कर दिया।

"प्यारी, प्यारी!" मधुर हँसी और मुस्कराहट की लहरो के बीच वह कहती जा रही थी।

"क्यो, तुमने यह सब 'दादा' से सीख लिया है। इतनी जल्दी," कुडमुडाते हुए मर्यान्का बोली, "यह तमाशा अब बन्द भी करो!"

और दोनो इतने ज़ोर से हँस पडीं कि मर्यान्का की माँ उन्हे चुप कराने के लिए वही से उनपर चिल्ला उठी।

"तुम्हें ईर्ष्या हो रही है? है न?" फुमफुसाते हुए उस्तेन्का ने पूछा।

"फिज़ूल की बात! अच्छा, अब सोने दो। तुम आईं किस लिए?"

परन्तु उस्तेन्का के हाथ न रुके, "अभी तुम्हें बताऊँगी किस लिए आई हूँ, थोडा ठहरो!"

मर्यान्का अपनी कुहनियो पर उल्टी लेट गई और अपना रूमाल सम्हालने लगी।

"हाँ, अब बताओ क्या बात है?"

"मै तुम्हारे किरायेदार के बारे में कुछ बाते जानती हूँ!"

"जाननेवाली कोई बात भी हो?" मर्यान्का बोली।

"तू बडी चुडैल है!" कोहनी कोचती और हँसती हुई उस्तेन्का बोली, "बतायेगी नही। वह तेरे पास आता है?"

"आता है। तो इससे क्या?" मर्यान्का बोली और लजा गई।

"देखो, मै एक सीधी-सादी लडकी हूँ। सारी बात खुले खज़ाने कह देती हूँ। मुझे बनने की क्या ज़रूरत?" उस्तेन्का ने कहा और उसका खिला हुआ गुलाबी चेहरा सहसा उदास हो गया, "मै किसी को कोई नुकसान नही पहुँचती, है न? मैं उसे प्यार करती हूँ। बस उसके बारे में यही कहना है।"

"तुम्हारा मतलब 'दादा' से है?"

"हाँ।"

"लेकिन यह तो पाप है।"

"आह मर्यान्का! लडकी जब आज़ाद रहती है अगर उस समय उसने मौज-बहार न लूटी तो कब लूटेगी? जब मै किसी कज़्ज़ाक के पल्ले बध जाऊँगी तो बच्चे होगे और होगी मेरी चिन्ताए। क्यो, जब लुकाश्का से व्याह कर लोगी तो मौज-मज़े की बात भी तुम्हारे दिमाग़ में न चढेगी। सिर्फ बच्चे होगे, सिर्फ काम होगा!"

"क्यो? बहुत-सी तो है जो व्याह के बाद मज़े में ज़िन्दगी बिता रही है। क्या फर्क पडता है!" मर्यान्का ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया।

"बस मुझे यह बता दो कि तुम्हारे और लुकाश्का के बीच क्या क्या हो चुका है?"

"क्या क्या हो चुका है? क्या माने? उसने विवाह का प्रस्ताव रखा। पिता जी ने एक साल टाल दिया। लेकिन अब बात तय हो गई है। और वे शरद ऋतु में विवाह करने आयेंगे।"

"लेकिन उसने तुमसे कहा क्या?"

मर्यान्का मुस्करा दी।

"क्या कहेगा बेचारा? कहा कि 'मैं तुम्हे प्यार करता हूं। मेरे साथ अगूर के बाग़ में चलो।'"

"और तुम नही गई। गई कि नही? और अब वहादुर कितना हो गया है। गाँव भर को उसपर गर्व है। फौज में भी मज़े लूटता है। उस दिन हमारा किरका घर आया था। कितना वढिया घोडा है लुकाश्का के पास—उसने कहा था। मैं समझती हूँ वह तुमपर भी जान देता है। खैर, तो और उसने क्या क्या कहा?"

"सभी वता दूँ?" हँसती हुई मर्यान्का वोली, "एक रात वह मेरी खिडकी के पास आया। कुछ शराव के नशे में था। उसने मुझसे ज़िद की कि मै उसे अन्दर आने दूँ।"

"और तुमने नही आने दिया?"

"आने देती! क्या कहने! मैं जो वात एक वार कह देती हूँ फिर उसे निभाती हू, उसपर अड जाती हूँ चट्टान की तरह," मर्यान्का ने गम्भीरता से उत्तर दिया।

"लेकिन वह तो वहुत अच्छा आदमी है। किसी लडकी की तरफ निगाह भी उठा दे तो वह इन्कार न करे।"

"खैर जिसके पास जाना चाहे जाये," गर्व से मर्यान्का ने उत्तर दिया।

"तुम्हे दुख नही होगा?"

"होगा। परन्तु मै कोई वदतमीज़ी नही वरदाश्त कर सकती। यह गलत वात है!"

उस्तेन्का ने सहसा अपना सिर अपनी सखी की छाती पर रख दिया, उसे कसकर पकड लिया और हँसते हुए झकझोर डाला। "वेवकूफ कही की!" एक साँस में वह कह गई, "तू खुश होना नही चाहती।" और मर्यान्का को गुदगुदाने लगी।

"मुझे छोड भी मगी!" कराह भरी हँसी हँसते हुए मर्यान्का वोली।

"इन चुडैलो की वात सुनो! हवा में उड रही है! अभी तक थकी नही क्या!" गाडी पर से ऊँघती हुई वूढी की आवाज़ आई।

"तुम खुश रहना नही चाहती," कुछ उठती हुई धीरे से उस्तेन्का बोली। "लेकिन तुम तकदीरवाली हो! सभी तुम्हे कितना प्यार करते है। तुम कटीली हो फिर भी वे प्यार करते है। अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो अव तक मैंने तुम्हारे किरायेदार का दिमाग फिरा दिया होता। जव तुम मेरे यहाँ आई थी उस समय मैंने उसे अच्छी तरह देखा था। ऐसा लगता था कि तुम्हे आँखो ही आँखो में पी जायेगा। 'दादा' ने मुझे बहुत कुछ दिया है और लोग कहते हैं कि 'तुम्हारा वह' तो रूसियो में सवसे धनी है। उसका अर्दली कहता है कि उसके अपने गुलाम ढेरो हैं।"

मर्यान्का उठी और एक क्षण कुछ सोचने-विचारने के वाद मुस्करा दी।

"तुम्हे मालूम है एक वार उसने मुझसे क्या कहा था?" घास का एक टुकडा दाँत से चबाते हुए वह वोली, "उसने कहा था, 'मैं चाहता हूँ कि लुकाश्का या तुम्हारे भाई लज़ुतका की तरह मैं भी कज़्ज़ाक हो जाऊँ।' उसका मतलव क्या था कुछ समझ में आया?"

"अरे उसके दिमाग़ में जो पहली वात आई होगी उसने कह मारी होगी," उस्तेन्का ने जवाब दिया, "मेरे 'वह' क्या क्या नही कहते! जैसे पागल हो।"

मर्यान्का ने मोडी हुई वेशमेत पर सिर रख दिया, बाँहे उस्तेन्का के कन्धे पर डाल दी, और उसकी आँखें बन्द कर दी। "आज वह अगूर के वाग मे आकर काम करना चाहता था। पिता जी ने भी हाँ कर दी," थोडी देर तक मौन रहने के वाद वह वोली। फिर सो गई।

३१

सूर्य निकल चुका था और उसकी किरणें नाशपाती के वृक्ष की (जिसकी साया में गाडी खडी हुई थी) शाखाओ और उस्तेन्का द्वारा पहियो में खोसी हुई टहनियो में से होकर सोती हुई लडकियो के चेहरो पर पडी। मर्यान्का जग उठी और अपने मुंह पर रूमाल लपेटने लगी। उसने नाशपाती के वृक्ष के उस ओर देखा और अपने किरायेदार को पिता से बाते करते पाया। उसकी बन्दूक उसके कन्धे पर रखी थी। उसने उस्तेन्का को चिकोटी भरी और मुस्कराते हुए उसकी ओर इशारा किया।

"मैं कल गया था, लेकिन कुछ भी हाथ न लगा," ओलेनिन बोला। वह बेचैन-सा इधर-उधर देख रहा था। शाखाओ में से वह मर्यान्का को न देख सका।

"तुम्हें उधर, उस दिशा में जाना चाहिए। वहाँ एक अगूर का बाग है जो काम में नही आ रहा है। कहते है कि वह ऊसर जमीन है। वहाँ हमेशा खरगोश मिला करते हैं," बातचीत का ढग बदलते हुए कार्नेट बोला।

"ऐसे काम के मौको पर खरगोश की तलाश में मारे मारे फिरना कितना अच्छा लगेगा! अरे भाई यही क्यो न रहो और लडकियो के साथ काम करके हमारी मदद करो," बूढी मस्ती में आकर बोली, "अरी छोकरियो, उठो, चलो काम पर जुट जाओ," वह वही से चिल्लाई।

मर्यान्का और उस्तेन्का गाडी के नीचे बैठी कानाफूसी कर रही थीं। उनकी हँसी रोके न रुक रही थी।

चूँकि इस समय तक यह बात अच्छी तरह फैल चुकी थी कि

ओलेनिन ने लुकाश्का को पचास रूवल का घोडा मुफ्त दे दिया है, इसलिए उसके मेज़वानो ने उसके प्रति और भी सौजन्य प्रदर्शित करना आरम्भ कर दिया। कार्नेट यह देखकर वडा खुश हुआ कि उसकी पुत्री की दोस्ती ओलेनिन से वढती जा रही है।

"लेकिन मुझे यह तो मालूम ही नही कि ये सव काम किये कैसे है?" ओलेनिन ने उत्तर दिया। उसने हरी शाखाओ में से उस गाडी के नीचे देखने का प्रयत्न नही किया, जहाँ उसे मर्यान्का की नीली फ्राक और लाल रूमाल की झलक मिल गई थी।

"आओ, तुम्हे कुछ आडू दूंगी," वूढी वोली।

"अतिथि-सत्कार कज्ज़ाको की पुरानी प्रथा है। मेरी वुढिया कुछ वेवकूफ-सी है," कार्नेट ने कहा। वह अपनी पत्नी के शव्दो का अर्थ समझाने और साथ ही उन्हे शुद्ध रूप देने का प्रयत्न कर रहा था। "मैं समझता हूँ रूस में आप लोग आडू नही शायद अनन्नास का जैम या मुरव्वा ही पसन्द करते होगे।"

"तो तुम्हारा कहना है कि खरगोश अगूर के उस वाग में मिलेगे जो इस्तेमाल में नही आ रहा है?" ओलेनिन ने पूछा, "मै वहाँ जाऊँगा।" और हरी शाखाओ पर एक सरसरी नज़र डालते हुए उसने अपनी टोपी उठाई तथा अगूर की हरी हरी लताओ में होता हुआ आँखो से ओझल हो गया।

जिस समय ओलेनिन अपने मेज़वान के वाग में लौटा, उस समय सूर्य वाग़ के वाडे के पीछे डूवता हुआ दिखाई पड रहा था और उसकी हल्की किरणें हरी हरी पत्तियो पर पड रही थी। हवा कम हो गई थी और चारो ओर ताज़गी ही ताज़गी दिखाई दे रही थी। ओलेनिन ने दूर से ही अगूर की लताओ के वीच खडी हुई मर्यान्का की नीली फ्राक देखी, और रास्ते में अगूर चुनता चुनता उसके पास तक पहुँच गया। उसका

थका-मांदा कुत्ता आगे आगे जा रहा था और नीचे लटकते हुए अगूर के गुच्छे तोड तोडकर मंह में रख रहा था। मर्यान्का काम में व्यस्त थी और जल्दी जल्दी वड़े गुच्छो को काट काटकर एक टोकरी में भरती जा रही थी। उसकी आस्तीने मुडी हुई थी और रूमाल खिसककर ठुड्डी के नीचे आ गया था। जिस लता को वह पकडे थी उसे छोडे विना वह वही रुक गई और कुछ मुस्कराकर फिर अपने काम में लग गई। ओलेनिन और भी निकट आ गया। अव उसने वन्दूक पीठ पर डाल ली ताकि हाथ खाली हो जाय। "दूसरे लोग कहाँ हैं? ईश्वर तुम्हारी सहायता करे! अकेली हो क्या?" उसने कहना चाहा लेकिन कहा नही और चुपचाप अपनी टोपी कुछ ऊपर उठा दी। मर्यान्का के सामने अकेले पडने पर उसे कुछ उलझन-सी होने लगती, लेकिन फिर भी जैसे जान-वूझकर अपने को जलाने के लिए वह उसके पास तक चला ही आया।

"इस तरह वन्दूक डालकर तो तुम औरतो पर गोली ही चला दोगे," मर्यान्का वोली।

"नही, मैं उन्हे गोली से नहीं उडाऊँगा।"

दोनो चुप हो गये, लेकिन एक ही क्षण वाद वह फिर कहने लगी, "तुम्हें मेरी मदद करनी चाहिए।"

उसने अपना चाकू निकाला और चुपचाप गुच्छे काटने लगा। पत्तियो के नीचे हाथ डालते हुए उसने एक वडा-सा गुच्छा काट लिया। गुच्छे का वजन लगभग तीन पौंड था। इसके अगूर इतने पास पास थे कि जगह न होने के कारण एक दूसरे को पिचकाए दे रहे थे। उसने गुच्छा मर्यान्का को दिखाया।

"ये सव काट लिये जायें क्या? गुच्छा वहुत कच्चा तो नही?"

"मुझे दीजिये।"

दोनो के हाथो ने एक दूसरे का स्पर्श किया। ओलेनिन न उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और वह मुस्कराती हुई उसकी ओर देखती रही।

"क्या जल्दी ही तुम्हारी शादी होनेवाली है?"

मर्यान्का ने कोई जवाव न दिया और चुपचाप विना मुस्कराए एक ओर घूम गई।

"तुम लुकाश्का से प्रेम करती हो?"

"आप से मतलब?"

"मैं ईर्ष्या करता हूँ।"

"ज़रूर करते होगे!"

"नही, सचमुच तुम बहुत सुन्दर हो!" और एकाएक उसे अपने कहे हुए शब्दो पर पश्चात्ताप हुआ। उसे ऐसा लगा कि वे उपयुक्त नही थे। वह कुछ लज्जित हुआ। शायद उसका मन उसके बस में न रह गया था। उसने उसके दोनो हाथ पकड लिये।

"मै जैसी भी हूँ, तुम्हारे लिए नही हूँ। क्यो मेरा मज़ाक उडाते हो?" मर्यान्का बोली। लेकिन उसकी आँखो से पता चलता था कि वह अच्छी तरह समझ रही है कि ओलेनिन उसका मज़ाक नही उडा रहा है।

"मज़ाक उडाना? अगर तुम यही जानती होती कि मै कैसे ..."

ये शब्द भी उसे जच नही रहे थे, क्योकि जो कुछ वह अनुभव कर रहा था उसे वे ठीक ठीक व्यक्त नही कर पा रहे थे। फिर भी वह कहता ही गया। "मै नही जानता कि मैने तुम्हारे लिए क्या न किया होता ..."

"मुझे अकेली छोड दो!" परन्तु उसका चेहरा, उसकी चमकती हुई आँखें, उसके उभरते हुए उरोज, और उसकी सुडौल जघाएँ कुछ दूसरी ही वात कह रही थी। ओलेनिन को ऐसा लगा कि जो कुछ मैंने कहा है वह कितनी तुच्छ वात है। लेकिन वह तो इनसे परे थी। वह वहुत पहले से ही जानती थी कि मैं क्या कहना चाहता हूँ। फिर भी मै उससे कहने में असमर्थ था। हाँ, वह सुनना चाहती थी कि मै उससे यह सारी वाते कैसे कहूँगा। "चूंकि मै उससे सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि वह क्या है क्या नही, इसलिए वह जान तो जरूर लेगी? परन्तु वह समझना नही चाहती, जवाव देना नही चाहती," उसने सोचा।

"हलो!" लताओ के पीछे से उस्तेन्का की तेज़ आवाज़ सुनाई दी और फिर उसकी मवुर हँसी।

"आइये और मेरी मदद कीजिये, दिमीत्री अन्द्रेइच। मै विल्कुल अकेली हूँ," अगूर की लताओ में अपना सिर डालते हुए वह वोली।

ओलेनिन ने कोई उत्तर न दिया, और न वह अपनी जगह से ही हिला।

मर्यान्का गुच्छे काटती गई परन्तु वरावर ओलेनिन की ओर देखती रही। वह कुछ कहना चाहता था, मगर रुक गया। उसने अपने कन्धे उचकाये, वन्दूक की पेटी सभाली और तेज़ी से वाग के वाहर निकल गया।

३२

वह दो एक वार रुका और उसे मर्यान्का तथा उस्तेन्का की गूंजती हुई हँसी सुनाई दी। दोनो ही इस समय साथ साथ किसी वात पर हँस रही थीं, चीख-चिल्ला रही थी। ओलेनिन ने सारी शाम जगल में

शिकार खेलते खेलते विताई। झुटपुटा होते होते वह खाली हाथ घर लौटा। जैसे ही उसने अहाता पार किया कि उसे वाहरी कमरे का दरवाज़ा खुला हुआ दिखाई दिया। उसने वहाँ नीली फ्राक की झलक फिर देखी। उसने ज़ोरो से वन्यूशा को आवाज़ दी ताकि दूसरो को भी मालूम हो जाय कि वह आ गया है और फिर दालान में उस जगह जाकर जम गया जहाँ हमेशा वैठा करता था। उसके मेज़वान अगूर के वाग से वापस आ चुके थे और अपने घर में चले गये थे। हाँ उन्होंने ओलेनिन को ज़रूर नही वुलाया था। मर्यान्का दो वार फाटक से वाहर भी गई थी। एक वार झुटपुटे में तो उसे ऐसा लगा कि वह उसकी ओर देख रही है। उत्सुक नेत्रो से वह उसकी प्रत्येक गतिविधि देखता रहा परन्तु उस तक पहुँच जाने का निश्चय न कर सका। जव वह घर के भीतर चली गई तो ओलेनिन भी अहाते में इधर-उधर चहलकदमी करने लगा। उसके कान अपने मेज़वान के घर से आती हुई प्रत्येक आवाज़ सुनने में लगे हुए थे। उसने शाम के समय मेज़वानो को वातचीत करते, खाना खाते, विस्तर निकालते और सोने के लिए जाते हुए सुना। उसने मर्यान्का को किसी वात पर हँसते सुना और फिर धीरे धीरे सव कुछ शान्त हो गया।

कार्नेट और उसकी पत्नी थोडी देर तक फुसफुसाती रही और किसी के साँस लेने की आवाज़ सुनाई देती रही। ओलेनिन अपने घर वापस गया और देखा कि वन्यूशा कपडे पहने ही सो गया है। ओलेनिन को उसपर ईर्ष्या हो रही थी। वह फिर अहाते में चहलकदमी के लिए निकल गया। वह वहाँ किसी आशा में गया था, परन्तु न कोई आया, न कोई हिला-डुला। उसे केवल तीन व्यक्तियो की चलती हुई साँसे सुनाई दे रही थी। वह मर्यान्का की साँस तक से परिचित हो चुका था और उसे तथा अपने धडकते हुए हृदय को वरावर सुनता जा रहा था।

गाँव में सब कुछ शान्त था। चन्द्रमा देर से निकला था। जब उसकी चाँदनी में गहरी साँस लेते हुए पशु धीरे से उठ खडे होते या बैठते तो उन्हें भली भाँति देखा जा सकता था। "मैं यहाँ क्या चाहता हूँ?" ओलेनिन ने क्रोध में आकर मन ही मन प्रश्न किया परन्तु फिर भी वह रात्रि की मोहकता के प्रति आँखें न बन्द कर सका। सहसा उसे लगा कि उसने अपने मेज़बान के घर का फर्श चरमराते हुए सुना और किसी के पैरो की आहट उसके कानो में पडी। वह दरवाज़े की ओर दौडा। आवाज़ बन्द हो चुकी थी। अब फिर वही साँसे सुनाई पड रही थीं। अहाते में भैंस कुडमुडाई, उसने अपने पैर फटकारे, पूँछ समेटी और सूखी मटमैली ज़मीन पर धप्प से आकर कुछ गिर पडा। अब वह चाँदनी रात में फिर लेट गई। ओलेनिन ने सोचा, "मुझे क्या करना चाहिये?" और जाकर सो रहने का निश्चय किया। लेकिन उसने फिर आवाज़ें सुनी और उसकी कल्पना के समक्ष चाँदनी रात में आती हुई मर्यान्का का चित्र घूम गया। वह एक बार फिर उसकी खिडकी के पास दौडा गया और फिर उसे पैर की चापो की आवाज़ सुनाई दी। तडका होने से कुछ ही पहले वह उसकी खिडकी के पास फिर गया, सिटकिनी दबाई और दरवाज़े तक पहुँच गया, लेकिन इस बार उसे सचमुच मर्यान्का के पैरो की आहट सुन पडी। उसने सिटकिनी पकडी और दरवाज़ा खटखटाया। कोई चुपचाप दरवाज़े की ओर बढ रहा था—शायद नगे पैर, धीरे धीरे। सिटकिनी चट्ट से बोली, दरवाज़ा चरमराया और उसकी नाक में सुगधित कुठार और कद्दू की हल्की सुगधि भर गई। मर्यान्का दरवाज़े के पास आती हुई दिखाई दी। उसने उसे चाँदनी रात में केवल एक क्षण के लिए ही देखा था। उसने आकर दरवाज़ा बन्द कर लिया और उल्टे पाँव लौट गई। ओलेनिन धीरे धीरे खटखटाता रहा परन्तु उसे कोई उत्तर न मिला। वह खिडकी तक

दौडा गया और कान लगाकर सुनने लगा। सहसा वह किसी आदमी की तेज़ आवाज़ सुनकर चौक पडा।

"बहुत अच्छे!" सफेद टोपी पहने हुए एक कज़्ज़ाक बोला। वह अहाता पार करके ओलेनिन के पास आ चुका था। "मैंने सब कुछ देख लिया है   बहुत अच्छे!"

ओलेनिन ने नज़ारका को पहचान लिया और चुप हो गया। उसे समझ में ही न आ रहा था कि क्या करे, क्या कहे।

"बहुत अच्छे! मै जाऊँगा और दफ्तरवालो से कहूँगा। और उसके बाप से भी बता दूँगा। वह एक अच्छे कार्नेट की बेटी है। किसी ऐरे-ग़ैरे के लिए नही।"

"तुम मुझसे क्या चाहते हो, क्यो मेरे पीछे पडे हो?" ओलेनिन बोला।

"कुछ नही! जो कुछ मुझे कहना है दफ्तर में कहूँगा।"

नज़ारका ज़ोर ज़ोर से बोल रहा था और ऐसा वह जान-बूझकर कर रहा था। उसने यह भी तुर्रा कसा, "बड़े चतुर कैडेट हो, ओ हो।"

"वात कुछ भी नही हुई फिर भी दोष मेरा ही था। इसीलिए तुम्हें यह दे रहा हूँ। भगवान के लिए यह वात किसी को न मालूम हो, क्योंकि कोई भी वात नही हुई "

"जियो प्यारे," हँसते हुए नज़ारका वोला और वहाँ से खिसक गया।

उस रात नज़ारका लुकाश्का के कहने से गाँव में आया था। उसे एक चोरी का घोडा रखने के लिए कही कोई जगह खोजनी थी। घर जाते समय वह इसी रास्ते से होकर गुज़रा था कि उसे किसी के पैरो की चाप सुनाई दी थी। जव वह अगले दिन लौटकर अपनी कम्पनी में आया तो उसने अपने दोस्त से डीग मारते हुए कहा कि देखो किस चालाकी से दस रूवल ऐंठ लाया हूँ।

अगले दिन प्रातःकाल ओलेनिन अपने मेज़वानो से मिला। उन्हे रात की घटना का कोई भी हाल न मालूम था। वह मर्यान्का से नही वोला। लेकिन जव उसने ओलेनिन को देखा तो थोडा हँस ज़रूर दी। अगली रात भी ओलेनिन ने विना सोये काट दी और अहाते में इधर-उधर वेकार घूमता रहा। दूसरा दिन उसने किसी प्रकार शिकार में विताया और शाम के समय मन वहलाने के लिए वेलेत्स्की के यहाँ चला गया। उसे स्वय अपनी ही अनुभूतियो से डर लगा रहा था, इसलिए उसने मन ही मन निश्चय कर डाला कि अव से अपने मेज़वान के घर न जाऊगा।

अगले दिन रात को सार्जेन्ट-मेजर ने आकर उसे जगाया। उसकी कम्पनी को तुरन्त हमला करने के लिए चल पडने के आदेश हुए थे।

ओलेनिन प्रसन्न था कि शीघ्र ही उसे चल देना होगा। उसने सोच लिया था कि अव फिर वह गाँव कभी न लौटेगा।

आक्रमण चार दिनो तक चलता रहा। कमाडर ओलेनिन का सम्वन्धी था। उसने ओलेनिन से मिलने की इच्छा प्रकट की और उसे प्रवान कार्यालय में सहकारियो के साथ रखने का प्रस्ताव किया, परन्तु इसे

ओलेनिन ने अस्वीकार कर दिया। उसने अनुभव किया कि वह गाँव से दूर नही रह सकता और इसीलिए उसने अपने वापस भेज दिये जाने का अनुरोध किया। आक्रमण में भाग लेने के कारण उसे सैनिक पदक मिला था जिसे प्राप्त करने की उसे वडी लालसा थी। अव वह पदक के प्रति भी उदासीन था और अपनी तरक्क़ी के प्रति भी। तरक्की के आदेश उसे अभी तक प्राप्त नही हुए थे, हाँ होनेवाले ज़रूर थे।

वन्यूशा को साथ लेकर वह कम्पनी के आने के कई घण्ट पहले ही वापस घेरे में चला आया। रास्ते में कोई दुर्घटना नही हुई। सारी शाम उसने दालान में वैठे वैठे मर्यान्का को देखते रहने में ही विता दी और फिर निरुद्देश्य सारी रात अहाते में चहलकदमी करता रहा।

३२

जव वह दूसरे दिन जागा तो काफी देर हो चुकी थी। उसके मेज़वान घर पर न थे। वह शिकार खेलने भी न गया। उसने एक पुस्तक उठाई और दालान में चला गया, मगर थोडी ही देर वाद फिर घर के भीतर पलग पर पड रहा। वन्यूशा ने सोचा मालिक वीमार हैं।

शाम होते होते वह उठ गया। उसने लिखने का दृढ निश्चय कर लिया था और देर तक लिखता ही रहा। उसने एक पत्र लिखा परन्तु उसे डाक में नही डाला क्योंकि उसने समझा कि जो कुछ वह कहना चाहता है उसे कोई समझ न सकेगा। और फिर यह कोई ज़रूरी न था कि उसके अलावा दूसरे उसे समझें ही।

पत्र इस प्रकार था—

"रूस से मुझे समवेदना-पत्र मिला करते है। लोग डरते हैं कि मैं मर जाऊँगा और इन्ही जगलो में कही दफना दिया जाऊँगा। मेरे वारे में वे कहते है 'वह रूखे स्वभाव का हो जायेगा, हर वात में जमाने से दो कदम पीछे रहेगा, पीना शुरू कर देगा और कौन जाने कि किसी कज्जाक लडकी से व्याह ही कर ले!' जनरल येरमोलोव की यह घोषणा निरुद्देश्य नही थी कि 'दस साल तक काकेशिया में काम करने-वाला कोई भी व्यक्ति या तो इतनी पीने लगता है कि मर ही जाता है या किसी दुश्चरित्रा से शादी कर लेता है।' कितनी भयानक वात है! सचमुच जव मैं काउण्टेस व   का पति वन सकता हूँ, कोर्ट चैम्वरलेन वन सकता हूँ या अपने जिले के मरेशाल दे नोवलेस वन सकता हूँ और जिन्दगी के मजे लूट सकता हूँ तो अपने को तवाह कर डालना मेरे लिए उचित नही। ओफ, आप सब मुझे कितने उपेक्षणीय और दयनीय दीख पडते हैं। मुझे आप पर तरस आता है। आप नही जानते कि जिन्दगी क्या है, जिन्दगी का आनन्द क्या है! जरूरी तो यह है कि एक वार आप भी जीवन के समस्त प्राकृतिक सौन्दर्य का अनुभव करे! आप भी वही देखें जो मै देखता हूँ—हिमावृत अगम्य पर्वत शिखर, और प्रागैतिहासिक सुन्दरता से ओतप्रोत एक गरिमा-मण्डित महिला, जिसमें विश्वनियता ने स्त्री के रूप में अपनी प्रथम रचना प्रस्तुत की होगी। यह अनुभव हो जाने के वाद ही पता चलेगा कि कौन अपने को वर्वाद कर रहा है, कौन वास्तविक या मिथ्या जीवन व्यतीत कर रहा है—आप या मैं? काश आप जान पाते कि आप अपनी भ्रान्तियो में कितने घृणित और कितने दयनीय हैं। जव मैं अपनी इस झोपडी, अपने प्रेम-व्यापार और अपने वन-उपवन के स्थान पर उन सजी-सजायी वैठको, अगरागयुक्त कृत्रिम घुघराले वालोवाली उन तितलियो की कल्पना करता हूँ, जिनके ओठ तक रगे होते हैं, जिनके अग-प्रत्यग कमजोर होते हैं, कुरूप होते है, वनावटी होते हैं,

ग्रौर कल्पना करता हूँ बैठको की उन 'सम्यतासूचक अनिवार्य वातचीतो' की जो किसी 'नाम' तक की अधिकारिणी नही है, तो मैं सहम उठता हूँ, और मेरे भीतर इन सबके प्रति विद्रोह की भावना उभर आती है। और जब मैं उन चौडे और स्थूल मुखमण्डलवाली धनी सुन्दरियो का ध्यान करता हूँ जिनकी दृष्टि यह कहती हुई सुनाई पडती है कि 'ठीक है अमीर हूँ सही पर तुम मेरे पास आओ, और पास आओ'—और फिर बार बार एक ही सीट पर पहले एक तरह फिर दूसरी तरह बैठना, फुदकना, बेशर्मी के साथ जोड-तोड बिठाना, बेकार की गपशप, बनना-बिगडना और फिर वे कायदे-कानून—किसके साथ हाथ मिलाना चाहिए, किसे देखकर केवल सिर हिलाना चाहिए, किससे सिर्फ बातचीत करना चाहिए (और यह सब जान-बूझकर और इस विश्वास के साथ किया जाता है कि यह सब जरूरी है), पीढियो दर पीढियो से लगातार खून के साथ चली आती हुई उबास और थकावट उफ मेरा तो दम घुटने जाता है। यदि आप लोग सिर्फ एक ही बात समझने और विश्वास करने की कोशिश करे और वह यह कि सत्य क्या है, सौन्दर्य क्या है तो इस समय आप जो कुछ कहते हैं या सोचते हैं और मेरे बारे में आप जो धारणाएँ निश्चित करते है वे सब धूल में मिल जायेंगी।

"सच्चा आनन्द क्या है—प्रकृति के साथ रहो, नेत्रो से उसका पान करो और उससे बाते करो। मैं लोगो को यह कल्पना करते सोच सकता हूँ कि 'वह एक साधारण कज्ज़ाक औरत से विवाह कर सकता है (भगवान न करे कि ऐसा हो) और फिर सामाजिक दृष्टि से खो जा सकता है।' मै कल्पना कर सकता हूँ कि वे मेरे बारे मे पूरी ईमानदारी और सहानुभूति के साथ सोचते विचारते है। फिर भी मैं आपके अर्थ में सचमुच 'खो जाना' चाहता हूँ। मैं कज्ज़ाक स्त्री से विवाह अवश्य

करना चाहता हूँ पर मुझमें वैसी हिम्मत नही क्योंकि वह परमानन्द की ऐसी अवस्था होगी जिसका मैं पात्र भी नही हूँ।

"तीन महीने पूर्व मैंने एक कज्ज़ाक स्त्री मर्यान्का को पहले पहल देखा था। उस समय मेरे दिमाग में उस दुनिया के विचार और पूर्वद्वेष ताज़े थे जिसे मैं छोड़ चुका था। उस समय मैं यह सोच भी नही सकता था कि मै इस स्त्री को कभी प्यार भी कर सकता हूँ। मुझे उसका सौन्दर्य देखकर प्रसन्नता होती थी, सन्तोष होता था ठीक वैसा ही जैसा यहाँ के पर्वत-शिखरो और आसमान को देखकर होता है क्योंकि वह भी इनके समान ही सुन्दर है। मैंने यह अनुभव किया कि उसके सौन्दर्य की एक झलक मेरे जीवन की आवश्यकता बन गई और मैं अपने से यह प्रश्न करने लगा कि क्या मैं उसे प्यार नही करता? परन्तु मुझे अपने में उस प्रेम जैसी कोई चीज़ न दिखाई दी जिसकी मैंने कल्पना की थी। मेरे प्रेम का प्रादुर्भाव एकाकीपन की व्यग्रता, अथवा विवाहाकाक्षा अथवा निष्कामता के कारण नही हुआ था और न वह इन्द्रियोपभोग के लिए ही था। मैं उसकी बाते सुनता रहना चाहता हूँ और यह अनुभव करता रहना चाहता हूँ कि वह मेरे बिल्कुल पास है और यदि मैं प्रसन्न न भी रहूँ तो भी कम से कम मुझे शान्ति तो मिलती है।

"एक दिन शाम की बैठक के समय जब मै उससे मिला था और मैंने उसका स्पर्श किया था उस समय मुझे लगा था कि मेरे और उस स्त्री के बीच एक ऐसा अकाट्य बधन है जिसे मै तोड नही सकता, जिसके विरुद्ध कोई सघर्ष नही किया जा सकता। फिर भी मैंने सघर्ष किया। मैंने अपने आपसे प्रश्न किया, 'क्या किसी ऐसी स्त्री से प्यार करना सम्भव है जो कभी भी मेरे हितो को न समझ सकेगी? क्या केवल सुन्दरता के लिये किसी स्त्री को, किसी मूर्ति को, प्यार करना सम्भव है?' किन्तु मै उससे प्रेम करने लगा था यद्यपि मुझे अभी तक अपनी अनुभूतियों पर विश्वास न था।

"उस सायकाल के पश्चात्, जब मैंने पहले पहल उससे बातचीत की थी, हमारे सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ था। उसके पहले वह मेरे लिए बाह्य प्रकृति की दूरस्थ अपितु गरिमामयी वस्तु थी। परन्तु उसके बाद से उसने मानव का रूप धारण कर लिया। मैं उनसे मिलने लगा, उससे बातचीत करने लगा, कभी कभी उसके पिता के लिए काम करने लगा और उन लोगो के साथ सारी की सारी शामें बिताने लगा। और इस निकट के सम्पर्क में भी वह मेरी नज़रों में शुद्ध, अप्राप्य और महिमा-मण्डित ही बनी रही। मेरे प्रति उसका बर्ताव सदैव शान्त और मधुर उपेक्षा का बना रहा। कभी कभी वह मित्रवत् व्यवहार करती, परन्तु सामान्यतया उसकी प्रत्येक दृष्टि, प्रत्येक शब्द और प्रत्येक गति से इस उपेक्षा का परिचय मिलता, तिरस्कार या घृणा का नही। उसका व्यवहार ऐसा था कि मैं मंत्रमुग्ध रह जाता। प्रत्येक दिन अपने ओठो पर कृत्रिम मुस्कान लेकर मैं अपना पार्ट अदा करता और हृदय में कामनाओ और आकाक्षाओ का तूफान लिये उससे हँसी-मज़ाक़ के लहजे में बाते करता। उसने देखा कि मैं विचलित हो रहा हूँ, परन्तु फिर भी वह मुझे सदय और प्रफुल्ल दृष्टि से ही देखती। यह स्थिति भी असह्य हो उठी। मैं उसे धोखा नही देना चाहता था परन्तु यह बता देना चाहता था कि उसके बारे में मैं क्या समझता हूँ, क्या अनुभव करता हूँ। उस समय मैं बहुत अस्थिर और अशान्त हो गया था। हम लोग अगूर के बाग़ में थे जब मैंने उससे उन शब्दो में अपना प्रेम प्रकट करना शुरू किया जिन्हे याद कर अब मुझे शर्म आती है। मुझे शर्म इसलिए आती है कि मुझे उससे इस प्रकार बात नही करनी चाहिए थी क्योकि उसका स्थान इन शब्दो और उनसे व्यक्त होने वाली अनुभूतियो से कही ऊपर था। मैं चुप तो रह गया परन्तु उस दिन से मेरी स्थिति बडी असह्य हो उठी। मैं नही चाहता था कि अपने क्षुद्र सम्बन्ध बराबर क़ायम रखते हुए मैं स्वय अपना

अनादर करूँ। साथ ही मैंने यह भी अनुभव कर लिया था कि मैं अभी तक उसके साथ सीधे और सरल सम्बन्ध नही स्थापित कर सका। निराश होकर मैंने अपने से प्रश्न किया, 'मुझे क्या करना चाहिए?' अपने मूर्खतापूर्ण स्वप्नो में कभी मै उसे अपनी स्वामिनी और कभी पत्नी मान बैठता। परन्तु मैंन ये दोनो ही विचार छोड दिये। उसे विलासिनी बनाना मेरी कल्पना से परे था। यह तो उसकी हत्या हुई, हत्या। और उसे एक अच्छी महिला, दिमीत्री अन्द्रेयेविच ओलेनिन की पत्नी का–उस कज्जाक स्त्री की भाँति जिसने हमारे ही एक अफसर के साथ विवाह कर लिया है–रूप देना तो और भी बुरा है। और क्या मैं लुकाश्का की तरह का कज्जाक बन जाऊँ, घोडे चुराया करूँ, चिखीर पीकर नशे में भद्दे भद्दे गीत गाया करूँ, लोगो को मौत के घाट उतारा करूँ और नशे में चूर उसकी खिडकी में से भीतर घुसकर रात भर ऐश किया करूँ बिना यह सोचे-विचारे कि मै कौन हूँ, क्या हूँ; तब तो बात ही और है। तब हम एक दूसरे को समझ सकेगे और शायद तब मुझे खुशी होगी।

"मैंने उस तरह का जीवन बिताने का भी प्रयत्न किया परन्तु मुझे सदा अपनी कमजोरियो और कृत्रिमता का ध्यान बना रहता। उस समय न मै अपने को ही भूल सका न अपने विकृत विगत जीवन को ही। भविष्य तो मुझे और भी नैराश्यपूर्ण लगता है। प्रति दिन मै दूर तक फैले हुए हिमावृत पहाडो और इस महिमामयी और प्रसन्नचित्त स्त्री को देखता हूँ परन्तु दुनिया में केवल मेरे लिए ही खुशी सम्भव नहीं। मैं इस स्त्री को नहीं पा सकता। सब से भयानक और सब से विचित्र बात तो यह है कि मैं अनुभव करता हूँ कि मैं उसे समझता हूँ, लेकिन वह मुझे कभी नही समझेगी इसलिए नही कि वह मुझसे हीन है, उल्टे, उसे मुझे समझना भी न चाहिए। वह सुखी है, वह प्रकृति के समान है–

समरूप, स्थिर, आत्मभरित। और मैं, एक कमज़ोर और कुरूप व्यक्ति, चाहता हूँ कि वह मेरी कुरूपता, मेरी पीडाएँ समझे। मैं रात रात भर नही सोया हूँ लेकिन उसकी खिडकी के नीचे निरुद्देश्य बैठे बैठे राते जरूर बिताई हैं। मुझे क्या हो रहा था यह मै स्वय भी नही जानता।

"१८ तारीख को हमारी कम्पनी ने एक आक्रमण के लिए कूच किया और मुझे गाँव से बाहर तीन दिन बिताने पडे। मै दुखी था, निरुत्साह था। उस समय मुझे वहाँ के गाने, ताश, शराब के दौर, और रेजीमेंट में पुरस्कारो की बातचीत आदि भी अप्रिय लगती थी। कल मैं घर लौट आया हूँ, और मैंने उसे, अपने घर को, चचा येरोश्का को और सामने फैले हुए हिमावृत शिखरो को फिर से देखा है। मुझे हर्ष की इतनी अधिक अनुभूति हुई कि मैंने बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर लिया। मैं इस स्त्री को प्यार करता हूँ और यह अनुभव करता हूँ कि एक बार सिर्फ एक बार मैंने अपने जीवन में सच्चा प्रेम किया है। मैं जानता हूँ कि मुझ पर क्या क्या बीत चुकी है। इस अनुभूति से अनादृत होने का भी मुझे भय नही। मुझे अपने प्रेम पर शर्म नही आती, गर्व होता है। मैं प्यार करता हूँ यह मेरा दोष नही। यह तो मेरी इच्छा के विरुद्ध हुआ है। मैंने आत्म-परित्याग द्वारा इस प्रेम से छुटकारा पाना चाहा था और कज्जाक लुकाश्का और मर्यान्का के प्रेम से ही खुश होने का उपक्रम किया था, परन्तु इससे मेरा प्रेम, मेरी ईर्ष्या ही भडकी। यह वह आदर्श, वह तथाकथित उदार प्रेम नही जिसकी मैंने बहुत पहले कल्पना की थी, यह उस प्रकार का बंधन नहीं जिसमें आप अपने ही प्रेम की प्रशसा करते हैं और यह अनुभव करते हैं कि आपकी भावना का स्रोत स्वय आपके भीतर है, और इसीलिए आप स्वय ही सब कुछ करते हैं। मैंने उसका भी अनुभव किया है। वह आनन्दोपभोग की इच्छा नही, कुछ दूसरी ही चीज़ है। शायद उसके रूप में मै प्रकृति से प्रेम करता हूँ

क्योकि वह उस सवकी साकार प्रतिमा है जिसे प्रकृति का सौन्दर्य कहते हैं। फिर भी मैं स्वत अपनी इच्छा से काम नही करता, कोई तात्विक शक्ति मेरे माध्यम से प्रेम करती है। ईश्वर की समस्त रचना, सारी की सारी प्रकृति मेरी आत्मा में इस प्रेम की सृष्टि करती है और कहती है, 'उसे प्यार करो'। और मैं अपने मस्तिष्क से नही अपनी कल्पना से नही, अपने सम्पूर्ण अस्तित्व से उसे प्यार करता हूँ। उसे प्यार करते हुए मुझे लगता है कि मैं उस परमपिता द्वारा सृजित विश्व के आनन्दरूप का एक आवश्यक अश हूँ।

"मैं उन नवीन विश्वासो के वारे में पहले लिख चुका हूँ जिन्होंने मेरे एकाकी जीवन में प्रवेश किया था। परन्तु कोई नहीं जानता कि उन्होंने मेरे अन्तस् में जो रूप स्थिर किया वह कैसे किया और उनका अनुभव करने में मुझे कितनी प्रसन्नता हुई। मैंने अपने सामने जीवन का एक नया द्वार खुलते हुए देखा। इन विश्वासो से वढकर मुझे कोई भी चीज़ प्यारी न थी। और अव अव प्रेम का पदार्पण हुआ है और इस समय न तो वे विश्वास ही रह गये हैं और न उनके लिए पश्चात्ताप ही।

"मेरे लिए यह यकीन करना कठिन है कि मैं इस एकागी, निरुत्साहित और भावुक मानसिक स्थिति का मूल्याकन कर सका था। सौन्दर्य के प्रादुर्भाव के साथ ही साथ अन्तम् में उठनेवाले द्वन्द्वो का भी समूल नाश हुआ और जो कुछ लोप हो चुका है उसके लिए मुझे अव कोई पश्चात्ताप नही रह गया। आत्म-परित्याग ढकोसला है, वेवकूफी है। यह एक गर्व है, विपाद से वचने का आश्रय-स्थल और दूसरो की प्रसन्नता पर होनेवाली ईर्ष्या से मुक्ति पाने का मार्ग। 'दूसरो के लिए जियो, उपकार करो,'—क्यो?—जव मेरी आत्मा में सिर्फ अपने लिए प्रेम है और उससे प्रेम करने की आकाक्षा है और उसके साथ उसी का जीवन

बसर करने की उत्कठा है। अब मुझे आनन्दोपभोग की इच्छा है लुकाश्का के लिए नही, दूसरो के लिए भी नही। मै उन दूसरो को प्यार नही करता। पहले ही मुझे अपने आपसे कह देना चाहिए था कि यह सब गलत है। मुझे इन प्रश्नो से ही अपनी प्रतारणा करनी चाहिए थी, 'उसका क्या होगा, मेरा क्या होगा, लुकाश्का का क्या होगा?' अब मुझे इन सब की कोई चिन्ता नही। मै स्वत अपनी इच्छा से नही रह रहा हूँ। मेरे अहम् से भी प्रबल कोई दूसरी चीज है जो मुझे रास्ता दिखाती है। मैं अब भी पीडा सहन कर रहा हूँ। पहले मैं मृत था और सिर्फ अब जीवित हूँ। आज मैं उसके घर जाऊँगा और अपना हृदय उसके सामने खोल दूँगा।"

३४

पत्र लिख लेने के बाद, अधिक शाम वीते ओलेनिन अपने मेजबानो के घर गया। बूढी अगीठी के पीछे एक बेंच पर बैठी हुई रेशम के कीडो से धागा उतार रही थी। मर्यान्का का सिर खुला था और वह मोमबत्ती की रोशनी में बैठी सिलाई कर रही थी। ओलेनिन पर निगाह पडते ही वह उछल पडी और रूमाल लेकर अगीठी की तरफ भागी।

"प्यारी मर्यान्का," माँ बोली, "थोडी देर हम लोगो के पास न बैठेगी क्या?"

"नही, मेरा सिर खुला है," उसने जवाब दिया और कूदकर अगीठी की टाँड पर चढ गई।

ओलेनिन को केवल उसका एक घुटना और अगीठी की टाँड से लटकते हुए उसके सुन्दर पैर ही दिखाई पड रहे थे। ओलेनिन ने बूढ़ी को चाय दी और बूढी ने ओलेनिन के लिए मर्यान्का से मलाई लाने को कहा।

मर्यान्का ने एक प्लेट मलाई लाकर मेज़ पर रख दी और फिर अगीठी पर चढकर बैठ गई। अब ओलेनिन को लगा कि वह उसे बराबर देखे ही जा रही है। वे पारिवारिक मामलो के विषय में बातचीत कर रहे थे। श्रीमती उलित्का को अतिथि-सत्कार में आनन्द आ रहा था। वह ओलेनिन के लिए अगूर लाई, अगूर से बने स्वादिष्ट पदार्थ लाई, अच्छी से अच्छी शराब लाई और उससे खाने की ज़िद करने लगी। उसके अतिथि-सत्कार में ग्राम-समाज की वह भावना प्रकट हो रही थी जो केवल उन्ही लोगो में देखने को मिलती है जो स्वय मेहनत करके धनोपार्जन करते और गृहस्थी चलाते हैं।

यही बूढी, जिसने पहले पहल अपने रूखे व्यवहार से ओलेनिन को स्तब्ध कर दिया था, अब उसके साथ उसी मृदुता से व्यवहार करती जैसे कि अपनी पुत्री के साथ किया करती थी।

"हाँ हमें शिकवा-शिकायते करके ईश्वर को अप्रसन्न नहीं करना है। उसकी कृपा से हमारे पास हर चीज़ है, और काफी है। हमने बहुत-सी चिखीर निकाली और रख ली है। अगूर के चार-पाँच कनस्तर बेच लेने के बाद भी हमारे पास पीने भर के लिए बहुत बच रहेगी। कही हमारे पास से जल्दी जाने की कोशिश न करने लगना। शादी के समय हम सब मज़े उडायेंगे।"

"और शादी कब होगी?" ओलेनिन ने पूछा। ऐसा लगता था कि शरीर भर का खून उसके चेहरे पर चढ गया है। उसका हृदय ज़ोरो से धक धक कर रहा था। उसने सुना कि अगीठी पर कोई हिल-डुल रहा है, और फिर बीजफोडने की आवाज़ उसके कान में पडी।

"तुम्हें मालूम नहीं? विवाह अगले हफ्ते ही तो है। हमारा इन्तजाम पूरा है," बूढी ने यह बात इतने धीरे और इतनी सुगमता से कही जैसे ओलेनिन वहाँ हो ही नही, "मैंने मर्यान्का के लिए

गई और येरोश्का ने बूढ़े कज्ज़ाक को वन्यूशा के साथ कर दिया। बूढ़ी ओसारा ठीक करने चली गई। सिर्फ मर्यान्का ही अकेली घर में रह गई। ओलेनिन में ताज़गी आई और उसका जी खिल उठा, मानो वह अभी अभी सोकर जगा हो। उसने सभी चीज़ो पर निगाह दौडाई और जव बुजुर्ग लोग आगे वढ गये तो उसने मुडकर पीछे देखा। मर्यान्का सोने का इन्तज़ाम करने जा रही थी। वह उसके पास तक गया और उसने कुछ कहना चाहा। परन्तु उसकी आवाज़ टूट गई। वह उससे हटकर, अपनी चारपाई के एक कोने में पैर लटकाकर वैठ गई और डरी हुई नज़रो से ओलेनिन की तरफ देखने लगी। ऐसा लग रहा था कि वह ओलेनिन से डर रही है। ओलेनिन को भी ऐसा ही लगा। उसे खेद हुआ और अपने पर शर्म भी आई। परन्तु उसे इस वात का गर्व था और खुशी भी कि उसने मर्यान्का में कम से कम भय की अनुभूति तो पैदा ही कर दी है।

"मर्यान्का!" वह वोला, "क्या तुम मुझपर कभी तरस न खाओगी? मैं तुम्हे नही वता सकता कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ।"

वह थोडा और परे हट गई, कहने लगी, "सुनो, यह तुम नही तुम्हारी शराब बोल रही है तुम मुझसे कुछ भी न पा सकोगे।"

"नही, यह शराब नहीं। लुकाश्का से विवाह न करो। मैं तुमसे विवाह करूँगा मैं क्या वक रहा हूँ?" इन शब्दो के साथ ही साथ उसने विचार किया, "क्या मैं यही बात कल कह सकूँगा? हाँ, कह सकूँगा, मुझ यकीन है कह सकूँगा और अव मैं उसे दुहराऊँगा," अन्तस् की आवाज़ ने कहा।

"क्या तुम मुझसे विवाह करोगी?"

मर्यान्का ने उसकी ओर गम्भीर दृष्टि डाली। अव उसका भय दूर होता जा रहा था।

"मर्यान्का, मैं पागल हो जाऊँगा! मैं अपने आपे में नही हूँ। तुम जो कुछ कहोगी मैं करूँगा।" और इस पागलपन में उसके मुंह से स्वत मधुर शब्दो की वर्षा होने लगी।

"आखिर क्या बकवक किये जा रहे हो?" मर्यान्का ने बात काटते हुए कहा और एकाएक उसका फैलाया हुआ हाथ पकड़ लिया। उसने हाथ को धक्का देकर हटाया तो नहीं परन्तु उसे अपनी मज़बूत और सख्त उगलियो से दबाये रही। "क्या भले आदमी कज्जाक लडकियो से व्याह करते हैं? भाग जाओ!"

"परन्तु क्या तुम करोगी? हर चीज़ "

"और हम लुकाश्का के साथ क्या करेगे?" हँसते हुए वह बोली।

ओलेनिन ने अपना हाथ छुडा लिया और उसके नवल शरीर को अपनी भुजाओ में भर लिया। परन्तु वह मृगशावक की भाँति उछली और नगे पैर दालान की तरफ़ भागी। ओलेनिन को होश आया और अपने पर क्रोध भी। उसे फिर लगा कि वह उसकी तुलना में अधिक नीच है और उसकी यह अधमता ऐसी है जिसे व्यक्त नही किया जा सकता। फिर भी वह जो कुछ कह चुका था उसके लिए एक क्षण के लिए भी पश्चात्ताप न करते हुए वह घर गया और बिना उन बूढो पर निगाह डाले हुए, जो उसके कमरे में बैठे शराब पी रहे थे, बिस्तर पर पड रहा। इस बार उसे जितनी गहरी नींद आई उतनी बहुत दिनों से न आई थी।

३५

दूसरे दिन छुट्टी थी। गांव के प्राय सभी लोग छुट्टियोवाले बुर्राक कपडे पहने सडको पर निकल आये थे। उनके कपडे धूप में चमचमा रहे थे। उस मौसम में पहले मौसमो से ज्यादा शराब खीची गई थी और

लोग अब सख्त मेहनत से विश्राम पा चुके थे। एक महीने में कज्ज़ाको को अभियान-यात्रा पर जाना था। इसलिए बहुत-से परिवारो में शादी विवाह के इन्तज़ाम किये जा रहे थे।

अधिकतर लोग चौक में, कज्ज़ाक गाँव-कार्यालय के सामने, तथा उन दो दूकानो के आगे एकत्र थे जिनमें से एक में मिठाइयाँ तथा कद्दू के बीज बिकते थे और दूसरी में रूमाल तथा छपे हुए वस्त्र। कार्यालय भवन के मिट्टी के चबूतरे पर वृद्ध लोग खडे या बैठे थे जो भूरे या काले रग के ऐसे कोट पहने हुए थे जिनपर न तो सोने का ही काम था और न अन्य किसी प्रकार की सजावट ही। वे लोग नपे-तुले शब्दो मे आपस में अनेक विषयो—फ़सल, नवयुवक, गाँव के मामले, पुराने ज़माने आदि आदि—पर बातचीत कर रहे थे और तरुण पीढी के होनहारो की ओर बडी शान से देख रहे थे। उनके पास से होकर गुज़रते समय स्त्रियाँ और बच्चे एक क्षण के लिए रुक जाते और अपना सिर झुका देते। युवक कज्ज़ाक अपनी चाल धीमी कर देते और चलते चलते सिर से कुछ देर के लिए टोपी ऊपर उठाये रहते। और तब बूढे आपस की बाते बन्द कर देते। कुछ लोग इन गुज़रनेवालो पर तीक्ष्ण दृष्टि डालते, और कुछ सदय, और कुछ उत्तर में अपनी टोपी उठा देते और फिर लगा लेते।

कज्ज़ाक लडकियो ने अभी तक अपने खोरोवोद* नृत्य आरम्भ नही किये थे। अपनी अपनी चमकीली बेशमेतें पहने और आँखो तक सिर को रूमालो से ढके हुए वे टोलियो में या तो ज़मीन पर बैठी थी या घरो के बाहर बने हुए मिट्टी के चबूतरो पर, ऐसे कि उनपर सूर्य की तिरछी

---

* खोरोवोद नृत्य में लडकियाँ मण्डल बनाकर गाती हुई नाचती है—अनु०

किरणें न पडे। वे हँस रही थी और अपनी सुरीली आवाज़ में चटर-पटर कर रही थी। छोटे लडके-लडकियाँ चौक में खेलते हुए गेंद आसमान में उछालते और फिर दौडते हुए चीखते-चिल्लाते। कुछ ज्यादा उम्र की लडकियो ने पहले से ही नाच आरम्भ कर दिया था और अव वे अपनी महीन सुरीली आवाज़ में लजाते हुए गाती जा रही थी। क्लर्क, नौकरी न करनेवाले अथवा उत्सव में घर आये हुए छोकरे सुनहले कामवाले सफेद या लाल चेरकेसियन कोट पहने दो-दो या तीन-तीन की टोली में हाथ में हाथ डाले स्त्रियो या लडकियों की एक टोली से दूसरी टोली में घूम रहे थे और उनसे हँसी-मज़ाक करते हुए कुछ देर के लिए कही रुक भी जाते थे। आरमीनियाई दुकानदार सुन्दर नीले कपडे का सुनहले कामवाला कोट पहने अपनी दुकान के दरवाज़े पर वहाँ खडा था जहाँ से तह किये हुए ढेर के ढेर रूमाल दिखाई पड रहे थे। वह एक पूर्वीय व्यापारी की शान से खड़ा खडा अपने ग्राहको की प्रतीक्षा कर रहा था। लाल दाढीवाले दो नगे पैर चेचेन, जो उत्सव देखने के लिए तेरेक के उस पार से आये हुए थे, एक दोस्त के मकान के वाहर पालथी मारे वैठे थे और अपने छोटे-छोटे हुक्के पीते हुए, ग्रामीणो को देखते ही प्राय थूकने लगते थे या कभी उनसे अपनी भारी आवाज़ में कुछ वातचीत कर लेते थे। कभी कभी कोई सिपाही भी अपना पुराना ओवरकोट पहने इन हँसमुख और अच्छे अच्छे कपडे पहने हुए लोगो की टोली में से होकर निकल जाता था। इधर-उधर उन कज्ज़ाको के गाने भी कान में पड जाया करते थे जो शराव पीकर मस्ती में समय काट रहे थे। सभी घरो में ताले पडे हुए थे, सारी दालाने पिछले दिन ही साफ की जा चुकी थी। वूढ़ी औरतें भी सडक पर निकल आई थी। सारी की सारी सडक कद्दू या खरवूज़ो के वीजो से सजाई गई थी। हवा गर्म और शान्त थी, आसमान साफ़ था

श्रौर उसका रग गहरा हो चला था। छतो के उस पार हल्के सफेद रग के पर्वत-शिखर, जो इस समय विल्कुल नज़दीक दिखाई दे रहे थे, अस्ताचलगामी सूर्य की अरुणिमा से रक्ताभ हो रहे थे। कभी कभी नदी के उस ओर से गोले-बारी की आवाज़ सुनाई दे जाती परन्तु गाँव के ऊपर तो छुट्टियो की मौज-बहार की मिली हुई आवाज़ें ही तैर रही थी।

मर्यान्का की झलक पा जाने के लिए ओलेनिन सारी सुबह अहाते में चहलकदमी करता रहा। और, मर्यान्का बढिया से वढिया कपडे पहने छमछम करती बाहर निकल गई, पहले तो प्रार्थना के लिए गिरजे में गई और फिर मिट्टी के चबूतरे पर आकर लडकियो के साथ उनकी एक टोली में शामिल हो गई। कभी वह वहज वीज फोडती और कभी अपनी सहेलियो के साथ घर की ओर भाग जाती, और प्रत्येक वार ओलेनिन उसे देखता और उसे लगता कि उसकी आँखो में चमक है, दया है। दूसरो के सामने उससे खुलकर वातचीत करने में ओलेनिन को झिझक होती। वह चाहता था कि अपनी वह बात कह डाले जिसका आरम्भ वह पिछली रात को कर चुका था, और फिर मर्यान्का उसे अपना स्पष्ट और निश्चित उत्तर दे। कल शाम की ही तरह उसने फिर प्रतीक्षा की परन्तु उपयुक्त अवसर हाथ न लगा। अव उसे अनुभव हो रहा था कि वह इस अनिश्चित अवस्था में अधिक नही रह सकता। वह फिर सडक पर निकल गई। ओलेनिन भी एक क्षण तक प्रतीक्षा कर चुकने के पश्चात् बाहर चल दिया और बिना यह जाने हुए कि कहाँ जा रहा है उसके पीछे लग गया। वह उस कोने से होकर गुज़रा जहाँ वह अपनी चमकदार नीली वेशमेत पहने बैठी थी। उसने अपने पीछे लडकियो की दिल कचोटनेवाली परिहासात्मक हँसी सुनी।

बेलेत्स्की का मकान चौक से दिखाई पड रहा था। जब ओलेनिन वहाँ से होकर गुज़रा तो उसे बेलेत्स्की की आवाज़ सुनाई दी

"अन्दर आ जाओ" और वह भीतर घुस गया। कुछ बातचीत कर चुकने के बाद दोनो खिडकी के पास बैठ गये। थोडी ही देर में नई बेशमेत पहने चचा येरोश्का भी आ गया और आकर उनके पास ही फर्श पर जम गया।

"वहाँ, वह देखो चुलबुलियो की टोली है," मुस्कराते हुए वेलेत्स्की बोला और कोने में बैठी हुई एक टोली की तरफ अपनी सिगरट से सकेत करने लगा, "मेरी भी वही है। उसे देख रहे हो? लाल कपडो में जो नई बेशमेत पहने है। तुम लोग खोरोवोद क्यो नही शुरू कर देती?" खिडकी में से बाहर झाँकते हुए वह चिल्लाया। "थोडा ठहरो। जब अधेरा हो जायेगा तब हम भी चलेगे। तब हम उन्हे उस्तेन्का के यहाँ बुलायेंगे और उनके लिए बालडास का आयोजन करेगे!"

"और मैं उस्तेन्का के यहाँ पहुँच जाऊँगा। वहाँ मर्यान्का भी होगी क्या?" ओलेनिन बोला।

"हाँ होगी। जरूर आना," जरा भी आश्चर्य किये बिना वेलेत्स्की ने कहा, "मगर क्या यह तस्वीर की तरह आकर्षक नही?" उसने रग-बिरगी टोली की ओर सकेत करते हुए पूछा।

"हाँ, बहुत!" उपेक्षा का भाव दिखलाते हुए ओलेनिन ने स्वीकार किया। उसने कहा, "इस प्रकार के उत्सवो से मुझे यह आश्चर्य होता है कि ये सब लोग एकाएक सन्तुष्ट और प्रसन्न कैसे दीखने लगते हैं। मसलन, आज ही, केवल इसीलिए कि आज पन्द्रह तारीख है, हर चीज में खुशी है, बहार है। आँखें और चेहरे, आवाजें और चाले और वस्त्र, हवा और धूप सभी मस्ती में हैं। लेकिन रूस में हमारे यहाँ ऐसे उत्सव नही होते।"

"हाँ," वेलेत्स्की बोला। उसे यह छीटाकशी पसन्द नही आई, "और तुम मेरे बूढ़े दोस्त, तुम क्यो नही पी रहे हो?" येरोश्का की तरफ घूमते हुए उसने कहा।

येरोश्का ने ओलेनिन को आँख मारी और वेलेत्स्की की ओर इशारा किया। "ओह, तुम्हारा यह कुनक, बड़ा मस्त-मौला है," वह बोला।

वेलेत्स्की ने अपना गिलास उठाया।

"अल्लाह् विरदी!" गिलास खाली करते हुए उसने कहा। ('अल्लाह् विरदी'–'ईश्वर ने दिया' इन सामान्य शब्दो को काकेशियाई साथ साथ शराब पीते समय प्रथानुसार कहा करते हैं।)

"साऊ बुल" ("तुम्हारे स्वास्थ्य की कामना में") येरोश्का ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया और गिलास खाली कर दिया।

"तुम उसे उत्सव कह सकते हो!" ओलेनिन की ओर मुड़ते तथा खिड़की के बाहर देखते हुए येरोश्का ने कहा, "यह कैसा उत्सव है? तुमने लोगो को पिछले सालो मे आनन्द मनाते हुए देखा होगा! औरते अपने सुनहले कामवाले सराफान* पहने हुए निकला करती थी। उनके गलो में सोने की मुद्राओ के दो दो हार लटका करते थे, सिरो पर सोने के कामवाले शिरोवस्त्र रहते थे और जब वे चलती थी तो उनके वस्त्रो से सन्न सन्न की आवाज़ होती थी।

"हर स्त्री राजकुमारी लगती थी। कभी कभी वे झुंडो में निकलती, एक साथ गाने गाती हुई सारे वातावरण को गुंजा दिया करती और रात रात भर आनन्द मनाया करती। और कज़्ज़ाक शराब का पूरा का पूरा कनस्तर ज़मीन में लुढका लाते, और फिर सुबह होने तक उनके दौर पर दौर चला करते। कभी कभी वे हाथ में हाथ डाले गाँव भर का चक्कर लगाया करते और जिसे भी पकड़ पाते अपने साथ ले लेते। और फिर घर

---

* एक प्रकार की पोशाक जो ब्लाउज पर पहनी जाती थी।

घर की खाक छानते । कभी कभी लगातार तीन तीन दिनो तक आनन्द मनाया करते । मुझे याद है कि जब पिता जी घर लौटते तो उनका चेहरा लाल होता, सिर पर टोपी न होती और हर चीज़ खोकर आया करते। वे आकर बस पड रहते। और माता जी जानती थी कि ऐसे में क्या करना चाहिए। वे उनके लिए थोडी खटाई और खिखीर लाती और जब वे होश में आ जाते तो उनकी टोपी ढूढने के लिए सारे गाँव का चक्कर लगाती। और तब वे लगातार दो दिन तक डटकर सोते। उस समय के लोग ऐसे होते थे! लेकिन अब! अब की बात कुछ न पूछो!"

"और क्या सराफान पहने हुई लडकियाँ अकेले अकेले आनन्द मनाया करती थी?" वेलेत्स्की ने पूछा।

"अकेले मनाने की नौबत कब आती थी! कभी कभी घोडो पर चढकर, या पैदल, कज्ज़ाक लोग आया करते और कहते 'हम खोरोवोद तोडकर बढ़ेंगे' और बीच से होकर निकल जाते। तब लडकियाँ सोटा उठाती और पिल पडती। ओवेतिद पर कोई नौजवान घोडा दौडाता आता और वे उसपर भी जुट पडती। लेकिन वह ज़बरदस्ती घुस पडता और अपनी प्रियतमा को उठाकर घोडे पर बिठाता और हवा से बातें करने लगता। और वह उसे कितना प्यार करता था। क्या कहने! उन दिनो की लडकिया क्या थी, अच्छी-खासी रानिया थी, रानिया!"

३६

ठीक उसी समय दो व्यक्ति घोडो पर चौक की ओर आते हुए दिखाई दिये—एक था नज़ारका और दूसरा लुकाश्का। लुकाश्का अपने हृष्ट-पुष्ट घोडे पर एक ओर झुका बैठा था। घोडा सिर हिलाता-डुलाता तथा चिकने अयालो को लहराता दुलकी चाल से दौड रहा था। कन्धे पर

बन्दूक लटकाये, कमर में पिस्तौल खोसे तथा जीन के पीछे मुडे हुए लबादे को देखकर कोई भी कह सकता था कि लुकाश्का न तो किसी शान्त स्थान से आ रहा है और न कही पास-पडोस से ही। जिस निराले ढग से वह घोडे पर झुका बैठा था, जिस निश्चिन्त प्रकार से वह उसे एड और चाबुक लगा रहा था, जिस प्रकार वह अपनी काली काली अर्ध-निमीलित आँखो से चारो ओर देख रहा था, उस सब से पता चलता था कि उसमें युवको जैसा आत्म-विश्वास है, युवको जैसा बल है। उसकी इधर-उधर देखती हुई आँखें मानो कह रही थी "क्या तुमने इतना अच्छा युवक देखा है?" शानदार घोडा, चाँदी का साज़-सामान, ज़ीन, हथियार और उसपर बैठा हुआ स्वय खूबसूरत कज्ज़ाक चौक मे खडे प्रत्येक व्यक्ति के आकर्षण का केन्द्र हो रहा था। दुबला-पतला और छोटे कद का नज़ारका कुछ अच्छी पोशाक में न था। जब लुकाश्का गाँव के बडे-बूढो के पास से होकर गुज़रता तो एक क्षण के लिए ठहरता और भड के सफेद घुघराले बालोवाली अपनी टोपी सिर पर से ऊपर उठा देता।

"क्या अबकी बहुत-से नगई घोडे चुराये है?" एक दुबले-पतले बूढे ने उन्हे घूरते हुए प्रश्न किया।

"बाबा, क्या आपने गिने हैं जो पूछ रहे है?" एक ओर मुडते हुए लुकाश्का ने जवाब दिया।

"यह सब ठीक है परन्तु तुम इस छोकरे को अपने साथ मत रखो," बूढा बडबडाया। उसकी भृकुटियाँ और भी अधिक तन गई थी।

"शैतान का बच्चा, सब कुछ जानता है," लुकाश्का ने मन ही मन कहा और उसके चेहरे पर घबडाहट के चिन्ह दिखाई पडने लगे। परन्तु तभी उसने एक कोने में बहुत-सी कज्ज़ाक लडकियाँ खडी देखी और घोडा उनकी तरफ मोड दिया।

"नमस्ते, छोकरियो!" सहसा घोडा रोकते हुए तेज़ गूजती हुई

आवाज़ में वह बोला, "अरी चुड़ैलो, मेरे बिना ही तुम सब बूढी हो गई," और वह हँस पडा।

"नमस्ते, लुकाश्का, नमस्ते!" लडकियो ने अपनी सुरीली आवाज़ में उत्तर दिया। "क्या बहुत-सा रुपया लाये हो? लडकियो के लिए कुछ मिठाइयाँ खरीद दो न! ज्यादा दिनो के लिए आये हो क्या? सच बात तो यह है कि तुम्हे देखे बहुत जमाना हो गया "

"नज़ारका और मै रात भर के लिए इधर खिसक आये है," अपना चाबुक उठाते और सीधे लडकियो की ओर घोडा बढाते हुए लुकाश्का ने जवाब दिया।

"क्यो, मर्यान्का तो तुमको भूल ही गई," कोहनी से मर्यान्का को कोचते और सुरीली आवाज़ में कहकहा लगाते हुए उस्तेन्का बोली।

मर्यान्का घोडे से हटकर एक ओर खडी हो गई और पीछे सिर डालते हुए अपनी बडी बडी चमकीली आँखो से कज़्ज़ाक को देखने लगी।

"ठीक तो है तुम बहुत दिनो से यहाँ नही दिखाई पडे। अरे, घोडे के टापो के नीचे हमें पीसे क्यो डाल रहे हो?" वह बोली और मुड गई।

लुकाश्का खास तौर से खुश दिखाई पड रहा था। उसका चेहरा प्रसन्नता से खिला जा रहा था, परन्तु उसपर धृष्टता के लक्षण दिखाई पड रहे थे। मर्यान्का के तीखे उत्तर को सुनकर उसकी भौंहो में बल पड गये।

"घोडे पर चढ आओ। मै तुम्हे पहाडो पर ले चलूंगा, मेरी छबीली!" जैसे अपनी उदासी दूर करते हुए वह सहसा बोल उठा। मर्यान्का की ओर झुकते हुए उसने उसके कान में कहा, "मै तुम्हे चूमूंगा। ओह! कैसे चूमूंगा! "

दोनो की आँखें चार हुई। मर्यान्का का चेहरा लाल हो गया और वह एक कदम पीछे हट गई।

"तुम तो मुझे कुचल ही डालोगे," वह बोली और सिर झुकाते हुए अपने उन सुन्दर पैरो की तरफ देखने लगी जिनमें वह कसे हुए हल्के नीले रग के ऊचे मोज़े और चाँदनी के कामवाली लाल रग की चप्पले पहने थी।

लुकाश्का उस्तेन्का की ओर बढा और मर्यान्का उस स्त्री की बगल में बैठ गई जिसकी गोद में एक बच्चा था। बच्चे ने अपने छोटे और भरे-पूरे हाथ फैलाकर मुद्राओ का हार पकड लिया जो मर्यान्का की नीली बेशमेत पर लटक रहा था। मर्यान्का बच्चे की ओर झुकी और लुकाश्का को तिरछी नज़रो से देखने लगी। लुकाश्का अपने कोट के नीचे से अपनी काली बेशमेत की जेब में से मिठाइयो तथा बीजो का एक बडल निकाल रहा था।

"यह लो तुम सब को देता हूँ," उस्तेन्का को बडल पकडाते और मर्यान्का की ओर मुस्कराते हुए उसने कहा।

मर्यान्का के चेहरे पर घबडाहट के लक्षण प्रकट हो रहे थे। ऐसा लगता था कि उसकी सुन्दर आँखो के सामने कुहरा छा गया हो। वह अपना रूमाल खीचकर ओठो तक ले आई और अपना सिर उस सुन्दर बच्चे पर, जो अभी तक उसका मुद्राओ का हार पकडे हुए था, झुकाकर उसे चूमने लगी। बच्चे ने अपने छोटे छोटे हाथ उसकी उठी हुई छाती में ठेल दिये और अपना पोपला मुँह फैलाकर चीखने लगा।

"तू तो बच्चे का गला ही घोट देगी!" बच्चे की माँ ने उसे हटाते हुए कहा और बेशमेत खोलकर उसे दूध पिलाने लगी। "चल हट और जाकर अपने छोकरे का मान-मनौअल कर।"

"मै अभी जाऊँगा, घोडा बाँधूंगा और फिर नज़ारका को साथ लेकर लौट आऊँगा, तब रात भर छनेगी," लुकाश्का बोला। घोडे को चाबुक से छूकर वह लडकियो को छोडकर आगे बढ गया और एक गली में मुडकर नज़ारका के साथ उन मकानो तक पहुँच गया जो पास पास बने हुए थे।

"लो, हम पहुँच गये! जल्दी करो और शीघ्र वापस आ जाओ!" एक मकान के सामने घोडे से उतरते हुए लुकाश्का ने अपने साथी से कहा और घोडा अपने मकान के फाटक में ले गया।

"हलो, स्तेप्का?" वह अपनी गूंगी वहन से बोला जो दूसरो की भाँति अच्छे अच्छे कपडे पहने घोडा पकडने चली आ रही थी। लुकाश्का ने इशारो से उसे वताया कि वह घोडे को चारे के पास ले जाय लेकिन उसे खोले नही।

गूगी ने भनभनाहट जैसी कुछ आवाज़ की, जो वह प्राय किया करती थी, और घोडे की तरफ इशारा करते हुए उसकी नाक चूम ली। इसका मतलव था कि वह घोडे को प्यार करती है और घोडा वहुत सुन्दर है।

"क्या हाल है माँ? शायद तुम अभी तक वाहर भी नही गईं?" लुकाश्का ने पुकारा और वन्दूक थामते हुए दालान की सीढियाँ चढने लगा। वूढी माँ ने दरवाज़ा खोला। "अरे तुम! मैंने तो कभी सोचा भी न था कि तुम आओगे। मुझे आशा भी न थी," वूढी वोली, "क्यो! किरका ने तो कहा था कि तुम नही आओगे।"

"माँ थोडी चिख़ीर तो लाओ, नज़ारका आ रहा है। हम सव मिल कर उत्सव मनायेंगे।"

"हाँ, हाँ, लुकाश्का! अभी लाई!" वूढी कहने लगी, "आज तो औरते भी आनन्द मना रही है। मै समझती हूँ हमारी गूंगी भी किसी से पीछे नही है।"

माँ ने चाभियाँ ली और जल्दी जल्दी चिख़ीर लेने चल दी।

घोडा वाँध चुकने तथा कन्धे से वन्दूक उतारने के वाद नज़ारका लुकाश्का के घर लौटा, और भीतर चला गया।

"तुम्हारे स्वास्थ्य की कामना करते हुए!" माँ के हाथ से चिखीर भरा प्याला लेते तथा उसे अपने झुके हुए सिर तक उठाते हुए लुकाश्का बोला।

"यह खराब बात है!" नज़ारका ने कहा, "चचा बुर्लाक ने जो कुछ कहा तुमने सुना? 'क्या तुमने बहुत-से घोडे चुराये हैं?' लगता है उसे मालूम है।"

"पुराना खुर्राट है!" तुरन्त लुकाश्का ने उत्तर दिया, "लेकिन इससे क्या!" सिर हिलाते हुए उसने कहा, "इस समय तक वे नदी के उस पार चले गये होंगे। जाओ और तलाश कर लो।"

"फिर भी हरकत तो बेजा है।"

"क्या बेजा हरकत है? कल उसे थोडी-सी चिखीर पिला देना और फिर सब ठीक। आओ अब जशन मनाएँ। पियो!" लुकाश्का चचा येरोश्का के लहजे में बोला, "हम सडको पर जाकर छोकरियो के साथ आनन्द मनायेंगे। तुम जाओ और थोडा शहद ले आओ। या ठहरो, हम अपनी गूंगी को ही भेज देंगे। हम लोग सुबह तक ऐसा ही जशन मनायेंगे।"

नजारका मुस्करा रहा था। "क्या यहाँ हमें देर तक रुकना है?' उसने पूछा।

"इसके पहले कि हम जशन मनायें तुम दौडकर थोडी वोदका (शराब) तो ले आओ! पैसा यह रहा।"

नज़ारका सिर झुकाकर यामका के यहाँ से वोदका लाने दौड गया।

शिकारी चिडियो की भाँति चचा येरोश्का और येरगुशोव ने भी सूंघ लिया था कि जशन कहाँ मनाया जा रहा है। एक के बाद एक दोनो आ धमके। दोनो धुत्त थे।

"आधी वाल्टी चिखीर और," दोनो की आवभगत के जवाव में लुकाश्का माँ को सम्वोधित करके चिल्लाया।

"अच्छा अव वता तूने उन्हे कहाँ चुरा रखा है! शैतान कही का!" चचा वोला, "तू अच्छा लडका है। मै तुझे चाहता हूँ।"

"सच, चचा " हँसते हुए लुकाश्का ने जवाव दिया। "कैडेटो से मिठाइयाँ ले लेकर उन्हें सुन्दरियो को देते हो वडे घिसे हुए हो "

"यह ठीक नही, ठीक नही! ओह मार्का!" और वूढा हँसते हँसते लोट-पोट हो गया, "और वह वदमाश कैसा घिघिया रहा था, कहता था 'जाकर मेरा इन्तजाम कर देना।' उसने मुझे एक वन्दूक देने का भी वादा किया था। लेकिन मै नही लूंगा। मैंने सव ठीक कर लिया है। मुझे वस तुमपर तरस आता है। हाँ, तो वताओ तुम कहाँ कहाँ रहे?" और वूढे ने तातारी वोलना शुरू कर दी।

लुकाश्का ने तड तड जवाव दिया। येरगुशोव, जो अधिक तातारी नही जानता था, कभी कभी एक दो शव्द रूसी मे कह देता था।

"मैं कहता हूँ कि उसने घोडे खिसका दिये हैं। मै अच्छी तरह जानता हूँ," वह वोला।

"गिरेई तथा मै साथ साथ चले।" (कज्जाक समझ रहा था कि गिरेई-खाँ को गिरेई कहना उसकी वहादुरी का सूचक था।) "नदी के ठीक पार वह वरावर यही शेखी मारता रहा कि वह सारा स्टेपी जानता है और ठीक ठीक रास्ता दिखा सकता है। और हम लोग घोडो पर सवार चलते गये, चलते गये और मेरा गिरेई रास्ता भूल गया और इधर-उधर चक्कर काटने लगा, उसे गाँव का रास्ता न मिला। हम लोग वहुत अधिक दाहिने चले गये होगे। हम वरावर आधी रात तक घूमते फिरे, आखिर जव हमने कुत्तो का भौंकना सुना तो जान में जान आई।"

"वेवकूफो!" चचा येरोश्का ने कहना शुरू किया, "अरे हम भी स्टेपी

में रास्ता भूला करते थे। कौन नही भूलता ? लेकिन मै तो किसी टीले पर चढ जाता था और भेडियो की भाँति इस तरह चिल्लाया करता था।" उसने अपने हाथ मुंह पर रखे और भेडियो जैसी तेज़ बोली बोलने लगा। "फौरन कुत्ते जवाब देंगे हाँ तो आगे क्या हुआ—तुमने उन्हे ढूढा ?"

"हमने जल्दी ही उन्हे खदेड दिया। नजारका को तो कुछ नगई औरतो ने पकड ही लिया था।"

"पकड लिया था ?" नजारका ने आहत होकर कहा। वह अभी अभी आकर खडा ही हुआ था।

"हम फिर आगे बढे और फिर गिरेई रास्ता भूल गया और हम लोगो को रेत के टीलो के पास ले आया। हम समझ रहे थे कि हम तेरेक की तरफ बढ रहे है लेकिन हम तो ठीक उसकी उल्टी दिशा में जा रहे थे।"

"तुम्हे तारे देखकर रास्ता ढूढना था," येरोश्का बोला।

"यही तो मै भी कहता हूँ," येरगुशोव बीच में ही बोल पडा।

"हाँ ठीक कहते हो। जब चारो ओर घोर अन्धकार हो तो देखने से फायदा भी क्या। मैने सारे प्रयत्न किये और आखिर एक घोडी को लगाम लगाई और अपना घोडा छोड दिया यह सोचकर कि वह हमें ठीक रास्ते ले चलेगा। और तुम क्या समझते हो कि फिर क्या हुआ। वह एक दो बार ज़मीन की ओर देखकर हिनहिनाया और फिर तेज़ी से दौडता हुआ हमें सीधा गाँव ले आया। और यह तो कहो ऐसा भाग्य से ही हुआ क्योकि इस समय सुबह होनेवाली थी। उन्हे जगल में छिपा देने का हमें मुश्किल से ही समय मिल सका था। नगीम नदी के पार आ गया था और उन्हे ले गया था।"

येरगुशोव ने अपना सिर हिलाया, "यही तो मै भी कहता हूँ। बड़े होशियार हो। क्या तुम्हे उसकी ज्यादा कीमत मिली?"

"जो मिला वह यह रहा," कहकर उसने अपनी जेब खनखना दी।

इसी समय लुकाश्का की माँ कमरे में आ गई और उसकी बात आधी ही रह गई।

"पियो!" वह चिल्लाया।

"हाँ, मैं और गिरचिक एक बार बहुत रात बीते चले थे, घोड़ो पर" येरोश्का ने अपनी दास्तान छेड दी।

"बन्द भी करो! इसके खतम होने की नौबत भी आयेगी?" लुकाश्का बोला, "मै जा रहा हूँ।" और प्याला पी चुकने और पेटी बाँध लेने के बाद वह बाहर निकल गया।

३८

जब लुकाश्का सडक पर निकला उस समय अंधेरा हो चुका था। शरदकालीन रात्रि शान्त और स्वच्छ थी। चौक के एक ओर उगे हुए लम्बे और घने चिनार वृक्षो के पीछे से सुनहला चांद, अपनी सम्पूर्ण ज्योत्स्ना लेकर उदय हो रहा था। धुआँ घरो की चिमनियो से उठ उठकर गाँव में फैल रहा था और कुहरे से एकाकार होकर लुप्त होता जा रहा था। इधर-उधर खिडकियो में से प्रकाश झाँकता दिखाई पड रहा था और हवा में किज्याक, अंगूर के गूदो और कुहरे की गंध फैल रही थी। गाँव के घरो से हँसी-मज़ाक, गानो और बीजे फोड़े जाने की आवाज़ें सडक पर आने-जानेवालो के कानो में पड रही थी, परन्तु वे दिन की अपेक्षा इस समय अधिक स्पष्ट थी। घरो के चारो ओर सफेद सफेद रूमालो और टोपियो की कतारे झलक दे रही थी।

में रास्ता भूला करते थे। कौन नही भूलता? लेकिन मै तो किसी टीले पर चढ जाता था और भेडियो की भाँति इस तरह चिल्लाया करता था!" उसने अपने हाथ मुंह पर रखे और भेडियो जैसी तेज़ बोली बोलने लगा। "फौरन कुत्ते जवाब देंगे हाँ तो आगे क्या हुआ—तुमने उन्हे ढूढा?"

"हमने जल्दी ही उन्हे खदेड दिया! नज़ारका को तो कुछ नगई औरतो ने पकड ही लिया था।"

"पकड लिया था?" नज़ारका ने आहत होकर कहा। वह अभी अभी आकर खडा ही हुआ था।

"हम फिर आगे बढे और फिर गिरेई रास्ता भूल गया और हम लोगो को रेत के टीलो के पास ले आया। हम समझ रहे थे कि हम तेरेक की तरफ बढ रहे है लेकिन हम तो ठीक उसकी उल्टी दिशा में जा रहे थे!"

"तुम्हे तारे देखकर रास्ता ढृढना था," येरोश्का बोला।

"यही तो मैं भी कहता हूँ," येरगुशोव बीच में ही बोल पडा।

"हाँ ठीक कहते हो। जब चारो ओर घोर अन्धकार हो तो देखने से फायदा भी क्या। मैंने सारे प्रयत्न किये और आखिर एक घोडी को लगाम लगाई और अपना घोडा छोड दिया यह सोचकर कि वह हमें ठीक रास्ते ले चलेगा। और तुम क्या समझते हो कि फिर क्या हुआ! वह एक दो बार ज़मीन की ओर देखकर हिनहिनाया और फिर तेज़ी से दौडता हुआ हमें सीधा गाँव ले आया। और यह तो कहो ऐसा भाग्य से ही हुआ क्योकि इस समय सुबह होनेवाली थी। उन्हे जगल में छिपा देने का हमें मुश्किल से ही समय मिल सका था। नगीम नदी के पार आ गया था और उन्हे ले गया था।"

येरगुशोव ने अपना सिर हिलाया, "यही तो मैं भी कहता हूँ। बड़े होशियार हो। क्या तुम्हें उसकी ज्यादा कीमत मिली?"

"जो मिला वह यह रहा," कहकर उसने अपनी जेब खनखना दी।

इसी समय लुकाश्का की माँ कमरे में आ गई और उसकी बात आधी ही रह गई।

"पियो!" वह चिल्लाया।

"हाँ, मैं और गिरचिक एक बार बहुत रात बीते चले थे, घोडो पर " येरोश्का ने अपनी दास्तान छेड दी।

"बन्द भी करो! इसके खतम होने की नौबत भी आयेगी?" लुकाश्का बोला, "मैं जा रहा हूँ।" और प्याला पी चुकने और पेटी बाँध लेने के बाद वह बाहर निकल गया।

३८

जब लुकाश्का सडक पर निकला उस समय अधेरा हो चुका था। शरदकालीन रात्रि शान्त और स्वच्छ थी। चौक के एक ओर उगे हुए लम्बे और घने चिनार वृक्षो के पीछे से सुनहला चाँद, अपनी सम्पूर्ण ज्योत्स्ना लेकर उदय हो रहा था। धुआँ घरो की चिमनियो से उठ उठकर गाँव में फैल रहा था और कुहरे से एकाकार होकर लुप्त होता जा रहा था। इधर-उधर खिडकियो में से प्रकाश झाँकता दिखाई पड रहा था और हवा में किज्याक, अगूर के गूदो और कुहरे की गध फैल रही थी। गाँव के घरो से हँसी-मजाक, गानो और बीजे फोडे जाने की आवाजें सडक पर आने-जानेवालो के कानो में पड रही थी, परन्तु वे दिन की अपेक्षा इस समय अधिक स्पष्ट थी। घरो के चारो ओर सफेद सफेद रूमालो और टोपियो की कतारे झलक दे रही थी।

चौकवाली दूकान का दरवाजा खुला था और प्रकाश में जगमगा रहा था। उसके सामने कज्जाक और लडकियो के श्याम गौर शरीर अधेरे में दिखाई पड रहे थे। उनके सुरीले गाने, उनके कहकहे और उनकी वाते दूर से ही कानो में पड रही थी। हाथ में हाथ डाले लडकियो के मण्डल धूल भरे चौक में चक्राकार घूम रहे थे। सब से साधारण-सी लगनेवाली एक दुबली-पतली लडकी ने एक राग अलापा—

वे आये, वे दोनो आये।
दूर दिशा से—गहरे वन से,
हरे-भरे शीतल उपवन से,
वे दोनो, दो वीर युवक
अविवाहित, सुन्दर, मन-रजन से।
चलते चलते ठहर गये
एकाकीपन का भार उठाये।
वे आये, वे दोनो आये।
आई तभी एक सुकुमारी,
जैसे काम-कुज की क्यारी,
बोली—"केवल एक युवक की
बन सकती हूँ प्रेम-दुलारी।"
दोनो ने उसको देखा
कुछ आपस में उलझे-मुस्काये।
वे आये, वे दोनो आये।
सुन्दर युवक बढा कुछ पहले,
हँसी रेशमी, बाल सुनहले,
आया सुकुमारी के उजले

हाथो को हाथो में वह ले।
सभी साथियो को उसने ये
घूम घूमकर वचन सुनाये,
"हम आये, हम दोनो आये।
सुनो साथियो! मेरे प्रियवर!
क्या तुमने अपने जीवन भर
इतनी सुन्दर सुकुमारी से
परिचय का पाया है अवसर?
जिसने मेरी प्रिय पत्नी बन
सुख के ये सब साज सजाये!"
वे आये, वे दोनो आये।

बूढी स्त्रियाँ खडी गाने सुन रही थी। छोटे छोटे लडके-लडकियाँ एक दूसरे के पीछे भाग रहे थे, और युवक चलती-फिरती पुतलियो जैसी सुन्दरियो की ताक-झाँक में लगे थे। कभी कभी तो घेरा तोडकर वे उसमें घुस भी जाते थे। दरवाज़े के अंधेरी तरफ अपने अपने चेरकेसियन कोट और भेड की खाल की टोपियाँ पहने वेलेत्स्की और ओलेनिन खडे खडे कज़्ज़ाको की कथन-शैली से भिन्न, धीरे धीरे बाते कर रहे थे। और शायद यह जान रहे थे कि लोगो का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट हो रहा है।

लाल वेशमेत पहने छोटी उस्तेन्का और एक नई वेशमेत तथा फ्राक में मर्यान्का, हाथ में हाथ डाले, दूसरी लडकियो के साथ मण्डल बनाकर घूम रही थी। ओलेनिन और वेलेत्स्की इस मसले पर बातचीत कर रहे थे कि उस्तेन्का और मर्यान्का को उस मण्डल से कैसे छीना जाय। वेलेत्स्की सोच रहा था कि ओलेनिन सिर्फ अपना मन-बहलाव चाहता है, जब

कि ओलेनिन अपने भाग्य के फैसले का इन्तज़ार कर रहा था। वह किसी प्रकार मर्यान्का से उस दिन अकेले मिलकर सब कुछ साफ साफ कह देना और उससे यह पूछ लेना चाहता था कि वह उसकी पत्नी हो सकती है या नही और होगी या नही। यद्यपि इस प्रश्न का पहले ही नकारात्मक उत्तर मिल चुका था फिर भी उसे आशा थी कि जब वह उससे अपनी व्यथाएँ कहेगा तो वह उन्हे समझेगी।

"तुमने मुझसे पहले क्यो नही बताया?" बेलेत्स्की बोला, "उस्तेन्का से मै सब कुछ ठीक करवा देता। विचित्र आदमी हो! "

"अब क्या किया जाय! शीघ्र ही किसी दिन मैं तुम्हे इसके बारे मे सब कुछ बताऊँगा। ईश्वर के लिए कुछ ऐसा करो कि वह उस्तेन्का के यहाँ आ जाय।"

"ठीक है। यह आसानी से हो सकता है! मर्यान्का, तुम 'किसी सुन्दर मुखवाले युवक की' होना चाहती हो या लुकाश्का की?" मर्यान्का को सम्बोधित करते हुए बेलेत्स्की बोला। परन्तु जब उसे कोई उत्तर न मिला तो उसने उस्तेन्का के पास जाकर उससे मर्यान्का को अपने साथ घर लाने का अनुरोध किया। मुश्किल से उसने अपनी बात पूरी की होगी कि मण्डल के नेता ने दूसरा गाना शुरू कर दिया और लडकियाँ घेरे में एक दूसरे को खीचने लगी। वे गा रही थी—

उपवन के दूसरे छोर से
  युवक यहाँ आया, इस ओर,
नगर पार कर, इसी मार्ग से,
  आया वह आनन्द-विभोर।
आते ही सकेत किया,
  दाहने हाथ से पहली बार,

श्रौर दूसरी वार उठाया,
हैट रेशमी फीतेदार।
जब कि तीसरी वार यहाँ
आया तो था विलकुल चुपचाप,
किन्तु नया-सा दीख रहा था,
उसका सारा कार्य-कलाप।
"मिलने की बस, रही कामना,
हो जाये कुछ तुमसे बात,
क्यो न घूमने श्राती हो तुम,
इस उपवन में साय-प्रात?
अव से आया करो—कहो
आओगी? ऊपर करो निगाह,
अच्छा, यही कहो, क्या मेरे लिए
हृदय में है कुछ चाह?
कहता हूँ, पछताओगी तुम,
आगे मुझे करोगी याद,
मैंने प्रेम-प्रसाद न पाया
तो होगा फिर तुम्हे विषाद!
मैं तो ऐसा प्रेम करूँगा,
जो चलकर वन जाय विवाह,
मेरे बिना, इन्ही आँखो से,
कहीं न निकले अश्रु-प्रवाह!"
इसका उत्तर मन में तो था,
पर न खुला वाणी का द्वार,
मैं इनकार न कर पाई, हाँ,

ज़रा न कर पाई इनकार।
मैं उपवन मे गई घूमने
करने प्रिय से मधुर मिलाप,
आँखें चार हुईं, शरमाईं
और झुका सिर अपने-आप।
कुछ ऐसा सयोग हुआ,
सिर झुकते ही गिर पडा रूमाल,
प्रिय ने देखा, उसे उठाया
और उठाकर हुए निहाल।
बोले—"प्रिये! स्वच्छ हाथो में
ले लो इसे, करो स्वीकार,
कह दो—एक बार ही मैंने
तुमसे पाया है कुछ प्यार!
कुछ भी नही जानता हूं मैं,
क्या दूंगा तुमको उपहार।
डरता हूँ तुम अपने हाथो
कही न कर दो अस्वीकार।
किन्तु सोचता हूँ मैं अब प्रिय!
ठीक तरह से मन में जाँच,
भेट करूँगा एक शाल,
बदले में लूंगा चुम्बन पाँच।"

लुकाश्का और नज़ारका घेरे मे घुस गये और लडकियो के बीच मटरगश्ती करने लगे। लुकाश्का भी हाथो को झुलाता हुआ गाने लगा। "तुम लोगो में से एक मेरे पास भी आओ न!" वह बोला। लडकियो ने मर्यान्का

को गुदगुदाया परन्तु वह जाने को राज़ी न हुई। अब हँसी, चुम्बन, चपत और फुसफुसाहट के स्वर भी गाने में अपना योग दे रहे थे।

जब लुकाश्का ओलेनिन के पास से होकर गुज़रा तो उसने उसे देख कर दोस्तो की तरह सिर हिलाया।

"दिमीत्री अन्द्रेइच इधर आकर देखो!" वह बोला।

"अच्छा," ओलेनिन ने रुखाई से जवाब दिया।

वेलेत्स्की झुका और उस्तेन्का के कान म कुछ कहने लगा। उसे उत्तर देने का समय नही था। जब वह चक्र में फिर घूमती हुई आई तो उसने कहा –

"ठीक है हम आयेंगी।"

"और मर्यान्का भी?"

ओलेनिन मर्यान्का की तरफ बढा, "आना जरूर, चाहे एक ही मिनट के लिए। मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

"अगर दूसरी लडकियाँ आयेंगी, तो आऊँगी।"

"क्या तुम मेरे प्रश्न का जवाब दोगी?" उसकी ओर झुकते हुए ओलेनिन बोला, "इस समय तुम खुश दीख रही हो।" मर्यान्का उसके पास से हटकर दूसरी ओर चली गई। वह भी उसके पीछे चला आया। "दोगी न?"

"कौनसा प्रश्न?"

"वही जो उस दिन पूछा था," झुकते हुए उसके कान में ओलेनिन ने कहा, "मुझसे विवाह करोगी?"

मर्यान्का ने एक क्षण सोचा, "बताऊँगी," उसने कहा, "आज रात बताऊँगी।" और रात के अंधेरे में उसकी बडी बडी आँखें उसे सदय दृष्टि से देखने लगी।

ओलेनिन फिर उसके पीछे लगा। उसके निकट रहने में उसे आनन्द की अनुभूति हो रही थी।

परन्तु लुकाश्का ने बिना गाना बन्द किये हुए ही एकाएक उसे मज़बूती से पकड़ा और घेरे के बीच लाकर खड़ा कर दिया। ओलेनिन सिर्फ इतना ही कह पाया था कि "उस्तेन्का के यहाँ आना" और फिर अपने साथी के पास चला गया। गाना समाप्त हुआ। लुकाश्का ने अपने ओठ पोछे, मर्यान्का ने भी पोछे और दोनो ने एक दूसरे का चुम्बन किया।

"नही, नही, पाँच चुम्बन!" लुकाश्का बोला। अब नाच-गाने की जगह बातचीत, हँसी-कहकहो और भाग-दौड ने ले ली थी। लुकाश्का ने लडकियो को मिठाइयाँ बाँटनी शुरू की। ऐसा लगता था कि वह ज्यादा पी गया है। "ये सब के लिए हैं।" गर्व, परिहासात्मक करुणा और आत्म-प्रशसा के साथ वह बोला, "लेकिन जो सिपाहियो के पीछे जाना चाहे वह इस घेरे से निकल जाय!" ओलेनिन पर क्रोधपूर्ण दृष्टि डालते हुए उसने कहा।

लडकियो ने उससे मिठाइयाँ छीन ली और हँसती हुई आपस में झगडने लगी। बेलेत्स्की और ओलेनिन एक तरफ हट गये।

लुकाश्का को मानो अपनी उदारता पर शर्म आ रही थी। उसने अपनी टोपी उतारी और आस्तीन से माथा पोछता हुआ मर्यान्का और उस्तेन्का के पास आकर कहने लगा। "अच्छा, यही कहो—क्या मेरे लिए हृदय में है कुछ चाह?" उसने उस गाने के शब्द दोहराये, जिसे लोग अभी गा चुके थे, और मर्यान्का की तरफ घूमकर उसने क्रोध से वे शब्द फिर दुहराये, "क्या मेरे लिए हृदय में है कुछ चाह? जो चलकर बन जाय विवाह, मेरे बिना, इन्ही आँखो से, कही न निकले अश्रु-प्रवाह!" उस्तेन्का और मर्यान्का दोनो का एक साथ आलिगन करते हुए लुकाश्का ने कहा। उस्तेन्का छूटकर अलग हो गई, और हाथ घुमाते हुए उसने लुकाश्का की पीठ पर एक ऐसा घूँसा जडा कि खुद उसी के हाथ में चोट आ गई।

"क्या नाच का दूसरा दौर चलाने की मरज़ी है?" उसने पूछा।

"दूसरी लडकियाँ चाहें तो चलायें," उस्तेन्का ने जवाव दिया, "लेकिन मैं घर जा रही हूँ और मर्यान्का भी।"

मर्यान्का की कमर में हाथ डाले डाले लुकाश्का उसे भीड से हटाकर एक मकान के अँधेरे कोने की तरफ ले गया।

"मत जाओ, मर्यान्का, मत जाओ," उसने कहा, "हम आखिरी वार जशन मनायेंगे। फिर घर जाना और मैं भी तुम्हारे पास आऊँगा!"

"घर जाकर क्या करूँ? छुट्टियाँ आनन्द मनाने के लिए हैं। मैं उस्तेन्का के यहाँ जा रही हूँ," मर्यान्का वोली।

"तुम्हे मालूम है कि मै इतने पर भी तुमसे विवाह करूँगा!"

"अच्छा, अच्छा," मर्यान्का वोली, "जव वक्त आयेगा तो देखा जायेगा।"

"तो तुम जा रही हो," लुकाश्का ने कर्कशता के साथ कहा और उसे अपने पास खीचते हुए चूम लिया।

"वन्द भी करो यह सव। मुझे जाने दो।" उसके हाथो से अपने को छुडाती हुई मर्यान्का एक तरफ हट गई।

"अरी छोकरी, याद रखना इसका नतीजा खराव होगा," उसे फटकारते हुए लुकाश्का वोला और खडा खडा सिर हिलाता रहा, "मेरे विना, इन्ही आँखो से, कही न निकले अश्रु-प्रवाह!" और उसके पास से हटते हुए उसने दूसरी लडकियो से कहना शुरू किया, "आओ दूसरा गाना हो!"

लुकाश्का ने जो कुछ भी कहा था उससे मर्यान्का डर गई और घवडा गई।

वह रुकी "काहे का नतीजा खराव होगा?"

"उसी का!"

"किसका?"

"इसका कि उस सिपाही-मेहमान के साथ मौज उडाओ और मेरी चिन्ता न करो!"

"जब तक मैं चाहूँगी तब तक चिन्ता करूँगी। न तुम मेरे बाप हो न माँ। आखिर मुझसे चाहते क्या हो? कह तो दिया जिसे मैं चाहूँगी, उसकी चिन्ता करूँगी!"

"खैर ठीक है" लुकाश्का बोला, "मगर फिर याद रखना!" वह दुकान की तरफ बढा, "अरी छोकरियो रुक क्यो गई? नाचे जाओ। नज़ारका थोडी चिख़ीर और लाओ!"

"क्या वे आयगी?" वेलेत्स्की को सम्बोधित करते हुए ओलेनिन ने पूछा। "वे चली आयगी," वेलेत्स्की ने जवाब दिया, "आओ न, हमें 'बाल' की तैयारी करनी है।"

३६

जब ओलेनिन मर्यान्का और उस्तेन्का के पीछे पीछे वेलेत्स्की के मकान से निकला, उस समय काफी रात हो चुकी थी। उसे सामने की अँधेरी गली में जाती हुई मर्यान्का के सफेद रूमाल की झलक दिखाई पड रही थी। स्वर्णिम चाँद स्टेपी की ओर अस्त हो रहा था। रुपहला कोहरा समस्त गाँव पर छाया हुआ था। सब कुछ शान्त था। कही रोशनी नही थी और सिवा युवतियो के पैरो की चापो के और कही कुछ न सुनाई पडता था। ओलेनिन का हृदय तेज़ी से धडकने लगा। रात्रि की नम हवा ने उसके सन्तप्त चेहरे पर शीतलता विखेर दी। उसने असीम आकाश की ओर देखा और फिर उस मकान को देखने के लिए पीछे मुडा जहाँ से वह अभी अभी निकला था। बत्ती बुझ चुकी थी। एक वार फिर उसने अधेरे म से दिखाई देती हुई लडकियो की परछाई देखी। सफेद रूमाल कोहरे में अदृश्य हो

चुका था। इस समय वह इतना प्रसन्न था कि उसे अकेले रहने में डर लग रहा था। वह दालान से वाहर कूदा और लडकियो के पीछे दौडा।

"जाने भी दो, कोई देख ले तो " उस्तेन्का ने कहा।

"परवाह नही।"

ओलेनिन दौडकर मर्यान्का के पास गया और उमे अपनी भुजाओ में भर लिया। मर्यान्का ने छुडाने की कोई कोशिश न की।

"तुमने काफी चुम्वन तो कर लिये?" उस्तेन्का ने कहा, "विवाह कर लो और तव चाहे जितना चूमना। लेकिन अभी तुम्हे ठहरना होगा।"

"नमस्ते, मर्यान्का, कल मैं तुम्हारे पिता से मिलने आऊँगा और उनमे वात कर लूंगा। तुम कुछ मत कहना।"

"मै क्यो कहूँगी?" मर्यान्का वोली।

दोनो लडकियो ने दौडना शुरू कर दिया। ओलेनिन अकेला जा रहा था और जो कुछ हो चुका था उसपर सोचता जा रहा था। वह पूरी शाम उसके साथ अगीठी के पास एक कोने में अकेले वैठा रहा। उस्तेन्का एक क्षण के लिए भी घर के वाहर न गई परन्तु सारे समय दूसरी लडकियो और वेलेत्स्की के साथ मटरगश्ती करती रही। ओलेनिन मर्यान्का के साथ वरावर कानाफूसी करता रहा।

"क्या तुम मुझसे विवाह करोगी?" उसने पूछा था।

"तुम मुझे धोखा दोगे और छोड दोगे," उसने खुशी खुशी उत्तर दिया था।

"परन्तु क्या तुम मुझे प्यार करती हो? ईश्वर के लिए सच सच वताना!"

"क्यो प्यार न करूँ? तुम कोई काने-कुतरे हो क्या," हँसते हुए मर्यान्का ने उत्तर दिया था और उसके हाथो को अपने सख्त हाथो से दवा लिया था। "कैसे सफेद सफेद हाथ है तुम्हारे–मक्खन जैसे," वह वोली थी।

बहुत प्रसन्न था। सहसा दूर से गोली की आवाज़ सुनाई दी। कार्नेट उत्तेजित हो उठा और कज्ज़ाको को हुक्म देने लगा कि किस तरह से आपस में बट कर और किस दिशा से कैसे हमला या बचाव किया जाय। परन्तु ऐसा लग रहा था कि कज्ज़ाक उसका हुक्म मानने को तैयार न थे। वे देख रहे थे कि लुकाश्का क्या कहता है, कौनसा रुख अपनाता है। सारी आँखें लुकाश्का ही पर लगी थी। लुकाश्का के चेहरे पर गम्भीरता थी और घबडाहट के कोई भी लक्षण न थे। उसने घोडे को एड लगाई और उसे दौडा दिया। दूसरे लोग पीछे रह गये। उसकी घूरती हुई आँखें सामने लगी थी।

"वह रहा एक घुडसवार," घोडे को लगाम लगाते और दूसरो के साथ होते हुए लुकाश्का बोला।

ओलेनिन ने ध्यान से देखा, परन्तु किसी को देख न सका।

कज्ज़ाको ने दो घुडसवारो को पहचाना और चुपके चुपके उनकी तरफ बढ गये।

"वे अब्रेक हैं क्या?" ओलेनिन ने पूछा। कज्ज़ाको ने इस प्रश्न का कोई उत्तर न दिया। यह प्रश्न उन्हे बडा, बेतुका लग रहा था। अगर अब्रेक घोडो पर सवार होकर तेरेक के इस पार आ गये है तो बडे गधे हैं।

"वह जो हाथ हिलाता हुआ दिखाई पड रहा है हमारा मित्र रोदका होगा।" उन दो घुडसवारो की ओर, जो अब साफ दिखाई पडने लगे थे, इशारा करते हुए लुकाश्का बोला, "देखो, वह इस ओर ही आ रहा है।"

कुछ मिनटो बाद यह स्पष्ट हो गया कि दोनो घुडसवार कज्ज़ाक स्काउट हैं और कोई नही। कारपोरल घोडे पर सवार लुकाश्का के पास चला आ रहा था।

बहुत प्रसन्न था। सहसा दूर से गोली की आवाज़ सुनाई दी। कार्नेट उत्तेजित हो उठा और कज्ज़ाको को हुक्म देने लगा कि किस तरह से आपस में बट कर और किस दिशा से कैसे हमला या बचाव किया जाय। परन्तु ऐसा लग रहा था कि कज्ज़ाक उसका हुक्म मानने को तैयार न थे। वे देख रहे थे कि लुकाश्का क्या कहता है, कौनसा रुख अपनाता है। सारी आँखें लुकाश्का ही पर लगी थी। लुकाश्का के चेहरे पर गम्भीरता थी और घबडाहट के कोई भी लक्षण न थे। उसने घोडे को एड लगाई और उसे दौडा दिया। दूसरे लोग पीछे रह गये। उसकी घूरती हुई आँखें सामने लगी थी।

"वह रहा एक घुडसवार," घोडे को लगाम लगाते और दूसरो के साथ होते हुए लुकाश्का बोला।

ओलेनिन ने ध्यान से देखा, परन्तु किसी को देख न सका।

कज्ज़ाको ने दो घुडसवारो को पहचाना और चुपके चुपके उनकी तरफ बढ गये।

"वे अब्रेक हैं क्या?" ओलेनिन ने पूछा। कज्ज़ाको ने इस प्रश्न का कोई उत्तर न दिया। यह प्रश्न उन्हे बडा, बेतुका लग रहा था। अगर अब्रेक घोडो पर सवार होकर तेरेक के इस पार आ गये हैं तो बडे गधे हैं।

"वह जो हाथ हिलाता हुआ दिखाई पड रहा है हमारा मित्र रोदका होगा।" उन दो घुडसवारो की ओर, जो अब साफ दिखाई पडने लगे थे, इशारा करते हुए लुकाश्का बोला, "देखो, वह इस ओर ही आ रहा है।"

कुछ मिनटो बाद यह स्पष्ट हो गया कि दोनो घुडसवार कज्ज़ाक स्काउट है और कोई नही। कारपोरल घोडे पर सवार लुकाश्का के पास चला आ रहा था।

बहुत प्रसन्न था। सहसा दूर से गोली की आवाज़ सुनाई दी। कार्नेट उत्तेजित हो उठा और कज्ज़ाको को हुक्म देने लगा कि किस तरह से आपस में वट कर और किस दिशा से कैसे हमला या बचाव किया जाय। परन्तु ऐसा लग रहा था कि कज्ज़ाक उसका हुक्म मानने को तैयार न थे। वे देख रहे थे कि लुकाश्का क्या कहता है, कौनसा रुख अपनाता है। सारी आँखें लुकाश्का ही पर लगी थी। लुकाश्का के चेहरे पर गम्भीरता थी और घबडाहट के कोई भी लक्षण न थे। उसने घोडे को एड लगाई और उसे दौडा दिया। दूसरे लोग पीछे रह गये। उसकी घूरती हुई आँखें सामने लगी थी।

"वह रहा एक घुडसवार," घोडे को लगाम लगाते और दूसरो के साथ होते हुए लुकाश्का वोला।

ओलेनिन ने ध्यान से देखा, परन्तु किसी को देख न सका।

कज्ज़ाको ने दो घुडसवारो को पहचाना और चुपके चुपके उनकी तरफ बढ गये।

"वे अब्रेक हैं क्या?" ओलेनिन ने पूछा। कज्ज़ाको ने इस प्रश्न का कोई उत्तर न दिया। यह प्रश्न उन्हे वडा, वेतुका लग रहा था। अगर अब्रेक घोडो पर सवार होकर तेरेक के इस पार आ गये है तो वडे गधे हैं।

"वह जो हाथ हिलाता हुआ दिखाई पड रहा है हमारा मित्र रोदका होगा।" उन दो घुडसवारो की ओर, जो अव साफ दिखाई पडने लगे थे, इशारा करते हुए लुकाश्का वोला, "देखो, वह इस ओर ही आ रहा है।"

कुछ मिनटो बाद यह स्पष्ट हो गया कि दोनो घुडसवार कज्ज़ाक स्काउट हैं और कोई नही। कारपोरल घोडे पर सवार लुकाश्का के पास चला आ रहा था।

बहुत प्रसन्न था। सहसा दूर से गोली की आवाज़ सुनाई दी। कार्नेट उत्तेजित हो उठा और कज्ज़ाको को हुक्म देने लगा कि किस तरह से आपस में बट कर और किस दिशा से कैसे हमला या बचाव किया जाय। परन्तु ऐसा लग रहा था कि कज्ज़ाक उसका हुक्म मानने को तैयार न थे। वे देख रहे थे कि लुकाश्का क्या कहता है, कौनसा रुख अपनाता है। सारी आँखें लुकाश्का ही पर लगी थी। लुकाश्का के चेहरे पर गम्भीरता थी और घबडाहट के कोई भी लक्षण न थे। उसने घोडे को एड लगाई और उसे दौडा दिया। दूसरे लोग पीछे रह गये। उसकी घूरती हुई आँखें सामने लगी थी।

"वह रहा एक घुडसवार," घोडे को लगाम लगाते और दूसरो के साथ होते हुए लुकाश्का बोला।

ओलेनिन ने ध्यान से देखा, परन्तु किसी को देख न सका।

कज्ज़ाको ने दो घुडसवारो को पहचाना और चुपके चुपके उनकी तरफ बढ गये।

"वे अब्रेक हैं क्या?" ओलेनिन ने पूछा। कज्ज़ाको ने इस प्रश्न का कोई उत्तर न दिया। यह प्रश्न उन्हे बडा, बेतुका लग रहा था। अगर अब्रेक घोडो पर सवार होकर तेरेक के इस पार आ गये है तो बडे गधे है।

"वह जो हाथ हिलाता हुआ दिखाई पड रहा है हमारा मित्र रोदका होगा।" उन दो घुडसवारो की ओर, जो अब साफ दिखाई पडने लगे थे, इशारा करते हुए लुकाश्का बोला, "देखो, वह इस ओर ही आ रहा है।"

कुछ मिनटो बाद यह स्पष्ट हो गया कि दोनो घुडसवार कज्ज़ाक स्काउट हैं और कोई नही। कारपोरल घोडे पर सवार लुकाश्का के पास चला आ रहा था।

बहुत प्रसन्न था। सहसा दूर से गोली की आवाज़ सुनाई दी। कार्नेट उत्तेजित हो उठा और कज्ज़ाको को हुक्म देने लगा कि किस तरह से आपस में बट कर और किस दिशा से कैसे हमला या बचाव किया जाय। परन्तु ऐसा लग रहा था कि कज्ज़ाक उसका हुक्म मानने को तैयार न थे। वे देख रहे थे कि लुकाश्का क्या कहता है, कौनसा रुख अपनाता है। सारी आँखें लुकाश्का ही पर लगी थी। लुकाश्का के चेहरे पर गम्भीरता थी और घबडाहट के कोई भी लक्षण न थे। उसने घोडे को एड लगाई और उसे दौडा दिया। दूसरे लोग पीछे रह गये। उसकी घूरती हुई आँखें सामने लगी थी।

"यह रहा एक घुडसवार," घोडे को लगाम लगाते और दूसरो के साथ होते हुए लुकाश्का बोला।

ओलेनिन ने ध्यान से देखा, परन्तु किसी को देख न सका।

कज्ज़ाको ने दो घुडसवारो को पहचाना और चुपके चुपके उनकी तरफ बढ गये।

"वे अब्रेक है क्या?" ओलेनिन ने पूछा। कज्ज़ाको ने इस प्रश्न का कोई उत्तर न दिया। यह प्रश्न उन्हे बडा, बेतुका लग रहा था। अगर अब्रेक घोडो पर सवार होकर तेरेक के इस पार आ गये है तो बडे गधे है।

"वह जो हाथ हिलाता हुआ दिखाई पड रहा है हमारा मित्र रोदका होगा।" उन दो घुडसवारो की ओर, जो अब साफ दिखाई पडने लगे थे, इशारा करते हुए लुकाश्का बोला, "देखो, वह इस ओर ही आ रहा है।"

कुछ मिनटो बाद यह स्पष्ट हो गया कि दोनो घुडसवार कज्ज़ाक स्काउट हैं और कोई नही। कारपोरल घोडे पर सवार लुकाश्का के पास चला आ रहा था।

बहुत प्रसन्न था। सहसा दूर से गोली की आवाज़ सुनाई दी। कार्नेट उत्तेजित हो उठा और कज्ज़ाकों को हुक्म देने लगा कि किस तरह से आपस में बट कर और किस दिशा से कैसे हमला या बचाव किया जाय। परन्तु ऐसा लग रहा था कि कज्ज़ाक उसका हुक्म मानने को तैयार न थे। वे देख रहे थे कि लुकाश्का क्या कहता है, कौनसा रुख अपनाता है। सारी आँखें लुकाश्का ही पर लगी थी। लुकाश्का के चेहरे पर गम्भीरता थी और घबडाहट के कोई भी लक्षण न थे। उसने घोडे को एड लगाई और उसे दौडा दिया। दूसरे लोग पीछे रह गये। उसकी घूरती हुई आँखें सामने लगी थी।

"वह रहा एक घुडसवार," घोडे को लगाम लगाते और दूसरो के साथ होते हुए लुकाश्का बोला।

ओलेनिन ने ध्यान से देखा, परन्तु किसी को देख न सका।

कज्ज़ाकों ने दो घुडसवारो को पहचाना और चुपके चुपके उनकी तरफ बढ गये।

"वे अब्रेक है क्या?" ओलेनिन ने पूछा। कज्ज़ाको ने इस प्रश्न का कोई उत्तर न दिया। यह प्रश्न उन्हे बडा, बेतुका लग रहा था। अगर अब्रेक घोडो पर सवार होकर तेरेक के इस पार आ गये है तो बडे गधे हैं।

"वह जो हाथ हिलाता हुआ दिखाई पड रहा है हमारा मित्र रोदका होगा।" उन दो घुडसवारो की ओर, जो अब साफ दिखाई पडने लगे थे, इशारा करते हुए लुकाश्का बोला, "देखो, वह इस ओर ही आ रहा है।"

कुछ मिनटो बाद यह स्पष्ट हो गया कि दोनो घुडसवार कज्ज़ाक स्काउट हैं और कोई नही। कारपोरल घोडे पर सवार लुकाश्का के पास चला आ रहा था।

शेष स्टेपी की भाँति ही था, परन्तु चूँकि वहाँ अब्रेक जमे थे अतएव वह बाकी स्टेपी से अलग और एक खास तरह का लग रहा था। ओलेनिन को लगा कि वह स्थान अब्रेको के छिपने के लिए एक मुनासिब स्थान है। लुकाश्का लौटकर अपने घोडे के पास चला आया और ओलेनिन भी उसके पीछे पीछे हो लिया।

"हमें भूसे की एक गाडी का इन्तजाम करना चाहिए," लुकाश्का बोला, "वरना वे हम सब को मार डालेगे। वहाँ, उस टीले के पीछे, भूसे से लदी हुई एक नगई गाडी है।" कार्नेट ने उसकी बात सुनी और कारपोरल ने अपनी सहमति दे दी। भूसे की गाडी लाई गई और कज्ज़ाक, उसके पीछे छिपे उसे ठेलकर आगे बढाने लगे। ओलेनिन एक टीले पर चढ गया जहाँ से वह सब कुछ देख सकता था। गाडी आगे बढती गई और सब के सब कज्ज़ाक उसके पीछे दुबक गये। कज्ज़ाक बढ रहे थे परन्तु चेचेन (वहाँ कुल नौ चेचेन थे) घुटने से घुटना मिलाये एक पक्ति में बैठे थे। उन्होंने कोई गोली नही चलाई।

सब कुछ शान्त था। सहसा चेचेनो की तरफ से एक करुण गीत सुनाई दिया जो चचा येरोश्का के 'आई-दाई-दला-लाई' की धुन पर था। चेचेनो ने जान लिया था कि अब वे ज़िन्दा न बचेगे और इसलिए कि कही मैदान से भाग खडे होने की उनकी इच्छा प्रबल न हो उठे उन्होंने एक दूसरे के घुटनो को अपनी पेटियो से फँसा लिया था और निशाना साधे हुए अपना मरसिया पढ रहे थे।

गाडी के पीछे पीछे चलते हुए कज्ज़ाक आगे बढते गये। अब ओलेनिन को लग रहा था कि गोलाबारी किसी भी समय आरम्भ हो सकती है। अब्रेको की तरफ से सुनाई पडनेवाले एक करुण गान से वातावरण की शान्ति भग हो रही थी। सहसा गाना बन्द हो गया और एक तीखी आवाज़ सुनाई पडने लगी। एक गोली आकर गाडी

के सामनेवाले भाग से टकराई, और चेचेन चिचियाने लगे। अब गोलियो का जवाव गोलियो से दिया जाने लगा और वे आकर गाडी से टकराने लगी। कज्ज़ाको ने गोलियाँ नही चलाईं। वे दुश्मनो से सिर्फ पाँच कदम दूर रह गये थे।

एक क्षण और वीता और सहसा कज्ज़ाक गाडी के वाहर निकल कर दोनो ओर से दुश्मनो पर टूट पडे। आगे आगे लुकाश्का था। ओलेनिन ने कुछ गोलियो की आवाज़ें सुनी और फिर उसे चीखें और चिल्लाहटें सुनाई दी। उसे लगा कि उसने धुआँ भी देखा है और खून भी। घोडा छोडकर और विना इस वात पर ध्यान दिये हुए कि वह कितना वडा खतरा उठा रहा है, ओलेनिन कज्ज़ाको की ओर भागा। भय ने उसे अन्धा वना दिया था। उसे कुछ पता न चला। हाँ, उसने यह ज़रूर समझ लिया कि सव कुछ खत्म हो चुका है। लुकाश्का, जो पीला पड रहा था, हाथो में एक घायल चेचेन को पकडे हुए चिल्ला रहा था "इसे मत मारो, इसे मत मारो। मैं इसे ज़िन्दा ले जाऊँगा।" यह चेचेन वही था जो अपने भाई की—लुकाश्का द्वारा उसके मारे जाने के वाद—लाश लेने आया था। लुकाश्का उसके हाथ वाँध रहा था। सहसा चेचेन ने अपने को छुडा लिया और अपना रिवाल्वर चला दिया। लुकाश्का गिर पडा। उसके पेट से खून की धार वह निकली। वह रूसी और तातारी में गालियाँ देते हुए फिर उठा और फिर गिरा। उसके कपडो और शरीर पर खून अधिक, और अधिक उभरता आ रहा था। कुछ कज्ज़ाक दौडकर उसके पास तक गये और उसकी पेटी ढीली करने लगे। नज़ारका सहायता पहुँचाने के पहले कुछ समय तक इधर-उधर करता रहा। वह तलवार म्यान में रख रहा था परन्तु वह उसमें सीधी जा न रही थी। तलवार खून से सनी थी।

लाल लाल वालो तथा ऐंठी हुई मूछोवाले चेचेन मारे जा चुके थे और उन्हे टुकडे टुकडे किया जा चुका था। केवल एक ही ज़िन्दा वचा था, वह जिसने लुकाश्का पर गोली चलाई थी। मगर वह भी वुरी तरह घायल हो चुका था। घायल वाज़ की तरह, खून से लथपथ (खून उसकी दाहिनी आँख के नीचे के घाव से वह रहा था), पीतमुख और निराश वह दाँत पीसता हुआ खूनी आँखो से इधर-उधर देख रहा था। उसके हाथ में कटार थी और वह अभी तक उससे अपनी रक्षा करने की वात सोच रहा था। कार्नेट उसके पास तक गया। ऐसा लगता था कि वह सिर्फ उसके पास से होकर गुज़र भर जाना चाहता है। परन्तु सहसा वडी तेज़ी के साथ उसने घूमकर चेचेन पर गोली चला दी। गोली कनपटी पार कर गई। चेचेन ने उठने की कोशिश की पर व्यर्थ और वह वही ढेर हो गया।

कज्ज़ाको की साँसे ज़ोर ज़ोर से चल रही थी। वे लाशो को खींच-खाँच रहे थे, उनके हथियार वटोर रहे थे। लाल वालवाला हर चेचेन मर्द था और हर एक का अपना अलग अलग व्यक्तित्व था। लुकाश्का को लोग गाडी तक ले गये। वह रूसी और तातारी में गालियाँ दिये जा रहा था।

"नही, तुम नही, मैं अपने ही हाथो से उसका गला घोटूंगा। आना सेनी।" वह चिल्लाया, मगर शीघ्र ही इतना कमज़ोर हो गया कि चिल्ला भी न सका।

ओलेनिन घर वापस आ गया। शाम को उसने सुना कि लुकाश्का मरणासन्न है पर नदी पार के एक तातार ने वादा किया है कि जडी-बूटियो की सहायता से वह उसे अच्छा कर देगा।

लाशें गाँव के दफ्तर में लाई गईं। स्त्रियाँ और वच्चे उनके चारो ओर खडे हुए उन्हे देख रहे थे।

जब ओलेनिन लौटा उस समय अँधेरा हो रहा था। जो कुछ भी उसने देखा था उसने उसे हतबुद्धि बना दिया। परन्तु रात के समय पिछली शाम की स्मृतियाँ उसके मस्तिष्क में फिर ताज़ी होने लगी। उसने खिड़की के बाहर देखा। मर्यान्का इधर-उधर दौड़ रही थी, कभी घर से निकलकर ओसारे में जाती कभी ओसारे से घर में। वह अपनी चीज़ें उठाने-धरने में लगी थी। उसकी माँ अगूर के बाग़ में थी और पिता दफ्तर में। ओलेनिन मर्यान्का के काम समाप्त कर लेने तक की प्रतीक्षा न कर सका और उससे मिलने चल दिया। वह घर में थी और उसकी पीठ ओलेनिन के सामने थी। ओलेनिन ने सोचा उसे लज्जा आ रही होगी।

"मर्यान्का," वह बोला, "मर्यान्का! क्या मैं आ सकता हूँ?"

सहसा वह घूमी। उसके मुँह पर उदासी छायी हुई थी, परन्तु आँखो में आँसू न दिख रहे थे। इस उदासी के बावजूद उसका चेहरा दमक रहा था। उसकी दृष्टि में एक मौन मर्यादा थी।

"मर्यान्का, मैं आ गया," ओलेनिन ने कहा।

"मुझे अकेली रहने दो!" वह बोली। उसके चेहरे पर कोई परिवर्तन नहीं हुआ, किन्तु गालो पर झर झर आँसू बरस गए।

"तुम रो क्यो रही हो? बात क्या है?"

"बात क्या है?" उसने रूखी आवाज़ में वे शब्द दुहरा दिये, "हमारे कज़्ज़ाक मारे गये है। यही बात है!"

"लुकाश्का?" ओलेनिन ने पूछा।

"भाग जाओ! क्या चाहते हो?"

"मर्यान्का!" उसके पास आते हुए ओलेनिन बोला।

"तुम मुझसे कभी कुछ न पा सकोगे!"

"ऐसी बात न कहो, मर्यान्का," ओलेनिन बोला।

"चले जाओ। मै तुमसे तग आ गई हूँ।" अपना पैर जमाती हुई

वह चिल्लाई और तीखी दृष्टि से देखती हुई उसकी ओर बढने लगी। उसकी नज़रो से घृणा, तिरस्कार और क्रोध की ऐसी चिनगारियाँ निकल रही थी कि ओलेनिन ने समझ लिया कि अब उसकी सारी आशाएँ टूट चुकी हैं। उसने इस औरत के बारे में पहले-पहल जो कुछ सोचा था वही ठीक था, केवल वही ठीक था। उसकी यह पूर्व-धारणा ठीक निकली कि वह उसे कभी पा न सकेगा। वह उसके लिए अगम्य है, अप्राप्य है।

ओलेनिन बिना कुछ कहे उसके घर से बाहर हो गया।

४२

घर लौट आने के बाद, प्राय दो घण्टे तक, ओलेनिन बिना हिले-डुले अपने बिस्तर पर पडा रहा। फिर वह अपनी कम्पनी के कमाण्डर के पास गया और प्रधान कार्यालय में काम करने के लिए उससे छुट्टी माँगी। किसी से भी विदा लिये बिना, और वन्यूशा को किराया अदा करने के लिए मालिक मकान के पास भेजकर, उसने उस किले में जाने की तैयारी की जहाँ उसका रेजीमेंट पडा था। उसे विदा देने के समय अकेला चचा येरोश्का ही वहाँ था। दोनो ने शराब का प्याला पिया—दूसरा, फिर तीसरा। उसके दरवाज़े पर एक ओइका-गाडी खडी थी, वैसी ही जिसपर बैठकर वह मास्को से चला था। परन्तु इस समय ओलेनिन अपने-आप से कोई बात न कर रहा था जैसी कि उसने तब की थी, और अपने मन को यह कहकर भी न समझा रहा था कि यहाँ के बारे में उसने जो जो सोच रखा था, जो जो किया था वह "वैसी बात न थी!" अब उसने नये जीवन की कोई बात न सोची। वह मर्यान्का को हमेशा से अधिक प्यार करता था और अच्छी तरह जानता था कि वह उसे कभी प्यार न कर सकेगी।

"अच्छा मेरे छोटे दोस्त, विदा," चचा येरोश्का कहता जा रहा था, "अब जब तुम अभियान पर जा ही रहे हो तो बुद्धि से काम लेना और मेरी इन बातो पर ध्यान रखना—ये एक बूढे की बाते है। जब तुम्हे आक्रमण या इसी तरह के किसी काम के लिए जाना पडे (तुम्हें मालूम है कि मै एक पुराना खुर्राट हूँ और मैंने अपनी जिन्दगी में ऐसी बहुत-सी वारदाते देखी है) और तुम्हारे दुश्मन तुमपर गोलियाँ बरसायें तो भीड में मत घुसना, वहाँ मत जाना जहाँ ढेरो आदमी हो। लेकिन तुम लोग करते क्या हो? जब डर लगता है तो भीड की भीड बटोर लेते हो। समझते हो लोग जितने ही ज्यादा होगें खतरा उतना ही कम होगा। मगर भाई यही तो खराबी की जड है। लोग गोली हमेशा भीड पर ही बरसाते है। मै हमेशा दूसरो से अलग अलग, अकेला, रहता था और मै कभी घायल नही हुआ। ऐसी कौनसी चीज़ है जो मैंने अपनी ज़िन्दगी में देखी न हो?"

"मगर तुम्हारे तो पीठ में गोली लगी है," वन्यूशा बोला। वह कमरा खाली कर रहा था।

"यह कज्ज़ाको की बेवक़ूफी से," येरोश्का ने उत्तर दिया।

"कज्ज़ाको की? कैसे?" ओलेनिन ने पूछा।

"बस ऐसे ही। हम लोग पी रहे थे। एक कज्ज़ाक वान्का सित्किन को ज्यादा चढ गई होगी और उसने मुझी को अपनी पिस्तौल का निशाना बना दिया, धाँय।"

"और क्या तुम्हें चोट भी लगी?" ओलेनिन ने पूछा, "वन्यूशा जल्दी काम खत्म करो और तैयार हो जाओ," उसने कहा।

"जल्दी काहे की! अब इसके बारे में पूरी बात तो सुन लो . जब उसने गोली चलाई तो उससे मेरी हड्डी नही टूटी। वह केवल थोडी-सी घुस भर गई। इसलिए मैंने तुरन्त कहा 'भाई तुमने तो मुझे मार ही डाला। यह क्या किया? मगर मै तुम्हें नही छोडूँगा। अब

तुम्हे मुझे एक बाल्टी शराव पिलानी होगी, यही तुम्हारी सज़ा है।' "

"मगर क्या तुम्हे चोट लगी?" ओलेनिन ने फिर पूछा। वह इस दास्तान पर कोई ध्यान न दे रहा था।

"मुझे बात खत्म करने दो। उसने बाल्टी भर शराव दी और हमने पी, लेकिन खून निकलता ही गया। कमरे भर में खून ही खून हो गया। और बुलकि कहने लगा 'जान से हाथ धो वैठेगा। उसे मीठी शराव की वोतल दो नही तो तुमपर मुकदमा चलेगा!' और फिर और शराव आई और हमने और पी और पी "

"ठीक है, मगर क्या तुम्हे चोट गहरी लगी थी?" ओलेनिन ने एक बार फिर पूछा ।

"चोट ज़रूर लगी थी! बात न काटो। मुझे यह पसन्द नही। मुझे अपनी बात पूरी कर लेने दो। हम सबेरे तक पीते ही गये, खूब पी और नाक तक चढाकर मैं तो अगीठी की टाँड पर ही सो गया। जब सुबह जागा तो वदन सीधा नही हो रहा था।"

"दर्द बहुत था क्या?" ओलेनिन बोला। वह सोच रहा था कि आखिर अब उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिलेगा।

"क्या मैंने तुमसे यह कहा कि मुझे दर्द हुआ था? मैंने यह नही कहा कि मुझे दर्द हुआ। लेकिन हाँ, न मैं चल-फिर सकता था, न सीधा खड़ा ही हो सकता था।"

"और तब घाव ठीक हो गया?" ओलेनिन बोला। वह इतना उदास था कि हँस भी न सका।

"अच्छा तो हो गया। मगर गोली अभी भी अपनी जगह पर है। छूकर देखो।" और अपनी कमीज़ उठाकर उसने अपनी हट्टी-कट्टी पीठ दिखाई जहाँ एक हड्डी के पास गोली टटोलकर देखी जा सकती थी।

"यह देखो कैसी लुढकती-पुढकती है," वह गोली से ऐसा मज़ाक कर रहा था जैसे खिलौने से खेल रहा हो। "छूकर देखो। अब वह पीठ पर आ गई।"

"और लुकाश्का, क्या वह ठीक हो जायेगा?" ओलेनिन ने पूछा।

"ईश्वर जाने! यहाँ कोई डाक्टर भी तो नही। वे किसी को बुलाने गये हैं।"

"डाक्टर मिलेगा कहाँ? ग्रोज़नाया में?" ओलेनिन ने पूछा।

"नही दोस्त, नही! अगर मैं ज़ार होता तो मैंने तुम्हारे सारे रूसी डाक्टरो को न जाने कब की फाँसी दे दी होती। वे एक ही चीज़ जानते हैं—काट-छाँट, चीर-फाड। हमारा एक कज़्ज़ाक दोस्त है—बक्लाशेव। अब वह सचमुच का आदमी भी नही रह गया। उन्होने उसका पैर ही काट डाला। इससे ज़ाहिर है कि सारे डाक्टर गधे हैं। अब बक्लाशेव किस मर्ज़ की दवा रह गया है? नही, मेरे दोस्त। पहाडो में अब भी उस्ताद डाक्टर है। मेरा एक दोस्त था गिरचिक। अभियान में उसके एक गोली लगी, ठीक यहाँ छाती में। तुम्हारे डाक्टरो ने तो जवाब ही दे दिया, लेकिन पहाडो से एक आया और उसने उसे ठीक कर दिया। मेरे दोस्त, वे समझते है कि जडी-बूटी क्या है!"

"खैर, यह खुराफात बन्द करो," ओलेनिन बोला, "मैं प्रधान कार्यालय से डाक्टर भेज दूँगा।"

"फिज़ूल!" बूढा व्यग्य से बोला, "गधे हो तुम, बेवकूफ! तुम डाक्टर भेजोगे। अगर तुम्हारे डाक्टर ही लोगो को अच्छा करने लगते तो कज़्ज़ाक और चेचेन उन्ही के पास इलाज कराने न जाते। मगर होता क्या है? खुद तुम्हारे ही अफसर और कर्नल पहाडो से डाक्टर बुलाते हैं। तुम्हारे डाक्टर धोखेबाज़ हैं, सिर्फ धोखेबाज़।"

"इसी तरह नमस्ते की जाती है? बेवकूफ, बेवकूफ!" उसने कहना शुरू किया, "अरे प्यारे, लोगो को क्या हो गया है! हम साथ साथ रहे है, साथ साथ उठे-बैठे है और पूरे साल भर तक। और अब एक सीधी-सादी 'नमस्ते' और चल दिये। बस। मैं तुम्हे प्यार करता हूँ और मुझे तुमपर तरस आता है। तुम अकेले हो, बिल्कुल अकेले, तुम्हे कोई भी प्यार नही करता। कभी कभी तो तुम्हारा ध्यान आ-जाने के कारण मुझे नीद भी नही आती। मुझे तुम्हारे जाने का दुख है। गीत में कहा गया है—

बिरादर! चूर है दिल गम की इन लगती-सी ठेसो में,
बहुत मुश्किल बिताना ज़िन्दगी अपनी बिदेसो में।
और यही तुम्हारे साथ भी है।"

"हाँ जी, अच्छा नमस्ते," ओलेनिन फिर बोला।

बूढा उठा और अपना हाथ फला दिया। ओलेनिन ने उसे दबाया और जाने के लिए मुड गया।

"ज़रा इधर," और बूढे ने ओलेनिन का सिर अपने दोनो हाथों से पकड लिया और अपनी भीगी मूछो तथा ओठो से उसे तीन बार चूमा और सिसक सिसककर कहने लगा—

"मै तुम्हे प्यार करता हूँ! नमस्ते, मेरे दोस्त, नमस्ते।"

ओलेनिन गाडी म बैठ गया।

"ओफ ऐसे ही चले जा रहे हो? मुझे कुछ तो दिये जाओ कि तुम्हें याद करता रहूँ। एक बन्दूक ही सही! तुम्हे दो की क्या ज़रूरत?" बूढा बोला। वह सिसक सिसककर रो रहा था।

ओलेनिन ने बन्दूक दे दी।

"कितनी चीज़ें तो तुम इस बूढे को दे चुके, मगर इसे सन्तोष ही नही होता। पुराना भिखारी है। सभी ऐसे ही औला-मौला होते हैं,"

वन्यूशा ने कहा और अपने ओवरकोट में सिकुडकर अपनी जगह बैठने लगा।

"बकवास बन्द कर, सुअर का बच्चा!" हँसता हुआ बूढा बोला। "कैसा बिच्छू है, बदमाश!"

मर्यान्का ओसारे से निकली, उसने गाडी पर एक सरसरी नजर डाली, सिर झुकाया और घर की ओर चल दी।

"ला फिल!" आँख मारते हुए वन्यूशा बोला और बेवकूफो जसा हँसने लगा।

"गाडी हाँको!" ओलेनिन गुस्से से चिल्ला उठा।

"नमस्ते, मेरे दोस्त, नमस्ते। मैं तुम्हे कभी न भूलूंगा, कभी न भूलूंगा!" येरोश्का की तेज़ आवाज़ सुनाई दी।

ओलेनिन ने पीछे मुडकर देखा। चचा येरोश्का मर्यान्का से बाते कर रहा था, शायद अपने ही बारे में। और न तो उस बूढे ने ही ओलेनिन की ओर देखा और न मर्यान्का न ही।

१८५२–१८६२

वन्यूशा ने कहा और अपने ओवरकोट में सिकुड़कर अपनी जगह बैठने लगा।

"बकवास बन्द कर, सुअर का बच्चा!" हँसता हुआ बूढा बोला। "कैसा विच्छू है, बदमाश!"

मर्यान्का ओसारे से निकली, उसने गाड़ी पर एक सरसरी नज़र डाली, सिर झुकाया और घर की ओर चल दी।

"ला फिल!" आँख मारते हुए वन्यूशा बोला और बेवकूफों जैसा हँसने लगा।

"गाड़ी हाँको!" ओलेनिन गुस्से से चिल्ला उठा।

"नमस्ते, मेरे दोस्त, नमस्ते। मैं तुम्हे कभी न भूलूँगा, कभी न भूलूँगा!" येरोश्का की तेज़ आवाज़ सुनाई दी।

ओलेनिन ने पीछे मुड़कर देखा। चचा येरोश्का मर्यान्का से बातें कर रहा था, शायद अपने ही बारे में। और न तो उस बूढे ने ही ओलेनिन की ओर देखा और न मर्यान्का न ही।

१८५२ – १८६२